मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन

डॉ. अरूण कुमार झा

Kripa Drishti Publications, Pune.

मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन

डॉ. अरुण कुमार झा
सहयोगी प्राध्यापक,
मैथिली विभाग,
S.B.A.N. महाविद्यालय
दरेटा-लारी, अरवल.

Kripa-Drishti Publications, Pune.

शीर्षक: मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय दृष्टि अध्ययन

लेखक: डॉ. अरुण कुमार झा

1st Edition

ISBN: **978-81-19149-27-8**

Published: **June 2023**

Publisher:

Kripa-Drishti Publications

A/ 503, Poorva Height, SNO 148/1A/1/1A,
Sus Road, Pashan- 411021, Pune, Maharashtra, India.
Mob: +91-8007068686
Email: editor@kdpublications.in
Web: https://www.kdpublications.in

© **Copyright डॉ. अरुण कुमार झा**

All Rights Reserved. No part of this publication can be stored in any retrieval system or reproduced in any form or by any means without the prior written permission of the publisher. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages. [The responsibility for the facts stated, conclusions reached, etc., is entirely that of the author. The publisher is not responsible for them, whatsoever.]

अनुक्रमणिका

अध्याय 1: उपन्यास एक सामाजिक अभिव्यक्तिक विद्या 1

1.1 उपन्यासक परिभाषा :– 1
1.2 बाबू गुलाब रायक अनुसार :– 1
1.3 ''उपपति कृतोहाथ'' उपन्यासः संकीर्तित :– 2
1.4 काव्य, इतिहास ओ उपन्यास :– 6
1.5 उपन्यास ओ काव्य :– 9
1.6 उपन्यास और नाटक :– 10
1.7 लघुकथा एवं उपन्यास :– 11

अध्याय 2: समाजशास्त्रीय तत्व एवं उपन्यास 14

अध्याय 3: मैथिली उपन्यासमे समाज चेतनाक विकास 35

अध्याय 4: सामाजिक समस्या एवं मैथिली उपन्यास 63

अध्याय 5: मैथिली उपन्यासमे नवीन जीवन दर्शन–मार्क्सवाद, फ्रायडवाद, गाँधीवाद 79

अध्याय 6: राजनीतिक चेतना ओ मैथिली उपन्यास 98

6.1 आधुनिक युग में राजनीतिक सुगमता :– 98

अध्याय 7: उपसंहार 116

ISBN: 978-81-19149-27-8

अध्याय 1

उपन्यास एक सामाजिक अभिव्यक्तिक विद्या

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक। ओकरामे सत्–असत् विवेकनी बुद्धि पाओल जाइछ। तेँ ओकरा हृदयमे नाना प्रकारक भावनाक अस्तित्व रहैत अछि। ओहि भावना सभ केँ विभिन्न रूपेँ अभिव्यक्त करबाक इच्छा सेहो मनुष्यमे रहब स्वाभाविके अछि। ई अभिव्यक्ति विभिन्न माध्यमसँ अनादिकाल सँ होइत आबि रहल अछि। भावनाक अभिव्यक्तिक साधनक एक प्रधान माध्यम भाषा अछि। रचना क्षेत्रमे प्राचीनकाल सँ अनेक प्रकारक प्रयोग होइत आबि रहल अछि। साहित्यक क्षेत्रमे कविता, नाटक, गद्य आदि अनेक रूप विद्यानक सृष्टि भेल अछि। उपन्यास कला सेहो सामाजिक अभिव्यक्तिक विद्या थिक।

उपन्यासक प्रसंग विचार करबाक हेतु उपन्यास शब्दक अर्थ पर विचार करब आवश्यक अछि। उपन्यास शब्दक व्युत्पत्ति ''उप'' तथा ''नि'' पूर्वक ''अस'' धातु सँ ''धगंद्य'' प्रत्यय जोड़लासँ भेल अछि। ''अस''क अर्थ होइत अछि स्थिर करब। अतः उपन्यास शब्दक व्युत्पत्तिमूलक अर्थ भेल ओ रचना जाहिमे अनेक पक्षक संघटन भेल अछि।

1.1 उपन्यासक परिभाषा :–

उपन्यासक परिभाषाक प्रसंग विभिन्न विद्वानक विभिन्न मत अछि। किशोरीलाल गोस्वामी लिखित छथि जे जहिना साहित्यक प्रधान अंगमेम नाटकक प्रचार पहिने एतहि भेल छल ओहिना उपन्यासक प्रचारो एतहि भेल ई कहव अनुपयुक्त नहि मुदा किछु महानुभावक कथन अछि जे उपन्यास पहिने एतय प्रचलित नहि छल– प्रत्युत अंग्रेजी साहित्यक अनुकरण पर भारतीय भाषा सभमे नॉवेल (Novel)क स्थानमे उपन्यासक रचना होमए लागल। कल्पना कए लेलक मुदा ओहि महात्मा लोकनिकेँ पहिने एकर मीमांसा कए लेबाक चाही। तात्पर्य ई जे उपन्यास ''सेहो प्राचीनकाल सँ भारतीय साहित्यमे प्रचलित अछि। दशकुमार चरित, वासवदत्ता, श्रीहर्षचरित, कादम्बरी आदि उपन्यास एकर प्राचीनताक जाज्वल्यमान प्रमाण अछि।[1]

1.2 बाबू गुलाब रायक अनुसार :–

अंग्रेजी शब्द नावेल (Novel) मे जकर अर्थ नवीन छैक, कथाक तत्व भरल छैक। मराठी भाषामे अंग्रेजीक एहि शब्दक आधार पर नवल कथा शब्दक निर्माण भेल अछि। मराठीमे कादम्बरीकेँ सेहो उपन्यास कहल जाइत अछि। उपन्यास शब्द प्राचीन नहि अछि, कम सँ कम ओहि अर्थमे जाहिमे आई–काल्हि एकर व्यवहार होइत अछि। संस्कृत लक्षण ग्रंथमे उपन्यास शब्द अछि।

[1] किशोरी लाल गोस्वामी– प्रणयिनी परिजन– उपोद्धात्, पृ0–1

ई नाटकक संधिक एक उपभेद अछि (प्रतिमुख संधिक) एकर व्याख्या दू प्रकारसँ कएल गेल अछि। उपन्यास प्रसादनम् ''अर्थात् प्रसन्न कएनिहार रचना उपन्यास कहबैत अछि। दोसर व्याख्या एहि रूपेँ अछिः–

1.3 ''उपपति कृतोहाथ'' उपन्यासः संकीर्तित :–

अर्थात् कोनो अर्थ केँ युक्तियुक्त रूपमे उपस्थित करब उपन्यास कहबैत अछि। सम्भव थिक जे उपन्यासमे प्रसन्नता देवाक शक्ति तथा युक्ति–युक्त रूपमे अर्थ केँ उपस्थित करबाक प्रवृतिक कारणेँ एहि प्रकारक कथात्मक रचनाक नाम उपन्यास राखल गेल हो। मुदा वास्तवमे नाटक साहित्यक उपन्यास शब्द तथा सम्प्रति प्रचलित उपन्यास शब्दमे नाम मात्रक समानता अछि। उपन्यास शब्दक अर्थ होइत समर्पित राखब (उप–समीप, न्यास–राखव)।''[2]

प्रेमचन्द्र उपन्यासक प्रसंग विचार करैत लिखैत छथि जे विद्वान लोकनि उपन्यासक परिभाषा विभिन्न रूपेँ कएल अछि। मुदा ई देख जाइत अछि जे जे वस्तु जतेक सरल होइत अछि ओकर परिभाषा ओतेक कठिन होई अछि। कविताक परिभाषा आइ धरि नहि भए सकल अछि। जतेक विद्वान छीँ ओतेक परिभाषा देल गेल अछि मुदा कोनो दू विद्वानक विचार नहि मिलैत अछि। उपन्यासोक विषयमे इएह बात कहल जा सकैत अछि। एकर कोनो एहन परिभाषा नहि अछि जकरा सभ केओ मानए। मुदा हम उपन्यासकेँ मानव–चरित्रक चित्र मात्र मानैत छी मानव चरित्र पर प्रकाश देव तथा ओकर रहस्य के प्रकाशित करवे उपन्यासक मूल तत्व थिक।''[3]

डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवदीक मते उपन्यास एहि युगक बहुत लोकप्रिय साहित्य अछि। प्रायः प्रत्येक पढ़ल–लिखल युवक दू–चारि उपन्यास अवश्य एहि युगमे पढ़ने होएताह। ई एक अत्यन्त मनोरंजन साहित्यिक विद्या मानल जाए लागल अछि। सम्प्रति आन साहित्यक आनन्दक तुलना उपन्यासक आनन्द सँ कएल जाइछ। कोनो यूरोपीय समालोचनक मनोरंजकता केँ एक मात्र उपन्यासक गुण मानैत छथि। उपन्यास मनोरंजकतामे कवितेक नहि प्रस्तुत नाटक हुक महत्त्व घटा देलक अछि। पाँच मील दौड़िकए रंगशाला जयबाक अपेक्षा पाँच सए मील दूर सँ एहन पोथसी मँगा लेल कतहुँ आसान भए गेल अछि जे अपन रंगमंच अपन पृष्टठहिमे मेने हो।''[4]

डॉ० गणेशनक अनुसार उपन्यास सामाजिक, वैयक्तिक अथवा दुनू प्रकारक जीवनक रोचक साहित्यक प्रतिरूप थिक जे प्रायः एक कथासूत्रक आधार पर निर्मित होइछ।''[5]

आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी उपन्यासक प्रसंग अपन विचार व्यक्त करैत लिखैत छथि जे आइ काल्हि गद्यात्मक कृतिक अर्थमे लेल जाइत अछि। उपन्यास छन्द वद्ध नहि होइत अछि। प्रायः ओएह परिस्थिति गद्यक विकासमे सहायक भेल अछि जे उपन्यासक विकासमे योग दए रहल

---

[2].गुलाब राय– काव्य के रूप, पृ0–165

[3] प्रेमचन्द, साहित्य का उद्देश्य, पृ0–54

[4] डॉ० हजारी प्र0 द्वि वेदी, साहित्य का साथी, पृ0–83

[5] डॉ० गणेशन, हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन, पृ0–25

अछि। यूरोपमे गद्य उपन्यासक पूर्व किछु प्रेमाख्यात्मक कविता प्रचलित छल एवं ओकरे आधुनिक उपन्यासक जननी कहल जा सकैत अछि।[6]

साहित्यालोचनक लेखक डॉ0 श्याम सुन्दन दासक दृष्टिमे उपन्यास एक दिस वास्तविक जीवन चरित्र सँ जें पौराणिक, ऐतिहासिक अथवा सामाजिक व्यक्तिक रहैछ, भिन्नता रखैत अछि, आओर दोसर दिस पथक प्रणालीक परित्यागत कए कविताक सूक्ष्म परिधिमे पर्दापण नहि करैछ। वास्तविक जीवन चरित्रमे घटना तथा तिथिक जे विशिष्ट क्रम मानए पड़ैछ, ओहि कारणें ओहिमेम वास्तविक जीवनक अनुकूलता भने देखबामे अबैत हो किन्तु काव्यक नैसर्गिक पूर्णता प्राप्त करब ओकरा हेतु कठिन अछि। जीवन चरित्र देश आओर कालक अमेध बन्धनसँ बद्ध भए कें कालक स्वतंत्र सत्ता सँ पृथक भए जाइछ। उपन्यासमे ओहन कोनो। बँधन नहि रहबाक कारणें ओहिमे व्यक्ति, वस्तु तथा व्यापारकें अधिक सुन्दर मूर्ति–मत्ता प्राप्त कए सकैछ आओर उपन्यासकार कल्पनाक रंगमे अपना कें रंगा कए अपन कथा अधिक आकर्षक बना सकैछ।''[7]

उपन्यासक विषयमे प्रा0 रमानाथ झा कहैत छथि जे उपन्यास गद्य काव्यक एक भेद थिक। ई कथा साहित्यक एक अंग थी। कथा साहित्यक थीक, 'मनुष्यक वास्तविक जीवनक काल्पनिक चित्रण'' अर्थात् एहिमे मानव जीवनक अनुषंगिक कथा कल्पनाक रंग में रंगीकें गद्यमे व्यक्त कएल जाइत अछि। तें उपन्यास ओ गद्य दुहूक आधार ओ प्रणाली प्रायः एके अछि तथापि विकासावस्थामे एहि दुहूक सत्ता विभिन्न टुटल जाइत अछि। उपन्यासमे मानव–जीवनक एक गोट व्यापक ओ समय सापेक्ष चित्र रहैत अछि। उपन्यासक घटना ओ परिस्थिति जटिल

एवं सघन होइत अछि। एहिमे अधिक सँ अधिक पात्र अथवा चरित्रक समावेश कएल जाइत।''[8]

एवं क्रमे विभिन्न हिन्दीक विद्वान उपन्यासक परिभाषा विभिन्न रूपें देलन्हि अछि। निष्कर्ष रूपमे ई कहल जा सकैत अछि जे उपन्यास मानव जीवनक, ओकर समग्र रूपमे चित्र उपस्थित कयनिहार आधुनिक युगक सभसँ सशक्त साहित्यक माध्यम थिक। मुदा वस्तुतः उपन्यास पाश्चात्य साहित्यक देन थिक। तें हेतु उपन्यासक विषयमे विचार करबाक हेतु अंग्रेजी साहित्यक विद्वान लोकनि द्वारा देल गेल परिभाषाक पाश्चात्य विश्लेषण करब आवश्यक।

नॉवेल शब्दक विश्लेषणमे गद्यकथाक हेतु एकर व्यवहार प्रारंभमे होयबाक सूचना भेटैत अछि। अंग्रेजी साहित्यमे कथा साहित्यक हेतु ''फिक्शन'' शब्द व्यवहृत भेल जे नॉवेल सँ वेशी व्यापकधिक। ''फिक्शन'क अन्तर्गत उपन्यास गद्य, रोमांस तथा वर्णानात्मक काव्य सभक समावेश भए जाइत अछि। व्युत्पत्ति अर्थक अनुसंधान कयने नाटक से हो एकर अन्तर्गत आवि जाइछ।[9]

---

[6] नन्द दुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, पृ0–123

[7] डॉ0 श्याम सुन्दर दास, पृ0–143

[8] प्रो० रमानाथ झा– भूमिका विडम्बना (उपेन्द्रनाथ झा व्यास), पृ0–7–8

9 It includes not only the Novel and the prose romance but narrative poetry also, in its strict etymdogical sence it includes Drama.

THE HISTORY OF THE ENGLISH NOVEL I Vol. I, p-12

दी न्यू इंगलिश डिक्शनरीमे नॉवले गद्यमे लिखल गेल पर्याप्त दीर्घ आकारक, ओहि कल्पित कथाकेँ कहल गेल अछि जाहिमे यथार्थ जीवनक प्रतिनिधि पात्र एवं कार्य व्यापार कथानकक अन्तर्गत विचित्र रहैत अछि।''[10]

शब्द कोषाकार वेलस्टर उपन्यासक संबंधमे लिखित छथि जे उपन्यास पैघ आकारक ग्रंथमे लिखल इतिहास कथानक युक्त घटनावलीक वर्णन अछि जाहिमे मानव जीवनक अनुभूतिक क्रमबद्ध विवरण तथा पात्र समूहक चरित्र पर प्रकाश विशेष वातावरणक अन्तर्गत देल गेल रहैत अछि।''[11]

अंग्रेजीक एक दोसर शब्दकोशमे उपन्यासक परिभाषा एहि रूपेँ देल गेल अछिः—

उपन्यास दैव आकारक साधारणतः गद्यमे लिखल गेल काल्पनिक आख्यान अछि जाहिमे मानव क्रिया—कलाप, साहसिकता एवं वासनाक दिग्दर्शन रहैत अछि। एहिमे विभिन्न प्रकारक मानव चरित्र उद्घाटित रहैत अछि जे रोमांससँ भिन्न होइत अछि।''[12]

क्लारीव उपन्यासकेँ वास्तविक जीवन तथा तत्कालीन रीति—नीतिक चित्र मानैत छथि। रोमांस आकर्षक भाषामे ओहि विषयक वर्णन करैत अछि जे ने कहियो घटित भेल अछि आओर ने कहिओ ओकर घटबाक संभावना छैक।

उपन्यास हमरा सभक दृष्टिक ओहि घटनाक वर्णन करैत अछि जे हमरा मित्रक जीवनमे अथवा हमरा जीवनमे घटल अछि। एकर पूर्णता एहिमे कैक जे ओ प्रत्येक दृश्य एवं चित्रक सहजता एवं स्वाभाविकतामे छैक। कम सँ कम जा धरि हम ओकरा पड़ैत रही हमरा ई बुद्धि पड़ए जे ई सत्य अछि। एकर पात्रक आनन्द एवं शोकसँ हम सुखी दुखी होइ।''[13]

---

[10] A fictirious prose tale of narrative of considervable length in which characters and actions profession to represent real life is portrayed in a plot.
- The New Enlighs Dictionary.

[11] An inverted prose narrative of considerable length and certain complexity that deals imaginatively with human experience through a connected Sequence of events involving a group of persons in a speisis etting. Third New International Dictionary (Unabridged)p. 546.

[12] A fictiitious narrative (usually in Prose) of some considerable length representing human beings and their actions, adventures and passions, and displaying variaties of human character in relation of life, distinguished in the last feeture from the older romance.
The universal English Dictionary.

[13] The novel is a picture of real life and manner and of time in which it is written. The Romance in lofty and devated language, describes what never happened nor is likely to happen. The Novel gives a familiar relation of such things as pass every day before our eye, such as, may happen to our friends, or to ourselves, and the perfection of it is to present every scane in so easy and natural a manner and to make them appear so probable as to decieve us into persuation. (at least while we are reading) that all is real until we are affected by joys or distress of persons in the story as if they are our own.
- Progress of Bomance Referred to in the history of the English Novel.
Vol. I. P-13

वैद्य वी0 प्रिस्टले उपन्यासक प्रकृति पर विचार करैत कहैत छथि जे किछु व्यक्ति कखनहुँ उपन्यास केँ एक विशेष प्रकारक शल्य मानि लैत छथि अर्थात् जाहि कथामे चाय–पार्टीक चर्चा रहैत अछि ओ उपन्यास भेल आओर जतए सामूहिक युद्धक चर्चा कएल गेल रहैत अछि ओ रोमांस। किन्तु ई मिथ्या धारणा थिक। ओ उपन्यासके क्षेत्रकेँ अधिक विस्तृत मानैत छथि। हिनका मतें उपन्यास गद्यमे लिखल साहित्यक ओ अंग थिक जाहिमे मुख्यतः कल्पित पात्र एवं घटनाक वर्णन होइत अछि। उपन्यास जीवनक दर्पण अछि तथा एकर क्षेत्र साहित्यक कोनो अन्य विद्या सँ वेशी विस्तृत छैक।''[14]

राल्फ फॉक्स उपन्यासकेँ एक एहन कला कृति मानैत छथि जे समस्त मानवताकेँ ग्रहण कए ओकरामे अभिव्यक्तिक प्रेरणा देलक अछि।[15]

एहि परिभाषामे फॉक्स उपन्यासकेँ मात्र काल्पनिक धरातल पर नहि छोड़ि ओकरा मानव जीवनसँ सम्यक रूपेण सम्बद्ध कए देल अछि। हिनक परिभाषा सँ हमरा लोकनि ई निष्कर्ष निकालि सकैत छी जे उपन्यास मात्र काल्पनिक कथा नहि होइछ। ई गद्यक शक्तिशाली अंग थिक जकर सम्बन्ध मानव जीवन सँ छैक। समस्त मानवताकेँ ग्रहण कयनिहार ई प्रथम कलाकृति थीक एवं मानवताक अभिव्यक्तिक प्रथम वाहक।

अंग्रजी साहित्यमे उपन्यास बहुत दिन धरि आलोचक लोकनिक दृष्टिमे हैय बुझल जाइत रहल। उपन्यास केँ साहित्यिक मर्यादा बहुत दिनक पश्चात् भेटलैक।''[16]

खेकर कहैत छथि जे उपन्यास ओहि युगमे पुष्पित पल्लवित होइत अछि जखन लोकक बुद्धि एवं तर्कशक्ति अत्यन्त सक्रिय रहैत छैक एवं कल्पना शक्ति तन्द्रित मुदा विवेचना शक्ति अत्यन्त जागरूक रहैक।''[17]

---

[14] The only definition of the novel I can offer is that it is a narrateive in prose treating chiefly of emaginary characters and events…… It is a large Mirror of life and has a far greater range than any other form of literatures.
- The English Novel - 1932 Ed.-P-1

[15] The novel is not merely fictional prose, it is the prose of Man's life, the first act to attempt to take the whole man and give him expression.
- The Novel and the people: P. 20

[16] The nation of the Novel as a literacy form having something to do with art in the sense of being consciously made and shaped to an as thetic end is quite new.
---The English Novel

[17] When the entellect and reason are most emaginative faiulty may be dorment but the critical are very much awake.
-The History of the English Novel.
Vol. I, p. 22.

1.4 काव्य, इतिहास ओ उपन्यास :–

कवितामे घटनावलीमे कार्य कारण सम्बन्धक परिणाम कठोर नियममे आवद्ध कएल गेल रहैत अछि। इतिहासक घटनावलीमे समय–क्रममे ध्यानमे राखि वास्तविक सत्यक चित्रण कएल गेल रहैत अछि, किन्तु कार्य कारण–संबंध व्यक्त नहि रहैत अछि।''[18]

'काव्यक विषयवस्तु इतिहासक अपेक्षा अधिक व्यापक रहैछ। कवि मानव स्वभावक सामान्य व्याख्या करैत छथि, इतिहास जकाँ वैयक्तिक स्वभावक नहि। इतिहासक आधार वास्तविक घटनावली अछि, काव्य एकरा शाश्वत सत्यमे परिवर्तित करैत अछि।''[19]

अरस्तु सम्भाव्य घटनाकेँ कविक विवेच्य विषय मानैत छथि। काव्य पूर्णताक संग मानव स्वभाव एवं जीवनकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। ई जीवन के शारीरिक कष्टसँ मुक्त रखैत। ई भौतिक आवश्यकता एवं पाश्विक व्यवहारक अवहेलना कए दैछ। संभावना वा अनावश्यकताक नियमक इनुसार की संभव अछि इएह कहब कविक कर्त्तव्य होइत छन्हि।

कवि एवं इतिहासकार गद्य वा पद्यमे लिखवाक कारणें एक दोसरासँ भिन्न नहि छथि। हिरोडोट्सक कृतिकेँ काव्यमे सेहो राखल जा सकैत अछि। मुदा तइयो ओ इतिहासे कहाओत। इतिहासकार एवं कविमे प्रथम भिन्नता ई अछि जे इतिहास ओकर वर्णन करैछ जे घटित भेल रहैत अछि, मुदा काव्य संभाव्य घटनाक वर्णन करैत अछि।''[20]

उपन्यास मानव–जीवनक व्यापक चित्रण प्रस्तुत कएनिहार आधुनिक युगमे सभसँ सशक्त साहित्यिक माध्यमय थीक। मनुष्य–जीवनक चित्र आओर ओकर चरित्रक विविध परिस्थितिमे प्रति क्रियात्मक संभावनाक जतेक सफल उद्घाटन एहि साहित्यिक माध्यम द्वारा कएल जा

---

[18] Next poetry exhibits a more regorous connection of events, cause and events are linked together in probable or necessary sequence. Historical compositions as Aristotale observes in a later chapter are a recored of actual facts, of particular events, strong together in the order of time but without any clear causal connection.
-IBID, P-164-165.

[19] It has a higher subject matter than History, it expresses the universal not the particular, the permanent possibilities of human nature, it does not merely tell the story of the individual life.....
- IBID, P -164.

[20] Poetry expresses most adequately the universal element in human nature and life…. It liberates us from the tyranny of physical surroundings. It can disregard material needs and animal longings. It is not the function of the poet says Aristotle, to relate what has happended, but what may happen, what is possible according to the law of probability or necessity. The poet and the historian differ not by uniting in verse r in prose. The work of Herodotus might be put into verse, and it would still be a specimen of history, with matre no less than without it. The true difference is that one relates what has happened, the other what may happen.
-Theory of poetry and fine art Aristotle. Page- 163-164, 4th ed.

सकैत अछि ओतेक आन साहित्यिक विद्या द्वारा नहि। आधुनिक युगमे उपन्यासक लोक–प्रियताक मुख्य कारण इएह अछि।''[21]

फार्स्टर'क कथन छन्हि जे उपन्यासकार इच्छानुसार उपन्यासक पात्रकेँ पाठकक समक्ष अनावृत्त कए सकैत छथि। ओकर आन्तरिक एवं वाह्य जीवन स्पष्ट रूपेँ अभिव्यक्त कएल जा सकैछ अतएव उपन्यास इतिहासक अपेक्षा अधिक नीक जकाँ चरित्र पर प्रकाश दए सकैत छथि।''[22]

स्टीव्रेतन'क अनुसार जीवनक यथावत् चित्रण नहि अछि, अपितु जीवनक कोनो पखक स्वाभाविक चित्र जकर सफलता सहजता पर आधारित अछि।''[23]

रिचार्ड चर्च उपन्यासक तुलना ग्लोम (दस्तान)सँ करैत छथि। मानव समाजके हाथ मानैत छथि। आंगुरक संचालनक संग–संग ग्लोम सेहो संचालित होइत अछि।''[24]

सामाजिक जीवनक दृश्यक परिवर्तनक प्रभाव उपन्यासक विषय पर पड़ैत छैक। सामाजिक जीवनक अवहेलना कए उपन्यासकार केँ ने तेँ गतिशीलता रहलैक आओर ने विश्वसनीयता।

अंग्रेजीक एक आलोचकक कथन छन्हि जे उपन्यास एहि अर्थमे एक कलाकृति अछि जे ओ हमरा लोकनि केँ जीवित संसारमे परिचय करवैत अछि। एहन संसार सँ जाहिमे हम सब रहैत छी एकर सादृश्य रहैत छैक किन्तु ई अपन व्यक्तित्वक रक्षा सदैव करैत अछि।''[25]

---

[21] The Novel to day is the most vigorous of all literary forms. It abviously makes precedunce over all others..... The Novel is the form in which our culture has most often sought expression, It is the only form that seems able to express out experience, and then is no here any sign that its power or will is slackening. In no country whose culture seeks expression, in literature in there any sign of dean, dence, every where to day that novel comes to no closs to being the whole imaginative literature that distrinction in any other form is so preglunt as to cause surprise.
- The world of fiction by Bernars.
De. V - to P. 296.

[22] People in a Novel can be understood completely by the reader, if the Novelist wishes, their inner as well as the outer life can be exposed. And this is why they often seen more definite than characters in History.
- Aspects of the Novel- p. 62

[23] The Novel is not a transcript or life to be judged by its exactitude, but a simplification of some side or point of life to stand or fall by its significant simplicity.
- Memories and Portrate.
P. 297.

[24] The Art of fiction may be compared to glove upon the hand, the hand being human society. According to the articulation of that hand, so the movements of the Glove are determined.
- The Growth of the english Novel. P-50

[25] A Novel is a work of art in so far as it introduces us into a living world, in some respects resembling the world we live in, but with an individuality of its own.
- Hardy the Nove List: P-13.

उपन्यासकेँ कलाक विकृत रूप कहल गेल अछि। एकरा संबंधमे एहो कहल गेल अछि जे ई स्वार्थ भावना सँ सम्बद्ध रचना अछि, जकर परित्याग कोनो सुन्दर कृतिक निर्माताक हेतु आवश्यक।''[26]

हेनरी जेम्स कहैत छथि जे उपन्यास एक जीवित वस्तु अछि। प्रत्येक प्रत्येक जीवान्त रचना जकाँ ई एक सम्पूर्ण आविभाज्य इकाई थिक। ओकरा प्रत्येक अंगमे दोसराक अंकक किछु –किछु अंश अवश्य निहित रहैत अछि। तेँ हेतु एहन आलोचक जे बाध्यरूपक आधार पर भौगोलिक रेखा खिंचवाक साह्य करैत छथि। ओ एहन सीमा रेखा भए जाइत अछि जकरा बनावटी कहि सकैत छी।''[27]

उपन्यासक विभिन्न परिभाषाक विश्लेषण सँ ई स्पष्ट होइत जे प्रायः सब परिभाषा एकांगी अछि। किनकहु परिभाषामे जे कल्पना पर जोड़ देल गेल अछि तँ केओ मानव–जीवनक वास्तविकता पर वेशी जोड़ देल गेल अछि। केओ सामाजिक वातावरणक पृष्ठभूमि पर तँ केओ तर्क शक्तिक विकसित रूप पर।

लोकहितक भावनाक अभिव्यक्ति जतेक साहित्यक एहि विद्या सँ संभव अछि अन्य द्वारा नहि कारण उपन्यासक अस्तित्वक एक मात्र कारण ई अछि जे ओ मानव–जीवनक चित्रणक प्रयास करैत अछि।''[28]

कला जीवनसँ निरपेक्ष कोना रहि सकैत अछि कारण एकर आधार मानव जीवन थिकैक। एकर पोषण जीवन सँ होइत छैक अतः एकर प्रभाव जीवन पर पड़ैत छैक। एहि स्थितिमे कोनो कलाकार जीवनक प्रति अपन उत्तरदायित्वक अपेक्षा कोना कए सकैत छथि।''[29]

---

[26] It is tenable that one of the mistakes of late of late nineteenth century and early twentienth century criticism has been to regard the novel as work of Art. in the save sense that a sonata, a picture or a poem is a work of Art. It is extremely doubtful whether the aim of the novel is to make an asthetic appeal. Passages in it may do so, but it aims also at satisfying out ouriousity about life as much as satisfying the acsthetic sense…….. I am inclined myself to regard it as a hastard form of Art, rightly concerned with many humans interested which the maker of beautiful thing,
--(Vide Janc Austen)
- The English Novel, p-18

[27] A Novel is a living thing, all are and entinous, like any other organism, and in proportion as it lives will……I think, that in each of the parts there in something of each of the other parts. The critic who ever the close testhore of a finished work shall pretend to trace geography of items will mark some frontiers as artificial.
- Henery James - The art of fiction (The portable P-404)

[28] The only reason for the existence of Novel is that does attempt to represent life.
H. James- The art of fiction - Portable Viking press, New York, 1951, P-393.

[29] Art grown out of life, it is fed by life, it reacts upon life. This being so it cannot disregard its responsibilities to life.
- Intro- duction to the study of literature.

1.5 उपन्यास ओ काव्य :–

अंग्रेजी उपन्यासक इतिहासमे कहल गेल अछि जे कवि मनःकल्पित जगतक चित्रण उपस्थित करैत छथि तथा उपन्यासकारक संसार अनुभवजन्य होइत अछि। कवि देशकालक बँधन सँ मुक्त शाश्वत भावक, गीत लिखैत छथि, उपन्यासकार स्थुल भौतिक समस्याक चित्र अंकित करैत छथि।

उपन्यासकार– एवं कवि दुनू व्यक्ति जीवनक विभिन्न पक्षक वर्णन करवामे जाहि साधन सभक प्रयोग करैत छथि, ओहिमे मात्राक अन्तर भए सकैत अछि, प्रकारक नहि।''[30]

काव्यसँ उपन्यासक रचना विधान शिथिल अछि। कविक अपेक्षा उपन्यासकारकेँ कम नियमक पालन करए पड़ैत छैक। कवि कल्पनाक संसारमे स्वछन्द विचरण करबाक कारणें अपन दृष्टिकोणक स्थापना करैत छथि परन्तु उपन्यास कारक संसार अनुभव जन्य रहैत छन्हि। अतिरंजना मात्र काव्यक गुण भए सकैत अछि। उपन्यासक नहि।

उपन्यास एहन रचना अछि जाहिमे जीवनक व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल देल जाइव अछि तथा एहिमे प्रत्येक कथनक समर्थन तर्क द्वारा करए पड़ैत छैक। मानव जीवनक समस्याक उपेक्षा कए उपन्यास उचित मर्यादा नहि प्राप्त कए सकैत अछि। काव्य अर्न्तमुखी होइत अछि। काव्यमे शाश्वत सत्यक स्थापना कएल जाइत अछि। काव्यक आधार जीवनक सैद्धान्तिक पक्ष अछि उपन्यासक व्यावहारिक पक्ष।

काव्य परिवेश समुद्रक सदृश थीक, उपन्यासमे निर्झरक उपाम वेग अछि। एक आलोचक उपन्यासकेँ काव्य प्रसूत मानैत छथि। उपन्यासकार एवं काव्यकारक उद्‌भव एकहि स्थान सँ भेल अछि। केवल हुनका लोकनिक रचनाक माध्यम भिन्न अछि।''[31]

काव्य जीवनक आलोचना प्रत्यक्ष रूपेँ नहि करैत अछि। ई एक मानदंड स्थिर करैत अछि, जकर आश्रय लए वास्तविक जीवनक लेखा–जोखा कएल जाइत अछि। उपन्यास एकर प्रतिकूल जीवनक मूल्यांकन साक्षात् रूपेँ करैत अछि।''[32]

---

[30] Their approach to life, their sensous apprehensions, their interpretation in terms of significant symbol, may be different in degree, but they are the same in kind.
- IBID, P-4.

[31] All this I imphasise to show the common origin of poet and Novelis to only their media are different.
- The Growth of the English Novel, P-3

[32] Poetry is creative, the Novel analytical, the Kindom of poetry is not the world but of the spriti, it is not of temporal but of timeless things the world of endusing ideas or as the only indirectly a ariticism of life, in that of ideal world, it setsforth gives a standard and criticism by which we cannot help Judging the measuring Life. The Novel on the other hand is a direct interpretation.
- The History of the English Novel, P-18

कवि आदर्शक निर्माण करैत छथि, उपन्यासकार अनुभवक अभिव्यक्ति। काव्य आलौकिक आनन्दक प्राप्तिक काव्य साधन अछि, उपन्यास जीवनक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। काव्य रचना अत्यन्त दुरूह अछि, उपन्यास रचना सहज।

हडसनक कहब छन्हि जे प्रत्येक व्यक्ति अपन जीवनकेँ समक्ष राखि उपन्यासक रचना कए सकैत अछि। उपन्यासमे जीवनक निरीक्षण पर आधारित तथ्यक विवरण रहैत अछि। उपन्यासकार जीवनक अधिक समीप छथि। कवि कल्पनाक सागरमे ऊब–डुब करैत रहैत छथि। उपन्यासकार प्रत्यक्ष जीवनक दुःख व्यक्त करैत छथि तथा कवि कल्पनाक सागरमे प्रवेश कए जीवनक आलोचना उपस्थित करैत छथि।

उपन्यासकार सूक्ष्म अर्न्तदृष्टि रखैत छथि। कल्पनाक चमत्कारक अभावमे उपन्यास नीरस भए जाइछ। काव्य निर्माता एहन काल्पनिक चित्र उपस्थित करथि जकर सत्यता प्रमाणित करबाक हेतु वास्तविक जीवनकेँ आधार मानि नहि अण्डि हुनक सत्यक प्रति निष्ठा केँ आधार मानिक परीक्षण कएल जा सकए। उपन्यासकारकेँ ई ध्यान राखव आवश्यक होइत छैन्हि जे हुनक वर्णन जीवनक सत्य सँ भिन्न नहि छन्हि। उपन्यासकारक संसार हुनक मनःकल्पित संसार नहि भए हुनक एवं आन लोकक अनुभवक संसार अछि।''[33]

1.6 उपन्यास और नाटक :–

नाटक एवं उपन्यास घनिष्ठ रूपेँ सम्बद्ध अछि। नाटक उपन्यास एवं आख्यायिका सँ अनुप्राणित होइत अछि। नाटकमे मात्र वर्णन करैत चलैत छथि। नाटकक कथा वाहक ओकर पात्रे रहैत अछि। उपन्यासमे नाटकक वार्तालाप सदृश कथोपकथनक प्रयोग होइछ। कथोप–कथनक माध्यम सँ पात्र कथानकक विकासमे सहायक होइत अछि एवं लेखक स्वयं सेहो कथा कहैत चलैत छथि। नाटकमे सेहो कथा कहल जाइछ एवं उपन्यासो के कथे कहब अभीष्ट रहैत छैक। उपन्यासकार केँ वर्णनक सुविधाक नाटककारक रंगमंचक सुविधाक संग तुलना कएल जा सकैत अछि।

उपन्यासकार पात्रकेँ परिस्थितिक निर्माणमे असमर्थ पाबि स्वयं आगा बढ़ि वर्णन द्वारा परिस्थितिक निर्माण करैत छथि। उपन्यासकार अपना पात्र सँ पृथक नहि रहैत छथि। उपन्यासक अपेक्षा नाटक कठोर बँधनसँ युक्त रचना विधान मानल जाइत अछि। हडसनक कहब छन्हि जे नाट्य कला अत्यन्त दुरूह साहित्यिक कला अछि, उपन्यास सभसँ शिथिल।''[34]

नाटक एवं उपन्यासक कथानकमे सेहो अन्त अछि। नाटकमे घटना प्रत्यक्ष रूपेँ घटित होइत देखाओल जाइत अछि। उपन्यासमे जीवनक आलोचना कएल जाइत अछि। नाटकक प्रधान

---

[33] The only truth demanded of the creators of poetry is imaginative integrity, truth to themselves. Anarrower cannot is imposed on the movelist, he is expected to be true to life that he is to be always constistent with other man's experience of the world.
- The history of the English Novel, P-18.

[34] The Drama is the most rigorous form of literature art, prosofication is the loosest.
- An Introduction to the study of Literature, P-130.

अंक के कथोपकथनक सफलता पर नाटकक सफलता आश्रित रहैत अछि। उपन्यासमे विषयक उपस्थापनक एक मात्र साधन कथोपकथने नहि रहैत अछि। उपन्यासमे वर्णनक पूर्ण अवकाश रहैत अछि। किन्तु नाटककार कें समयक बन्धनमे बान्हि देल गेल रहैत छन्हि। उपन्यासकार समय एवं आकारक बंधनसँ नाटक सदृश बान्हल नहि रहैत छथि। उपन्यासमे, विभिन्न रूपें कथा कहल जा सकैत अछि।

आचार्य लोकनि श्रव्य एवं दृश्य एहि दू विभागमे साहित्य कें विभाजित कएल अछि। कथा एवं उपन्यास श्रव्य काव्य अछि, नाटक दृश्य काव्य। उपन्यासकें पढ़ला पर सम विषयक स्पष्ट भए जाइत अछि किन्तु नाटककें केवल पढ़ला सँ ओ प्रभाव उत्पन्न नहि भए सकैत अछि जे देखला उत्तर संभव होइछ।

नाटककारक अभीष्ट सिद्धिक हेतु दू साधन छन्हि शब्द तथा अभिनय किन्तु उपन्यासकारक मात्र शब्द। नाटकमे पात्रक देश–भूषा, भाव भंगिमा, दृश्य विधान आदिक सँ जाहि भावकें व्यक्त कएल जाइछ से उपन्यासमे शब्दहिक द्वारा। मैरियम क्रांफोर्ड उपन्यासकें जे0पी0 नाट्यशाला (Pocket Theatre) कहल अछि।''[35]

उपन्यास एवं नाटकमे चरित्र–चित्रण सेहो भिन्न–भिन्न रूपमे कएल जाइछ। उपन्यासकार पात्रक श्रष्टा तथा कथाकार दुनू रहैत छथि। तें चरित्र–चित्रणके जे सुविधा उपन्यास कारकें छन्हि से नाटककार कें नहि।

नाटककार पात्रकें प्रतिनिधि बनाय अपन विचार व्यक्त करैत छथि। उपन्यासकार कें स्वयं ई सुविधा, प्राप्त रहैत छन्हि।

वस्तुतः उपन्यास एवं नाटक एक दोसराक पूरक कहल जा सकैत अछि परन्तु आधुनिक समयमे नाटक एवं उपन्यास एक दोसराक सीमाक अतिक्रमण करैत देखल जाइत अछि।

1.7 लघुकथा एवं उपन्यास :–

लघुकथा एवं उपन्यासमे केवल आकारक अन्तर नहि अछि। लघुकथा कें छोट उपन्यास एवं उपन्यासकें पेंच कथा कहब ओहने हास्यास्पद होइत जेना चतुष्पद होयबाक समानवताक आधार पर वेंग कें छोट बड़द आओर बड़द कें पैघ वेंग कहब होयत।''[36]

साहित्यालोचनक लेखकक कथन छन्हि जे कथा–बालिका उपन्यासहिक औरस अछि। किन्तु किछु दिन सँ ओ अपन पितृ–गृहमे नहि रहैत अछि। ई नव कुलक मर्यादा ग्रहण कए लेलक अछि''[37]

---

[35] The Novel as marium Crawford once happily pharssad, a pocket Theatre.
- Aspect of the Novel, P-61.

[36] डॉ0 गुलाब राय, पृ0–216

[37] डॉ0 श्याम सुन्दर दास, पृ0–178

उपन्यासक विन्यासमे देश कालक चित्रण रहैत अछि, कथामे चरित्र विकासक हेतु अधिक गुंजाईश नहि रहैत छैक। ओहिमे गढ़ल–चरित्रक एक झलक मात्र देखल जाइत अछि जाहिसँ सम्पूर्ण चरित्रक किछु आभास भेटैत अछि।''[38]

उपन्यास एवं लघुकथामे केवल आकारक अन्तर नहि अछि। कथा एवं उपन्यासमे समता अधिक किन्तु अनेक दृष्टिएँ भिन्नता सेहो। उपन्यास एवं लघुकथा एहि दुनू साहित्यिक विद्यामे मानव जीवनक चित्र अंकित रहैत अछि। कथाक आकारक लघुताक कारणें जीवनक चित्र एवं सर्वांगीण वर्णन नहि रहैत अछि।

लघुकथामे जीवनक जाहि कोनो पक्षक वर्णन हो, से सूक्ष्म अवश्य रहैत अछि आकर्षित होयबाक लेल बाध्य कए दैत अछि। उपन्यासमे विषयक विविधता रहैत अछि अनेक प्रकारक चित्रण उपस्थित कएल गेल रहैत अछि। लघुकथाक सीमित परिवेशमे चरित्रक प्रवाह नहि रहि सकैत अछि आओर ने चरित्रक उत्थान पतनक विस्तृत वर्णन। उपन्यासक वर्णनक विस्तृत होयबाक कारणें पाठककेँ अनुमानक आश्रय नहि लेवए पड़ैत छन्हि।

कथा जँ अपन एकोन्मुख समष्टि प्रभावक माध्यम सँ हमरा मनकेँ पूर्णतया झंकृत एवं आन्दोलित कए हमर अनुमान, कल्पना एवं जिज्ञासा केँ उन्मुख दुआरि पर आनि ठाढ़ करैत अछि तँ उपन्यास जीवनक विभिन्न क्षेत्रक झलक दए सम्पूर्ण रहस्य तथा वस्तुस्थिति सँ परिचित कराए हमरा मनमे एक प्रकारक पूर्णत्य विद्याक संतुष्टि उत्पन्न करैत अछि।''[39]

इहो कहल जा सकैछ जे उपन्यास सँ तृप्ति होइत अछि आ कथासँ उत्तेजना वस्तुतः कथामे जे उत्तेजनाक सामर्थ्य रहैछ उपन्यासमे नाहि। एतावता कथा एवं उपन्यासक अन्तर ई अछि जे–

(क) उपन्यासक आकार लघुकथासँ पैघ होइछ।

(ख) उपन्यासमे जीवनक व्याख्यापूर्ण रूपेँ सम्भव होइछ, लघुकथामे नहि।

(ग) लघुकथामे देश कालक चित्रणक एक झलक मात्र रहैत अछि, उपन्यासमे एकर पूर्ण विवरण।

(घ) उपन्यासमे चरित्रक विकसित रूपक वर्णन होइत अछि, लघुकथामे उपन्यासके अपेक्षा विषयक एकत्व एवं प्रभाववान्विति होइछ।

कहबाक तात्पर्य ई जे उपन्यास वास्तवमे जीवनक व्याख्या ओ विश्लेषण थिक। विश्लेषण रहबाक कारणे सामाजिक गतिविधिक सांगोपांग विस्तृते चित्र एकरा माध्यम सँ प्रस्तुत कएल जाइन अछि। जें सामाजिक गतिविधिक सम्पूर्ण चित्रक अंकन करब एकर स्वाभाविकता थिक तें उपन्यास वास्तवमे सामाजिक जीवनक अभिव्यक्तिक थिक। एहिमे सामाजिक जीवनक विविध

---

[38] डॉ0 गुलाब राय, पृ0–217

[39] डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, कहानी का रचना विधान, पृ0–20

पक्षक स्वरूपकेँ स्वाभाविकताक संग चरित्र किवा पात्रक मामध्यसँ ओकर विभिन्न आयामकेँ ओकर नीक अथलाह पक्षकेँ, वास्तविक यथार्थक आदर्श स्वरूपकेँ अंकित कएल जाइत अछि। सामाजिक जीवनक समग्र स्वरूपकेँ अभिव्यक्ति प्रदान करबे एकर उद्देश्य एवं लक्ष्य सेहो होइत अछि। अर्थात् वास्तवमे उपन्यास सामाजिक अभिव्यक्ति सशक्त साहित्यिक विद्या थिक। एकरा माध्यम सँ समाजक, सामाजिक गतिविधिक, ओकर क्रिया–कलापक, ओकर अभाव अभियोगक, ओकर श्वेत–श्याम पक्षक, ओकर वैचारिक धरातलक सम्पूर्ण चित्र जन सामान्यकेँ उपलब्ध होइत अछि। अति सामाजशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ साहित्यक एहि विद्याक महत्त्व अधिक भए जाएत अछि।

ISBN: 978-81-19149-27-8

अध्याय 2

समाजशास्त्रीय तत्व एवं उपन्यास

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक। समाजमे निवास करब ओकर प्रकृति छैक। प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तुक कथन छन्हि जे मनुष्य एक सामाजिक प्राणी अछि। जे व्यक्ति समाजमे हि रहैत अछि अथवा जनिका समाजक आवश्यकता नहि पड़ैत अछि ओ देवता अछि अथवा पशु।''[40] लोक अपने स्वभावसँ वशीभूत भए एक–दोसर सँ मिलैत–जुलैत अछि एवं नव संबंधक स्थापना करैत अछि। इएह मानवीय संबंध समाजक उत्पत्तिक कारण अछि।

किन्तु लोकक प्रत्येक समूह ''समाज'' नहि कहबैछ। बस अथवा रेलगाड़ीमे बैसल लोकक समूहकेँ हम 'समाज'क संज्ञा नहि द्य सकैत छी। लोकक कहने ओहने समूह ''समाज'' कहबैत अछि जकर एकटा सामान्य उद्देश्य होइए।''

''समाजशास्त्र'' मानवसमाजक वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ समाजशास्त्र प्रारंभिक सिद्धान्तसँ परिचित होएबाक हेतु सर्वप्रथम समाजक धारणाकेँ बूझव आवश्यक अछि। वस्तुतः सभ सामाजिक विज्ञान समाजेक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि मुदा ओकर दृष्टिकोण एक दोसरसँ भिन्न अछि। उदाहरणस्वरूप, राजनीति शास्त्रक संबंध एकटा ''राजनीति समूह''क रूपमे स्पष्ट करैत अछि, जखन ''अर्थशास्त्र''मे समाजक तात्पर्य एकटा विशेष प्रकारक आर्थिक क्रिया कएनिहार ''व्यक्तिक आर्थिक समूह'' सँ बूझल जाइत अछि। एहि प्रकारेँ मनोविज्ञानमे ''समाज'क तात्पर्य मानसिक अन्तःक्रिया कएनिहारक समूह सँ अछि जखन मानव शास्त्रक अन्तर्गत समाजक अर्थ मात्र जनजातीय समुदायसँ होइत अछि। बोलचालक भाषामे समाज शब्दक प्रयोग अत्यन्त भ्रमपूर्ण रूपमे कएल जाइत अछि। किछु व्यक्ति लोकक कोनो संगठनकेँ समाज कहि दैत छथि, जखन कि किछु लोकधर्म, भाषा अथवा सांस्कृतिक आधार पर बनल विभिन्न समूहकेँ समाजक रूपमे परिभाषित करैत छथि। किछु लोक प्रजातिक आधार पर द्रविड़ समाज, नीग्रोसमाज, अथवा मंगोल समाजक सदृश शब्दक प्रचुरताक संग सेहो उल्लेख कयने छथि। ई प्रत्येक शब्द अवैज्ञानिक अछि। समाजशास्त्रीय अर्थमे 'समाज' लोकक समूह नहि होइत अछि अपितु लोकक मध्य पाओल जायवला संबंधक व्यवस्थाकेँ कहल जाइत अछि।''[41] एहि तरहेँ समाज व्यक्तिक कोनो संगठन नहि अछि आ ने एकर कोनो भौतिक स्वरूप होइत अछि। समाज अमूर्त्त अछि।''[42] समाजक इएह धारणा समाजशास्त्राकेँ दोसर प्रत्येक सामाजिक विज्ञान सँ पृथक करैत अछि। एहि दृष्टिएँ समाजशास्त्र केँ वैज्ञानिक रूपेँ जनबाक हेतु आवश्यक अछि जे सर्वप्रथम 'समाज'क वास्तविक प्रकृतिसँ परिचित भए जाय।

---

[40] Aristotle significantly adds that the person who is incapable of sharing a common life is either below or above humanity". either a beast of a god". - Mciver and page, Society, P-8

[41] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र परिचय, पृ0–33

[42] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र परिचय, पृ0–33

जे0एफ0 क्यूबरक उक्ति अछि जे ''समाज सामाजिक संबंधक व्यवस्था अछि–जकर उद्‌भव एकटा विशेष प्रकारक संस्कृतिसँ होइत अछि। संस्कृति सएह लोककेँ व्यवहार एवं ओकर पारस्परिक संबंधक रूपकेँ निर्धारण कए समाजकेँ एकटा विशेष स्वरूप प्रदान करैत अछि। संबंधक व्यवस्थासँ वनएवला इएह ''समाज'' समाजशास्त्रक अध्ययनक वास्तविक विषयवस्तु अछि।''[43]

लोकक मोनमे इच्छा अनन्त अछि जकर पूर्तिक हेतु ओ दोसर लोकक संग संबंध स्थापित करैत अछि। एहि तरहेँ लोक समूहक निर्माण करैत अछि। ई समूह लोकक प्रत्येक इच्छाक पूर्तिकमे सहायता प्रदान करैत अछि। ई समूह किछु नियमानुसार चलाओल जाइत अछि। एहि समूहक सम्मिलित रूपकेँ समाज ''कहल जाइत अछि। ई कहब यथार्थ अछि–'' मनुष्यक संग मनुष्यक इच्छित संबंध समाज अछि।''[44]

सामाजिक विज्ञान सँ संबंधित एहने कोनो विज्ञान नहि अछि जे ''समाज''केँ कोनो ने कोनो रूपमे नहि परिभाषित कएने होअए। मुदा अन्य सामाजिक विज्ञानक तुलनामे समाजशास्त्रक अन्तर्गत समाजक परिभाषा अत्यन्त व्यापक रूपेँ कएल गेल अछि। समाजशास्त्रक संस्थापक सब समाजक विषयमे तीन प्रकारक दृष्टिकोण प्रस्तुत कएने छथि।

1. कोभवे, स्पेन्सरक विचारक अनुसार समाजक परिभाषा एकटा व्यवस्थाक रूपमे करबाक चाही। एहि विचारक मूलमे मान्यताई अछि जे समाजक सभ तत्व एक दोसर सँ जुड़ल अछि, एक दोसर पर निर्भर अछि तेँ सामाजिक संबंधमे एकटा व्यवस्था बनैत अछि जकरा 'समाज' कहल जाइछ।
2. दोसर दृष्टिकोण कार्लमार्क्स प्रस्तुत कयने छथि जे एहि तरहक अछि–मूल आर्थिक संरचना एवं ओहि पर आधारित सामाजिक राजनीतिक, सांस्कृतिक संरचनाक योगकेँ समाज कहब उचित होएत।
3. बेबर तेसर दृष्टिकोणक विवेचन कएलन्हि अछि, हुनका अनुसारे समाजमे विभिन्न स्तर पर अन्तःक्रिया होइत अछि। कतोक प्रकारक क्रिया सेहो सम्पन्न होइत अछि तथा एहि सभक परिणामस्वरूप नाना प्रकारक सामाजिक संबंध बनैत अछि।''[45]

समाजशास्त्रक उक्त मौलिक विचारक सभक सूत्र ग्रहण कए समकालीन समाजशास्त्री लोकनि द्वारा निम्नलिखित परिभाषा सभ प्रस्तुत कएल गेल अछि–

1. मैकाइवर एवं पेजक कथन अछि जे ''समाज'' रीति, कार्यविधि, अधिकार एवं पारस्परिक सहायता, कतोक समूह तथा ओकर विभाजन मानव व्यवहारक नियंत्रण तथा स्वतंत्रताक व्यवस्था अछि। एहि सतत् परिवर्तित सामाजिक संबंधक जाल अछि तथा सतत् परिवर्तित होइत रहैत अछि।''[46]

---

[43] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र परिचय, पृ0–32
[44] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र परिचय, पृ0–32
[45] गोपी कृष्ण प्रसाद, प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–32
[46] A

मैकाइवर उपर्युक्त परिभाषामे केवल एहि बातक उल्लेख नहि अछि जे समाज सामाजिक संबंधक जाल मात्र अछि, अपितु ओहि आधार सभकेँ सेहो स्पष्ट कएल गेल अछि जाहि द्वारा ई संबंध एकटा व्यवस्थित स्वरूपक निर्माण करैत अछि। मैकाइवर एवं पेजक परिभाषाक विभिन्न परिभाषाक विभिन्न आधारक संक्षेपमे विवेचन किंवा विश्लेषण निम्नलिखित रूपसँ कएल गेल अछि।

1. **रीति (लोकाचार एवं रीति–रिवाज)** – रीति अथवा प्रथा कार्य करबाक ओ विधि अछि जकर कोनो समूह अथवा समुदायमे एकटा समयक पैघ अंतराल सँ प्रचलन रहल अछि। ई रीति सभ व्यवहारक लगभग प्रत्येक क्षेत्रमे पाओल जाइत अछि। जेना–खान–पान, विवाह, वृद्ध लोक सँ भेंट करबाक हेतु शिक्षा प्राप्त करबामे, संस्कारपूर्ण, करबामे, गपशप करबामे, एहि प्रकारक लगभग प्रत्येक कार्य करबाक हेतु समाजक एकटा विशेष ''रीति'' होइत अछि। ई ''रीति'' सभ किछु विशेष प्रकारक संबंधकेँ सेहो जन्म दैत अछि। जेना हिन्दू समाजमे वैवाहिक रीति, पति–पत्नीक बीचक संबंधकेँ एक प्रकारक स्थायित्व प्रदान करैत अछि। एहिना आओरो कतोक उदाहरण प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि। एहि प्रकारक संबंध रूप निर्धारित करबामे रीतिक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि।''[47]

अपन अस्तित्वक रक्षाक हेतु लोककेँ समाजक अन्य लोकक संग संबंध स्थापित करए पड़ैत अछि। ''व्यक्ति एवं समाजक संबंध'' सँ व्यवहार एवं चलन अथवा रीतिक उत्पत्ति होइत अछि। लोककेँ दैनिक जीवनमे इएह रीति, अनेक प्रकारेँ पथ प्रदर्शित करैत रहैत अछि। अतः जीवनमे रीतिक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि।''[48]

2. **कार्य प्रणाली (अथवा कार्यविधि)** – रीति रिवाजक दोसर पक्ष प्रणाली अछि। प्रत्येक रीति–रिवाजक एकटा प्रणाली होइत अछि, निश्चित विधि होइत अछि। ई प्रणाली किछु नियम एवं परम्परा पर आधारित होइत अछि, जेना विवाह कार्य सँ संबंधित जे रीति–रिवाज अछि ओकर सेहो एकटा निश्चित, प्रणाली होइत अछि। ''समाज'' द्वारा स्वीकृत एहि प्रणाली अथवा विधि–विधानक पालन अनिवार्य अछि। समाजक प्रत्येक संगठन एवं संस्थामे संगठन तखने बनल रहि सकैत अछि।''[49] कहबाक तात्पर्य जे कार्य प्रणाली सँ मेकाइवर अभिप्राय व्यावहारिक नियम अथवा विभिन्न रूपक संस्था सँ अछि। प्रत्येक समाजमे उद्देश्यक पूर्ति करबाक हेतु विशेष प्रणालीकेँ अपनाओल जाइत अछि। समाजमे, विवाह, उत्तराधिकार, शिक्षा, धार्मिक, विश्वास, राजनैतिक दल आदिक कार्य प्रणाली महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। सामाजिक संबंधक स्थापना करबामे एवं सदस्यकेँ एकताक डोरीमे बान्हवामे एकरा सभक (कार्यप्रणाली सभक) अपूर्व योगदान अछि।''[50]

---

[47] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–81

[48] प्रो0 कुमार शक्ति सिन्हा, समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–45

[49] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसाद, प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–39

[50] प्रो0 कुमार शक्ति सिन्हा, समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–45–46

3. **अधिकार** – सामाजिक संबंध केँ व्यवस्थित रखबाक हेतु प्रत्येक समाजमे अधिकारक एकटा विशेष व्यवस्था होइत अछि। प्रत्येक समाजमे किछु लोकक संबंध अधिकारक होइत अछि एवं किछुक संबंध अनुकरण करयबला। फलस्वरूप कोनो व्यक्ति अनियंत्रित संबंधक स्थापना नहि कए सकैत अछि। समाजमे अधिकारक धारणा प्रत्येक छोट–छोट समूहमे पाओल जाइत अछि, जेना राज्यमे राजा अथवा प्रभुसत्ता, परिवारमे कर्त्ता कथा संस्थामे प्रधान व्यक्ति आदि। प्रारंभमे अधिकारक दृष्टिकोण कम्मे लोक जेना– गामक मुखिया, कबीलाक सरदारक हाथमे केन्द्रित छल, फलस्वरूप समाजक रूप सरल छल। आधुनिक समाजमे अधिकारक व्यवस्था जटिल एवं विस्तृत भए गेल अछि। जखन अधिकारक दृष्टिकोण धर्म एवं संस्कार आदिमे निहित रहैत अछि तँ समाजक रूप धर्म प्रधान भए जाइत अछि। एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे अधिकारक दृष्टिकोणक कारणें समाजक प्रकृति विभिन्न प्रकार होएबाक संगहि संग सामाजिक जीवन केँ सेहो व्यवस्थित बनौने रहैत अछि।''[51]

4. **पारस्परिक सहयोग** – समाज एकटा व्यवस्था अछि जकर स्थायित्व पारस्परिक सहयोगे सँ संभव अछि। पारस्परिक सहयोगमे वृद्धि होयबा सँ समाजक विकास होइत अछि एवं सहयोगक अभावमे समाज छिन्न–भिन्न भए जाइत अछि। सभ्यताक मध्यकाल धरि पारस्परिक सहयोगक भावना एकटा छोट सन समूह धरि सीमित छल एवं एहि कारणें समाजक आकार सेहो अत्यन्त सीमित छल, किन्तु आब पारस्परिक सहयोगक क्षेत्रकेँ अत्यधिक विस्तृत भए जयबाक कारणें समाजक विस्तार होएब सेहो प्रारंभ भए गेल अछि। समाजमे सहयोगक संग संघर्षक सेहो कोनो कम महत्त्व नहि अछि मुदा सहयोगक प्राथमिकता अछि जखन संघर्षक स्थान गौण अछि। वास्तविकता तँ ई अछि जे सामाजिक प्रक्रियामे लोक एक–दोसरक अथवा अपन समूहक सहयोग अवश्ये करैत रहैत अछि। एहिसँ ई प्रमाणित होइत अछि जे सहयोगक अभावमे व्यवस्थित सामाजिक संबंधक कल्पना सेहो नहि कएल जा सकैत अछि।''[52] कहबाक तात्पर्य जे सहयोग एकटा सामाजिक प्रक्रिया अछि। यथार्थ तँ ई अछि जे सहयोग समान उद्देश्यक प्राप्तिक हेतु कएल जाइत अछि। बिना सहयोगक सामाजिक क्रिया सम्पादित नहि कएल जा सकैत अछि। समाजमे लोक सहयोगे द्वारा उद्देश्य लक्ष्य धरि पहुँचैत अछि।''[53]

सामाजिक सहयोगक व्यावहारिक रूप ई होइत अछि जे सहयोग सँ सम्बद्ध व्यक्तिक बीच एक दोसरकेँ सहायता करबाक एकटा क्रम बनि जाइत अछि जाहि सँ समाजमे विभिन्न अंगक बीच व्यवस्था एवं संतुलन बनल रहैत अछि।''[54]

5. **समूह एवं विभाग** – समूह एवं विभाग सँ मेकाइवरक अभिप्राय ओहि सभ समर्पित, समूह एवं संगठन सँ अछि जे आपसमे सम्बद्ध रहि समाजकेँ व्यवस्थित बनबैत अछि। समाज किछु महत्त्वपूर्ण सामाजिक विभागमे विभाजित रहैत अछि। जाहि प्रकारें एकटा

---

[51] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–81–82
[52] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–82
[53] प्रो0 कुमार शक्ति सिन्हा, समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–46
[54] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसाद, प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–39

राज्य कतोक छोट–छोट भागमे विभाजित एवं संगठित भए अपन कार्य करैत अछि, ओहि तरहें समाज सेहो राज्य नगर, ग्राम, पड़ोसी, परिवार तथा दोसर अनेको छोट–पैघ समूह द्वारा अपन संगठनकेँ बनौने रखैत अछि।''[55] एहिमे सँ प्रत्येक विभागक रूप हमरा लोकनिक संबंधकेँ प्रभावित करैत अछि। ई प्रत्येक इकाई जतेक वेशी संगठित अछि एवं उपयोगी होइत अछि, 'समाज'क रूप ओतेक व्यवस्थित भए जाइत अछि।

6. **मानवीय व्यवहार पर नियंत्रण**– परिवार गाम, नगर तथा अन्य समूहकेँ व्यवस्थित ढ़ंग सँ चलएबाक हेतु समाजमे किछु नियम एवं कानून होइत अछि जे लोकक व्यवहार केँ लक्ष्मण रेखाक सीमा पर नहि करए दैत अछि। जखन लोकक व्यवहार पर नियंत्रणक व्यवस्था रहैत अछि, तखने सहयोग, पारस्परिक सहायता एवं अन्य क्रिया संभव भए सकैत अछि।''[56]

ई नियंत्रण दू प्रकारक होइत अछि– औपचारिक एवं अनौपचारिक। उदाहरणार्थ कानून, प्रचार एवं प्रशासन औपचारिक नियंत्रण केँ स्पष्ट करैत अछि जखन धर्म प्रथा नैतिकता एवं जनरीति आदि नियंत्रणक अनौपचारिक विधि अछि। नियंत्रणक ई दुनू स्वरूप आदेश एवं विशेषक द्वारा सामाजिक संबंध केँ व्यवस्थित रखबाक प्रयत्न करैत अछि।''[57] अतः समाजमे समुचित व्यवस्था रखबाक हेतु मानवीय व्यवहार एवं समूह पर नियंत्रण राखब आवश्यक अछि।

7. **स्वतंत्रता** – समाजक अन्तर्गत नियंत्रणक संगहि संग स्वतंत्रताक सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। कोनो सामाजिक व्यवस्था अपन सदस्य पर विशेष नियंत्रण गला कए वेशी समय धरि जीवित नहि रहि सकैत अछि। स्वस्थ्य संबंधक विकासक हेतु ई आवश्यक अछि जे सदस्य स्वतंत्रताक अनुभव करए। प्रत्येक समाजमे सदस्यक व्यवहार पर अनेक प्रकार सँ नियंत्रण लगाओल जाइत अछि संगहि ओकरा अनेक क्षेत्रमे स्वतंत्रता सेहो प्रदान कएल जाइत अछि जाहिसँ विचार विमर्शक द्वारा अपन परिस्थिति केँ विशेष नीक बना सकए। परिणाम ई होइत अछि जे सामाजिक समस्या उत्पन्न होएबा पर सुधार कार्य संभव भए पबैत अछि। नियंत्रण एवं स्वतंत्रता एक्के सिक्काक दू टा पक्ष अछि।''[58] कहबाक तात्पर्य जे सामाजिक संबंधकेँ स्थापित करबाक हेतु लोककेँ एकटा सीमा धरि स्वतंत्रता नहि प्रदान कएने सँ, ओकर समुचित विकास संभव नहि भए सकैत अछि। वास्तविकता तँ ई अछि जे नियंत्रण एवं स्वतंत्रता एक दोसराक पूरक अछि।

उपर्युक्त तथ्यक आलोकमे कहल जा सकैत अछि जे समाजक निर्माण जाहि सामाजिक संबंध द्वारा होइत अछि, ओ संबंध अछि किछु रीति–रिवाज, कार्य करबाक विधि, अधिकारक व्यवस्था, सहयोगक स्थिति, नियंत्रणक साधन स्वतंत्रताक भावना आदि। ई विशेषता सभ स्थान–स्थान

---

[55] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसाद, समाजशास्त्र परिचय, पृ0–39
[56] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसाद, प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–39
[57] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–83
[58] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसाद, प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–39

पर पृथक–पृथक होइत अछि। एहि कारणें स्थानक दूरीक संगे समाजक प्रकृतिमे सेहो प्रायः भिन्नता देखबामे अबैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ समाज केँ एकटा एहन व्यवस्थाक रूपमे परिभाषित कएल जाइत अछि जे सामाजिक संबंधक रूपमे निर्मित होइत अछि तथा व्यवहारक अनेक विधिक निर्धारण कए प्रत्येक व्यक्तिक स्थिति एवं भूमिकाक निर्धारण करैत अछि।

2. **गिलिन** – समाजक परिभाषा दैत लिखने छथि, ''समाज तुलनात्मक दृष्टि सँ सभसँ पैघ एवं स्थायी समूह अछि जे सामान्य हित, सामान्य भूभाग, सामान्य रहन–सहन तथा पारस्परिक, सहयोग अथवा अपनत्वक भावनासँ युक्त अछि एवं जाहि आधार पर ओ समाज अपना केँ वाह्य रूपेँ समूहसँ पृथक रखैत अछि।''[59]

   गिलिनक एहि परिभाषाकेँ समाजक विवेचना हेतु वेशी उपर्युक्त नहि बूझल जा सकैत अछि। वस्तुतः गिलिन समाजक जाहि विशेषताक उल्लेख कएने छथि ओ समुदायक विशेषता केँ स्पष्ट करैत अछि, समाजक नहि।

3. **पार्क एवं बगेसिक कथन अछि जे** –'' समाज अनेक चालि, भावना, जनरीति, लोकाचार, प्रविधि एवं संस्कृतिक एकटा सामाजिक विरासत अछि जे मानवक सामूहिक व्यवहारक निर्धारण करैत अछि।''[60]

4. रयूटर'क अनुसार ''समाज एकटा अमूर्त्त धारणा अछि जे एकटा समूहक सदस्यक बीच पाओल जायबला पारस्परिक संबंधक सम्पूर्णताक बोध करबैत अछि।''[61] रयूटर समाज केँ अत्यन्त सरल ढ़ंग सँ परिभाषित कएने छथि। वस्तुतः लोकक बीच पाओल जायबला संबंध एवं अर्न्तक्रिया सएह सामाजिक जीवनक निर्माण करैत अछि तथा एहि अर्न्तक्रियाक द्वारा 'समाज' जीवित रहैत अछि। एहि अर्न्तक्रियाक स्वरूप जेहन रहैत अछि समाजक स्वरूप सेहो ओहि तरहक भए जाइत अछि।''[62]

5. गिन्सवर्गक कथन अछि जे ''समाज एहन व्यक्तिक संग्रह अछि जे किछु संबंध अथवा व्यवहारक विधि द्वारा संगठित अछि तथा ओहि व्यक्ति सँ भिन्न अछि जे एहि प्रकारक संबंध द्वारा बान्हल नहि अछि अथवा जकर व्यवहार ओकरा सँ भिन्न अछि।''[63]

   एहि परिभाषा सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे विभिन्न समाज केँ एक दोसर सँ पृथक करबाक आधार ओकर सामाजिक संबंधक भिन्नता अछि। संगहि, ई परिभाषा स्पष्ट

---

[59] Society is the largest relatively of permanent group who share common interests, common territory, a common mode of life and a common ' spirit decorps' OF BELONGINGNESS? WHEN by they distinguish themselves from outsides.
- J.L. Gillin, The ways of men. P-340.

[60] Part and Burgess, Introduction to the Science of Sociology, P-163

[61] E.B. Reuter, Handbook of Sociology, P-157

[62] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–85

[63] "Society is the collection of Individuals united bcertain relations or modes of behavior which mark them off from others, who do not enter into those relations or who differ from them in behaviours"
- Morries Ginsberg, Sociology, P-59

करैत अछि जे समाज व्यक्तिक समूह नहि अपितु ओकरा मध्य पाओल जायबला संबंधक व्यवस्था अछि। समाजशास्त्रमे लोकक अध्ययन तँ केवल एहि कारण सँ आवश्यक अछि जे व्यक्ति एवं समाज एक–दोसरक पूरब अछि। गिन्सवर्ग द्वारा देल गेल निम्नलिखित चार्ट सँ समाजक धारणा एवं संगठनकेँ स्पष्ट कएल जा सकैत अछि।

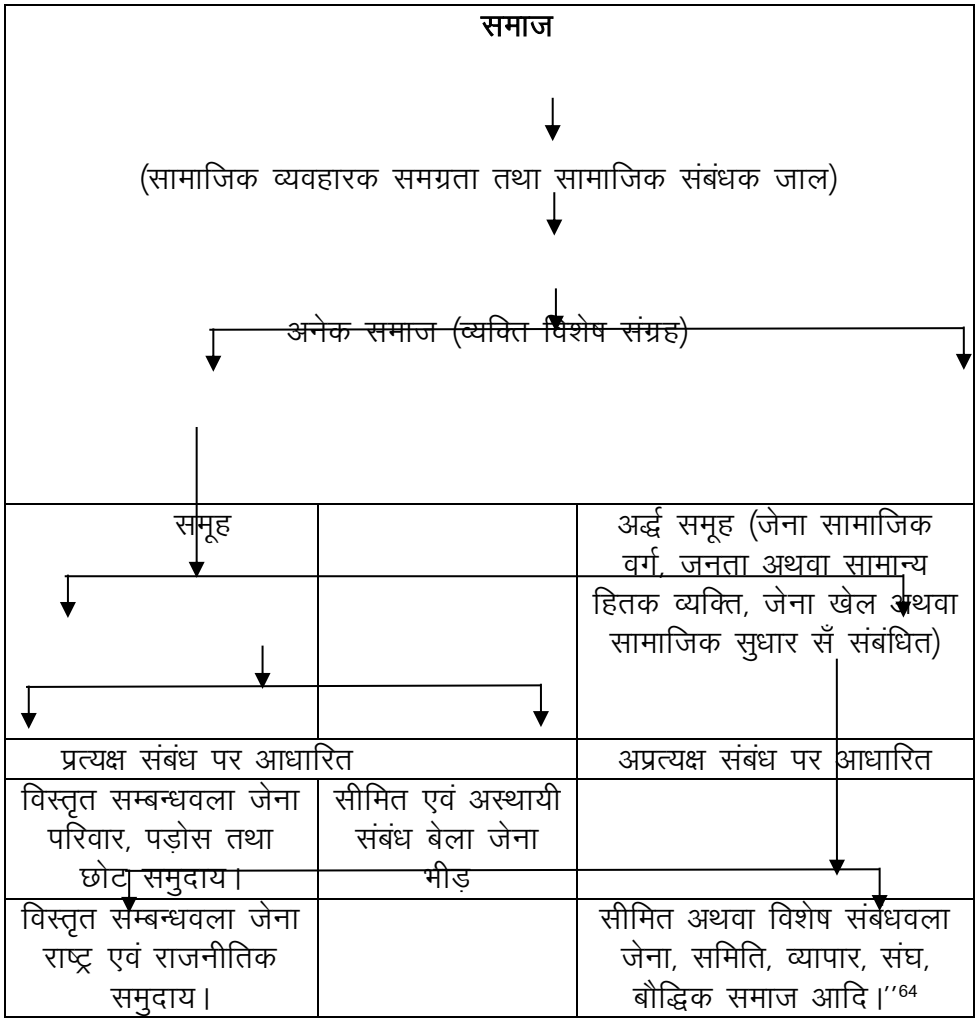

6. अर्नाल्ड ग्रीनक कहब छन्हि जे ''समाज एकटा वृहत्तर समूह अछि जे प्रत्येक लोकक अपन समूह अछि। (अथवा जे सभ व्यक्तिक धर अछि)''[65] एहि परिभाषाक अनुसार

[64] Morries Ginsherb, Sociology, P-43

[65] A Society is the largest group to which any individual belongs.
- A.W. Green: Sociology, P-36

समाज एकटा वृहत्तर समूह अछि जाहिमे सभ लोक एहि तरहेँ जुटल रहैत अछि जेना सभलोक अपन घरमे जुटल रहैत हो।

7. टॉलकट पार्सन्सक समाजकेँ अत्यधिक वैज्ञानिक ढ़ंग सँ परिभाषित करैत छथि जे '' समाज केँ ओहि मानवीय संबंधक पूर्ण जटिलताक रूपमे परिभाषित कएल जा सकैत अछि जे साधन एवं साध्यक संबंध द्वारा क्रिया करबा सँ उत्पन्न होअए चाहे जो यथार्थ ओहए अथवा प्रतीकात्मक।''[66]

पार्सन्सक परिभाषाक अनुसार सभ प्रकारक संबंध समाजक निर्माण नहि कए सकैत अछि। समाजक निर्माण ओहि संबंध द्वारा होइत अछि जे कोनो क्रियाक परिणामस्वरूप उत्पन्न होइत अछि। एहि तरहेँ पार्सन्सक परिभाषामे क्रिया शब्दक विशेष महत्त्व अछि। सभ प्रकार व्यवहार क्रिया नहि कहबैत अछि अपितु मात्र ओएह कार्य क्रिया कहबैत अछि जे कोनो उद्देश्यक प्राप्तिक हेतु साधनक रूपमे कएल गेल होअए। जेना बिना कोनो उद्देश्यक, सड़क पर घूमब ''क्रिया'' नहि अछि। तेँ एहन घूमनिहारक दू चारि व्यक्ति सँ किछु सम्पर्क स्थापित भए जयबाक पश्चातो ओहि सँ समाजक निर्माणमे कोनो सहायता नहि भेटत। एकर विपरीत परिवारमे प्रथाक अनुसार कार्य करबाक एकटा निश्चित उद्देश्य अछि। परिवारक संगठन बनौने राखब तेँ ई एकटा क्रिया भेल तथा एहि सँ सामाजिक संबंधक स्थापना होइत अछि। एहि तरहेँ पार्सन्सक अनुसार सभ क्रिया, खाहे ओ प्रत्यक्ष रूप सँ भेल जाइत होअए अथवा केवल प्रतीक्षात्मक होअए, सामाजिक संबंधक निर्माण करैत अछि तथा एहि संबंधकेँ ''समाज'' कहल जाइत अछि।

8. गिडिंग्सक कथन छन्हि जे 'समाज स्वयं एकटा संघ अछि, संगठन अछि, औपचारिक संबंधक योग अछि, जाहिमे परस्पर संबंध रखनिहार व्यक्ति एकसंग संगठित होइत अछि।''[67] एहि तरहें समाजक निर्माणमे सामाजिक संबंध एवं लोकक समान महत्त्व अछि। एहि परिभाषाक सभसँ पैघ दोष ई अछि जे एहिमे केवल औपचारिक संबंधक योगकेँ समाज मानल गेल अछि जखन कि समाजमे औपचारिक एवं अनौपचारिक दुनू प्रकारक संबंधक महत्त्व अछि।

9. **कुलेक अनुसार** – ''समाज'' रीति अथवा प्रक्रियाक एकटा जटिल स्वरूप अछि एवं एक दोसरक प्रभावक कारणेँ आगू बढ़ैत रहैत अछि एवं पूर्ण अस्तित्वमे एहि प्रकारक

---

[66] "Society may be defined as total computer of human relationships in so far as they grow out of action in term of means- end relationships, inteinsic or symbolic."

-- Tellcott Parsons: Encydopedia of social Science Vol. XIV. P-231

[67] "Society is the union herself, the organization, the sum of formal relations in which associating individuals are bound together."

- F.H. Giddings, Principles of Sociology, P-27

एकता पाओल जाइत अछि जे किछु एक भागमे होइत अछि ओ शेष पर प्रभाव डालैत अछि।''[68]

10. समाजक संदर्भमे फिक्टरक परिभाषा अत्यन्त प्रासंगिक अछि, ''समाज एहेन लोकक संगठित समष्टि अछि जे एक क्षेत्रमे रहैत परस्पर सहयोग कए अपन बुनियादी आवश्यकताक पूर्ति करैत अछि, जकर एक समान संस्कृति होइत अछि तथा जे एक पृथक (अथवा विशिष्ट) इकाईक रूपमे कार्य करैत अछि।''[69] एहि परिभाषामे कहल गेल अछि जे समाज व्यक्तिक समष्टि अछि जकर निम्नलिखित विशेषता अछि–

(क) ''समाज'' एकगोट भौगोलिक क्षेत्र होइत अछि।

(ख) ''समाज'' पारस्परिक सहयोग द्वारा आवश्यकता पूर्तिक माध्यम अछि।

(ग) प्रत्येक समाजक एकटा अपन विशिष्ट संस्कृति होइत अछि।

(घ) प्रत्येक समाज एकगोट विशिष्ट खण्ड इकाईक रूपमे अर्थात् अन्य समाजसँ पृथक इकाईक रूपमे कार्य करैत अछि। एहि तरहेँ देखैत छी जे ''फिक्टर'क परिभाषामे समाजक प्रमुख तत्वक उल्लेख कयल गेल अछि।''[70]

11. **एकगोट लेखकक कहब छन्हि जे** – ''समाज'' लोकक समूह नहि अछि। ''समाज'' तँ लोकक व्यवहार सँ उत्पन्न सामाजिक संबंधक तानाबाना अछि। एक व्यक्ति व्यवहार करैत अछि, दोसर ओहि व्यवहारक अपन व्यवहार सँ प्रत्युत्तर दैत अछि एवं ई क्रम चलैत रहैत अछि। हम मानसिक स्तर पर एक दोसर केँ जनबाक प्रयत्न करैत रहैत छी तथा सामाजिक अन्त प्रक्रिया होइत रहैत अछि, ओएह सामाजिक अन्तःक्रिया सामाजिक संबंधक आधार अछि। एहिसँ ''समाज''क उत्पत्ति होइत अछि।''[71]

12. एकगोट अंग्रेजीक विद्वानक कहल छन्हि के ''मानव समाजक अपने विरूद्ध स्वभाव परिणाम सँ बेंचवाकहेतु लोक जे साधन बनौने छथ, ओकरा समाज कहल जाइत अछि।''[72]

---

[68] प्रो0 कुमार शक्ति सिन्हा, समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–48

[69] "A Society is an organized collectivity of people, living together in a Common territory Co-operating in groups to satisfy their basic social needs, subscribing to a Common Culture, and functioning as distinct social unit."

- J.H. Fichter: Sociology, P-135

[70] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसाद, प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–34

[71] राम बिहारी सिंह ''तो मर'' समाजशास्त्र के मूल तत्व, पृ0–66

[72] "Society is a means for the propection of many against the Consequences of their own unrammelled hature."

Fkkel gkWCld dFku&lekt'kkL= dh foospuk] i`0&47

13. एकगोट दोसर अंग्रेजीक विद्वान समाजक परिभाषा दैत कहने छथि– ''मानव समाजक पारस्परिक शब्दमे बचतक कृत्रिम उपायक नाम 'समाज'' थिक।''[73]

14. राइट समाजक सरल परिभाषा दैत कहने छथि– ''समाज केवल लोकक समूह नहि अछि, ई समाजमे रहनिहार लोकक पारस्परिक संबंधक एकगोट व्यवस्था अछि''[74] एकर साम्य मैकाइवरक परिभाषा सँ कयल जाइत अछि।

निष्कर्षतः उपर्युक्त परिभाषाक विश्लेषणक पश्चात् समाजक विषयमे निम्नलिखित तथ्य प्रकाशमे अबैत अछि– (1) सामाजिक संबंधक जालकेँ समाज कहल जाइत अछि, (क) ई सामाजिक संबंध समाजक सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, सांस्कृतिक क्रियाक मूलमे रहैत अछि, (ख) अतः ई सामाजिक संबंधक विभिन्न प्रकार होइत अछि एवं ई (ग) परिवर्तनशील होइत अछि। (2) लोकक ऐहन सम्पूर्ण समष्टि अथवा वृहत्तर समूहकेँ समाज कहल जाइत, जकर एकटा विशिष्ट संस्कृति होइत अछि, जे प्रत्येक व्यक्ति केँ समान रूप सँ नियंत्रित करैत अछि। (3) सामाजिक संरचना, संस्था, रीति, कार्यप्रणाली तथा आवश्यकताक निमित्त बनल समूहक नाम ''समाज'' अछि। उपर्युक्त तथ्यक आलोकमे समाजक परिभाषा एना प्रस्तुत कएल गेल अछि ''सामाजिक अन्तःक्रिया सँ उत्पन्न विभिन्न सामाजिक संबंध तथा लोकक आवश्यकतापूर्तिक निमित्त बनल संस्था, समूह एवं संरचनाक पारस्परिक संबंधक योगकेँ समाज कहल जाइत अछि।''[75]

उपर्युक्त परिभाषा सभमे प्रत्येक विद्वान द्वारा समाजक स्वरूप किछु भिन्न–भिन्न प्रकार प्रतीत होइत अछि। मुदा एहि सत्यकेँ प्रत्येक समाजशास्त्री मानैत छथि जे समाजक वास्तविक आधार सामाजिक संबंध अछि। एतवा होइतहुँ समाजक निर्माणमे कोन विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, ई विषय विवादास्पद अछि। एहि विवादकेँ समाप्त करबाक हेतु, समाजक संकल्पना केँ विशेष स्पष्ट करबाक हेतु समाजक विशेषताक अध्ययन आवश्यक अछि जे प्रत्येक समाजमे सर्वव्यापी रूपसँ पाओल जाइत अछि।

समाजशास्त्रीय तत्त्व :–

''समाज'' सामाजिक संबंधक व्यवस्था अछि। एकटा व्यवस्थाक रूपमे मेकाइवर एकर (समाजक) निम्नलिखित तत्वकेँ उल्लेखित कयने छथि।

1. **समाज जागरूकता पर आधारित अछि** – पारस्परिक जागरूकता समाजक सबसँ महत्त्वपूर्ण तत्त्व अछि। जागरूकताक दशामे स्थापित कएल गेल संबंध सएह समाजक निर्माण कए सकैत अछि। संबंधसँ डेस्क एवं टाइपराइटरक बीच सेहो होइत अछि

---

[73] "Society is an artificial device of mutual economy."
एडमस्मिथक कथन–समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–47

[74] "Society is not a group of people, it is the system of relationship that existis between the individuals of the group."
"Wright: Elements of Sociology.

[75] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसादः प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–35

किन्तु एहि दुनूक बीच जागरूकता नहि होएबाक कारणें ई सामाजिक संबंध नहि भेल। अतः ई संबंध समाजक निर्माण नहि कए सकैत अछि। लोक अपन आवश्यकताक पूर्ति करबाक हेतु एक दोसर सँ जागरूकताक दशामे संबंध स्थापित करैत अछि। अतः बिना जागरूकताक सामाजिक संबंध नहि भए सकैत तेँ समाजक निर्माण सेहो सम्भव नहि भए सकैत अछि।''[76] तेँ पिता–पुत्र, पति–पत्नी आदिक संबंध सामाजिक संबंध कहबैत अछि तथा जागरूकताक अवस्थामे ई संबंध होइत अछि। जागरूकताक अर्थ होइत अछि मानसिक चेतना। सामाजिक स्थितिमे चाहे सहयोग होए अथवा संघर्ष, एहि स्थितिक प्रति लोक अवश्ये जागरूक रहैत अछि। ई भए सकैत अछि जे जागरूकता प्रत्यक्ष नहि भए अप्रत्यक्ष होअए। ''लोकक अन्तर्गत पारस्परिक जागरूकता संबंधक जननी अछि। जागरूकता सँ संबंध बनैत अछि तथा संबंध सँ समाजक निर्माण सेहो होइत अछि।''[77]

2. **समाज अन्योन्याश्रिता पर आधारित अछि** – समाजक निर्माण कटएवला सभ संबंध एक दोसर पर निर्भर करैत अछि। सामाजिक प्राणीक जीवन स्वावलम्बी एवं परावलम्बी भावनामे बान्हल रहैत अछि। नेना जन्मसँ माता–पिता एवं परिवार पर आश्रित रहैत अछि। संगहि संग ''प्रकृति'' ओकरा पराश्रित रहबाक हेतु बाध्य करैत छैक। अतः देखल जाइत अछि जे अन्योन्याश्रिता लोकक स्वभाव अछि। जेना जीवनोपयोगी वस्तुतक व्यवस्था लोक स्वयं करैत अछि किन्तु काम इच्छा इत्यादि पूर्तिक हेतु प्रकृति पर आश्रित रहैत अछि।''[78]

किन्तु आलोचकक कहब छन्हि जे आदिम समाजमे लोक अपन प्रत्येक क्रिया स्वयं करैत छल। अतः ओहि समयमे लोग आवश्यक रूपसँ एक दोसर पर निर्भर नहि करैत छल। एहि कथन के स्वीकार करबाक पश्चातो ई मानए पड़ैत अछि जे यौन संतुष्टिक हेतु स्त्री–पुरूष आदिम समाजमे सेहो एक दोसर पर निर्भर करैत छल, एहि तरहेँ शिकार, पशुपालन एवं अन्य कोनो समूह सँ अपन रक्षा करबाक क्षेत्रमे लोकक जीवन एक दोसर पर निर्भर करैत छल। आदिम समाजक आकार अत्यन्त छोट होयबाक कारणें ओकर संबंध वेशी व्यापक नहि छल एवं एहि कारणें ओकरा सभक बीच पारस्परिक निर्भरता सेहो अत्यन्त सीमित छल वर्त्तमान समाजमे पारस्परिक निर्भरता रूप अत्यधिक व्यापक भए गेल अछि। आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवनक कोनो पक्ष नहि अछि, जाहिमे लोक एक दोसर पर निर्भर नहि करैत अछि।''[79] लोक 'समाज' पर विभिन्न प्रकारक आवश्यकताक पूर्ति हेतु निर्भर करैत अछि जे ''समाज'' द्वारा लोकके प्राप्त अछि। जेना अपन सुरक्षाक हेतु आनन्द एवं सुखद प्राप्तिक हेतु, शिक्षा प्राप्त करबाक हेतु, विभिन्न रूपक साधन प्राप्त करबाक, अपन मानसिक संतुष्टि

---

[76] "Society exists only where social being 'behave' toward one another in ways determined by their recognition of one another.

- Maciver and Page : Society, P-6

[77] प्रो0 कुमार शक्ति सिन्हा, समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–50

[78] प्रो0 कुमार शक्ति सिन्हा, समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–52

[79] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–88

एवं विभिन्न रूपक जीवनक स्वप्नक पूर्ति करबाक हेतु, आदि–आदि।''[80] राजनीतिक क्रियाक विकास तँ पूर्ण रूप सँ संबंधित अन्योन्याश्रिता पर आधारित अछि। एहि तरहे ँ आविष्कार एवं सुरक्षाक साधनक विकास सेहो पारस्परिक निर्भरते द्वारा संभव अछि। एहि तरहेँ ई कहल जा सकैत अछि समाजक निर्माणमे पारिवारिक निर्भरता आधारभूत तत्वमे सँ एक अछि जकर अनुपस्थितिमे ने तँ संबंधमे विचार कयल जा सकैत अछि आ ने नवीन परिस्थितिमे सफलतापूर्वक अनुकूलन कयल जा सकैत अछि। वास्तविकता सँ ई अछि जे पारस्परिक निर्भरताक भावना सएह लोकक बीच सहयोग एवं समानताक भावना उत्पन्न करैत अछि। एहि आधार पर अरस्तु लोककेँ सामाजिक प्राणी कहने छथि।''[81]कहबाक तात्पर्य जे सामान्य मानवीय जीवन बितएबाक हेतु सामाजिक संबंधक स्थापना करब आवश्यक अछि।''[82]

3. **समाज अमूर्त्त अछि** – '' समाज व्यक्तिक समूह नहि अपितु मानवीय संबंधक एकगोट अमूर्त व्यवस्था अछि। वस्तुतः समाज सँ एकटा ''शक्ति'' एवं ''व्यवस्था'क बोध होइत अछि जाहि तरहेँ ''विवाह'' लोकक समूह नहि अपितु कतोक नियमक व्यवस्था अछि जाहि माध्यमसँ पारिवारिक जीवनक निर्माण होइत अछि, ठीक ओहि तरहेँ ''समाज'' सेहो अनेक व्यक्तिक पारस्परिक संबंधक एकगोट व्यवस्था अछि जे सामाजिक शक्तिक रूपमे अपन सदस्य पर नियंत्रण रखैत अछि एवं ओकरा किछु नियमानुसार व्यवहार करबाक हेतु बाध्य करैत अछि। समाज एहि विशेषता केँ स्पष्ट करैत राहटक कथन अछि ''समाज व्यक्तिक समूह नहि अछि अपितु समूहक सदस्य बीच स्थापित संबंधक एकटा व्यवस्था अछि, तें ई अमूर्त्त अछि।''[83] किंग्सवेडेविसक कथन अछि– ''विभिन्न लोकक बीच अर्थपूर्ण अन्तःक्रिया सएह समाजक एकटा मुख्य तत्व अछि। अतः समाज अमूर्त्त अछि।''[84]

4. **समाजमे समानता एवं भिन्नता दुनूक समावेश अछि** – प्रत्येक समाजमे समानता एवं भिन्नता आवश्यक रूप सँ पाओल जाइत अछि। यद्यपि बाह्य रूपसँ समानता एवं भिन्नता दुनू एक दोसरक विरोधी प्रतीत होइत अछि किन्तु आन्तरिक रूपसँ दुनू स्थिति एक दोसरक पूरक अछि।''[85] एक्केटा कार्यक हेतु किछु एहेन स्थितिक आवश्यकता होइत अछि जे समान प्रकृतिक होअए एवं किन्तु स्थिति एहेन होइत अछि जाहिमे एक दोसर सँ भिन्नता पाओल जाइत अछि। एकर तात्पर्य अछि समाजक उद्देश्य, मनोवृत्ति एवं विचारधारामे समानता आवश्यक अछि जखन कि उद्देश्यक प्राप्तिक साधनमे भिन्नते होएबासँ सामाजिक जीवनक विकास होइत अछि। उदाहरणक हेतु, परिवारक स्थापना

---

[80] "Maciver and page: Society, P-8

[81] "Maciver and page : Society, P-8

[82] For normal humanity must have social relationship to make life literable 0Maciver and Page, P-8

[83] "Thought Society is a real thing, it means in essence a state or condition, a relationship and is, the therefore, hecessarily and abstraction."

- Wright, Elements of Sociology.

[84] किंग्सवेडेविसक अनुसार– समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–39

[85] "Maciver and page : Sociology, P-7

स्त्री पुरूषक समान काम प्रवृत्ति सँ होइत अछि। किन्तु दुनूक बीचमेम कार्यक विभाजने होएबा सँ परिवारकेँ स्थायी आधार भेटैत अछि।''[86]

(क) **समाजमे समानता** – समानता समाजक निर्माणक प्रारंभिक तत्व अछि। प्रत्येक समाजक सदस्यमे कोनो ने कोनो प्रकारक समानता भावना अवश्ये पाओल जाइत अछि। ई समानता चाहे शारीरिक होअए अथवा मानसिक, अथवा किछु व्यक्ति कोनो समान उद्देश्यक हेतु कार्य करैत होअए किन्तु प्रत्येक स्थितिमे एकगोट सीमा धरि एहि समानताकेँ होएब आवश्यक अछि। एहि भावनाकेँ समानताक चेतनाक नामसँ सम्बोधित कएल गेल अछि।''[87] आदिम समाज रक्त संबंध पर आधारित छल एवं एहि हेतु समानताक भावना ओहि समाजमे सभसँ विशेष पाओल जाइत छल। आधुनिक समाज ततेक जटिल एवं विस्तृत भए गेल विचार अछि जे– ''जखन हम एक विश्व'क सिद्धान्त पर विजय प्राप्त करए चाहैत छी तँ ई बात तखने संभव भए सकैछ जखन हम समस्त मानव प्रजातिक आधारभूत समानताकेँ मान्यता प्रदान करी।''[88] जे किछु होअए, ई एकगोट निश्चित तथ्य अछि जे समानतेक भावना मानवोचित गुणमे वृद्धि करैत अछि एवं लोककेँ संगठित कार्य करबाक प्रोत्साहन दैत अछि।

(ख) **समाजमे असमानता** – समाजमे जतय कतहु समानता अछि, ओहि ठाम दोसर दिस अनेक क्षेत्रमे एक दोसरक सदृश रहैत अछि तँ ओकर संबंध ओतबे सीमित होइत अछि जतेक चूटी एवं मधुमाछीक।''[89] एहेन स्थितिमे विचारशक्तिक कनेको आदान–प्रदान नहि भए सकैत अछि। कहबाक तात्पर्य जे असमानताक सेहो सामाजिक महत्त्व अछि। समाजमे व्यक्ति–व्यक्तिक बीच योग्यताक भिन्नता, कार्यक्षमताक भिन्नता, रूचिक भिन्नता इच्छा आकांक्षा एवं हितक भिन्नता पाओल जाइत अछि। एहि कारणें समाजमे प्रतिस्पर्धा प्रतियोगिता एवं उद्यमशीलताक भावना उत्पन्न होइत रहैत अछि जे समाजक प्रगतिक हेतु आवश्यक अछि।''[90]समाज एहि हेतु आकर्षक लगैत अछि जे भिन्न–भिन्न प्रकारक प्रवृत्तिक योग्यता एवं साहसिकतावला लोकक क्रिया प्रतिक्रिया निरंतर चलैत रहैत अछि। अन्यथा जखन सभ एक्के दिमागी हैसित रखैत सभी एकेक धंधा करैत तँ समाज आदिक स्थितिमे सएह रहैत। 'श्रम विभाजन' सामाजिक भिन्नताक एकटा परिणाम छल एवं श्रम विभाजन कालक्रमे सभ्यताक अधिसूचक बनल।''[91]

---

[86] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–88

[87] F.H.Gidings: Principles of Sociology.

[88] "If the strucggling principle of 'One world' is to win out it must necessarity rest upon the recognition of the fundamental likeness of the entire human race."
- Maciver, R.M. and Page C.H. Society,P-7

[89] "Society, however, depends on difference as well as an likeness. If people were all exactly alike, merily alike, their social relationships would be as limited, Perhaps as these of the ant and be."
Maciver : Elements of Social Sience, P-6.

[90] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसादः प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–41

[91] The dicision of labours is an index of civilization.
Maciver : Elements of Social Sience, P-6.

समाजमे स्त्री अछि, पुरूष अछि, भिन्न–भिन्न प्रकारक फैशन अछि, केओ किसान अछि, केओ– मजदूर अछि ई सभ एक दोसरक पूरक अछि। जेना भोजन प्राप्त करब एकटा सामाजिक उद्देश्य अछि एवं प्रत्येक व्यक्तिक ''सामने'' आवश्यकता अछि, किन्तु एहि उद्देश्य के प्राप्त करबामे कृषि, व्यापार व्यवसाय, सेवा अथवा मजदूरी विभिन्न साधन अछि जाहिमे व्यक्तिगत असमानता होएब आवश्यक अछि। एहि तरहे ँ लिंगक असमानताक कारणें 'समाज'मे प्रजननक क्रिया संभव भए पबैत अछि। व्यक्ति व्यक्तिक बीच हैसियत एवं भूमिकाक भेद अछि तदनुकूल ओ सामाजिक दायित्वक निर्वाह करैत अछि एवं एहि तरहे ँ समाजमे व्यवस्था अबैत अछि। समाजमे आविष्कार एवं क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तनक हेतु एहि भिन्नताक आवश्यकता अछि। आवश्यकताक भिन्नताक कारणें कोनो व्यक्ति के ँ अपन आवश्यकताक तीव्रताक बोध आविष्कारक बना दैत अछि।''[92] अपन सांस्कृतिक विशेष रंग, सांस्कृतिक विविधता ई सभ सेहो भिन्नताक सूचक अछि। असमानता के ँ तीन भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि। (क) जैविक असमानता, (ख) प्राकृतिक असमानता, (ग) सामाजिक तथा सांस्कृतिक असमानता। लिंग संबंधी भिन्नता जैविक असमानताक उदाहरण भेल। कार्यक्षमता, शारीरिक संरचना तथा किछु सीमा धरि मानसिक भिन्नता प्राकृतिकि असमानताक उदाहरण भेल। एकर अतिरिकत हित रूचि, प्रविधि एवं साधनक भिन्नता इत्यादि सामाजिक एवं सांस्कृतिक असमानताक उदाहरण अछि।''[93]

(ग) **असमानता समानताक अधीन अछि** – समाजमे समानता एवं भिन्नता दुनू पाओल जाइत अछि, किन्तु एहि सम्बन्धमे ई ध्यान राखब आवश्यक अछि जे समानताक अपेक्षा, असमानता विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। समानताक, प्राथमिकता अछि एवं भिन्नता गेल।''[94] उदाहरणार्थ– परिवारक निर्माण प्रारंभमे समान लक्ष्यक आधार पर होइत अछि पश्चात् पति–पत्नी एवं नेनामे कार्यक भिन्नता अथवा अधिकारक भिन्नता संभव भए पबैत अछि। श्रम विभाजन एकर सेहो नीक उदाहरण अछि। श्रम विभाजन बाह्य रूपसँ असमानता पर आधारित अछि जाहिमे प्रत्येक व्यक्ति भिन्न–भिन्न कार्य करैत अछि, किन्तु आंतरिक रूपसँ ई समानताक स्थिति अछि किएक तँ प्रत्येक व्यक्तिक उद्देश्य ''एकेक कार्य''के पूर्ण करब होइत अछि। ते मेकाइवर कहब ई उचिते अछि–"The division of labour is society co-operation before it is division."[95]

एहि तरहँ धनोपार्जन करबाक इच्छा समाजमे ''समान'' रूपमे पाओल जाइत अछि, एकर पश्चात् असमान संगठन, प्रयत्न, आविष्कार तथा संघ द्वारा धनक एकत्रीकरण संभव भए पबैत अछि। एहि सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे 'समानता' एक गोट प्रारंभिक स्थिति अछि जखन कि असमानता पश्चातक घटना।''[96]

---

[92] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसादः प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–42

[93] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसादः प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–87

[94] "Maciver and page : Society, P-8

[95] "Maciver and page : Society, P-8

[96] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–88

5. **समाजमे सहयोग एवं संघर्ष** – समाजमे सामाजिक प्राणीक बीच सहयोग एवं संघर्ष दूनू लक्षण पाओल जाइत अछि। सहयोग सँ समाजकेँ प्रेम, सहानुभूति, त्याग आदि देवीगुणक वृद्धि होइत अछि जे समाजकेँ व्यवस्थित ढ़ंग सँ रखैत अछि। संघर्ष, द्वेष, कलह, घृणा आदिक समाजमे संगठनक स्थितिक जननी अछि। समाजमे सतत् दुनू स्थिति विषमान रहैत अछि जाहिमे सहयोग सामाजिक संघटनकेँ एवं संघर्ष विघटनकेँ जन्म दैत अछि।''[97] एहि तँ ई प्रमाणित होइत अछि जे 'समाज' सहयोग एवं संघर्षक सम्मिलित रूपकेँ कहल जाइत अछि। एक समयमे दू व्यक्ति अंतरंग मित्र रहैत अछि एवं दोसर समयमे ओएह दुनू व्यक्ति एक दोसरक शत्रु सेहो भए सकैत अछि। ''प्रेम'' एवं त्यागक आदर्श केँ माननिहार पति–पत्नीमे सेहो कोनो समयमे गड़ि जाएब स्वाभाविक अछि। एहि सँ ई स्पष्ट भए जाइत अछि जे समाजमे सहयोग एवं संघर्ष एक दोसर सँ पृथक दू भिन्न तथ्य नहि अपितु अधिकतर स्थितिमे सहयोगक अन्त संघर्षमे तथा संघर्षक अन्त सहयोगमे होइत अछि।''[98] संघर्ष लोकक एकटा आन्तरिक विशेषता अछि जखन कि सामाजिक नियम लोककेँ सहयोग सिखबैत अछि पारिवारिक जीवनमे, राजनीतिक क्रियामे अथवा व्यक्तिगत आवश्यकताकेँ पूर्ण करबामे सहयोगक संगहि संग संघर्ष सेहो पाओल जाइत अछि। समाजक एहि दुनू पक्ष सँ चार्ल्सकूले ततेक प्रभावित भेलाह जे ओ मानि लेलन्हि–''हम समाजक प्रवृति पर जतेक अधिक विचार करैत छी ओतवे वेशी ई पबैत छी जे सहयोग एवं संघर्ष केँ एक दोसर सँ पृथक नहि कएल जा सकैत अछि।''[99] ई दुनू स्थिति एक्के प्रक्रियाक दू टा रूप अछि। एहि तरहेँ सहयोग एवं संघर्ष सामाजिक जीवनक दू टा अनिवार्य पक्ष अछि। एहि दुनू पक्षक विवेचन एहि तरहेँ अछि–(क) समाजमे सहयोग प्रत्येक व्यक्तिक सामाजिक जीवन सहयोग पर आधारित अछि। अपन आवश्यकताक पूर्तिक हेतु प्रत्येक व्यक्तिकेँ एक दोसरक सहयोग प्राप्त करए पड़ैत अछि ई सहयोग दू प्रकारक होइत अछि। (1) प्रत्यक्ष सहयोग (2) अप्रत्यक्ष सहयोग।

(1) **प्रत्यक्ष सहयोग** – कोनो समान आवश्यकता अथवा उद्देश्यक पूर्तिक हेतु जखन किछु व्यक्ति संगठित भए, समान भावनाएँ प्रेरित भए कार्य करैत अछि तँ ओ भेल प्रत्यक्ष सहयोग। गामक लोकक द्वारा जखन श्रमदान अपन गाममे सड़कक निर्माण कए, ओकरा मुख्य सड़क सँ जोड़ि देल जाएत तँ ई प्रत्यक्ष सहयोगक उदाहरण भेल। फुटबॉल, हॉकी अथवा क्रिकेट खेलाड़ीक टीम एक भावनासँ प्रेरित भए विषय प्राप्त करबाक हेतु खेलब, परिवारक सदस्यकेँ एक संग मिलि कार्य करब अन्य उदाहरण भेल। प्रत्यक्ष सहयोगक हेतु आमने–सामनेक सहयोग आवश्यक अछि।''[100]

(2) **अप्रत्यक्ष सहयोग** – एहि प्रकारक सहयोगक क्रियामे आमने–सामनेक संबंधक आवश्यकता नहि अछि, उद्देश्य एक्के होअए किन्तु उद्देश्यक पूर्तिक हेतु लोक पृथक–पृथक ढ़ंग सँ, पृथक स्थान पर उक्त कार्य अथवा उद्देश्यक पूर्ति करैत

---

[97] समाजशास्त्र की विवेचना, पृ0–50

[98] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–42

[99] चार्ल्सकूलेक कथनः समाजशास्त्र, पृ0–89

[100] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसादः प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–42

होअए।''[101] कोनो स्कूटर बनावएवला फैक्ट्री कें उदाहरणक हेतु लेल जा सकैत अछि। कोनो एकटा पाट पूर्जा एक स्थान पर बनैत अछि। दोसर समूह अन्य औजारक द्वारा दोसर स्थान पर दोसर पूर्जा तैयार करैत अछि। श्रम विभाजनक आधार पर, कार्यकुशलताक आधार पर प्रत्येक श्रमिकक कार्य बँटल रहैत अछि। अंतमे प्रत्येक कार्यक प्रतिफल होइत अछि स्कूटरक निर्माण। एहि दुनू प्रकारक सहयोग द्वारा समाजक व्यवस्था चलैत रहैत अछि।

(ख) **समाजमे संघर्ष** – प्रत्येक समाजमे सहयोगक संग–संग संघर्ष सेहो आवश्यक रूपसँ पाओल जाइत अछि। एकर कारण ई अछि जे प्रत्येक व्यक्तिक रूचि, योग्यता कार्यक्षमता एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे विभिन्नता रहैत अछि तथा प्रत्येक व्यक्ति अपन–अपन उद्देश्यकें प्राप्त करबाक हेतु एक दोसर सँ संघर्ष करैत अछि। ई संघर्ष सेहो दू प्रकारक होइत अछि। (1) प्रत्यक्ष संघर्ष (2) अप्रत्यक्ष संघर्ष।''[102]

(1) **प्रत्यक्ष संघर्ष** – लोकक बीच प्रत्यक्ष रूपसँ संबंधकें टूटि जयबाक स्थितिकें प्रत्यक्ष संघर्ष कहल जाएत। जेना साम्प्रदायिक झगड़ा होएत, पति–पत्नीक बीच विवाह विच्छेद होएत, एक पक्ष द्वारा हड़ताल अथवा घेरावक माध्यम सँ दोसर पक्षक विरोध करब अथवा दुनू पक्षक बीच मारि–पीट होएब आदि प्रत्यक्ष संघर्षक उदाहरण अछि। युद्ध प्रत्यक्ष संघर्षक चरम स्थिति अछि जाहिमे एक पक्ष दोसर पक्षक वेशी सँ वेशी हानि पहुँचयबाक प्रयत्न करैत अछि।''[103].

(2) **अप्रत्यक्ष संघर्ष** – आधुनिक युगमे अप्रत्यक्ष संघर्षक महत्त्व विशेष अछि। एहिमे लोक अप्रत्यक्ष रूपसँ दोसर व्यक्तिक हितमे बाधा पहुँचा कए अपन हितकें पूर्ण करबाक प्रयत्न करैत अछि। प्रतिस्पर्धा अप्रत्यक्ष सहयोगक सर्वोत्तम उदाहरण अछि। अप्रत्यक्ष स्तर पर संघर्ष एकदिश उदाहरण अछि एवं प्रतिस्पर्धाक रूप लैत अछि तँ दोसर दिस क्षति पहुँचयबाक प्रयत्न करैत अछि जेना प्रच्छन्न रूपसँ एक व्यापारिक समूह दोसरकें आर्थिक हितमे धक्का पहुँचाकए स्वयं विशेष लाभ प्राप्त करबाक प्रयास करैत अछि।''[104]

अतः देखल जाइत अछि जे सहयोग अथवा संघर्ष सम्मिलिते रूपमे समाजमे विद्यमान रहैत अछि। सहयोग उद्देश्यक प्राप्तिमे सहायक होइत अछि जखन संघर्ष द्वारा समाज सँ शोषण एवं उपन्यासक समाप्ति कएल जाइत अछि। सत्य तँ ई अछि जे सहयोगक स्थापना अनेको संघर्षक पश्चाते संभव भए सकल अछि। वर्त्तमान समाजमे सहयोगक जे व्यवस्थित रूप देखबामे अबैत अछि ओकर पृष्ठभूमिमे असभ्यता एवं बर्बरताक युगमे होमएबला अनेक संघर्ष रहस्य आवरणमे झाँपल अछि। तें मेकाइवरक कहब ई उचिते अछि जे–'' समाजक अर्थ संघर्ष पर विजय प्राप्त कए, स्थापिता कएल गेल सहयोग

---

[101] ऐजन, पृ0–43

[102] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–89

[103] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–43

[104] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसादः प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–83

अछि।''[105] सहयोग एवं संघर्षक व्याख्या सँ ई स्पष्ट भए जाइत अछि जे समाजमे संघर्षक अपेक्षा सहयोगक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। सहयोग प्रत्येक सामान्य परिस्थितिमे आवश्यक होइत अछि, जखन कि संघर्षक आवश्यकता केवल असामान्य परिस्थितिमे होइत अछि। सहयोग समाजक विकास हेतु आवश्यक अछि तखन कि संघर्ष किछु समयक हेतु बाधा अवश्ये पहुँचबैत अछि। कखनो–कखनो संघर्ष सँ सामाजिक संबंध विषम भए उठैत अछि। एहि तरहेँ सहयोगक अधीन स्वीकार करब उचित अछि।''[106]

6. **समाज विस्तार**– समाज केवल लौके– धरि सीमित नहि अछि अपितु अन्य कतेको जीवधारी सेहो सामाजिक तत्व पाओल जाइछ।''[107] ई बात ज्ञात अछि जे सामाजिक निर्माण जागरूक सम्बन्ध द्वारा होइत अछि एवंज तए कतहुँ ई संबंध पाओल जाइत अछि ताहिठाम समाजक निर्माण भए सकैत अछि। एहि दृष्टिकोण सँ लोकक अतिरिक्त अन्य जीवधारीमे सेहो समाजक सदृश व्यवस्था पाओल जाइत अछि। उदाहरणक स्वरूप केरेबरा जातिक चूटीमे रानी चूँटी अन्य चूट्टीसँ सएगुन पैघ होइत अछि। ओकरे इच्छा सँ सभटा चूट्टी वस्तुक संग्रह एवं वितरण करैत अछि तथा स्थान परिवर्तन करैत अछि। विकसित पशुमे हाथीक हेंजमे आश्चर्यजनक सामाजिक तत्व पाओल जाइत अछि। ओकरा बीचमे शक्ति एवं यौन संबंधक क्षेत्रमे सेहो सकटा निश्चित व्यवस्था पाओल जाइत अछि। एकर अतिरिक्त भेड़, हँस, मधुमाछी आदिमे ते हो सामुहिकता एवं सामाजिकताक लक्षण पाओल जाइत अछि अतः पशु–पक्षी आदिक समाजक अस्तित्वमे विश्वासकरब युक्तिसंगत प्रतीत होइत अछि तेँ मेकाइवर कहने छथि जे '' जतय जीवन अछि, ततय समाज अछि।''[108]

यद्यपि अन्य जीवधारी समाजक सदृश तत्व प्रदर्शित करैत अछि किन्तु एकरा सभक मध्य मानसिक जागरूकताक स्थिति मानव सँ बहुत कम अछि। अन्य प्रत्येक प्राणीमे ई जागरूकता यंत्रवत होइत अछि अर्थात ओ सभ एक दोसरक कार्य देखि व्यवहार करब सीखैत अछि। एकर विपरीत लोकमे अनुभव एवं विचारशक्ति सँ जाहि जागरूकताक विकास होइत अछि ओ बहुत उच्च श्रेणीक अछि।''[109] अतः मानव समाजक तत्व पशु समाजसँ एतेक पृथक होइत अछि जे दुनूमे तुलना करबाक कोनो प्रश्ने नहि उठैत अछि। संस्कृति लोकेक एकटा अनमोल सम्पत्ति अछि। इएह संस्कृति मानव समाज केँ अन्य समाज सँ पृथक करैत अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे समाजक कल्पना अन्य क्षेत्रमे कयल जा सकैत अछि मुदा मानवे समाज सकटा व्यवस्थित एवं पूर्ण समाज अछि। एहि कारणें समाजशास्त्रमे केवल मानवे समाजक अध्ययन कयल जाइत अछि।

---

[105] ''सोसाइटी इज को–ऑपरेशन क्रोस्ड वाइ द कम्फीक्ट'': प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–43

[106] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–90

[107] "Society is not limited to human beings. There are animal Societies of many degree."
- Maciver and Page, Society, P-6

[108] "Society is not limited to human beings. There are animal Societies of many degree."
- Maelver and Page, Society, P-6

[109] "Where there is life, there is Society."
- Maciver and Page, Society, P-6

समाजमे परिवर्त्तशीलता :–

परिवर्त्तनशीलता अथवा गतिशीलता प्रकृतिक नियम अछि। मानवीय संबंधसँ निर्मित समाज प्रकृतिक अभिन्न अंग अछि। अतः समाजक स्वरूपमे परिवर्तन होएब सेहो स्वाभाविके अछि।[110] समाज एकटा स्थिर धारणा नहि अपितु एहिमे किछु ने किछु परिवर्त्तन होइत रहैत अछि एकर कारण ई अछि जे समयक परिवर्त्तनक संगहि संग लोकक आवश्यकता, परिस्थिति एवं विचारमे परिवर्तन भए जाइत अछि जखन कखनो परिस्थिति एवं विचारमे परिवर्त्तन होइत अछि तँ पारस्परिक संबंधक प्रकृतिमे सेहो परिवर्तन भए जाइत अछि। संघक इएह परिवर्तन समाजक स्वरूपकेँ परिवर्तित कए दैत अछि।''[111] उदाहरणार्थ (क) आइ लोकतांत्रिक समाजमे शामक सभसँ गरीब व्यक्ति ओतवे हैसियतक नागरिक अछि जतेक भारतक राष्ट्रपतिः दुनूक वोटक एक्के मूल्य अछि। प्राचीनकालमे शुरू एवं शिष्यक बीच जे संबंध छल से आई नहि रहल। एहि अर्थमे हम कहि सकैत छी जे नव भारतीय समाज प्राचीन भारतीय समाजसँ भिन्न अछि। ई बात संसारक सभ समाज पर घटित होइत अछि। तेँ ई कहल जाइत अछि जे परिवर्तन समाजक नियम अछि।''[112]

मायानन्द मिश्र 'खोता ओ चिड़ै''मे सामाजिक परिवर्तनकेँ अंकित करबाक चेष्टा कएल गेल अछि। एहिसँ पूर्व–धीरेन्द्रक ''भारूकवा'' तथा ललितक ''पृथ्वीपुत्र''मे शोषित वर्गक चित्रण कयल गेल अछि। भोरूकवामे नवजागरणक संदेश भेटैत अछि। ठकवा परम्परावादी किलानक प्रतिनिधित्व करैत मालिकक पैघसँ पैघ अत्याचारक विरोधमे किछु नहि बजैत अछि किन्तु बुधनाकेँ एहन समाजमे रहब सह्य नहि छैक। ओ शहरक वाट धरैत अछि संग–संग ओतए जाए मालिकक बेटाक सहानुभूति प्राप्त करैत अछि ''भौरूकवा'' मैथिली उपन्यास साहित्यकेँ नवीन आलोक प्रदान करैत अछि किन्तु जमींदारी उन्मूलनक फलस्वरूप उपस्थित समस्याकेँ लए लिखल गेल ललितक पृथ्वीपुत्र''मे सामाजिक परिवर्तनक स्वर आओर वेशी मुखरित भेल अछि।

मिथिलाक सामाजिक जीवनमे समस्याक कोनो कमी नहि छल। प्रबल धार्मिक संस्कारक कारणे मैथिलीक भाग्यवादी होएब स्वाभाविके। तेँ हेतु सामाजिक समस्याक समाधान देखयबाक अपेक्षा ओकरा भाग्यक फल बूझल मैथिली उपन्यासकार लोकनिकेँ वेशी युक्तियुक्त बुझि पड़लैन्हि। पुनर्विवाह, चन्द्रग्रहण, सुशीला, माधवी–माधव आदि एहि प्रकारक उपन्यास थीक। सुख–दुःख, नीक अधलाह, सभ भाग्येक फल थिक एकर उदाहरण सुशीलाक चरित्रमे भेटैत अछि। प्रारंभ सँ लए अंतधरि हुनका जीवनमे दुःखे–दुःख छैन्हि एहि दुःखक जीवनसँ ऋण पयबाक हुनका एक मात्र रास्ता आत्म–हत्या बुझि पड़ै छन्हि। कठोर सामाजिक बंधनसँ मुक्ति पयबाक कल्पना मात्रो नहि कयल जा सकैत छल। समाजक सोझाँ आत्म–समर्पण करबाक अतिरिक्त ओकरा हेतु कोनो दोसर रास्ता नहि छलैक। जीवनक एकमात्र उद्देश्य सामाजिक कठोर सँ कठोर

---

[110] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–91

[111] डॉ0 गोपाल कृष्ण अग्रवालः समाजशास्त्र, पृ0–90

[112] डॉ0 गोपी कृष्ण प्रसादः प्रारंभिक समाजशास्त्र, पृ0–44

नियमक पालन करब छल। एहन परिस्थितिमे सुशीलाकेँ नियमक पालन करब छल। एहन परिस्थितिमे सुशीलाक चरित्रमे व्यक्तित्वक विकास पयबाक आशा राखव निरर्थक।

जे सामाजिक प्रथा मनुष्य एवं समाजक हितक हेतु बनाओल गेल छल परिस्थितिमे परिवर्तन भेलासँ ओहिमे सुधारक प्रयोजन बूझल जाय लागल। विकृति संस्कार एवं कुप्रथाक कारण सुशीला सदृश निरीह बालिकाक जीवन व्यापी कष्ट देखतए एहि सामाजिक, कुरीतिक सुधारक माँग कएल जाए लागल।

ओतवे नहि तथाकथित आदर्श जीवनक पालन करबामे अपनाके असमर्थ बूझि व्यक्ति समाजक प्रति विद्रोहक भावनासँ प्रेरित भए ओकर बँधनके तोड़बाक चेष्टा करए लागल तथा एहु प्रकारक उपन्यासक दृष्टि होमए लागल जाहिमे धर्म अथवा समाजक नाम पर अत्याचारकेँ सहन नहि करबाक चेष्टा भेल अछि।

क्रमशः परिस्थिति बदलैत अछि। व्यक्ति चेतनाक नवोन्मेष भेला पर व्यक्तिमे समाजसँ संघर्ष करबाक, परिस्थितिसँ संघर्ष करबाक भावनाक उदय होइत अछि। एहि प्रकारक संघर्ष उपस्थित कएनिहारमे श्री हरिमोहन झा कनाम अग्रगण्य अछि। अनमेल विवाह जनित सामाजिक समस्या के देखि ई क्षुब्ध भए जाइत छथि। समाज पर केहन व्यंग्य करैत छथि से द्रष्टव्य थिक– समाजमे बी0ए0 पास पतिक जीवन संगिनी ए0बी0 पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह, जाहि समाजकेँ दाम्पत्य जीवनक गाड़ीमे सरकसिया थोड़क संग निरीह वासीके जोतैत कनेको ममता नहि लगैत छन्हि ताहि समाजक महारथी लोकनिक कर–कुलिशमे ई पुस्तक सविनय सानुरोध ओ समय समर्पित।''[113]

''जीवकान्तजी अपन उपन्यास 'पनियत''मे सामाजिक समस्या के देखौलन्हि अछि जाहि मध्य नायक अरविन्द केँ समाजशास्त्रमे एम0ए0 रहितहुँ सेवावृत्ति नहि भेटैत छन्हि आओर ओ फैसला करैत छथि जे गाममे रहि अपन खेती–गृहस्थी करो। मुदा को गामक वातावरण सँ सामंजस्य स्थापित नहि कए पबैत छथि बाधक होइत छैन्हि उच्च शिक्षा एवं मिथ्या प्रतिष्ठाक मोह तथा गामक कुचेष्ठाक भय। तथापि ओ साहस करैत छथि, परन्तु घोर रौदी मुँह बावि–आवि सम्मुख ठाए भए जाइत छन्हि। पारिवारिक स्थिति दयनीय दयनीय भए जाइत छैन्हि। चाहितहुँ परिवारके सहायता नहि कय पबैत छथि। निरूपराय भेल अतः– मित्रक वीचक कृत्रिम संबंध पति–पत्नी–मध्य निहित व्यक्तिवादी भावनाक कारणें उपस्थित विभेद कार्यालयक अनुशासनहीनता ओ साहित्य क्षेत्रमे व्याप्त आडम्बर आदिक वर्णन कए उपन्यासकार वर्त्तमान पीढ़ीक अभिशप्त–आत्माकेँ उद्घाटित करबाक प्रयास कयने छथि। एहिना 'युग पुरूष''मे वर्त्तमान व्यवस्थाक आलोचना कयल गेल अछि जाहि व्यवस्थामे शंकर नामक चरित्रवान ओ आदर्शवान नवयुवक सुशिक्षित रहितहुँ। अपन जीवनमे असफल होइत अछि तँ चरित्रहीन रतना सुसम्पन्न ओ सुखी भए जाइत अछि। उपन्यासकारक कथना अछि जे एहि खंडित विश्वास ओ भ्रष्टाचारक युगमे अपनाकेँ जे तदनुकूल बनाए लैत छथि, सएह वस्तुतः युग पुरूष थिकाह।

---

[113] कन्यादानक पंचम संस्करण (1949)–समर्पण।

''नवारम्भ''मे निश्चये उपन्यासकार, ग्राम्यजीवनक विविध पक्ष ईर्ष्या'–द्वेष, छल–कपट, स्वार्थपरता, दलितवर्गक शोषण ग्राम्य राजनीतिक विद्रूपता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार प्रभृतिक सजीव ओ यथार्थ चित्र अंकित करबामे अपन प्रतिभाक उत्तम परिचय प्रयास जी देने छथि।

''गिरहकट्ट'मे निम्नवर्गीय व्यक्तिक दुर्दशाक वर्णन करैत वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था पर एहि मध्य घोर प्रहार कयल गेल अछि। देश स्वतंत्र भेल, जमींदारी प्रथा समाप्त भेल, तथापि निम्नवर्गीय समुदायकेँ सम्यक उन्नति करबाक मार्ग अवरूद्ध अछि। पंडित जी कालूक समान व्यक्ति समाजमे पसरले छथि जे भविष्यक आशा बालकवृन्दकेँ उन्मार्गमे लगाए पतनक गर्तमे खसबैत रहैत छथि।

''श्री गंगेश गुंजन अपन पहिल लोक''मे एक एहन शिक्षित नवयुवक राजुक कथा कहल अछि जे समाजमे व्याप्त विसंगति एवं असंतुलनक संवेदनशील द्रष्टा बनल तथा अन्तस्थलमे सुनगैत विक्षोभ ओ कुण्ठाक उत्पीड़नकेँ विवश भावे सहैत ओ साम्प्रदायिक विषमताक शिकार बनैत थाकल, हारल आ निष्क्रिय बनल रहैत अछि।''[114]

श्री सुधांशु शेखर चौधरी अपन उपन्यास ''दरिद्र हिम्मरि'' मध्य अमलक जीवनकथाक माध्यमसँ उपन्यासकार निम्नमध्यवर्गीय परिवारक कतोक सामाजिक समस्या पर विचार व्यक्त कयल अछि।

श्रीमती लिली रेक 'पटाक्षेप' नक्सलवादी भूमिगत आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर आधारित एकटा लघु उपन्यास थिक। स्वतंत्रताक पश्चातो भूमि जीवी ग्राम्य–जनताकेँ समताक अधिकार नहि भेटलैक एवं ओकर शोषण होइत रहतैक। फलस्वरूप रक्त–क्रान्तिक उग्र–भावना जागरूक तरूण लोकनिक अन्तस्थलकेँ उद्वेलित करए लागल। शिव नारायण एहने नक्सलवादी नेता थिक जे बटाईदार केँ आधा फसिल मालिककेँ देवासँ रोकैत अछि जो क्रमिक अपन प्रभाव बढ़बैत जाइत अछि। ओकरा जन–समर्थन एहि रूपक प्राप्त भेलैक जे 'सुन–सुन' चाहैत छल चीन देशक इतिहास, माओ–त्से–तुंगक ''बीस वर्षक दीर्घ युद्ध यात्रा एवं अंतमे सर्वहाराक विजय। ''एहि प्रक्रियामे पूर्णियाँ जिलाक तुलसीपुर ग्राममे वर्ग संघर्ष उग्र भए उठल। विभिन्न प्रान्तक उग्रपंथी नवयुवक अनिल, दिलीप ओ सुजीत'' ओतए आवि शिवनारायण सँ मिलि रक्तक्रान्तिक बनवए लगलाह। परन्तु वृद्ध लोकनिक विरोध, पार्टीक कतोक सदस्य द्वारा डकैतो, संघटनक दुर्बलता आदि कतोक कारणें नवयुवक लोकनिक उत्साह कम होइत गेलैन्हि एवं पुलिस द्वारा एहि जनक्रान्तिक दमन कए गेल। 'पटाक्षेप'मे उपन्यासकारक नक्सलवादी क्रान्ति भावनाक प्रति सहानुभूतिपूर्ण प्रगतिशील प्रवृत्तिक दर्शन होइत अछि।''[115]

श्री विभूति आनन्दक 'सुनगैत एकटा गामक कथा'मे उपन्यासक तत्व वेशी अछि, एहि मध्य एकटा गाम रामनगरक नवजागरणक परिवर्तन प्रक्रियामे गुजरैत सामाजिक परिस्थिति एवं मानवी मनोवृत्तिक सजीव चित्रण भेल अछि। निम्न ग्रामीण वर्गमे क्रमिक उच्च वर्गक वर्चस्वताक

---

[114] डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश''–मे0 साहित्यक इतिहास, पृ0–315

[115] डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश''–मे0 साहित्यक इतिहास, पृ0–318

प्रति विद्रोह, स्वाभिमान ओ संघटनात्मक शक्तिक उदय भए रहल छैक जकर नेतृत्व इन्दु ओ रमेश सन निर्धन–वर्गक नवशिक्षित युवक करैत छथि, उच्च वर्गक नवयुग चेतना सम्पन्न भैरव पाठक सन युवक एवं शांति सन नवयुवती जकर संग दैत छथिन्ह। उपन्यासकारक मन्तव्य अछि जे एहि संघर्ष प्रक्रियामे उच्चवर्गक वर्चस्वता क्रमिक कमी तँ अवश्य रहल अछि परन्तु एखनहुँ धरि अपन वर्चस्वताकेँ स्थापित रखबाक हेतु ओ नाना प्रकारक छल–छन्दक आश्रय लए रहल छथि। एहना स्थितिमे अशांतिपूर्ण तनाव बनल अछि एवं ग्राम भीतरे–भीतरे सुनगि रहल अछि।

सामाजिक सम्बन्धक आधार पतक सामुहिक कल्याण भावना अछि। विकासक गतिविधि एहि कल्याण भावना पर आधारित रहैत अछि। समाजशास्त्रीय तत्वमे आन्तरिक तथा बाध्य दुनू पक्ष सम्मिलित रहैत अछि। लोकाचार, लोक व्यवहार, लोक रूचि तथा लोक संस्कृति सँ एकर भूमिका बनबैत अछि। आधुनिक युगमे वैज्ञानिक विकासक कारणें, औद्योगिकरणक कारणें ओ परस्पर बढ़ैत सम्पर्कक कारणें सामाजिक गतिविधिमे परिवर्तन आएल अछि।

आधुनिक युगक परिवर्तनशीलता उपन्यासमे सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि। उपन्यासमे सम्पूर्ण जीवनक सम्पूर्ण समाजक विस्तृत चित्रांकन होएबाक संभावना अधिक रहैत अछि कि एक तँ एकर आधारफलक विस्तृत ओ आयाम व्यापक होइत अछि। एहिमे युग जीवनक वास्तविक चित्र प्रस्तुत होयबाक संभावना साहित्यक अन्य विद्यासँ अधिक रहैत अछि। तेँ समाजशास्त्रीय तत्त्वक समावेश एहिमे प्रचुरतासँ सन्निहित होयबाक संभावना अधिक होइत अछि।

मैथिली उपन्यासमे, मिथिलाक जन जीवनक, ओकर समस्या समयानुकूल स्थान पबैत रहल अछि। आँचलिक संस्कृतिक प्रति अधिक झुकाव रहबाक कारणें क्षेत्रीय प्रभाव ओ परिसरक अंकन होएब स्वाभाविक अछि।

मैथिली उपन्यासमे वैवाहिक समस्याकेँ उजागर करबाक प्रवृत्ति प्रारंभमे छल। क्रमशः आधुनिक युगक संघर्ष, नवीन समस्या, ओहिसँ उत्पन्न परिस्थिति ओ जागरूकताक उन्मेष एहिमे स्थान ग्रहण करैत रहल अछि।

तात्पर्य जे मैथिली उपन्यासमे परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रूपसँ समाजशास्त्रीय तत्वक समावेश होइत रहल अछि जकर (विवेचन) विश्लेषण अग्रिम अध्याय सभमे आवश्यकतानुसार कएल गेल अछि।

ISBN: 978-81-19149-27-8

अध्याय 3

मैथिली उपन्यासमे समाज चेतनाक विकास

गद्य साहित्यक एक अत्यन्त शक्तिशाली अंग उपन्यास अछि। उपन्यास एहेन कलाकृति अछि जे समस्त मानवताकेँ ग्रहण कए ओकर अभिव्यक्तिक चेष्टा करैत अछि। साहित्यक विकासक्रममे उपन्यासक आविर्भाव तखन भेल अछि। जखन ई अनुभव कएल जाए लागल जे यद्यपि साहित्यक हेतु कल्पनाक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि, किन्तु जीवनक स्पन्दनकेँ अभिव्यक्त करब कल्पनाक संगहि संग आवश्यक अछि। परिणामस्वरूप एहि साहित्यिक विद्याक अन्तर्गत पैद्य आकारक कथानक युक्त घटनावलीक वर्णन जीवनक अनुभूतिक क्रमबद्ध विवरणक रूपमे उपस्थिति कएल जाए लागल। निर्दिष्ट वातावरणक अन्तर्गत पात्रक चरित्र पर प्रकाश देल जाए लागल। क्रमशः कथानकक रूप जटिल होइत गेल। अनुभूति जन्य वास्तविकताक कारणें एकर स्वरूप क्रमशः निखरित गेल। गद्य रोमांसक अन्तर्गत जतए कल्पनाक प्रवाह मात्र पर जोर देल जाइत छल ओतए एहि साहित्यक विद्याक अन्तर्गत जीवनक वास्तविकताक पर बल देल जाए लागल। किन्तु एहु स्थितिमे कल्पनाक महत्त्व बनले रहल।''[116]

जे0पी0 प्रिस्टले उपन्यासक परिभाषा दैत लिखैत छथि जे किछु आलोचक भ्रमवश जाहि कथामे चाय पार्टीक वर्णन देखैत छथि ओकरा उपन्यास मानि लैत छथि तथा जाहिमे सामुद्रिक युद्धक वर्णन ओकरा गद्य रोमांस। हिनका मतें उपन्यास गद्यमे लिखल गेल साहित्यक ओ अंग थीक जाहिमे मुख्यतः कल्पित पात्र एवं घटनाक वर्णन रहैत अछि। ई उपन्यासकेँ जीवनक विशाल दर्पण मानैत छथि एवं एहि साहित्यिक विद्याक क्षेत्रके आन कोनो साहित्यिक विद्यासँ विस्तृत मानैत छथि।''[117]

उपन्यासक अन्तर्गत ओहि सभ घटनाक वर्णन कएल जाइत अछि जे कोनो ने कोनो व्यक्तिक जीवनमे घटल रहैत अछि। एहिमे कम सँ कम एतेक स्वाभाविकता रहब आवश्यक जे पढ़वाकाल बुझि पड़ए जे ई सम्भव अछि। एकर पात्रक हर्ष विषादक संग हम सुख–दुःखक अनुभव कए सकी। उपन्यास ओहि युगमे पुष्पित पल्लवित होइत अछि जखन लोकक तर्क शक्ति अत्यन्त सक्रिय, कल्पनाशक्ति तन्द्रितो किछु विवेचना शक्ति अत्यन्त जागरूक रहैत छैक।

उपन्यासक उपर्युक्त विश्लेषणसँ ई स्पष्ट भए जाइछ जे एहि साहित्यिक विद्याक आविभाविक प्रधान कारण सामाजिक चेतना अछि। मैथिली साहित्यमे जतए उपन्यासक प्रादुर्भाव विभिन्न विकसित साहित्यक प्रभावसँ बीसम शताब्दीक द्वितीय दशकमे भेल, जीवनक वास्तविकतासँ एकर घनिष्ठ संबंध होएब स्वाभाविके।

एतवा धरि निश्चित अछि जे उपन्यासक संबध व्यक्तिक जीवनसँ छैक आओर जें व्यक्ति एवं समाजमे अन्योन्याश्रय संबंध अछि तेँ सामाजिक चेतना उपन्यासक प्रमुख अंग अछि। हँ, ई

---

[116] डॉ0 अमरेश पाठक– उपन्यास ओ सामाजिक चेतना, पृ0–30
[117] डॉ0 अमरेश पाठक– उपन्यास ओ सामाजिक चेतना, पृ0–30

भिन्न विषय अछि जे– सामाजिक चेतनाक रूप जेना–तेना परिवर्तित होइत गेल अछि तेना–तेना उपन्यासक रूपमे सेहो परिवर्त्तन भए गेल अछि। पहिने अपन नेनाकेँ खेलयबाक क्रममे लोक कहैत छल– ''अटा–पटा, कौआ केँ सातटा बेटा, एकटा गेल गायमे, एकटा महीषमे आदि'' परन्तु आब ''एक के बाद अभी नहीं दो के बाद कभी नहीं'' लोकक दृष्टिकोणमे परिवर्तन आनि देलक अछि। ई सामाजिक चेतनाक विकसित रूप थीक। लोककेँ आइ ई ज्ञान भए गेल छैक जे बच्चाकेँ जन्म देवासँ वेशी महत्त्वपूर्ण छैक ओकरा समुचित लालन–पालन करब, भोजन–वस्त्र, आवास, शिक्षा–स्वास्थ्य–मनोरंजक उचित व्यवस्था करब सम्प्रति आवश्यक भए गेल छैक। स्वाभाविक छैक वर्त्तमान समयक वैज्ञानिक युगमे जखन लोक हवासँ गप्प करैत अछि, आकाशमे उड़ैत अछि, समुद्रमे हेलैत अछि, इंगलिश चैनेल पार करैत अछि, चन्द्रमा पर खेती करबाक योजना बनबैत अछि सामाजिक चेतनाक ओ रूप उपन्यासमे नहि रहतैक जे आई सँ 40–50 वर्ष पूर्व छलैक। कन्यादानक बुच्चीदाई सन बेटी आइ केओ नहि चाहैत अछि ई सामाजिक चेतनाक विकसित रूपक परिणाम थीक। मुंडन, उपनयन, कन्यादान, शिक्षा, कृषि, ज्योतिष, पावनि–तिहार सभमे नव रूप, नवरंग, नव चेतनाक आभास परिलक्षित भए रहल अछि फलतः कोनो उपन्यासकार अपनाकेँ एहिसँ वंचित नहि राखि सकैत छथि। समाजक बदलैत परिस्थितिक अनुकूल यदि विषय–वस्तु एवं ओकर उपस्थापनक शैली नहि रहत तँ ओ ओतेक प्रभावोत्पादक एवं रोचक किन्तु नहि भए सकैत अछि।

एम्हर जहिआसँ भौतिकवादक उदय भेल ओ आध्यात्मवाद वा अभिव्यक्तिवादक अस्त भेल समस्त कला ओ साहित्य सोवेश्यवाद भए उठल। ताहि क्रममे उपन्यास वा वृहत्वथा उद्देश्यकेँ विशेष स्थान देवए लागल–जीवनक ज्वलन्त समस्या सभक प्रति जागरूक रहब उपन्यासक धर्म बुझल जाए लागल। एहि प्रकारक जागरूकता सामाजिक चेतनाक अस्तित्व कहबैत अछि आओर से निके राखब प्रगतिशील ताक चैन्ह कहबैत अछि।

अलीगढ़ विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागक अध्यक्ष डॉ0 कुँवरपाल सिंह अपन नव प्रकाशित पुस्तक ''हिन्दी उपन्यास; सामाजिक चेतना''मे कतेको ठाम लिखैत छथि जे मैथिलीभाषी श्री बैद्यनाथ मिर ''यात्री'' एवं फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा ग्राम्य जीवनक चेतना सामाजिक चेतनाक विशेष अभिव्यक्ति भए सकल छन्हि। अर्थात् जाहि कृति सभमे मिथिलाक सामाजिक चेतना आधुनिकतम ओ परिपक्व रूपमे प्रकट छैक तकरा आर्थिक शोषणक कारणें हमर श्रेष्ठ कलाकार अपना मातृभाषामे व्यक्त नहि कए सकलाह ई अत्यन्त लज्जा ओ खेदक विषय थिक।

''अपने उपन्यास बलचनमा (1953)के माध्यम से नागार्जुन (हिन्दीमे यात्री जी नागार्जुन नाम सँ लिखैत छथि) ने सर्वप्रथम ग्रामीण जीवन और भूमि व्यवस्था के साथ बनते–बिगड़ते संबंधों को उद्घाटित किया है। इस उपन्यासमे सामन्तवादी शोषण और खेतिहर मजदूर की दयनीय अवस्था का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया गया हे जो मर्म को छू लेता है। ''जीवन के कटु यथार्थ ने बलचनमा को क्रान्तिकारी बना दिया। वह तो स्पष्ट कहता है– ''भूख के मारे दादी और माँ आम की गुठलियों का गुदा चूर–चूर कर फाँकती है, वह भी भगवान ठीक करते है। और सरकार आप कनकजीर और तुलसीफूल से खूशबूदार भात, अरहर की दाल, परवल की तरकारी, घी, दही, चटनी खाते हैं, सो भी भगवान से सीखा है। ''बलचनमा के ये शब्द सीधे शोषण प्रक्रिया पर करारा व्यंग्य है। बलचनमा आगे चलकर स्पष्ट कहता है–''जैसे अंगरेज बहादुर से सोराज लेने के लिए बाबू–भैया लोग एक हो रहे हैं, हल्ला–गुल्ला और झगड़ा–झंझट मचा रहे हैं उसी तरह जन–बनिहार मजदूर और बहिआ खबास लोगों को अपने हक के लिए

बाबू और भैया से लड़ना पड़ेगा। ''बलचनमा''मे सामन्ती परिपीड़न से शोषितजन सामन्ती मान्यताओं को नकार रहा है।''[118]

श्री यात्रीक कहब छन्हि जे ''बलचनमा'' (ध्यान देल जाए ई शुद्ध मैथिली नाम थिक) मैथिलीमे लिखलन्हि। परन्तु ई हिन्दी उपन्यासक सामाजिक चेतना देखाबएवला अग्रणी उपन्यास कहल गेल अछि।

''वरूण के बेटे'' के माध्यम से उपन्यास लेखकों को रास्ता दिखाया कि यौन–रोगों से पीड़ित, कुंठाग्रस्त एवं अहंवादी मध्यवर्गीय पात्रों के शहरी जीवन के भटकाव, स्वयं अपने आपमे खोए हुए, महाप्रगति के कोलाहलमे उपेक्षित और अपने तथा समाज के संबंधमे भ्रमपूर्ण विचार रखनेवाले पात्रों का वैयक्तिक चित्रण करना ही उपन्यास की कथावस्तु नहीं अपितु सीधे–सादे समस्याओं से लड़ते–जुझते, आगे बढ़े और परिवर्तन करने का हौसला रखनेवाले ग्रामीणों का जीवन ही वास्तवमे कथावस्तु हो सकती है। भला ही गोढ़ियारी के छोटे से ग्रामोचल की समस्याएँ महान भारत की समस्याएँ है जिनमें भूमि– व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था और राजनीति भी संश्लिष्ट है।''[119]

फणीश्वरनाथ रेणु का ''मैला आँचल'' मेरीगंज को राजनीतिक चेतना को उसकी सम्पूर्ण जटिलता के साथ हमारे सामने लाता है। मेरीगंज को आर्थिक विषमता और गाँधीवादी राजनीति की असफलता गाँव की चेतना को एक नया स्वर देते है। काँग्रेस की अवसरवादी राजनीति के स्थान पर वर्ग संघर्ष मेरीगंज को एक नया प्राण देता है। ''मैला आँचल'' जमींदारी उन्मूलन के बाद ग्रामीण जीवन की स्थिति का प्रामाणिक दस्तावेज है।''[120]

ओहिना रेणुक ''परती'' परिकथामे ''स्वतंत्रता के बाद बदलती हुई भूमि व्यवस्था, बदलाव के साथ बदलते हुए ग्रामीण जीवन के आस्था विश्वास के स्वरमयी व्यवस्था के अपने लिए अधिक उपयुक्त स्थान बना लेने की प्रतिस्पर्धा का स्वर मुखरित हुआ है। देहातों में हरित–क्रान्ति आरंभ हो रही है। फलस्वरूप कृषि का औद्योगिकरण आरंभ हुआ है। जित्तन बाछू का ट्रेक्टर छल नये परिवर्तन का सूचक है। भूस्वामी वर्ग का चरित्र बदलने लगा है– पूँजीवादी प्रवृत्तियों का समावेश होने लगा है।''[121]

एहि तरहेँ हमरा लोकनि देखैत छी जे मिथिलामे बढ़ैत सामाजिक क्रान्तिक कथा मैथिलीक उपन्यासक सम्पत्ति नहि थिक हिन्दीक उपन्यासक उपलब्धि, सामाजिक चेतनाक श्रेष्ठतम उपलब्धि मानल जाइछ। एहि परिवेशमे मैथिली उपन्यासमे सामाजिक चेतनाक प्रथम किरण पड़ल अछि स्त्री–शिक्षा ओ पर्दा–प्रथा पर। मैथिलीक सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास ''कन्यादान'' एकरे परिणाम थिक। यद्यपि नववीन युगक प्रभाव ओ चेतनाकेँ ग्रहण करबाक हेतु समाज प्रस्तुत नहि छल। एहि क्रममे अमरजी ''मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण''मे लिखने छथि– ''ई

---

[118] डॉ0 कुँवरपाल सिंह–हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना, पृ0–158
[119] डॉ0 कुँवरपाल सिंह–हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना, पृ0–158
[120] डॉ0 कुँवरपाल सिंह, हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना,पृ0–159
[121] डॉ0 कुँवरपाल सिंह, हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना,पृ0–159

निर्विवाद अछि जे स्त्री शिक्षाक प्रचारमे, अनमेल विवाहक विरोधमे, हरिसिंह देवीय व्यवस्थाक कारणें समाजक बीच पसरल संकीर्णताक उन्मूलनक दिशामे एखन धरि प्रचुर कार्य भेल अछि आ तेँ उपन्यासक विषयवस्तुमे इएह सभ व्यापकतायें रहल अछि। पुनः ओ आगू लिखैत छथि– हमरा ओहिठाम नारीक हेतु गृह विज्ञान, पाक विज्ञान, बच्चाक हेतु स्वास्थ्य विज्ञानक संग आध्यात्मिक शिक्षा उपयुक्त छल, जे अनायास घरेमे कन्या प्राप्त कए लैत छलि। एक पठनीक रूपमे पर–गृह जाए, जाहि आदर्श ओ मर्यादाक संग दाम्पत्य जीवनक रथ केँ सुचारू रूपेँ चलबैत छलि, से एहि नूतन शिक्षा प्रणालीमे नष्ट प्रायः भेल जा रहल अछि। एहिठाम एखन धरि शिक्षा–प्राप्तिक एकमात्र उद्देश्य, पराधीन जीवनक वरण दरव आ ताहि रूपेँ जीविकोपार्जन कए जीवन–यात्राक परिभाषित धरि पहुँचल, रहल अछि, ताहिठाम एहि स्कूली शिक्षा तँ अस्पतालमे जन्म, धाइक द्वारा पालन, कोनो नगरक छात्रावासमे रहि विद्योपार्जन आदिक्रम माता–पिताक प्रति संतानक कर्त्तव्यकेँ आरो धुमिल बनौने जाइछ आ एक नवीन शब्द ''फैमिली'' माता–पिताकेँ अपना परिधिक अभ्यन्तर कथमपि नहि टपै दैतन्हि।''[122]

एहिठाम माइक हाथक रान्हल,स्नेहपूर्वक आगाँमे पसरल रूखो–सुखो अन्न आजुक ''विटामिन'' पौष्टिक खाद्यसँ बेसी बल– बुद्धिवर्द्धक होइत छल, कोनो बाबाजीक हाथक रान्हल आ माय अथवा पत्नीक हाथक रान्हल अन्नतक गुणमे कत पेय अन्तर होइत छैक से अभागल लोक की जानए गेल? आई देखि रहल छी इएह, आजुक कथाकथित शिक्षिता कन्या ग्राम्य जीवनक प्रति घृणा करैत अछि, ओकरा नागरिक जीवन चाहिऐक। जौर्जेट, चप्पल, लिस्टिक, घड़ी ओ चश्मा चाहिऐक, ओ चूल्हिक उपसिका बनि नहि, सहचरी बनि पतिक जीवनमे प्रवेश कएलक अछि, ओ फरमाईश करत, पुरूष ओकर पूर्तिक हेतु, जाहि कोनो कर्मसँ होइक, प्रयत्नशील रहल करौक, इएह दाम्पत्य जीवनक पद्धति बनल जा रहल अछि।

''एहि दृष्टिए साहित्यकार लोकनिकेँ सोचबाक चाही अमरजीक एहि पॉती सँ पूर्णतः सहमत छी। समाजक परिवर्त्तनक ई तात्पर्य कखनहु नहि होयबाक चाही आओर ई कार्य उपन्यासकार लोकनि कए सकैत छथि।''[123]

मिथिला एवं मैथिल–समाजमे तँ सामाजिक चेतना एखन आबिए रहल अछि तथा जँ–जँ ओ सामाजिक चेतना सभ जगतैक तँ तँ उपन्यास सभमे दिनानुदिन ओकर अभिव्यक्ति होइत जएतैक। हमरा लोकनिक ओहिठाम अन्य समाजक अपेक्षा सामाजिक चेतना किछु पहुचाएल अछि जकरा आगाँ बढ़एबाक कार्य किंवा सामाजिक चेतनोकेँ विभिन्न दिशामे विकसित करबाक कार्य उपन्यासकार अपन उपन्यासक माध्यम सँ कय रहल छथि।

ओना तँ कन्यादान सँ पूर्वहि मैथिलीमे अनेक उपन्यास लिखल गेल अछि मुदा हमरा लोकनि देखैत छी जे मैथिली उपन्यास मध्य सामाजिक चेतनाक वीजारोपण, मोटा–मोटी कन्यादानमे भेल अछि। जहिया 'कन्यादान'क पेनी छानल गेल, तहिआ महात्मा गाँधी अपन राष्ट्रीय आन्दोलनमे महिला लोकनिक आह्वान कए चुकल छलाह। आलोच्यकाल (1931मे) नारीक स्थिति केँ सुधारबाक दृष्टिसँ कतोक संवैधानिक प्रयास भेल, समाजमे विवाह–विच्छेद एवं

---

[122] चन्द्रनाथ मिश्र ''अमर'' मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण,पृ0–3

[123] चन्द्रनाथ मिश्र ''अमर'' मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण,पृ0–3

अन्यान्य सामाजिक कुप्रभावकेँ नष्ट करबाक ओ शिक्षा संबंधी संदर्भमे नारीक स्थितिमे सुधार करबाक आदर्श लक्षित भेल। हरिमोहन बाबूक विचारधारा एहि समस्त पूर्ववर्ती प्रयाससँ निश्चित रूपेँ प्रभावित भेल होएत। जहाँ धरि द्विराग्मनक संबंध अछि उपन्यासकारकेँ एकर संगठन करब अनिवार्य जेकाँ भए गेलैन्हि। कन्यादानक व्यापकता पहिनहि एतेक बढ़ि चुका छल जे पुस्तकालयसँ लड़ कए द्विरागमनिऑ कनिऑक पौतीमे ई साँठक एकटा महत्त्वपूर्ण वस्तु बुझए जाए लागल। उपन्यासकार द्विरागमनक आत्मनिवेदनमे स्वयं स्वीकार कएने छथि ''कन्यादानक जे विरोधी लोकनि कन्यादान लिखबाक हेतु हमर कपाड़ फोरवा पर आत छलाह से लोकनिक आब कन्यादानक द्वितीय भाग नहि लिखबाक हेतु हमर कपार फोड़वा पर विर्न्त भए गेलाह। कन्यादान उपन्यासमे लेखकक प्रधान अभीष्ट रहल अछि प्राचीन परम्परागत रूढ़ि आ नवीन अंग्रेजी विचार एहि दुनूक संवर्ग सँ उत्पन्न प्रतिक्रिया केँ विनोदात्मकायें प्रस्तुति। 'खाहे' अपन अन्ध–परम्परा हो वा अंग्रेजी सभ्यताक कुरीति, उपन्यासकार दुहूसँ रंग–मसाला लए व्यंग्यात्मक चित्र खिंचवामे सपत्त भेल छथि।''[124]

यद्यपि आजुक उपन्यास लेखन कन्यादानक युगसँ 42–43 वर्ष आगाँ अछि। किन्तु हम तत्कालीन सामाजिक संदर्भ आजुक उपन्यासक तुलनामे ओहिमे कोनो सामाजिक चेतना नहि पवैत छी। कन्यादानक बुच्चीदाइकेँ सामाजिक दृष्टिसँ तत्कालीन नारी समाजक एकटा एहन चरित्र बूझल जाए सकैछ जे सभक तोहाँ सकटा प्रश्नचिन्ह बनि कए ठाएि भए जाइत छथि। लेखकक दृष्टिमे नारी जागरणक समस्त बिम्ब उद्भाषित भए जाइत अछि। खोहे हुनक ध्यानमे नारीकेँ शिक्षा देवाक उद्देश्य सँ आर्थिक रूपसँ स्वतंत्र बनाएब हो वा मिथिलाक नारी समाज जे धार्मिक तथा नैतिक शिक्षाक प्रचार एवं सामाजिक स्वतंत्रताकेँ अनुमोदन कए नारीक स्थितिमे जागृति अनबाक प्रशंसनीय कार्य अछि।

सामाजिक चेतनाक विकास किरण जीक उपन्यास चन्द्रग्रहणमे सेहो देखल जा सकैछ। एहि उपन्यास मध्य मुसलमानी गुण्डाक हाथसँ स्नानक समय सिमरियाघाटमे युवतीक रक्षाक वर्णन भेल अछि। एहि उपन्यासक मुख्य गुण थिक रोचकता एवं एकर उद्देश्य स्त्रीगणकेँ मेला–ठेलामे जयबाक दुर्गुणसँ अवगत करायब थिक लेखक अपन विचार उपन्यासक मध्य व्यक्त करैत छथि– ''नहि कहि सकैत छी कतेक घर एहि बहकौला सँ नाश भए रहल अछि।''[125]

''बाह रे ग्रहणक पत्त। एहुले फेर लोक प्राण दैत अछि। धन्यदेव।''[126]

यात्री जीक बलचनमा आत्मकथात्मक उपन्यास थिक। एहिमे मिथिलाक जागरण आओर विद्रोहक कथा निवेदित अछि आओर सामाजिक परिवर्तनक दृष्टिएँ प्रस्तुत उपन्यासक अस्मिता स्वतः रेखांकित अछि। सामान्य जीवनमे परिवर्तन चक्रक मुखापेक्षी एकर कथापात्र ''बलचनमा'' स्वयं अछि। ओकरा मुद्दे ओकर आत्मकथा विवेचनक क्रममे यात्रीजी एहि प्रकारें परिवर्त्तनक प्रसंग विवरण प्रस्तुत कएलन्हि अछि–'' साधारण जिनगीमे हेर–फेर के नहि चाहत। यदि बारहो महीना जाड़े रहैत तऽ ककरो, नीक लगतै? आ ''तहिना जो भोर–साँझ नहि होई सदिखन

---

[124] मिथिला मिहिर, 26 सितम्बर, 1976 (कन्यादान आ द्विरागमन संदर्भ बुच्चीदाईक–शीर्षक लेख),पृ0–13

[125] डॉ0 कांचीनाथ झझ ''किरण'' चन्द्रग्रहण, पृ0–8

[126] डॉ0 कांचीनाथ झझ ''किरण'' चन्द्रग्रहण, पृ0–17

दुपहरियाक रौढ़े रहे तऽ केहन लगतैक– मनुक्खक जिनगी? कहबाक अर्थ ई जे मनुक्खक जिनगीक गप्पे कोन समूचा संसार आई परिवर्तन पर चलै छे। परिवर्त्तनक पहिया सदिखन चलिते रहै छै।''[127] ई उपन्यास पहिने मैथिलीमे लिखल गेल आओर तकर बाद हिन्दीमे। एकर प्रसंग नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (2027 वि0)मे निम्नलिखित उल्लेख भेल अछि–'' राजनीतिक चर्चा अधिक है। आँचलिक अंश बहुत कम है। राजनैतिक विचार समाजवादी आन्दोलन का समर्थन करते हुए आरोपित किए गए हैं। उन्होंने संघर्षशील व्यक्तित्व के द्वारा समाजवादी चेतना की ओर इंगित किया है जो उत्पीड़ित, साधनहीन और अधिकारो से वचित किसानो और मजदूरों में अन्याय के प्रति विद्रोह की ज्वाला सुलगती है। जमींदारों और राजनीतिक नेताओं के स्वार्थ संघर्षो और दूषित कार्यो को भी लक्ष्य बनाया गया है। उनका किसान सर्वहारा वर्ग का विद्रोही और दमदार किसान है।''[128] यात्री जी एकमात्र उपन्यासकार छथि जे समाजवादी बोध केँ सहज रूपमे अपन लेखनी सँ प्रस्तुत करवामे सफल भेल छथि।

डॉ0 (श्रीमती) प्रभावती झाक मतें गाम घरक सामन्ती संस्कृतिक मूल्यांकन सुधारवादी वा आदर्शवादी धरातल पर नहि कए सकैत छथि प्रस्तुत ओकर आलोचना ओहि सामाजिक शक्ति संदर्भमे करैत छथि जे मन्थरगति सँ उठि रहल अछि।''[129]

यदि हम हिन्दीक अमर उपन्यासकार प्रेमचन्दसँ यात्रीजीक तुलना करी तँ बुझि पड़त तें प्रेमचन्दक दृष्टिकोण सामाजिक यथार्थक देन थिक जखन यात्री जीक जीवन दृष्टि समाजवादी यथार्थ सँ प्रेरित। एहि दृष्टिएँ बुझि पड़ैत जे प्रेमचन्दक संवेदना यात्री जीक रचना सभमे सामाजिक चेतनाक रूप धारण कए लैत अछि। होरी सेहो किसान अछि जखन कि बलचनमा एकर भावी निर्माणक सूचना। सामाजिक चेतनाक दृष्टिएँ बलचनमाक निम्नलिखित पंक्ति बड़े महत्त्व रखैत अछि–

''जखन–जखन कुकुरक आवाजसँ रातिक सन्नाटा एकटा जाइ तऽ'' हमर मन अपना खोलमे लौट अबिते। दृढ़ शीशोक झूकल माथक छाँह सँ दिलकेँ एक प्रकारक तसल्ली भेटैत छल, लगे छल जे अपने कोनो पुरखा आशीर्वाद दऽ रहल हो–एना माथ पर झुकि कए। जाहि नव रास्ता पर हम पैर बढ़ैलहुँ अछि ओनहि पर चलि जायक हेतु एतेक साफ इशारा पाविकऽ हमर रीढ़ एकदम सोझ भए गेल। सीता तनि गेल छल– बाँहि फैला कऽ किछु काल धरि अपन छाँही देखैत छलहुँ। ''[130]

गोदान सँ एहि उपन्यासक तुलना करैत डॉ0 इन्द्रनाथ मदान लिखैत छथि ''देहाती जीवन की साधारण घटनाओ को सूचित करनेमे उसके छोटे–छोटे सुखो के सूक्ष्म निरीक्षण तथा सजीव चित्रणों, जमींदारों के निरंकुश व्यवहार तथा उत्पीड़नमे नये जीवन के स्पन्दनमे, अंचल विशेष के मुहावरे को पकड़नेमे तद्भव शब्दों के प्रयोगमे पग–पग पर परिवेश की गंधमे उपन्यास का

---

[127] नागार्जुन –बलचनमा (मैथिली), पृ0–96
मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता, प्रथम संस्करण, 1967
[128] हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (चतुर्दश भाग), पृ0–217–218
[129] डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा–स्वातंत्रयोत्तर मैथिली साहित्यक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रवृति–पृ0–148
[130] मूल लेखक नागार्जुन–बलचनमा, पृ0–185

ताना–बाना बुना गया है। इस उपन्यासमे समाजवादी चेतना का यह परिणाम भी निकलता है कि होरी की निराशावादी दृष्टि बलचनमा को आशावादी दृष्टिमे बदल जाती है जिससे लेखक को आस्था का भी परिचय मिलता है।''[131]

निस्संदेह बलचनमा एकटा भूमिहीन किसान सँ बढ़िकए अपन अधिकारक संबंधमे पूर्णरूपेण सचेत बुझि पड़ैछ। यात्री जी एहि उपन्यासमे वर्णित संघर्षक माध्यमे सामाजिक चेतना कें जगजियार करबामे पूर्ण रूपें सफल भेल छथि।

नवतुलिया थिक हिनक एकटा एहन उपन्यास जाहिमे विसेसरी कें एकटा महत्त्वपूर्ण कड़ीक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। ओ थिक अत्यन्त सुशील ओ रूपवती वाला बेटी ओ वयः संधिक अवस्थासँ गुजरि रहल अछि। चतुरा चौधरीक अनला पर ओ घबरा जाइछ मुदा दिगम्बरक पत्र सँ ओकर धैर्य कें बान्हल जाइछ। ओ विनोद्रपयि सेहो अछि। अपन धरि पढ़लि। गप्प–सप्पमे निपुण। ओ बुलौक बात काटि दैत अछि। ओकरा एहि बातक जनतब छैक जे स्वतंत्रताक किरण दिल्ली ओ एह पैघ शहर धरि आबि कए रूकि गेल मुदा गाम–घर ओहि सँ दूरे अछि। हमरा जनैत एहिमे सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्तिक जकाँ भेल अछि एहि उपन्यास कें सर्वश्रेष्ठ उपन्यासक कोटिमे राखल जा सकैछ। प्रकट अछि जे मिथिलामे मध्यवर्गीय परिवारक सभसँ पैघ समस्या रहल अछि। विवाह। कृषि आओर चाकरी द्वारा पेट भरबाक चिन्तासँ अधिक भयंकर छल पेट पोसबाक लेल विवाह करबाक भलमानुसी प्रथा। एकर फलस्वरूप बाल–विवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह इत्यादि सँ लोकजीवन संकटग्रस्त भए गेल छल। समाजमे व्याप्त कुरीतिक समाधानक लेल ओ नवतूरक लोकक संगठन कएने छथि। बूढ़ बरक चर्चा सौसे गाममे पसरल अछि किन्तु भिन्न–भिन्न वर्गक लोकक दृष्टिमेज` अंतर अछि से स्पष्ट भए जाइत अछि–

''की हओ।

–की?

– की सुनई छिअई ई सब?

– कोकनल ढ़ेंग सन कत सँ पंडित उठा अनलन्हिए

– जकर कतउने पुछारी से सौराठक नोधारी।

– रतउन्ही छइ, सुनइ छिअइ।

– दाँत त छइहै नहि।

– मातवर मुदा बड़ पैघ।

---

[131] डॉ0 इन्द्रनाथ मदान–आज का हिन्दी उपन्यास–पृ0–47

– हाथियो छइक दलान पर।

– काल्हि गाममे घर पीछू दू–दू टाका देतई।

– बड़का मातवर छई कि।''[132]

विसेसरीक विवाह चतुरा चौधरीक सन थुथुरबूढ़, वरक संग ठीक कए खोखाई झा प्रसन्न छथि किन्तु ओकर मायक भावनाक आवेग द्रष्टव्य थिक–'' सोनछड़ी सन हमर बेटी तकरा सिउठमे सिन्धुर के भरत आविकेँ वो साठि बरखक लोलहा। भरि सूप अंगौर उझिलि देबै मुड़हाक चानि पर।''[133]

एहि तरहेँ एहिमे उपन्यासकार समस्या आओर समाधान दुहू प्रस्तुत कएलन्हि अछि। एहि प्रसंग अप्रासंगिक नहि होएत जे समाजक छाती पर पटनाक गोलधर जकाँ औन्हल घरक पजियारक सहयोगे अपन छओ टा बेटी केँ बेचि सातम प्रयासमे अपन दौहित्री विसेसरी केँ साठि वर्षक चतुरा चौधरी सँ विआहि देवाक योजना सँ नवतुरिया वर्गक द्वारा विफल बना कऽ वाचस्पति सँ ओकर विवाह कराएब, आ एहि तरहेँ सम्पूर्ण उपन्यासमे समस्या एवं तकर समाधानक प्रस्तुतिक माध्यमे यात्रीजी सामाजिक चेतनाक विकास के उजागर करबामे उपन्यासकारक रूपे एकटा महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कएलन्हि अछि।

समाजक अचर्चित निम्नवर्गक चेतनाकेँ अपन कथा साहित्यमे स्वायत्त करबाक हेतु ललितक नाम उल्लेखनीय अछि। ओतवे नहि हुनक नवीनताक, मानवताक यथार्थ मूल्यांकन भेटैछ हुनक कथा–रचना सबहिमे। जनसाधारणक आशा–आकांक्षा, हास–परिहास सुख–दुःख, मिलन–विछोह, जय–पराजयक द्वन्द्वक ओ आभास भेटैत अछि ताहिसँ बूझि पड़ैत अछि जे हुनक कथा–यात्रा एहि सबहिमे समेटिकए चलि रहत हो। फलतः परिवेश आओर संवेदनशीलताक अन्धारक निकृष्टता वा उत्कृष्टता भित्ति पर एहि कथाकार मूल्यांकन सहज ढ़ंगसँ भए सकैत अछि। तें अत्युक्ति प्रस्तुत ललित मार्क्स ओ फायड दुहू चिन्तनक विचारधारा सँ परिचित छलाह। एहि दुनू चिन्तनक अवदान के गुनने छलाह। यात्रीजीक बाद राजकमल ओ मायानन्द सँ पहिने लालित 'मुक्ति' नामक कथा लिखलन्हि, जकर महत्त्व मनोवैज्ञानिक दृष्टि सँ कम नहि। किछु गोटेक धारणा छन्हि जे ललितक 'मुक्ति'मे आवश्यकतानुमोदित स्वाभाविकता प्रकट होइत अछि तें हुनका मैथिली कथा–साहित्य मे 'सेक्स' सफल प्रयोग करबाक श्रेय प्राप्त छन्हि। जहाँधरि हुनक ''पृथ्वीपुत्र'क संबंध अछि, एहिमे मार्क्सक मुख्यतः प्रभाव लक्षित होइत अछि, तेँ सामाजिक चेतनाक विकास करबामे ई पूर्ण सफल भेलाह अछि।

डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'' अपन इतिहासमे एहि उपन्यासक संबंधमे लिखैत छथि–'' किसान पृथ्वीपुत्र थिक तेँ ओकरा खेतक प्रति गहन अपनत्व ओ ममता छैक। विसेखी, सरूपा, गेनमा प्रभृति एहने पात्र थिक जे भूमि–पतिक अत्याचार सहैत–सहैत प्रतिक्रियामे विद्रोह कए उठैत

[132] श्री बैद्यनाथ मिश्र ''यात्री''–नवतुरिया, पृ0–36

[133] श्री बैद्यनाथ मिश्र ''यात्री''–नवतुरिया, पृ0–56

अछि। मुदा अपन अधिकार ओ मर्यादा–पालनमे विसेखी ओ सरूपा एतेक सतर्क अछि जे पुलिस ओकरा किछु बिगाड़ि नहि सकैत छैक।''[134]

निम्नवर्गीय जीवनक कटु–मधुक अभिव्यंजनमे उपन्यासकार पूर्ण सहज सिद्ध भेल छथि खास कए बिजलीक चरित्र–चित्रणमे जे सासुर सँ भागि अबैत अछि आओर जतेक बेर भगैत अछि ततेक बेर विसेखीक लए एकटा समस्या बनि जाइत अछि। वस्तुतः एहिठाम अर्न्तद्वन्द्वक चित्रण स्वाभाविकताक संग भेल अछि। हीरालालक पंचैती वैसेवाक प्रकरण सेहो ग्राम्य जीवनक एकटा विशिष्ट पक्षक उद्घाटन करैत अछि। यथार्थतः ई उपन्यास बड़े सुनियोजित उतरहल अछि आओर उपन्यास कलाक सभमे गुण सँ ई समन्वित बुझना जाइछ।

एहिमे वर्णित कलपू, बिजलीक, प्रेमालापक प्रसंग स्वर्गीय प्रो0 रमानाथ झाक कथन एकर वैशिष्टय केँ उद्घाटित करैछ– ''अबैध प्रेमक–प्रसंगमे कनेको संयम शिथिल भेलासँ कथा अमर्यादित भए जाइत परन्तु श्री ललित जी अवैध प्रेम– प्रसंगमे वैदहुँ प्रेमसँ भव्यतर चित्रित कए मानव स्वभावक सहज शालीनता केँ स्फुट कए देल अछि।''[135]

पृथ्वीपुत्रमे जहिना कथानक प्रतीयमान कहल जा सकैछ तहिना संभावरण सेहो कम रोचक नहि। उदाहरणार्थ निम्नलिखित आवरण उल्लेखनीय अछि–

–कतेक दुब्बरि भऽ गेलैहें तों। कहॉदन बड़ भारइत रहउ ठीके? वेदना विहुअल स्वरें पूछलथिन्ह कलपू।

ऊपर– नीचा मूड़ी डोलओलक बिजली। बाजलि–बहुत डेंगबई छल मकई जकाँ निछोह।

सहटिक लग अएलाह कलपू। एकदम लग। माथमे बदाम तेलक गमक लगलन्हि। कहलथिन्ह वीजो। ई ऐना कतेक दिन आ चलि सकत। कइक खेपी कहलिक तोरा, चल एतय सँ। हमरा संग चल। गाम छोड़िक। जतय तोहर मौन होउक। कइक खेपी भगबें। फेर एतहु घरवला झोंट घक घिसिआक ल जेजउक। तोहर मारिक कल्पना करैत काल लागल अपने देहमे दोदरा पूलल जाइत हो।

एक क्षण कलपूक अत्यन्त गम्भीर मुँहक दिस विह्वल नजरिसँ तकइत रहति बिजली। फेर भभाक हँसलि। कलपूकें हाथ सँ ठेलि देलक। बाजलि हमरा संगे भगवर किएक भगब? एतय कथीक डर होइत छह? ककर डर होइत छह?

डर–डर दिस सोचबाक पलखति कहाँ रहइए? तोरे सोचइत– सोचइत दिन राति बीतल जाइए। सासुरमे तोहर मोन लागि जइतउ, सुख होइतउ त अपनो मोन मना लितहुँ। मगर उठात् चुप्प भऽ गेलाह।''[136]

---

[134] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–301

[135] श्री ललित–पृथ्वीपुत्र, पृ0–4

[136] श्री ललित–पृथ्वीपुत्र, पृ0–2

फ्रायडीय विचारधाराक आलोकमे जखन हम बिजलीक चरित्रक मूल्यांकन करैत छी तँ ओ एकटा जीवन्त नायिका सिद्ध होइत अछि, अपन जिजीविषा ओ वासनाक पूर्ति हेतु एहि चरित्र–नायिकामे जाहि प्रकारक दुःसाहस प्रत्युत्पन्मति ओ धैर्य पाओल जाइछ से यथार्थतः विरल लोकमे भेटैत छैक मुदा ओकर चरित्र असाधारण जीवनत नहितहुँ सर्वमान्य नारीक हेतु कदापि अनुकरणीय नहि कहल जा सकैछ अन्त्यज ओ अपराधकर्मी परिवारमे उत्पन्न बिजली अपन गामक भूतपूर्व जमींदार उदार विभोर विलासी ओ विधुर पुत्र कलपू मिश्र संग उन्मुक्त प्रेममे संलग्न भए अपन विवाहित पतिकेँ छोड़ि तँ दैत अछि किन्तु ओहि कलपू मित्रक संग विवाह नहि करए चाहैत अछि। ओकर प्रेम मात्र शारीरिक वासनाक तृप्ति धरि सीमित रहि जाइछ। विवाह ओ संतानोत्पति ओकरा आवश्यक नहि बुझि पड़ैछ, उन्मुक्त प्रेममे विभोर रहितहुँ ओहि प्रेमकेँ वैवाहिक विधान द्वारा परिष्कृत करबाक साहस ओकरामे प्रायः नहि अछि। कलपू मिश्र एहि विवाहक हेतु स्वयं प्रस्ताव रखने रहथिन मुदा बिजली ई कहिके बात टारैत रहलि जे एहि जन्ममे हमरा लोकनिक प्रेम एहिना रहओ, अग्रिम जन्ममे अहाँक पत्नी होएब। बिजलीक चरित्रक प्रसंग डॉ0 अमरनाथ झा कहैत छथि– ''तैँ एहि बिजलीक चरित्र शाश्वत मानव संस्कृति अनुकूल नहि कहल जाए सकैत अछि, केवल स्थापित सामाजिक व्यवस्थाक प्रति विद्रोह करबामे ई सीमित रहि जाइत छथि। एहि प्रसंग इहो बात ध्यान देबाक योग्य अछि जे एहि उपन्यासमे बिजलीक छोट भाए सरूपा भूमि अधिकार संबंधी आन्दोलन के मुखर बनाए जाहि मार्क्सवादी मान्यताक जयघोष कएल गेल अछि से मान्यता बिजलीक एहि कामनाक अभिव्यक्ति सँ खंडित भए जाइत अछि। जे अग्रिक जन्ममे कलपू मिश्रक विवाहित पत्नी बनब। मार्क्सवादमे आत्माक नित्यता ओ पुनर्जन्म तथा परलोक इत्यादि केँ पूर्णतः मिथ्या कल्पना मानल गेल अछि, एहि बातकेँ उपन्यासकार ललित कोना वा किएक बिसरि गेलाह एकटा आश्चर्यजनक विषय थिक, आओर तेँ क्रान्तिवाहिनी बिजली द्वारा पुनर्जन्ममे आस्था व्यक्त कराए ललितजी किछु भ्रमजालमे ओझरायल बुझि पड़ैत छथि।''[137]

परन्तु हमरा बुझि पड़ैत अछि जे डॉ0 अमरनाथ झाक कथनमे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण सँ विश्लेषण कएला पश्चात् कोनो दम नहि बुझि पड़ैत अछि। प्रेम वा वासना जीवनक एकटा एहन पक्ष थिक जाहिमे पुनर्जन्मक प्रश्न सहज ढ़ंग सँ नायिकाक मानस–पटल पर उपस्थित भए सकैत अछि। मार्क्सवादी विचारधाराक परिप्रेक्ष्यमे एकर मीमांसा करब समीचीन नहि बुछि पड़ैछ

एहि उपन्यासक प्रसंग प्रो0 रमानाथ झा लिखने छथि–'' ओ जीवनक समस्या दिश श्रीवास्तव जो एहिमे जे दृष्टिकोण अंकित कएल अछि से ततेक स्वस्थ अछि, भव्य अछि, सत्य पर अवलम्बित अछि जे एहि सँ हमहि टा आकृष्ट भेल छी से नहि जे केओ एकर गंभीरतापूर्वक विचार करताह बिनु आकृष्ट भेने नहि रहि सकैत छथि। समस्त पृथ्वीपुत्रमे एक गोट कथा जे सर्कस विशेष स्फुटताक संग प्रदर्शित भेल अछि सँ थिक जिवइत रहब पहिने जरूरी छै संसारमे। तखन लोक लाज। नीक बेजाय। कर्त्तव्यताकर्त्तव्य बुद्धि थिकैक। जीवनक ममता सहजता प्रवृत्ति ओहि सहजात प्रवृत्ति केँ प्रधानता दए श्री ललितजी एहि उपन्यासमे

---

[137] डॉ0 अमरनाथ झा– मैथिली अकादमी पत्रिका–सितम्बर–अक्टूबर–88 अंकमे प्रकाशित निबंध ''मैथिली उपन्यासमे वर्णित किछु जीवन्त नारी'', पृ0–40–41

मानव–स्वभावक नैसर्गिक प्रवृत्ति ओ भावनाकेँ जे प्रधानता देल अछि से हुनक स्वस्थ दृष्टिकोणक द्योतक थिक।''[138]

जे से एतेक मानहि पड़त जे जमींदारी उन्मूलन पृष्ठभूमिमे सामाजिक चेतनाक महत्त्वपूर्ण भूमिका कहल जा सकैछ। प्रस्तुत उपन्यासमे जमींदारी–उन्मूलन बाद उत्पन्न भेल परिस्थितिक यथावत चित्रण भेल अछि। उपन्यासकार यद्यपि एहि दिशामे सचेष्ट रहलाह अछि जे सामन्त एवं श्रमिकक अपन–अपन अधिकार रक्षाक विवेचन करबाक क्रममे पात्रक राग–द्वेष, प्रेम–घृणा इत्यादि भावनाक स्वस्थ चित्रण प्रस्तुत कएल जाए।

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत 'दू–पत्र' व्यासजी द्वारा पत्रात्मक शैलीमे लिखल गेल महत्त्वपूर्ण उपन्यास थिक, नव प्रयोग एवं नवीन वस्तुविषय ग्रहणक दृष्टिएँ एहि उपन्यासक विशेषता अछि जे मात्र चारि गोट पात्रकेँ लए लेखक भिन्न–भिन्न परिस्थितिमे राखि मानसिक द्वन्द्व एवं संघर्षक चित्रण द्वारा जे चित्र अंकित कएल अछि तकर सामाजिक सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेशमे फराके महत्त्व अछि।

उपन्यासकार इन्दु, सुरेन्द्र, जेसिका एवं रमेश चारि गोट मात्र पात्रक वृतान्त केँ वर्णन कौशलक संग दुहू सांस्कृतिक तुलणात्मक विवेचन कएल अछि। जेसिका रमेश एवं सुरेन्द्रक व्यक्तित्वक चित्रण करबामे रचनाकार जाहि संयमक परिचय देल अछि से प्रशंसनीय अछि। ओना पत्रात्मक शैलीमे रहबाक कारण परिस्थिति निर्माणक लेल जे कितों प्रयोजन नहि रहि जाइछ, तेँ ई उपन्यास किछु लघुकाय भए गेल अछि।

एहि उपन्यासमे लेखकक उद्देश्य अदि जे पूर्वी ओ पश्चिमी सभ्यताक गुणावगुणक दिग्दर्शन कराएब आ अपन सभ्यता केँ उजागर करब। आ एहू सँ ऊपर जा कए मनुक्खक Essential goodness केँ प्रस्तुत करब। इन्दु देवीक पत्र बहुत भावात्मक रूपेँ निखरल अछि, पत्र लिखबाक समय धरि ओ एम0ए0 पास कए चुकल छथि।

''युग युग जिबथु बसधु लाख कोस,

हमर अभाग हुनक नहि दोष।''

ई इन्दु देवीक नहि मिथिलाक अभाग थिक जे ओहिठामक नारी एहि मानसिकतामे जिबैत छथि।

वस्तुतः दू–पत्रक त्रासदी ई थिक ने एकर नायक मूक छथि आ नायिका पंगु।

उपन्यासमे नारीक समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ दुर्दशा, काटर प्रथा आओर तलाकक सेहो उल्लेख भेटैछ। किछु आलोचकक दृष्टिमे दू–पत्र''क इन्दु देवी गुरुव छथि–नार–पोआर सँ बनल परम्परा आ प्रारब्धक माटि ऊवर सँ बनल परम्परा आ प्रारब्धक माटि ऊपर से लेपने। डॉ0

[138] श्री ललित–पृथ्वीपुत्र, पृ0–4–5

प्रभावती झा अपन मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक पद्धतिक आलोकमे लिखते छथि–'' फ्रायडक मनोविश्लेषण एवं सेक्सक प्रसंग ई समीचीन विचार अछि जे भारतीय साहित्यमे पुरूष एवं स्त्रीक परस्पर–संबंध एवं तत्संबंधी समस्याक चित्रण नवीनतेक वातावरणमे होमक चाही। हमर प्राचीन द्रष्आ लोकनि सृष्टिक मूलमे रति भावनाक तथ्य अवश्य ग्रहण कएल, किन्तु ओकर ज्ञानक उपयोग ओ कएल मानव जीवन केँ अधिक कल्याणकारी बनएबाक प्रयासहिमे। साहित्यक बहुत अनिवार्य संबंध ''सेक्स सँ छैक। वस्तुतः जे किछु सृजनात्मक थिक, से मूलमे कतहु ने कतहु 'सेक्स' सँ संबंधित अछि–कारण जे ई सृजनात्मक मूल थिक तेँ चिरन्तन साहित्य मौलिक रूपेँ यौन से आबद्ध अछि।''[139]

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे लेखक साहित्यिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेशमे यथार्थवादक पुष्टि कएल अछि। एहि उपन्यासक अम्बिका दीदी हमरा जनैत एकटा जीवनक नारी थिकीह। एकर नायिका श्रीमती इन्दु देवी सेहो कम जीवन्त नहि मुदा तुलनात्मक दृष्टिएँ अम्बिका दीदी बीस पड़ैत छथि, कारण जे श्रीमती इन्दु देवीक जीवनमे नवीन आलोक प्रकाशित भए सकल ताहिमे हिनक प्रेरणाक महत्त्वपूर्ण योगदान छल। समाजक एकटा पछुआएल जातिमे कुर्मी जातिमे ई जन्म ग्रहण कएलन्हि स्कूलमे पढ़ैत रहैथ तखन एकटा सुजातीय युवकक प्रेमक फॉसमे पड़ि परिवारक इच्छाक प्रतिकूल गन्धर्व रीतिएँ विवाह कएलन्हि। दुर्भाग्यवश तीन वर्ष बितैत–बितैत हिनक पतिक देहान्त भए जाइत अछि आओर तखन सामाजिक उत्पीड़न असद्य होमए लगैत अछि। एकटा पुत्र भेल छलन्हि किन्तु सेहो भरि गेलन्हि तथापि हिनक व्यक्तित्व सामाजिक चेतनाक दृष्टिएँ ततेक जीवन्त छल जे अध्यवसायमे निरंतर संलग्न रहि मनोविज्ञानमे एम0ए0 पास कए कॉलेजक प्राध्यापिका बनि जाइत छथि आओर पछाति प्राचार्या सेहो। एहि पदकेँ केवल जीविकाक साधन नहि बुझि शास्त्रक गहन अध्ययनमे रत रहि अपन व्यावहारिक जीवनमे मनोवैज्ञानिक मौलिक तत्वक अनुसंधान करैत रहैत छथि आओर अपन आचरणमे ताहि सत्यक प्रयोग करैत रहैत छथि। उपन्यासक मुख्य नायिका श्रीमती इन्दु देवीक मुखाकृति मात्र देखि हिनक अन्तस्तलमे व्याप्त वेदनाक आभास हिनका भए जाइत छन्हि आओर तखन जाहि प्रकारक सहानुभूति राखि हिनक मार्गदर्शन करैत रहैत छथि। तकरहि प्रसादें इन्दु देवीक जीवनोद्धार भए सकैत छन्हि। हिनकामे एकटा विशेषता इहो अछि जे पछुआएल जातिक नारी रहितहुँ भारतीय संस्कृतिक मूलतत्त्वकेँ अवगाहन कए वा तकर मंथन कए जाहि प्रकारक ज्ञान रत्न ई प्राप्त कएने रहथि ताहिसँ प्रभावित भए जाइछ जे भारतीय धर्म ओ संस्कृति कोनो वर्ग–विशेषक उत्तराधिकार नहि प्रत्युत ओ सत्य ओ सनातन तत्व थिक।

सोमदेवक चानोदाइ एकटा व्यक्ति परक उपन्यासक कोटिमे राखल जा सकैछ। यदि एकरा अशिक्षाक कारणें उत्पन्न दूषित सामाजिक परिस्थितिक तथ्यपरक दस्तावेज कहल जाए तँ अत्युक्ति नहि होयत। उपन्यासकार द्वारा एकटा प्रश्न उठाओल गेल अछि की नारी पुरूषक योग्य ओ प्रदर्शनक साधन मात्र थिक? तँ ओ कहैत छथि– ''चारो केँ आब बूझि पड़ए लगलनि वस्तुस्थिति सभ। ओ सोचथि साँपक मुँह सँ बाँचि कए सपनोरक मुँहमे आबि गेलहुँ की नारीक अर्थ मात्र यौन–संतुष्टि थीक? ओ पुरूषक भोग्या मात्र थिकीह? चाहक प्याली? रेडियो सेट?

[139] डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा–स्वातंत्रयोत्तर मैथिली साहित्यक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रवृति–पृ0–158

गुलदस्ता? जकरा चाही उपहार दऽ दी–बेचि ली मनुक संगिनी मानवक सहधर्मिणी नहि? आ हुनका बुझि, पडुलन्हि जेना अशोक वाटिकामे सीता जेकाँ ओझरा रहल छथि ओ।''[140]

एहि उपन्यासक अध्ययन कएलाक बाद हमरा बुझि पड़ैत अछि जे उत्तरार्द्धमे रचनाकार किछु अगुताए गेल छथि। यद्यपि सामाजिक चेतनाक दृष्टिसँ एहि उपन्यासक महत्त्व अक्षुण्ण अछि। एहिमे बड़े यथार्थवादी ढ़ंगसँ मिथिला ग्राम्य जीवनकेँ चित्रित कयल गेल अछि। संगहि एहिमे ग्रामीण समाजक ईर्ष्यादेव आओर मिथिलाक ग्राम्य समाजमे व्याप्त अशिक्षाक अंधकारक सेहो सजीव चित्रण पाओल जाइछ। उपन्यासकारमे एक संग वर्णन क्षमता अनुभवक विशालता कथा रचनाक सामर्थ्य आओर यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करबाक सामर्थ्य अछि।

हिनक दोसर उपन्यास ''ब्रह्मपिशाच'' नामे मिथिला हिमिरमे वादमे होटल अनार कालीक नामसँ पुस्तकाकार भेल अछि। उपन्यासकार केँ ओना पहिनेक उपन्यासक अपेक्षा एहिमे निश्चित रूपे ँ सफलता भेटलन्हि। प्रस्तुत उपन्यासमे तस्कर व्यापार एवं कालाबाजारक समस्याकेँ लए कऽ व्यापार संबंधी दाओ–पेंचक तथ्यात्मक ढ़ंगे चित्रण कएल गेल अछि। एकरा मैथिलीक प्रथम जासूसी उपन्यासक कोटिमे राखि ''श्रीश'' जी कहैत छथि–'' वस्तुतः ई मैथिलीक प्रथम जासुसी उपन्यास थिक। देशमे बढ़ैत भ्रष्टाचार के देखि सरकार एकर विरूद्ध सामरिक अभियान आरंभ करैत अछि। एहि भ्रष्टाचार भेदी मोर्चाक नेतृत्व करैत छथि सदानन्द जे बजरंग लाल ''ब्रह्मपिशाच''क नामसँ विख्यात तस्कर व्यापारी लखिन्दर सिंहक दलमे मिलैत छथि। ओ भेद लैत रहैत छथि। अंतमे ओहि बजरंग लालक हत्या सिंहजी करबए चाहैत अछि। मुदा ताबत धरि ओ जालमे फाँसि चुकल रहैत अछि।''[141]

आगाँ ''श्रीश'' जी ठीके कहैत छथि–'' ओहि पाप निरत समाजक नर ओ नारीक विविध विषयक कुंठा, असंतोष आदिक जाहि यथार्थताक संग उपन्यासकार वर्णन कएल अछि से हुनक तीक्ष्ण अर्न्तदृष्टि ओ प्रतिभाक परिचायक थिक।''[142]

सामाजिक चेतनाक दृष्टिएँ कहल जा सकैछ जे उपन्यासकार जाहि वर्गक चित्रण प्रस्तुत कएलन्हि अछि ताहिमे निसृसे देह हुनका सफलता प्राप्त भेल छन्हि।

डॉ0 शैलेन्द्र मोहन झा द्वारा लिखित ''मधुश्रावणी''क महत्त्व ओकर चेतना प्रवाह लए कए अछि। एकर नायिका नलिनीक विवाह विनय कृष्ण बाबूक संग होइछ। एहि पावनिक अवितहि नायिका नलिनीक हृदय रस उल्लास सँ भरि जाइत अछि। मधुश्रावणीक भाड़क संग विनय कृष्ण बाबू नाव पर अबैत काल जल समाधि लए लैत छथि। ई सुनतहि नलिनि, हुनक माए पद्म सुन्नरि खसि पड़ैत छथि। नलिनीक जीवनक मधुबन विषादक मरूस्थलमे बदलि जाइत अछि। नामनाक जीवनमे तेँ मधुश्रावणी नहिएँ आबि सकल। बैद्यक भारसँ पीड़ित भए ओ दिनानुदिन रोगिणी बनल जाइछ। उपन्यासक अन्त मधुश्रावणीक एक प्रसंग सँ होइत अछि फेर मधुश्रावणी अबैत

---

[140] सोमदेव–चानोदाई, पृ0–79

[141] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–299

[142] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–299

अछि आओर नलिनी मृत्यु शय्या पर पड़लि अपन नोर बहबैत मात्र कमल सँ भेंट करबाक हेतु ओकर प्राण छट–पटाइत अछि।

उपन्यासकार डॉ0 शैलेन्द्र मोहन झा लिखैत छथि– ''नलिनीक प्रति कमल कें नैसर्गिक स्नेह छल। जाहि बेर अबैत छल नलिनीक लेल कोनो ने कोनो वस्तु उपहारमे अनितहि छल। ई उपहार विशेषतः पुस्तकक होइत छल। नलिनीक पिता नलिनीके भारती बनावय चाहते छलाह। परन्तु ओ तँ अल्पायुमे नलिनी कें छोड़ि चलि गेलाह। नलिनी जँ आइ धरि किछु पढ़ि–लिखि। सकली अछि तँ कमलक संगति सँ।''[143] जे–से एतेक तँ मानहि पड़त जे मनोवैज्ञानिक दृष्टिसँ एहि उपन्यासक महत्त्व उल्लेखनीय अछि।

राजकमल चौधरीक ''आदिकथा' आओर मायानन्द मिश्रक बिहाड़ि पात आ पाथर'' उपन्यास मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक दृष्टिसँ अपन अस्मिता फराके रखैछ। एहि उपन्यासक प्रसंग डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा कहने छथि–सहरसा, पूर्णियाँ इलाकाक जनजीवनमे प्रणीत सामाजिक प्रेमाख्यान थिक ''आदिकथा'' जाहिमे आँचलिकताक रंग बेस निखरल अछि। ई उपन्यास यात्री जीक ''पारो''क परम्परामे प्रणीत अछि। प्रस्तुत कृतिमे भाभी (सुशीला) आ भागिन (देवकान्त)क मूल प्रेमक वर्णन कएल गेल अछि। एहिमे अनमेल विवाहजन्य उत्पन्न परिस्थितिक विवेचन भेल अछि। ई आदिकथा'' को आजुक कथा नहि, ई थिक आदम–हौआक कथा परम्परागत कथा। प्रत्येक युगमे ई होइत अछि। लोक प्रेम करैए, प्रेम पात्रक लेल केवल रहैए मुदा संस्कारक ससरफानी तोड़ि नहि पबैए। इएह आदिसँ चलि अबैत कथा थिक– आदिकथा। जे किने बिहाड़ि पात आ पाथर घसा प्रधान प्रेमाख्यान थिक तें एहि उपन्यासमे चरित्र पर प्रकाश पड़ल अछि। सूक्ष्म दृष्टि सँ देखला पर सहजहि बूझि पड़त जे अविस्मरणीय चरित्रक निर्माणमे राजकमलक अपेक्षा मायानन्द बेसी सफल सिद्ध भेल छथि।''[144]

यथार्थतः ''आदिकथा'' तथा बिहाड़ि पात आ पाथरक महत्त्व सामाजिक–मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ अछि तें सामाजिक चेतनाक दृष्टि सँ एहि दुनू कृति कें स्वभावतः महत्त्व देल जा सकैत अछि।

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश''क दृष्टिमे राजकमलक ''आदिकथा'' कथा प्रधान उपन्यासक कोटिमे नहि अबैत अछि। ओ कहैत छथि–एकर उद्देश्य अछि अमर्यादित सत्यक मनोविश्लेषणात्मक उद्‌घाटन करब। एहि मध्य कथा–विकासक हेतु चरित्रक निर्माणसँ अवश्य भेल अछि, मुदा कथाधरि अछि एकर निर्जीव।''[145]

राजकमल लिखित आन्दोलन नामक उपन्यास मैथिली मासिक आखर में धारावाहिक रूपें पछाति पुस्तक रूपमे सेहो छपल। एहिमे कलकत्ता मध्य चलि रहल मिथिला मैथिल ओ मैथिलीक प्रसंगमे आन्दोलनक चर्च अछि, जकरा यथार्थ एवं सजीव कहल जा सकैछ। श्री भूपेन्द्र कुमार चौधरीक शब्दमे प्रस्तुत उपन्यासमे ''मूलकथाक अन्तर्गत लेखक सामाजिक विषमता, राजनैतिक

---

[143] डॉ0 शैलेन्द्र मोहन झा– मधुश्रावणी (द्वितीय संस्करण), 1967

[144] डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा–स्वातंत्रयोत्तर मैथिली साहित्यक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रवृति–पृ0–166–67

[145] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–297

पैतरावाजी, मानवक आत्मरक्षाक भावना आ ओकर यौन–पिपासाक बड़ मार्मिक उद्‌घाटन कएलन्हि अछि।''[146]

वस्तुतः प्रस्तुत उपन्यास आत्म कथातमक शैलीमे लिखल गेल अछि एकर शिल्प विधानमे आदि कथाक अपेक्षा किछु परिष्कार बुझ पड़ैत अछि। एक प्रत्येक चरित्र खाहे ओ भुवनजी होथि वा कलम, निर्मल होथि वा नीलू तीनू वर्गीय चरित्रक कोटिमे अबैत छथि। वातावरणक चित्रणमे लेखक केँ वेस सफलता भेटलन्हि अछि। वर्गीय चरित्रक कारणेँ प्रस्तुत उपन्यासमे सामाजिक चेतनाक दिग्दर्शन स्वतः भए जाइत अछि।

संकल्पलोक लहेरियासराय, दरभंगासँ मायानन्द मिश्रक ''मंत्रपुत्र'' प्रकाशित भेल 1988ई0मे एकरा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार प्रदान कएल गेलैक। एहिमे पूर्व वैदिककालीन (50–1500ई0) समाजक वर्णन कयल गेल अछि। उपन्यासकार एकर (ऋचालोक)मे एहि कृतिम उद्देश्यक स्पष्ट घोषणा कए देने छथि। मंत्रपुत्रक कथा ओ चरित्र–चित्रण सभटा कल्पना– परक अछि। उपन्यासकार एकर संघटन कएल अदि। ऋग्वैदिक तथ्यकेँ अभिव्यक्त करबाक उद्देश्य सँ। डॉ0 दुर्गानाथ का ''श्रीश''क ई कथन एहि कृतिम प्रसंग पूर्ण तर्कसंगत बुझि पड़ैत अछि– ''परन्तु दीर्घ–विश्रामक अनन्तर ''मन्त्रपुत्र'' प्रकाशित भेल तँ उपन्यासकारक दोसरे स्वरूपक दर्शन भेल– ओ सामाजिक यथार्थ केँ परित्याग कए एकहि बेर प्रागैतिहासिक आर्यकालक सुदूर रोमांटिक परिवेशमे पहुँचि चुकल छलाह। मंत्रपुत्रक विषयमे बनाओल 1500ई0 पूर्वक आर्य समाजकेँ, जकर किछु आनुषंगिक संकेत ऋग्वेदमे भेटितहुँ अछि तँ तकर वास्तविक इतिहास घोर अंधकारमे डूबल अछि, बिना फैन्टशीक ओहि युगक कथा कहब सर्वथा असंभव अछि। एतबा अवश्य जे उपन्यासकार अपन विलक्षण सर्वनात्मक कल्पनाक प्रयोग कए तथ्य ओ अनुमानक उपयोग कए एहने कल्पनाक लोकक निर्माण कएने छथि जे सरिपहु मनोरंजक ज्ञानवर्दक ओ संवेदनशील भेल अछि।''[147]

वस्तुतः एहि कृतिमे वैदिककालीन सामाजिक सांस्कृतिक जीवन–पद्धतिकेँ चित्रित करबामे उपन्यासकारक प्रतिबद्धता स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि। आरंभहिमे अनार्य केँ अपनाकेँ विलयन करबाक, पचएबाक प्रक्रिया निश्चय समाहुत भेल होएत। एहि सबहिक सफल प्रतिपादन प्रस्तुत उपन्यासमे भऽ सकल अछि। सम्पूर्णतः प्रामाणिक ऐतिहासिक उपन्यास नहिओ होइत, एहिमे भारतीय इतिहासक समन्वयात्मक विकास– प्रक्रियाक मूल सूत्र केँ नीक जकाँ अभिव्यजित कयल गेल अछि।

स्व0 योगानन्द झा लिखित ''पवित्रा'' मैथिली उपन्यासक चेतना विकासक श्रेणीमे एक गोट अपन फराके स्थान रखैत अछि। एहि उपन्यासमे एकटा विधवाक समस्या देखाओल गेल अछि। नारीक मानसिकताकेँ कथा नायिका ''पवित्रा''क चरित्रमे विधवा समस्याकेँ अपन रचनाक केन्द्रबिन्दु मानलन्हि अछि। जे किने विधवाक संरक्षक समाजमे नहि भेटैत अछि आओर बेसी गोटे भक्षकेक भूमिकामे अवतरित होइत छथि तेँ एहि उपन्यासमे टेंगरलाल एकटा भक्षकक प्रतीक रूपमेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश''क कथनानुसार ''पवित्रा'' ओ

---

[146] भूपेन्द्र कुमार चौधरी, उपन्यास आ उपन्यासकार, पृ0–70

[147] रचना (मैथिली त्रैमासिक) अप्रैल–जून 1989मे प्रकाशित पुस्तक समीक्षा।

त्यागमूर्तिक पारस्परिक आकर्षण ओ सामाजिक बंधनक कारणेँ विवशतापूर्ण अर्न्तद्वन्द्वक चित्रण एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक।''[148]

उपन्यासक कथानक किछु कमजोर जरूर अछि, परंच पात्रक चित्रणक दृष्टिएँ लोकप्रियता परिलक्षित होइछ। जेना पवित्राक अतिरिक्त साधुक रूपमे त्यागमूर्ति आ भक्षकक रूपमे टेंगेरलालक। बाल विधवाक समस्या लए लिखल गेल सामाजिक जीवनक विभिन्न पक्षक चित्रणमे लेखकक कारयित्री ओ व्यावयित्रीक प्रतिभाक दिग्दर्शन कराओल गेल अछि। एहिमे सामाजिक चेतनाक दृष्टिसँ सभ पक्षक चित्रण भेटैत अछि जे स्तुत्य अछि।

श्री धीरेन्द्रक ''भोरूकवा'' एक गोट नव विषयवस्तुक संग मैथिली साहित्यक आँगनमे प्रवेश कएलक। इ उपन्यास एकटा एहन दस्तावेज थिक जाहिमे निम्नवर्गक स्वार्स्थ एवं संघर्षक झाँकी प्रस्तुत कएल गेल अछि संगहि एहिमे बाबू भैयाक बदलैत मनोवृत्तिक एवं शिक्षित किसानक चित्रांकन कएल गेल अछि।

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' कहैत छथि– '' माधो तथा केशीक सहानुभूति पाबि अन्तमे बुधनाक जीवन सुखमय भए जाइत छैक। एहिसँ ग्राम्य वातावरणमे नव–जागरण उपस्थित भेल अछि, नव आशा–आलोकक'' भोरूकवा''क उदय भेल अहिते।''[149]

प्रस्तुत उपन्यासमे सामाजिक चेतनाक प्रसंग डॉ0 जयकान्त मिश्र लिखैत छथि–"Proof Dhirendra Deserves to be noticed. First his Novel Bhorukva (The Morning star) announced the down in the life of the Lower classes in the Villages."[150]

आओर डॉ0 अमरेश पाठक सेहो कहैत छथि '' भोरूकवामे बदलैत सामाजिक परिस्थितिक चित्रण भेल अछि। जतए बलचनमाक विद्रोहक भावना मूक रहि गेल छैक ओ भोरूकवामे नव पीढ़ीक पैघ लोकक सहानुभूमिक बलेँ अन्तमे सुखान्त भए गेल अछि। भोरूकवा वस्तुतः बदलैत सामाजिक वातावरणमे प्राः कालक सूचना दैत अछि।''[151]

हिनक दोसर उपन्यास ''कादो आ कोइला''मे ग्राम्य जीवन ओ नागरिक जीवनक कॉकी केँ देखाओल गेल अछि। गामक प्रतीक थिक ''वादो'' आ शहरक प्रतीक ''कोइला''। ''मिथिला मिहिर''मे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेलाक बाद जखन ई पुस्तक रूपमे प्रकाशित भेल तँ एकरा प्रसंग ''इन्तर टाइटिल''मे धीरेन्द्रजी स्पष्ट रूपेँ निम्नलिखित शब्दावली अंकित कए देलन्हि। ''मजदूरी करब, रोड़ा फोड़ब– मुदा अस्तित्वक रक्षा लेल लड़ब ।हम कोनो धन्ना सेठक बेटा नहि ओह– गामक धरती सँलए शहर धरि– एक गाहे हाल''–

एहिमे कतहु दू मत नहि अछि जे विभिन्न मार्मिक संदर्भ सँ भरल एहि जनवादी उपन्यासमे यथार्थवादी चित्रण एवं आस्थाक स्वर मुखरित भेल अछि। वस्तुतः प्रस्तुत उपन्यासमे एकटा

---

[148] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–294
[149] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–301
[150] Dr. Jaikant Mishra, History of Maithili Literature, Page-240
[151] डॉ0 अमरेश पाठक, मैथिली उप0आ0 अध्ययन, पृ0–154

ऐहन पात्र केँ ठाढ़ कएल गेल अछि जे गमैया राजनीति ओ गामक वातावरण सँ एहि प्रकारें ओझड़ा जाइत अछि जे शहरमे जाए और खोजैत अछि– किन्तु शहरम एहन कोनो चीज नहि भेटैत छैक जे ओकरा लेल आकर्षणक केन्द्र हो। एहन सन बुझि पड़ैत अछि जे वर्त्तमान समयमे ने गामक जीवन सुखद बुझि पड़ैछ आ ने शहरिए जीवन।

डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा कहैत छथि– ''जँ एहि कृतिक मनोविश्लेषणात्मक संदर्भमे कहल जाए जे उपन्यासक कथ्यक रूपमे लेखक पलायनवादक विपरीत संधर्षमे लागल रहबाक प्रेरणा दैत छथि, तँ अत्युक्ति नहि होएत। धीरेन्द्र जी गाम आ शहरक वातावरण आओर चित्र चरित्र उरेहबामे बहुत अंश धरि सफल भेल छथि।''[152]

यथार्थतः उपन्यासकार द्वारा प्रस्तुत निम्न शब्दावली मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ उल्लेखनीय मानल जा सकैछ। ''ओनहि दिन सन ग्लानि विरनकेँ अपना जिनगीमे कहिओ नहि भेलैक। एक प्रकारक अपराधी भावना सँ भरि जकाँ गेल छलैक ओकर मोन। ओकरा लागि रहल छलैक जेना ओ आत्महत्या कऽ लेने रहय। नेने सँ अपन परिवेश सँ फुट एकटाा विचित्र संस्कार रहैक ओकर मुदा स्थिति सर्वदा ओकरा सँ विपरीत रहल। तैयो आइ अपनाकेँ बचवैत आयल छल। गामक कादोमे एकटा मतकोकाक पवित्र फूल पुष्पित भऽ जखन सुखा गेल रहय तँ ओतहु सँ भागि गेल छल विरन.....। गामसँ भगबोक एकटा जबरदस्त कारण सकुन्तु सेहो रहय..... .....मुदा की भेलैक भागि कऽ ओकराा? ओकरा जेना लागि रहल छलैक जे ओ कोशलियाक मृत आत्माक संग बेमानी कयलक अछि।.....बेमानी। विरनक आत्मा सिहरि जाइत छैक, मोन पाड़ि कऽ।''[153]

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे एहि उपन्यासमे सामाजिक चेतनाक विकास भेल अछि।

हिनक तेसर उपन्यास ''ठुहुकि बहु कमला''मे सामाजिक चेतनाक विकास सहज रूपेँ भेल अछि– खाहे ओ जनका, ठिठरा, रामकिसुन, कनटोर मिसर हो अथवा कनटीर मिसरक एलसीसी–यन कहओ निहार 'सेहबा'। कनटीर मिसरक संगीत सभ मुसरी झा, पिरथी चौकीदार कम्खना अन्य को पात्र।

सामाजिक चेतनाक प्रसंग जे सब प्रयोजनीय होइछ से सभ तत्व एहि उपन्यासमे पाओल जाइछ।

दूध–फूल श्री रमानन्द रेणुकक एकटा एहन उपन्यास थिक जाहिमे दरभंगा मण्डलक उत्तरभागक एकटा असहाय विधवा धुनकाइनिक आदर्श जीवनक आआरे एक मात्र बेटा सरनाक चरित्रक विकास देखाओल गेल अछि। रामसरन अपन गाम सँ बहराय पटना धरि पहुँचैत अछि। ओतए ओकरा वैराग्य जन–जीवनसँ दूर लए जाइत छैक। प्रस्तुत उपन्यासमे रामसरनक जीवनक विभिन्न प्रकारक अनुभूतिक बड़े यथार्थवादी रूपेँ वर्णन भेल अछि। कर्मठ बाप ओ चरित्रवान माइक आशीर्वार सँ रामसरन सत् ओ असत् दुहूमे विवेक सँ असत् के त्यागि सन्मार्ग पर चलैत

---

[152] डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा–स्वातंत्रयोत्तर मैथिली साहित्यक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रवृति–पृ0–190
[153] श्री धीरेन्द्र–कादो आ कोइला, पृ0–110–111

अछि। ई उपन्यास प्रारंभ होइत अछि अछि सकलीक चरित्र सँ ओ समाप्त सेहो होइत अछि सकलीक भावुकता सँ। वस्तुतः दूध–फूल थिक षष्ठी तत्पुरूष, जाहिमे सकलीक व्यक्तित्व दूधक समान शुक्त ओ रामसरन सदृश महाप्राण पुत्र केँ फूल जकाँ विकसित करैत अछि।

ई उपन्यास यौन–भावना सँ ऐना फराक अछि जे एहि युगक लेल नितान्त नव वस्तु बुझना जाइछ। डॉ0 जयकान्त मिश्र कहैत छथि–"The greatness of this novel lies in giving up sex as its thems. A grip ever life and the natural way in which it Creates, suspense area really its new healthy features.'

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' एहि''[154] उपन्यासक संबंधमे कहैत छथि– ''एहि उपन्यासमे उपन्यासकार ग्राम्य–जीवनक यथार्थ चित्र सँ अंकित करबे कएने छथि, जाहि मध्य जीवनक सूक्ष्म निरीक्षण ओ गम्भीर अर्न्तदृष्टि अछि, मुदा एकर महत्त्व मैथिलीमे नवरीतिक उपन्यासक दृष्टिसँ अधिक अछि।''[155]

एहि तरहेँ समाजवादी यथार्थवादी यथार्थक आवरणमे ई आदर्शवादक संदेश सेहो दैत अछि। जे बड़ कम उपन्यासमे देखल जाइछ।

रूपकान्त ठाकुरक ''नहला पर दहला'' नामक उपन्यास जासूसी उपन्यास थिक। एकरा दोसर जासूसी उपन्यासक कोटिमे राखल गेल अछि। एहि उपन्यास मध्य दुई गाट कथा कहल गेल अछि पहिल कथा डॉक्टर साहेब तथा शान्ति, अजरा, चपला प्रभृति सँ संबंधित अछि आ ''दोसर शीला ओ सुधीर, डाक्टर साहेब भ्रष्टाचार भेदी सरकारी व्यक्ति एवं शान्ति, अजरा, चपला प्रभृति थिकीह देश विरोधी षडयंत्रकारी तत्वक प्रतिनिधि ओ अपराधी। डॉक्टर साहेब एहि तत्व सभ सँ टक्कर लैत एहि षडयंत्रकेँ असफल करैत छथि, से बड़ रहस्यपूर्ण ओ रोचक रूपेँ चित्रित भेल अछि। एहि क्रिया–कलापक महत्त्व सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे उल्लेखनी कहल जा सकैछ।

मणिपद्मक 'कोब्रागल''मे आयोपान्त सस्पेन्स बनल रहैत अछि। चरित्र निरूपणक दृष्टिएँ कहल जा सकैछ जे एकर भूल समाजक भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि। मणिपद्मजीक साहित्यक अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास ''नौका वनिजारा'' मध्य यदि एक दिस सामाजिक जीवनक विविध पात्र, घटना एवं मानसिक ऊहापोहक चित्रण भेटैत अछि तँ दोसर दिस फुलेश्वरीक चरित्रमे सह–जताक दर्शन होइत अछि।

सामाजिक चेतनाकेँ ध्यानमे राखि कए सभ पात्रक अध्ययन कएल गेल अछि।

सुधांशु ''शेखर'' चौधरी द्वारा छद्भूभ नामे तर पट्टा ऊपर पट्टा नामक उपन्यास मिथिला मिहिर मध्य धारावाहिक रूपेँ छपल छल। एहि उपन्यासमे देखाओल गेल अछि जे परमा नामक एक युवक अपन परित्यक्ता बहिन गंगाक प्रेरणाक संबंध पाबि सामाजिक कुरीति एवं दुर्भावना केँ निर्मूल करबाक उद्देश्य सँ गामक राजनीतिमे ढुकैत अछि आओर नवयुवक लोकनिक एकटा

---

[154] Dr. Jaikant Mishra, History of Maithili Literature, Page-241
[155] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–303

दल बनाए कार्यमे अग्रसर होइत अछि। उपन्यासकार मूल कथाक संग–संग गंगाक चरित्र द्वारा एहि उपन्यासमे नारी जीवनक व्यवस्था, विवशता, प्रतिबद्धता एवं करूणाक चित्रण सामाजिक पृष्ठभूमिमे करैत छथि। प्रस्तुत उपन्यासमे सामाजिक कुरीति केँ उन्मूलित करबा लेल युवा वर्गक संघर्ष केँ चानन ठोपबला टिक झुल्ला कोना चकनाचूर कए दैत अछि। तकरा रचनाकार सहजहिं स्वीकार करैत छथि। एहि प्रसंग डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश''क ई कथा उल्लेखनीय अछि–'' गंगा परित्यक्ता अछि कारण ओकर पति संतोषपूर्ण विदाई नहि भेटवाक कारणे ओकरा छोड़ि दोसर विवाह कए लैत छैक। मुदा अंतमे ओकर द्विरागमन करवाए उपन्यासकार उपन्यासमे सुखान्त कए देल अछि एहि प्रकारें एहि मध्य सामाजिक ओ मानसिक समस्याक संग–संग विलक्षण चित्रण भेल अछि जे उन्यासक इतिहासमे अभिनव वस्तु थि।''[156]

सुधांशु शेखर चौधरीक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास ''ई बतहा संसार''मे सामाजिक चेतनाक समयक परिवाक भेल अछि। रचनाकार ने केवल आत्म कथ्य लिखिकए प्रत्युत चरित्र ओ घटनाक प्रसंगमे प्रचुर मात्रामे अर्न्तमनक व्याख्या ओ रहस्यक उद्घाटन कए समीक्षक कार्य के हल्लुक कए दैलन्हि अछि। प्रत्येक पात्र कामिनी, अखिल, निरंजन, सुदर्शन, चान प्रभृतिक नग्न रूपमेँ प्रस्तुत भेल अछि। वस्तुतः ओकरा सभक चरित्र ओ स्वभावकेँ मूल्यांकन करबाक लेल पाठक लोकनिकेँ कनेको मानसिक श्रम नहि करए पड़तैन्हि। यथार्थतः एहि उपन्यासक विलक्षणता पाओल जाइत अछि एकर कथात्मक नाटकीयतामे एकर वर्णन विन्यासक प्रसंग। डॉ0 'श्रीश'' लिखैत छथि– आधुनिक उपन्यासमे एहि प्रकारक वर्णन केँ हास्यास्पदें कहल जाए सकैत अछि परन्तु समग्र रूपेँ विचार कएलासँ चरित्रक सूक्ष्म विश्लेषण, घटनाक रोचक वर्णन स्थान–स्थान पर मानसिक ऊहापोहक चित्रण विचारक प्रौढ़ता एवं भिन्न–भिन्न प्रकार कथाक संतुलित संयोजन आदि सभ दृष्टिएँ एकरा मैथिलीक श्रेष्ठ उपन्यास कहल जा सकैत अछि।''[157]

हिनक ''दरिद्र छिम्मीर'' नामक उपन्यास पराशरक छदम् नामे प्रकाशित भेल छल। ''दरिद्र छिम्मीर'' आत्मकथात्मक शैलीक प्रौढ़ रचना थिक।

एहि उपन्यासमे निम्न मध्यवर्गीय समस्या केँ भावात्मक परिवेशमे चित्रित करबाक प्रयास लक्षित होइत अछि। एहि उपन्यासक संबंधमे डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' लिखैत छथि–

''पारिवारिक यथार्थ जीवनक प्रस्तर शिला पर आहत भए विनिष्ट भए जाइत छैक ओ पारिवारिक पृथक्करण होइछ, अमल ओ रंजनाक प्रेम प्रकरण एकर दृष्टान्त थिक। अंतमे उपन्यासकार उत्तरदायित्वपूर्ण कर्त्तव्य– बोधक महत्त्व केँ प्रतिपादित करैत छथि दरिद्र छिम्मीर नामे ख्यात अक्रर्मन्य अमलक अन्तस्तलमे कर्त्तव्यक दृढ़ता भावक चित्रण कए।''[158]

एहि तरहेँ देखल जाइत जे एहि उपन्यासमे सामाजिक परिवेशक महत्त्वपूर्ण भूमिका देखाओल गेल अछि।

---

[156] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–298
[157] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–298
[158] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–315–316

श्री प्रभास कुमार चौधरी द्वारा मैथिलीक पाँच टा उपन्यास लिखल गेल अछि ''अभिशप्त'', ''युगपुरूष'', ''हमरा लग रहब'', ''नवारम्भ'', आओर ''राजापोखरिमे कतेक मछरी''।

हिनक अभिशप्त आओर युगपुरूष दुहू उपन्यास यथार्थवादी उपन्यासक कोटिमे परिमाणित कएल गेल अछि। अभिशप्तमे दू पीढ़ी मध्य निहित असंतुलन तथा समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचार आओर यथार्थ दुहू मित्रक बीच कृत्रिम संबंध, पति–पत्नीक मध्य विभेद, कार्यालयक अनुशासनहीनता, इत्यादिक विवेचन भेल अछि। एहि बातकेँ काटल नहि जा सकैत जे मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग दुनू साम्प्रतिक स्थितिमे अभिशप्ताक चरणसँ गुजरि रहल अछि मुदा प्रभासजी केवल मध्यवर्गीय पात्र धरि अपनाकेँ सीमित रखैत छथि।

समाजमे कोनो वर्गक अभिशप्तताक कतोक कारण ताकल जा सकैछ– जेना–सामाजिक, आर्थिक, वा राजनीतिक। ''अभिशप्त''मे प्रकाश अपन शिक्षित पत्नी मीराकेँ लघु कए अपन जिनगीकेँ स्वयं अभिशप्त बनओने अछि। सामाजिक मूल्यांकन दृष्टिएँ जे देखब तँ बूझि पड़त जे परिवारमे मीरा भेटि सकैत अछि, किन्तु जहाँ धरि प्रकाशक जिनगीक अभिशप्ताक प्रश्न उठैत अछि, बुझना जाइछ जे व्यर्थ आडम्बर आओर अहम न्यताक कारणें ओ बढ़ि गेल अछि ओ ने तँ माय–बापकेँ अपना दिससँ असंतुष्ट राखै चाहैत अछि आ ने पत्नीकेँ ओ चाहैत अछि एहि दुहूक सम्बन्धक बीचमे सामंजस्य। परंच ओकरे सृजित परिस्थिति ओकरा असमंजसमे राखि देल। ओकरा पीड़ाक उत्सक ने तँ कोनो व्यवस्था छैक आओर ने तँ कोनो सामाजिक, आर्थिक तत्वे। एहि हेतुएँ प्रकाशक पीड़ा सामान्य मध्यवर्गीय पीड़ाक कोटिमे नहि राखल जा सकैछ। वस्तुतः निराशावादी प्रकाशक चरित्रमे अवसर वादिताक दर्शन होइत अछि। एहन–चित्रण जखन सामाजिक वा राजनैतिक स्थिति पर अपन सिद्धान्त बधाड़ए अछि तखन ओकर प्रसंगमे दोनो निर्णय देवामे गम्भीर चिन्तनक आवश्यकता अछि।

हिनक दोसर उपन्यास ''युगपुरूषमे वर्तमान व्यवस्थाक आलोचना कयल गेल अछि। युग पुरूषक कथाक प्रारंभ होइत अछि बनारसक रहस्यमय परिवेश सँ। एहिमे शंकरक शैशव अज्ञेयजीक ''शेखर एक जीवनी'क नामक शेखर सँ मिलैत अछि। शंकर वर्णित तथ्य सँ परिचित होमए चाहैत अछि। बनारस प्रवासक बाद सभ पात्र लेखकक हाथसँ निकलि जाइछ। बुझि पड़ैत अछि जेना सभ पात्रक चरित्र एकटा अप्रत्याशित मोड़ लए लैत अछि। आगाँ चलि कए शंकर अपन अधिकारक प्रति लापरवाही देखबैत छथि। करूणेश, रोजी, रमण, आनन्द इत्यादिकेँ एहि उपन्यासक प्रतीक पात्र कहि सकैत छी।

एहिमे चम्पा ओ शोभाक प्रेम, सन्दर्भ सार्थक बूझि पड़ैत अछि आओर रोजीक संदर्भमे चरित्र–हीनताकेँ उदान्त करबामे उपन्यासकार केँ सफल कहल जा सकैछ। एकर मुख्य पात्र अछि रतना। ओ गामक परिस्थिति सँ उत्पन्न दुराचार सँ ग्रस्त भए जाइत अछि– जकर कारण थिक निर्धनता। ओकर धर्म–वर्ग–चरित्र आओर परिस्थिति एहि तथ्यक सबूत थिक जे ओ शोषणक शिकार अछि परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे ओकर परिणति की? ओ अपन परिवेश केँ चिन्हलाक बादहु प्रतिरोधमे ठाढ़ नहि भए सकल अछि। रतनाक चरित्रक नियति एकटा व्यंग्यक संस्थापन सेहो कए दैत अछि। जे आजुक समयमे रतने सन लोक युग–पुरूष भए सकैछ तथाकथित युगपुरूष होएबाक ई प्रवृति आओर अतीत साम्प्रतिक, राजनीतिक प्रमाण प्रस्तुत कएलक अछि। डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा कहैत छथि–'' एहिमे कतहु दू मत नहि जे आजुक ''युगपुरुष''केँ चिन्हबामे उपन्यासकार समाजक सकल विरोधाभास केँ बेनकाव कए दैत छथि।

इएह थिक एहि उपन्यासक सफलता आओर ई वर्तमान राजनीतिक यथार्थ केँ चिन्हित करक लेल एकटा सार्थक कृति बनि गेल अछि।''[159]

प्रभासजीक तेसर उपन्यास ''हमरा लग रहब''मे सभ प्रकारक पात्र भेटैत अछि। यथा–सामंत, कल्लू चौधरी, युगपुरूष मध्य चित्रित रतनाक दोसर संस्करण मुनेसर राजनीतिक संरक्षणमे पोसाइत मधु शोषणक शिकार मामा, मामी चुम्बकीया शीला आदि। नायक अछि प्रणव। प्रणव थिक शोषणक प्रत्यक्षदर्शी। ओ देखैत अछि सामंती व्यवस्थाक चिन्ह। ओकर परिवेश आओर मामा–मामी संग भेल शोषण संभावना दऽ रहल छल जे प्रणव शोषणक विरोध करत, मुदा ओ सभटा दर्शित अतीत केँ बिसरि जाइत अछि आओर आश्चर्यक खोल जे शीर्षक वर्गक संरक्षण ओ समर्थन लेल बनाओल जाइए तकरा ओढ़ि लइए। प्रणवक सभटा गतिविधि प्रणव कामना सँ संचालित बुझि पड़ैत अछि। एहि संबंधमे डॉ0 श्रीमती प्रभावती झाक कथ्य छन्हि–''एहि उपन्यासक संबंधमे ई कहल जाइछ जे प्रणवक जीवन–गाथाक क्रममे गाम आ शहरक सतही राजनीतिकेँ सेहो स्थान भेटल अछि। मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक दृष्टिसँ एहि प्रकारक टिप्पणीक कोनोटा आधार नहि अछि कारण जे व्यक्तिक मानसिकतामे सभ कथुक सन्निवेश रहैत छैक। एहि तरहक टिप्पणीक एहि दृष्टिसँ सेहो किछु अर्थ नहि रहि जाइत अछि जे प्रस्तुत कृतिक चरित्रमे अक्षमता आ अस्वाभाविक आ नाटकीय घटनाक्रम प्रभावशाली नहि बनबैत अछि।''[160] नारीक विवशताक मूल्यांकन क्रममे शीलाक चरित्रक प्रसंग डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' एहि उपन्यासक संबंधमे समीक्षात्मक टिप्पणी करैत छथि– ''शीलाक चरित्रमे उपन्यासकार कुशलतापूर्वक एक संग नारीक विवशता, ओ निर्बलता, प्रेम ओ घृणा, आत्मग्लानि ओ स्वाभिमान, प्रतिशोध ओ प्रतिहिंसा एवं सर्वोपरि प्रणय–भावनाक जेहन सूक्ष्म ओ मनोवैज्ञानिक उदान्त चित्रण कएल अछि तकरा कलापूर्ण कहल जा सकैत अछि।''[161] प्रणवक एवं शीलाक चरित्रक अध्ययन सामाजिक चेतनाक विकासक परिप्रेक्ष्यमे कयल गेल अछि।

''नवारम्भ'' उपन्यास उपन्यासकारक प्राचीन गौरव आ परम्परा तथा ओकर ध्वस्त समाधि पर उपजल एकटा लज्जास्पद सभ्यताक बीच एवं चेतनाक स्फुरणक कथा अछि। जे पहिल भागमे हवेली मोहनपुरक कथामे ध्वस्त होइत प्राचीन गौरव एवं परम्पराक चित्रण भेल अछि, तँ दोसर भागमे लंका मोहनपुरक कथामे तकर समाधि पर उपजैत लज्जास्पद सभ्यताक चित्रण कयल गेल अछि। तेसर भागमे दलित वर्गक नवचेतनाक स्फुरणकेँ अभिव्यक्ति करबाक प्रयास लक्षित होइछ।

प्रस्तुत उपन्यासमे वर्णित प्राचीन गौरव ''आ'' परम्परा सामन्त वर्गक अछि। एकर रक्षक छथि श्रीकान्त चौधरी। जेनाकि पहिने उल्लेख भऽ चुकल अछि जे एहि उपन्यासक पहिल भागमे सामन्त वर्गक टूटैत आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक दबदबा केँ देखाओल गेल अछि। एकर ध्वस्त समाधि पर जाहि लज्जास्पद सभ्यताक डारि–पात चढ़ल छैक तकर सहयोगी एकवाली चौधरी हरिश्चन्द्र मिश्र, महेश मास्टर इत्यादि कतेक पात्र बनाओल आ सकैछ आओर एकर

---

[159] डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा–स्वातंत्रयोत्तर मैथिली साहित्यक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रवृति–पृ0–206
[160] डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा–स्वातंत्रयोत्तर मैथिली साहित्यक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रवृति–पृ0–209
[161] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–312

बीजारोपण कएने छथि नायक रवि। उपन्यासकार एहि सभ्यताक बीच नव चेतनाक स्फुरण लेल रविक उपयोग कएने छथि। किन्तु ओ नपुंसक नायक रूपमे स्थापित भऽ कए रहि गेल छथि। नायकक अंग–अंगमे सामन्ती संस्कार रचल–बसल छन्हि जे सामाजिक दृष्टिएँ बेश–परम्पराक प्रबलता सिद्ध करैत अछि। कविताक संग हुनक बलात्कार ओहि संस्कारक देन थिक। परंच साहसक अभावक कारणें ओ गामसँ भागैत जाए छथि ओ जहिया तक ओ वापस गाम अबैत छथि ताबत बहुत किछु बदलि गेल रहैत छै। हुनक सम्पत्ति हड़पबाक योजना बनैत रहैछ, किन्तु ओ अपन अधिकार सँ निर्लिप्त भए प्रणवक दोसर संस्करण भए जाइत छथि। शोषणक प्रक्रिया सँ अनभिज्ञ ओ अनचोकहिमे क्रान्ति एवं शोषणक गप्प करैत छथि, अपन सुधारवादी डेग सँ गामक नक्शा बदलि देमए चाहैत छथि, किन्तु हुनका नव समाजक कल्पनाक नहि छन्हि, तँ हुनका समयक गतिविधि हुनका चरित्रकेँ असामान्य, नपुसंक आओर अविश्वनीय बना दैछ। अंतमे कविता आओर रविक संबंध प्रेमक संबंध नहि भऽ कए पश्चाताप सँ आबद्ध संबंध भऽ जाइछ – जे सामाजिक दृष्टिकोण सँ अपन एकटा फराकेँ महत्त्व रखैत अछि। ''नवारम्भ''क प्रसंग समीक्षा करैत श्री सुधांशु शेखर चौधरी कहैत छथि–'' हमरा लग रहब''क नायक प्रणव उपन्यासकारक तर्जनीक नीव पर नाचऽ वला अपनामे देवत्व आरोपित कयथे नहनिहार युवक यदि चरित्रक कृत्रिमता अपनामे समेटने रहल अछि तँ ''नवारम्भ''क नायक रवि ताहिसँ निश्चित रूपसँ समर्थ चरित्र अछि जे सत्य प्रगट भऽ गेला पर कम–सँ–कम संघर्षक हेतु सन्नद्ध तँ होइत अछि। ई भिन्न कथा जे उपन्यासक अंतिम नाटकीयता रविक संघर्षकेँ बढ़यबामे योगदान नहि दैत अछि, उपन्यासकेँ हल्लुक बना दैत अछि।''[162]

वस्तुतः 'नवारम्भ''मे उपन्यासकार ओहि सभ पक्षकेँ जगजियार कयलन्हि अछि जे ईर्ष्यादेव, छल–कपट, स्वार्थपरता, दलितवर्गक शोषण, ग्राम्य– राजनीतिक विद्रूपता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार प्रभृतिक सजीव एवं यथार्थ अलबम बनाए देल गेल अछि।

''हिनक राजा पोखरिमे कतेक मछरी'' नामक उपन्यासक पृष्ठ भूमिमे एकटा एहन साधु अछि (कठरी बाबाजी) जे चोरी करए जाइत निसबद्ध रातिमे चोर केँ बोकि कए ओकर जतरा भंगठबैत अछि। लोहछल चोरबा सभ ओहि साधु, अर्थात् कठरी बाबाजी केँ घुम–घुमा दैत अछि। हारि कए चोर सभ ओहि बाटे जाए छोड़ि दैछ। एकर अन्तर्निहित तात्पर्य इएह जे कठरी बाबाजी शारीरिक यानातक प्रति काठक जेकाँ तटस्थ अछि आओर शारीरिक यातना ओकरा आन्तरिक विरोध करबासँ नहि रोकि पबैत छैक।

''राजा पोखरिमे कतेक मछरी'क नायक थिकाह भास्कर। अपन छोट सन जीवनमे ओ किछु क्षेत्रक घनिष्ठ सम्पर्कमे अबैत अछि। आधुनिक गाय–तंत्र एवं विश्वविद्यालय सभतरि ओ अन्याय एवं अनैतिक साम्राज्य देखैत अछि। सभठाम ओ अनीतिसँ सम्पर्क करब छोड़ि दैछ आ शीघ्रहि राजा पोखरिमे फेकल एकटा नगण्य देयाक लहरि जेकाँ एहि संसारसँ विला जाइछ। भास्करक जीवनक कथा आनन्दक एकटा नीक परिकल्पनाक भ्रूण– हत्याक कथा थिक वा दोसर शब्दमे कहल जा सकैछ जे ई अपन सांस्कृतिक मृत्यु गाथा थिक। जुम्मनक रूपमेँ जँ उपन्यासकार मरैत उपन्यासकारक अनुपम कल्पना करैत छथि तँ ब्रह्म थिक समाजक कुंठित शक्तिक प्रतीक आओर महेन्द्रक चरित्र अछि एहि सभक हेतु उत्तरदायी शक्तिक वैयक्तिकरण परंच जुम्मन

---

[162] सुधांशु शेखर चौधरी, मि0मि0 (6 मई 1979)मे पुस्तक परिचय स्तम्भमे व्यक्त विचार, पृ0–18

सनक पात्र जे अपन बेटाक– मरियो गेला पर अनकर बेटाक रक्षा चाहैत हो आधुनिक समाजमे एकटा कल्पना मात्र थिक।

एहि उपन्यासकेँ अध्ययन कएलाक पश्चात भास्करक प्रति करूणाक भाव जाग्रत होइत अछि। पुनः आक्रोश उत्पन्न होइछ एहि घटनाक प्रति जे भास्कर सन लोक कतहु एना मारल जाए किन्तु आक्रोश तुरंते अपराधक ग्लानि–भावनामे बदलि जाइछ जखन कि हम एहि प्रश्नक उत्तर ताकए लगैत छी जे भास्करक हत्याक लेल केँ उत्तरदायी?

एहि उपन्यासकारक संबंधमे डॉ0 भीमनाथ झा '' राजा पोखरिमे कतेक मछरी? के दृष्टिमे राखि कहैत छथि–'' ग्रामीण परिवेश, टूटैत सामन्ती परिवार तथा बदलैत सामाजिक परिस्थितिक कथा कहबामे प्रभास जादूगर छथि। मिथिलाक परम्परित प्रचलित लोकोक्ति केँ वर्तमान संदर्भक संग जोड़ि ओहिमे नवीन अर्थवत्त प्रदान करब प्रभासक विशेषता थिक। अपन पात्र आ परिवेशसँ हुनका घनिष्ठ परिचय छनि तथा कहबाक शैली ततेक रोचक आ'' स्वाभाविक छनि जे पाठक हुनक कथाक संग बन्हा जाइछ अछि। किन्तु स्वाभाविक रीतिएँ बढ़ैत घटनामे कतहु–कतहु सँ नाटकीयता आ विषाद अछि, जे पाठककेँ एक्के बेरे चौका दैत छैक– शांतिक हिलकौरमे जेना कंकड़ खसि पड़ल हो। इहो उपन्यास हुनक अन्य उपन्यास सभ जकाँ मिथिलाक सामन्ती परिवारक टूटनक कथा कहैत अछि।, मिथिलाक गाम घरसँ परिचय करबैत अछि, सभ आर्थिक, सामाजिक आ राजनीतिक परिस्थितिक परिचय दैत अछि।''[163]

डॉ0 चण्डी प्रसाद जोशी सामाजिक उपन्यास लेखनक संदर्भक परिस्थिति सँ भयाक्रान्त होएबाक कारणक मादें कहैत छथि–'' परिस्थितियो से भयभीत होने का कारण यह है कि मध्यवर्ग समाज तथा देश की नियंत्रण शक्ति खोता जा रहा था और वे मध्यवर्गीय उपन्यासकार आत्मविश्वास खो चुके थे। इनकी दृष्टिमे नारी–पुरूष का सम्पर्क एक मात्र यौन–संबंध पर आधारित होता है, अतः ये उपन्यासकार स्वच्छन्दतापूर्वक यौन–चित्रण करते हैं। समाज के सभी बंधन टूट जाते हैं और उनके पात्र अपने रचयिताओं के साथ स्वास्थ्य लाभ करते हैं। यह यौन–प्रसंग संघर्षमे जूझनेवाले पात्रों के लिए विश्राम स्थल है।''[164]

श्री विन्देश्वर मंडलक ''बाटक भेंट : जिनगीक गेंठ''मे एकटा युवक–युवतीक प्रेम कथा अछि। ई उपन्यास एकटा एहन दस्तावेज अछि जाहिमे विवाह सन व्यवस्थामे काटर लेब ओ देब एकटा महान दोष अछि तकरे उद्घोषित कएल गेल अछि। एहि उपन्यास मध्य रचनाकार सूर्य कुमार सन कर्मठ युवक केँ ठाढ़ कए एकटा आदर्शवादी दृष्टिकोणक परिचयक संग–संग इहो देखाओलन्हि अछि जे एकटा बूढ़ चौदह वर्षक कनियाँक लेल आकुल व्याकुल रहैत छथि, परिस्थिति हुनका ओहि वालाकेँ अपन बेटी बुझवा लेल विवश कए दैत छन्हि। उपन्यासक महिला चरित्र मध्य चन्द्रमुखीक चित्र बेस सहज उतरल अछि। सामाजिक चेतनाक विकास एहि उपन्यासमे भेल अछि।

---

[163] डॉ0 भीमनाथ झा–मि0मि0 (19सँ 25 जून 83) आ मैथिली साहित्य शीर्षक लेख, पृ0–11

[164] डॉ0 चण्डी प्रसाद जोशी–हिन्दी उपन्यासः समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ0–352–353

जीवकान्तक 'पनिपत' मैथिलीक बहुचर्चित उपन्यासक कोटिमे अबैत अछि। एहिमे एक व्यक्तिक रूपमे नायक (अरविन्द)क मनोविश्लेषणक संग–संग, सामाजिक समस्या नीक जहाँ उजागर भेल अछि। नायक समाजशास्त्रमे एम0ए0 पास छथि, तथापि रोजगारक समस्याक समाधान लेल गली–गली भटकैत रहैत छथि। उपन्यासकार द्वारा जहाँ–तहाँ ग्राम्य जीवनक विवशता, अन्य विश्वास, कुलागत स्पर्द्धा, ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट आदिक मर्मस्पर्शी चित्रण भेल अछि। ''पनिपत'क अन्य नायकक संबंधमे डॉ0 ''श्रीश'' कहलन्हि अछि–'' नायकक अतिरिक्त जे पात्र छथि नायकक पत्नी, माय–बाप सभ ग्राम्य जीवनक करूणा, विवशता तथा नैराश्य कैं ओदने समय काटि रहत छथि। सभमे आच्छन्न असंतोष ओ अवसादकेँ लेखकक बड़ नीक जकाँ वर्णन करबामे समर्थ भेल छथि।''[165]

हिनक दोसर उपन्यास ''दू कुहेतक वाट''मे जितेन्द्रक व्यक्तित्व एकटा अन्तर्मुखी चरित्रक रूपमे देखाओल गेल अछि।

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' एहि उपन्यासक संबंधमे कहैत छथि–'' एहिमे नहि तँ कथाक प्रधानता अछि आ ने घटनाक बाहुल्य, मुदा एहि मध्य किशोर भावनाक बड़ सुन्दर चित्रण भेटैत अछि जे यथार्थ होइतहुँ रोमांटिक अछि, उपन्यास होइतहुँ कविता अछि। एहि उपन्यासकेँ पढ़लासँ भाव लोक संबंधी लेखकक गंभीर अन्त दृष्टि तथा सूक्ष्म विश्लेषण पटुताक दर्शन होइत अछि। मुदा उपन्यासमे जे विविधता ओ व्यापकता चाही तकर एहि मध्य अभाव बूझि पड़ैत अछि।''[166]

जीवकान्तक ''अग्निवान'' लघु उपन्यास होइतहुँ ग्राम्य जीवनक सम्पन्न ओ विपन्न दुहू पक्षकेँ उजागर कए ओहिमे भोगैत जीवनक अन्तरंग केँ अपन सजीव भाषामे चित्रित करैत अछि। एहिमे कुन्तीक भाइक दरिद्रता, सपनाक एकान्त मृत्युबोध, सुजाताक भाई ओ पितिआइनिक कलह एवं भैयाक मर्यादा ओ अनुशासन सभक प्रासंगिकताक मूल्यांकन सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे उपयोगी कहल जा सकैछ। एहि उपन्यासक प्रसंग डॉ0 जयकान्त मिश्र कहैत छथि–"Even his last great novel Aginban (The Arrow of Fire) is a great allegory of the fire-hunger, frustyation and Unemloyment that the overtaken modern Mithila and demands our immediate attention."[167]

श्री कुँवरकान्त 'सेहन्ता''मे नवयुवक द्वारा मातृभाषाक विकासक लेल चलैत आन्दोलन एवं त्यागक कथा कहल गेल अछि। एकरा मिथिलाक अपन माटि–पानीमे लिखल गेल अछि। जें किने लेखकेँ माटि–पानिक प्रति स्नेह छन्हि तें एहिमे स्थानीय रंग बेस जगजियार अछि। दिनेश, सूर्यकान्त, अजबलाल बाबू, रविकान्त, रमेश प्रभृति पुरूष चरित्रांकन संग–संग स्त्री चरित्र में रविकलाक मानसिक पक्षकेँ चित्रित करबामे रचनाकार सफल सिद्ध भेल छथि।

एहि उपन्यासक संबंधमे डॉ0 जयकान्त मिश्रक कथन पुस्तकक आमुखमे अछि–'' मिथिलाक अपन वातावरणमे लिखल गेल ई विशुद्ध सामाजिक उपन्यास अछि। एकर प्रत्येक पात्र मिथिलाक

---

[165] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–304

[166] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–304

[167] Dr. Jaikant Mishra, History of Maithili Literature, Page-242

माटि–पानिसँ संबंध रखैत अछि आ स्वाभाविक रूपेँ मुख्यकथा–वस्तुकेँ विकसित करैत अछि। लेखक पात्रक सजीव चित्रणमे सफल भेल छथि। एकहि साँसमे बहुत बात कहबाक प्रयास करितहु मूल कथानक सँ संबंध रखबामे सफलता प्राप्त कएलन्हि अछि। ठाम–ठाम साहित्यिक चित्रण करबामे तथा विषयवस्तुमे निखारबामे अपन सहज प्रतिभाक परिचय देलन्हि अछि।''[168] सामाजिक चेतनाक विकास एहि उपन्यासमे समग्र बुझना जाइक कियाक तँ एहिमे समाजक सभ पक्षकेँ समेटि लेल गेल अछि।

श्री विभूति आनन्दक ''सुनगैत एकटा गामक कथा'' दीर्घ कथाक रूप वेसी देखना जाइछ, उपन्यासक्रम। एहि उपन्यासमे एकटा गाम रामनगरक नवजागरणक परिवर्तन प्रक्रियामे गुजरैत सामाजिक परिस्थिति एवं मानवीय मनोवृत्तिक सजीव चित्रण भेल अछि। निम्न ग्रामीण वर्गमे क्रमिक अभिजात वर्गक वर्चस्वताक प्रति विद्रोह स्वाभिमान ओ संघटनात्मक शक्तिक उदय भए रहल छैक जकर नेतृत्व इन्दू ओ रमेश सन निर्धन नव शिक्षित युवक करैत अछि। उच्च वर्गहुक प्रतिनिधित्व नवयुग– चेतना सम्पन्न भैरव पाठक सन युवक एवं शांति सन नवयुवती द्वारा होइछ।

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' कहैत छथि– ''सुनगैत एकटा गामक कथा'' सँ उपन्यासकारमे निहित ग्राम्य जीवनकेँ यथार्थ रीतिए अभिव्यक्त करबाक क्षमताक परिचय प्राप्त भए जाइत अछि। परन्तु अन्यान्य अनेक आधुनिक उपन्यासकार जकाँ श्री विभूति आनन्दमे सेहो समाजक सामान्य विकृति केँ अति रंजित कए चित्रित करबाक प्रवृति लक्षित कएल जाए सकैत अछि।''[169]

डॉ0 गंगेश गुंजनक ''पहिल लोक''क प्रकाशकीयमे एहि पोथीक विशेषताक प्रसंग तत्कालीन अकादमी अध्यक्ष लिखैत छथि–'' एहि उपन्यासक विशिष्टता अछि उपन्यासमे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तकनीकी प्रयोग तथा समतामयिक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति जन्य जीवन दृष्टिकोणक अभिव्यक्ति।''[170]

एहि उपन्यासमे एकटा शिक्षित नवयुवक राजूक कथा कहैत अछि। राजू थिक एकटा एहन नवयुवक जे समाज मध्य व्याप्त विसंगति एवं असंतुलनाक संवेदनशील द्रष्टा बनल रहैत। ओ एकटा एहन चरित्र थिक जे अपन अन्तरालमे सुनगैत विक्षोभ आ कुंठाक उत्पीड़न केँ विवश भावें सहन करैछ। एतबए नहि ओ थाकल हारल आ निष्क्रिय बनल–बनल साम्प्रतिक विषमताक शिकार बनि जाइत अछि। कोनो व्यक्ति पर जेहन सामाजिक प्रभाव होइत छैक तदनुकूले ओकर क्रिया–कलाप होइछ। एहि सामाजिक संदर्भमे कहल गेल अछि– "The individual is not only a product of the powerful biological forces perating with his own body. He is also moulded by his social influence at work during the time of his early up bringing and his letter development. It is not just that a person has to confirm in

---

[168] श्री कुँवरकान्तः सेहन्ता, आमुख'क

[169] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–319

[170] डॉ0 गंगेश गुंजन–पहिल लोक प्रकाशकीय।

behavior to society in one manner of speeking he is a replace of that society both being shaped by it and helping to shape it."[171]

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' एहि उपन्यासक संबंधमे कहने छथि– ''एहि मध्य प्रलापशैलीमे उपन्यासकारक विचारधाराक प्रतिपादन अधिक अछि, कथाक सभ्यक विकास कम। उपन्यासक अपरिहार्य तत्व रोचकताक ''पहिललोक''मे अभाव बूझि पड़ैत अछि, तथापि सुस्मिताक चरित्रक संदर्भमे नारीक सुकोमल स्नेह–भावक उत्कृष्ट चित्रण रोचक भेलअछि। इलाक प्रसंग नायकक कर्त्तव्य बोधक स्खलन चित्रण कए श्री गंगेश गुंजन किशोर–भावुकताक निस्तारताक सेहो साहसपूर्व जयबाक तथा ब्राह्मण द्वारा हरजोतबाक वर्णन उपन्यासक नामकरण केँ सार्थक करैत अछि।''[172]

सुस्मिताक चरित्र मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक दृष्टि सँ अपन विलक्षणता फराके रखैत अछि पहिल शीर्षक ई पंक्ति मनोविश्लेषणक क्षेत्रमे अत्यन्त महत्त्व रखैत अछि–''आब जेना देखियो जे हम सुस्मिताकेँ ओ सभ नहि कर'' कहलियैक जे ओ राजू दा'क संग कयलक– अर्थात् नितान्त अप्रत्याशित आ कम तरहेँ तेहन घटना जकरा समाज आइयो नहि स्वीकारैत छैक, परन्तु ओ नहि मानलक।''[173] आओर इलाक प्रसंग ई कथ्य सेहो ओतबए महत्त्वपूर्ण अछि–'' इला छलैक राजूक कविता। तँ ई इलो हमरा उलहन देव'' आयलि। बड़ स्वाभाविक छलैक। एकटा ई चरित्र छल जे बड़ सटीक आ संक्षिप्ते आक्रमणसँ मुदा ठॉय–पठॉय कह'वाली। हमरा कनीक घबराहटि भेल, से हम अपने राखै छी। आ जे हमरा भय छल सएह भेल। ओ अपन एकहि टा प्रश्नमे हमरा निरूत्तर कऽ देलक आ जेना हमरा आगू राजू मूड़ी निहुरा लेने छल तहिना हम इलाक सोंझा मूड़ी निहुरा ले लौ।''[174]

इलाक संबंधमे नायकक कर्त्तव्यबोधक स्खलन ''श्रीश''जीक शब्दावलीमे भनहि 'किशोर'' भावुकता निस्सारताक मार्मिक अभिव्यक्ति हो, किन्तु मनोवैज्ञानिक संदर्भमे कोनो टा नैतिक निर्णय नहि देल जाइत अछि। कुल मिला–जुलाकए ई कृति असाधारण कथ्य एवंत थ्य सँ मनोवैज्ञानिक अध्ययनक संभावना बढ़ाए दैत अछि। सभ पक्ष पर विचार कयला बत्तर हम देखैत छी जे एहि मध्य सामाजिक चेतनाक विकास स्पष्ट रूपेँ भेल अछि।

श्रीमती लिलीरेक ''मरीचिका'' नामक उपन्यास दुई भागमे अछि। पहिल भागक प्रकाशन 1981मे भेल अछि जखन कि दोसर भाग 1982मे। दुहू भाग दीर्घकाय अछि। प्रथम भागमे 474 पृष्ठ अछि तँ दोसर भागमे 504 प्रथम भाग जतेक दमगर अछि ततेक दोसर भाग नहि। प्रथम भाग अपना आपमे स्वतंत्र अछि, तेँ ओकरा हेतुक दोसरा भाग पूरकक काज नहि छैक। प्रथम भाग पर 198क साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटि चुकल अछि। 'मरीचिका''क प्रथम भाग संबंधमे मैथिली अकादमी, पटनाक तत्कालीन अध्यक्ष पं0 श्रीकान्त ठाकुर ''विद्यालंकार लिखलन्हि

---

[171] D.R. Prince- Williams - Intenductive, Psychology, P-177.
[172] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–315
[173] डॉ0 गंगेश गुंजन–पहिल लोक, पृ0–2
[174] डॉ0 गंगेश गुंजन–पहिल लोक, पृ0–3

अछि–'' एहिमे मिथिलाक एक पूर्वांचलीय सामंत परिवारक पचास वर्ष पूर्वक गतिविधिक जीवंत मार्मिक ओ विशद् चित्रण अछि। देशकाल आ पात्र तीनू केँ साकार कऽ पाठकक समख राखब उपन्यासक एक मुख्य धर्म थिक।''[175] एकर द्वितीय भागक प्रकाशकीयमे मैथिली अकादमीक पूर्व अध्यक्ष डॉ0 मदनेश्वर मिश्र कहैत छथि–'' समाजशास्त्रीय भाषामे सामाजिक ''एलिट'' तथा सामाजिक संरचनाक स्वरूप निश्चित रूपेँ परिवर्तित भेलैक अछि। मिथिलाक पूर्वांचलीय सामन्ती सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे एहि परिवर्तन शीलताक रंगीन चित्रपट थिक ई उपन्यास। एतेक विशाल दृश्यकेँ सूक्ष्मतापूर्वक सविस्तार देखयबाक हेतु विशाल कैनभास चाही, तेँ ई उपन्यास दुनू भाग मिलाय हजार सँ अधिक पृष्ठमे समाप्त भेल अछि।''[176]

''मरीचिका'' थिक एकटा खसैत सामन्त घराना आ तकर परिवेशक सुविस्तृत कथा। प्रस्तुत उपन्यासमे संवेगक धूरी संग नचैत आओर दर्पक हाथ प्रताड़ित होइत हीराक कथा कहल गेल अछि। पतनशील सामंती घराना आबद्ध अछि सामाजिक मूल्य सँ। मरीचिकामे बहुतो रास कथा–उपकथा समाविष्ट अछि। एहि कृतिक प्रसंग कुलानन्द मिश्र आरंभ (3)मे पोथी–समीक्षा स्तम्भ मध्य लिखैत छथि–'' सामंती घराना आ तकर कर्णधार लोकनि प्रजा संग समय–समय पर स्थापित होइत संबंध उत्सव, राजकीय आ राजपाटक अभिवृत्ति लेल होइत यत्न, एहि सभमे ओझरायल अनेक सोझ–टेढ़ चरित्र, पूर्णियाँ, कलकत्ता आ आसामक क्षेत्र विशेष आ तकर माटि–पानि आ एहि सभक संग हीरा एहि उपन्यासमे एहि सभक बात थिक आ बहुतो आन बात थिक। सामंती संस्कृति पृष्ठभूमिमे मैथिलीमे कोनो आन उपन्यास अपना विषयकेँ एतेक विस्तार सँ एखन धरि नहि रखने छल।''[177]

एहिमे कतहु दू मत नहि जे हीराक चरित्रकेँ उपन्यास लेखिका श्रीमती लिली रे बड़ यत्न सँ गढ़लन्हि अछि। एकगोट सामंती परिवेश मध्य ब्राह्मण राजाक परिवारमे हीरा बाल्यावस्थहिमे प्रवेश करैछ–नेना साहेब संग खेलएबा–धुपएवा लेल। अभिजात्यक व्यामेहमे ई राजा–परिवार जीवित अछि। फूलतोड़ा सन कर्मचारीक बेटी हीरा मातृहीना अछि। ओकर चारित्रिक विशेषता छैक भाव प्रवणता। राज कुमारक संग खेलाइत–धुपाइत अछि। रानी–राजाक काजमे हाथ बँटबैत ओ समर्थ होइतहिं अपनाकेँ एकटा अगम अथाहमे पबैत अछि। शुरू–शुरूमे अपन आओर राजकुमारक संग मूल्य बुझवामे राजकुमारक संग अपन संबंधक प्रवृति बुझबामे भ्रम में पड़ि जाइछ। राज कुमारक विवाह आओर पत्नीक संग हुनक आसक्ति जे हीराक अन्तरकेँ झकझोरि दैत छैक तकर क्षेत्रमे अध्यापनक दृष्टिसँ अपन महत्त्व अछि। पुनः गीत–संगीतमे लागल दीनानाथक संग हीराक विवाहक आयोजनमे हीरा राजकुमारक आँखिक कुत्सित भाषाकेँ पढ़ैत अछि आ टूटि जाइत अछि। पराजित भए जाएब हीराक नियतिमे भनहि हो, किन्तु पराजयकेँ स्वीकार करब ओकर नियतिमे नहि अछि। हीराक आहत ''अहं'' अपन रस्ते आसाम चलि जाइत अछि। ओ अपना सँ प्रतिशोध लेबाक क्रममे विभिन्न व्यापार रचबैत अछि। दीनानाथ हीराकेँ संग दैत छथि। राज कुमारक बेटी आ हीराक बेटाक विवाहक संग हीराक पराजय

---

[175] मरीचिका (प्रथम भाग) : प्रकाशकीय पं0 श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार।

[176] मरीचिका (द्वितीय भाग) : प्रकाशकीय डॉ0 मदनेश्वराक

[177] आरम्भ (3) : स्तम्भ, पोथी समीक्षा, पृ0–79

बीच एकटा निष्कर्ष पर पहुँबैत अछि। हीरा भनहि हारि जाइछ– हारल सन भए जाइछ किन्तु ओ हारि नहि मानैछ।

प्रस्तुत उपन्यासक कथा जन–साधारणक कथा नहि। एहि दुआरे निम्नवर्गक जीवन एवं सामाजिक उमर–खाभर एहिमे प्रकारान्तरे सँ भेटैत। हीरा निसंदेह भारतीय नारीक पारम्परिक भाग्यवादक आधुनिक विकसित रूप थिक। एहि उपन्यासमे मोटा–मोटी विस्तृत काल खण्डक चित्र चलचित्रक टील जकाँ देखल जा सकैत अछि। चरित्र सबहिक अभिव्यक्ति नितान्त यथार्थवादी ढ़ंगसे सामाजिक चेतनाक दृष्टिसँ मरीचिका उपन्यासक जखन हम मूल्यांकन करए बैसव तँ बुझि पड़त जे हीराक चरित्र एकटा जीवन्त नारीक प्रतीक बनि गेल अछि। राज परिवारक आश्रित दरिद्र ब्राह्मणक बेटी हीरा अपन रूप–गुणक कारणें ओहि राज परिवारमे हिलि–मिली कए ओकर ततेक बेसी विश्वास प्राप्त कए लैत छथि। ओहिठामक कोनोटा विषय हिनका हेतुएँ गोपनीय नहि रहि जाइत अछि। मुदा ई ओहि भोग विलासक भूमिमे लिप्त नहि होइत छथि। जखन राजा साहेब हिनक विवाह वसुरिया झा नामक एकटा दुर्बल ओ दरिद्र व्यक्तिक संग एहि दुआरे करबाए दैत छथि जे ओ हुनकहिं आश्रयमे जीवन भरि रहि जेतीह तखन हीराकेँ अपन स्थिति बुझवामे कनेको–विलम्ब नहि होइत छन्हि। राज परिवारक विलासपूर्ण स्थितिक मोह त्यागि अपन पतिक संग सुदूर नगरमे पहुँचैत छथि। स्वावलम्बी जीन व्यतीत करए लगैत छथि आओर अपन पतिक जीवनकेँ सेहो परिणत भए जाइछ। सामाजिक ओ सांस्कृतिक संक्रमण कालमे केओ नारी अपन मर्यादा पूर्णक अपन ओ अपन परिवारक अस्तित्वक रक्षा कोना कए सकैत अछि? संगहि देश–व्यापी चिन्तनधारा सँ सम्पूर्ण रहितहुँ पारिवारिक सकताक निर्वाह कोना कएल जा सकैत अछि तकर एकटा जीवन्त आदर्शक छवि हीराक चरित्रमे भेटैत अछि।

तुलनात्मक दृष्टिसँ विवेचन कएला सन्ता बुझि पड़ैछ जे ललितक पृथ्वीपुत्र नामक उपन्यासक नायिका बिजलीक जीवन्त वृत्त जीवन्त रहितहुँ सामान्यजनक हेतु अनुकरणीय नहि कहल जा सकैछ किन्तु लिली रे मरीचिका उपन्यासक हीराक चरित्र बहुतो शोषित पीड़ित नायिकाक हेतु एकटा मार्ग दर्शक काज कए सकैछ। ओकर जीवन पथ केँ प्रशस्त कए सकैछ।

उपर्युक्त विवेचन विश्लेषणसँ ई सिद्ध होइत अछि जे मैथिली उपन्यास प्रारंभहि सँ आधुनिक सामाजिक भावनाक प्रति जागरूकता प्रदर्शित करैत रहल अछि। ''रामेश्वर'' एवं ''कन्यादान'' प्रारंभिक उपन्यास रहितहुँ सामाजिक चेतनाक प्रति सजगता प्रदर्शित करैत अछि।

एहि प्रकारें बादक उपन्यास सभमे सामाजिक जीवनक विविध पक्ष को विविध समस्या केँ आधार बनाए कथानक निर्माणक प्रयास कएल गेल अछि। वैवाहिक समस्या सँ लए आर्थिक विपन्नता, सामाजिक विघटन वर्ग संघर्ष, जमींदारी उन्मूलन, श्रमिक समस्या, साधन–सम्पन्न ओ साधन विहीनक द्वन्द्व, नारी शिक्षा, नारी आत्मनिर्भरता, पारिवारिक असंतुलन, परिस्थितिजन्य द्वन्द्व, शहरी ग्रामीण द्वन्द्व, प्राचीन परम्परा ओ नैतिकताक द्वन्द्व आदि समाजक विविध पक्षकेँ उपन्यासक विषयवस्तु बनाओल गेल अछि। तात्पर्य जे मैथिली उपन्यासमे चेतनाक युगानुरूप विकास होइत गेल अछि।

ISBN: 978-81-19149-27-8

अध्याय 4

सामाजिक समस्या एवं मैथिली उपन्यास

भारत एकमात्र एहन समन्वयकारी समाज अछि जाहिमे विभिन्न धर्म, जाति, सम्प्रदाय आओर प्रजातिक करोड़ो व्यक्ति एक संग रहैत अछि। संभवतः विभिन्न धर्म आओर प्रजातिक व्यक्ति द्वारा एक संगठित राष्ट्रक निर्माण करबामे भारत सभसँ पैद्य परीक्षण सथल रहल अछि। एहिमे कतेक सफलता भेटत से भविष्य बतायत मुदा एतेक धरि अवश्य जे सदियो सँ दासताक बेड़ीमे जकड़ल रहलाक कारणें भारतक सामाजिक संरचना बहुत दिन सँ विघटित होइत रहल। यद्यपि एक सूत्रपात अंग्रेजी राज्यक निहित स्वार्थक कारण भेल मुदा बादमे सामाजिक ज्ञान अपर्याप्त विकास आओर सांस्कृतिक एहि विघटन के आओर बेसी जटिल बना देलक। आइ अनेक सामाजिक समस्या समाजकेँ विषाक्ते नहि कऽ रहल अछि बल्कि एकर प्रभाव ओहि महान प्रयत्नों केँ असफल बना रहल अछि जाहिपर हमर देशक प्रगति आओर भावी नियोजन निर्भर अछि। एहन परिस्थितिक संदर्भमे ई आवश्यक भऽ जाइछ कि सामाजिक ज्ञानक अवहेलना नहि कयल जाय। विज्ञान आओर टेक्नोलॉजिक विकास राष्ट्रक भौतिक प्रगतिक हेतु आवश्यक जरूर अछि मुदा एकर होड़मे सामाजिक ज्ञान महत्त्व केँ विसरि जायब मानवीय मूल्य आओर सामाजिक नियोजनक हेतु एक गंभीर खतरा उत्पन्न कऽ सकैत अछि।''[178]

''य़द्यपि सभ सामाजिक समस्याक उल्लेख करब कठिन अछि, तैयो भारतमे जातिवाद, साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता, क्षेत्रवाद, भाषावाद, निर्धनता पारिवारिक तनाव, वैवाहिक समस्या, स्त्रीक निम्नस्थिति, शिक्षाक निम्नस्तर, सांस्कृतिक संघर्ष बेकारी, बीमारी, अपराध, बाल–अपराध, भ्रष्टाचार आओर वेश्यावृत्ति आदि किछु एहन सामाजिक समस्या अछि जकर निराकरण बिना कयने समाज कखनो प्रगति नहि कऽ सकैत अछि। यद्यपि कोनो समाज एहि समस्यासँ पूर्णतया मुक्त होयबाक दावा नहि कऽ सकैत अछि मुदा एकरा एतेक कम अवश्यक कयल जा सकैछ जाहिसँ व्यक्ति स्वाभाविक रूप सँ विकासक अवसर प्राप्त कय सकय। एहि समस्याकेँ पूर्णतया आर्थिक अथवा राजनीतिक आधार पर सेहो हल नहि कयल जा सकैछ।''[179]

प्रारंभमे उपन्यासक रचना लोकरंजनकेँ ध्यानमे राखि कयल गेल। तेँ हेतु प्रारंभिक रचनामे सामाजिक समस्या दिशि मैथिली उपन्यासकार लोकनिक ध्यान नहि गेलन्हि। सामाजिक दृष्टिकोण राखि उपन्यास लिखबाक प्रवृत्ति अपेक्षाकृत बादक घटना थीक। क्रमशः कौतुहलोछीपक घटनाक स्थान पर जीवन एवं जगतक अनेक सामाजिक चित्रण करब उपन्यासकार अपन कर्त्तव्य बुझलनि। पश्चात् मानव जीवनक प्रति मनुष्यक दृष्टिकोणक उत्तरोत्तर विकास चित्रण ओहिमे होमए लागल।

सामाजिक जीवनसँ निरपेक्ष रहि साहित्य अपन प्रतिष्ठाक रक्षा नहि कए सकैछ विशेषतः उपन्यास साहित्य। मैथिलीक उपन्यासकार एहि बातक अनुभव कयलन्हि जे समाजक महत्त्वपूर्ण

---

[178] डॉ0 जी0के0 अग्रवाल–समाजशास्त्र, पृ0–86

[179] डॉ0 जी0के0 अग्रवाल–सामाजिक सर्वेक्षण, पृ0–94

अंग–परिवार, जाहि पर समाजक सदाचारक रक्षाक भार छैक ओहि पारिवारिक जीवनमे स्त्रीगण अवहेलनाक दृष्टिसँ देखल जाइत अछि। कर्त्तव्यक बोझ सँ दबलि नारी समाज जीवनकेँ भार स्वरूप बुझैत कहुना दिन खेपने जाइत अछि। एहि प्रकारक सामाजिक परिस्थितिमे मैथिली उपन्यास, लेखकक हृदयमे नारीक हेतु महत्त्वपूर्ण स्थान सुरक्षित कएलक। मिथिलाक सामाजिक जीवनमे प्रबल–धार्मिक कारणें किछु आचारक पालन कएल जाइत रहल अछि।''

व्यक्ति चेतनाक नवोन्मेष भेला पर व्यक्तिमे समाजसँ संघर्ष करबाक, परिस्थिति सँ संघर्ष करबाक भावनाक उदय होइत अछि।

डॉ0 यशोदानाथ झा लिखैत छथि– उपन्यासक विषये समाजक वास्तविक अंकन थीक, सामाजिक स्तर पर पसरल ओ वैचारिक दृष्टिकोणकेँ उपन्यास नवीन वातावरणमे गतिशील करैत अछि। समाजक ई यथार्थ,जीवनक मूल्यसँ संबंधित रहैछ।''[180]

स्वतंत्रतासँ पूर्वक रचनामे प्रो0 हरि मोहन झाक ''कन्यादानक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि।एहि उपन्यासकेँ व्यक्तिगत अनुभव आधार पर सामाजिक परिवेशमे सत्य–तथ्यक यथार्थकेँ रूपायित कएल गेल अछि। एकर प्रकाशन ओहि समयमे भेल जखन एक युगक अंत भए रहल छल एवं अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार–प्रसार कारणें दोसर नवीन युगक उदय। एहन संक्रमण कालक मात्र सबहिक चरित्र यदि संतुलित रूपेँ विकसित नहि भए सकल तँ सएह यथार्थ थीक, सत्य थीक, आओर एहि उपन्यासमे नवोन्मेषक पुनर्निर्धारणक भावना पूर्णतः झलकैत अछि। एहिमे सी0सी0 मिश्र पाश्चात्य सभ्यता संस्कृतिमे ततबा रमल छथि जे अपन समाजक यथार्थ वस्तुस्थितिकेँ विसरि जाइत छथि। इएह कारण होइछ जे ओ अपन ग्रामवाला– स्त्री–बुच्ची दाइकेँ चतुर्थी रातिअहिमे छोड़िकेँ भागि जाइत छथि। एहि उपन्यासक कथानक शिक्षाजन्य अनमेल विवाह थिक। उपन्यासक समर्पणमे प्रो0 झा लिखैत छथि– ''जे समाज कन्याकेँ बड़ पदार्थवत दान कए देबामे कुंठित नहि होइत छथि– जाहि समाजमे बी0ए0 पास पतिक जीवन संगिनी ए0वी0 पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह जाहि समाजकेँ दाम्त्य जीवनक गाड़ीमे सरकसिया छोड़ाक संग निरीह बाछीकेँ जोतैत कनेको ममता नहि लगैत ताहि समाजक महारथी लोकनिक कर–कृलिशमे ई पुस्तक सविनय, सानुरोध ओ समय समर्पित।''[181] अनमेल विवाहक समस्याकेँ लए लिखल गेल ''कन्यादान''मे मैथिली जीवनक जे सामाजिक स्वरूप अंकित भेल अछि ओ स्वाभाविकता एवं उपस्थापन कला दुहू दृष्टिएँ हमरा लोकनिक ध्यान आकृष्ट करैछ।

कन्यादानक सदृश भलमानुसक रचनाक उद्देश्य अनमेल विवाहक चित्र उपस्थित कए ओकर दुष्परिणाम देखाएब थिक। लेखकक भूमिका सँ ई स्पष्ट भए जाइछ। मैथिल सामाजक रूढ़िग्रस्तता एवं मिथ्या अभिमान सँ उत्पन्न परिस्थितिक चित्रण एहि उपन्यासक प्रतिपाद्य विषय अछि। परिस्थितिसँ बाध्य भए जगदीश दोसर विवाह करैत छथि। एहि उपन्यासक उद्देश्य कुलीनताक नाम पर कएल गेल मैथिल समाजक आचरणक चित्रण करब थिक। उपन्यास एक एहन कलाकृति थीक जे हमरा लोकनिकेँ जीवन्त संसारमे प्रवेश करबैत अछि, जतए हमरा लोकनि वस्तुजनक स्वाभाविक चित्र देखबाक आशा करैत छी। कोनो समस्याक चित्रण करैत

---

[180] सं0 गोपालजी झा ''गोपेश :डॉ0 बासुकीनाथ झा, यथार्थवादिओ आधुनिक साहित्य, पृ0–83

[181] प्रो0 हरिमोहन झा–कन्यादानक समर्पण

काल उपन्यासक ई उद्देश्य होइत छैहि जे ओ एहन चित्र अंकित करथि जकर सादृश वस्तु जगत सँ होइक। भलमानुसमे श्री योगानन्द झा समाज मध्य प्रचलित रूढ़िग्रस्तता एवं कुलीनताक प्रति मिथ्यामोह तथा नारी जातिक असमर्थताक आकर्षक चित्र उपस्थित कएने छथि। नैतिकता, जाति–पातिक मिथ्याभिमान एवं भलमानुषक जीवन पद्धतिक चित्रण कए ओहिसँ मुक्ति पएबाक चेष्टा एहिमे भेल अछि–

''हम स्पष्टतया कहि दैत छी जे– हम पाँजिक दुरूपयोगक उपहास कएलहुँ अछि, अनिर्धारित भलमानुसहि तक नहि। हमर ई हार्दिक विश्वास अछि जे मनुष्यकेँ पैघ–छोट बुझबाक तराजू ओकर क्रिया होयबाक चाही, ओकर दादा जीक क्रिया नहि। यदि विद्यापतिक संतान विद्यापतिक नहि कहावथि तँ महादेव झाक बेटा महादेव झा किएक।''[182]

भलमानुसमे लेखक समकालीन सामाजिक समस्याक प्रकृतचित्र उपस्थित कए केवल सामाजिक समस्या चित्रण जन्य अपन उद्देश्यहिमे सफल नहि भेल छथि अपितु सर्वत्र अपन दृष्टिकोणक प्रति सतर्क छथि। हुनकहि शब्दमे –'' जगदीश एवं निर्मलाक सत्यानाशक कारण अनिरूद्ध बाबू एवं हुनक स्त्री नहि वरन् हमरा समाजक एहन दूषित एवं भ्रमात्मक विचार श्रृंखा। इएह तऽ अछि हमर दृष्टिकोण हमरा आशा अछि जे कतिपय संकुचित मनोवृत्तिवाला आदमीक अतिरिक्त केओ व्यक्ति एहि दृष्टिकोण सँ असंतुष्ट नहि होयताह।''[183]

भलमानुस समस्यामूलक सामाजिक उपन्यास अछि। सामाजिक जीवनक यथार्थ परिस्थितिक निर्माण कए ओकर अन्तरालमे कथानककेँ विश्वसनीय एवं प्रभावोत्पादक बनाएब लेखकक चेष्टा रहलनि अछि। अनिरूद्ध बाबू अपन तथाकथित कुलीनताक रक्षाक हेतु ने केवल अपन जीवन दुःखमय बनबैत छथि अपितु निरीह; निरपराध निर्मलाक दुर्दशा करबामे नहि हिचकैत छथि। स्त्रीक असक भऽ गेला पर निर्मला द्वारा बनाओल गेल भोजनक नाम सुनितहि अनिरूद्धक की प्रतिक्रिया होइत छन्हि द्रष्टव्य थिक–

''अनिरूद्ध बाबू जौं आसन पर बैसलाह तँ घोघ काढ़ने एवं हाथमे थारी नेने उकैत अपन पुतहुँ केँ देखलनि। तरसँ आसन पर सँ उठि गेलाह। क्रोधे थर–थर कँपैत दाँत किचैत ओ हाथ पैर नोचैत ओ अपन स्त्री लग पहुँचलाह आओर निछोह भए कहए लगलथिन्ह–ऐं गे छुछुनरिया तों हमर जाति लेब अएले अछि हमरा एहना–ओहनाक हाथक भात खुआ कए तों पतिक कर चाहैत छें। बड़ अमीर होयबाक मोन भेलौक तँ अपन भानस करए कहितहिक हमर धर्म किएक नष्ट करए लगलैं–''[184]

बाल वृद्धि विवाह समस्या लए लिखल गेल ''सुशीला'' गंगापति सिंह'क उपन्यास थिक एहि मध्य अबोध बेटीकेँ अपन ऋण सँ उबरबाक लेल एक वृद्धक संग बेचबाक कथा अछि। एखनहुँ मिथिलामे बेटी बेचवाक प्रथा अछि गरीबीक कारण लोक अपन बेटीकेँ कोनो श्रीसम्पन्न वृद्ध

---

[182] श्री योगानन्द झा, भलमानुसक भूमिका, पृ0–''क''

[183] श्री योगानन्द झा, भलमानुसक भूमिका, पृ0–''ख''

[184] श्री योगानन्द झा, भलमानुसक भूमिका, पृ0–144–45

सँ विवाह करबामे पाछू नहि हँटैत छथि तक परिणाम मिथिलाक कतेक सुशीला केँ भोगय पड़ैत छैक।

नवतुरियाक कथा वृद्ध विवाहक सामाजिक समस्या सँ सम्बद्ध अछि। एहिसँ पूर्वहूँ एहि समस्याकेँ लए मैथिलीमे उपन्यासक रचना भेल अछि। वैवाहिक समस्याकेँ ग्रहण कए नवतुरियाक कथावस्तु मिथिलाक सामाजिक जीवन एवं परिस्थिति पर आधारित अछि। कन्यादानमे अनमेल विवाह चित्रण मात्र भेल अछि मुदा नवतुरियामे सामाजिक समस्या एवं ओकर समाधान देखाओल गेल अछि।

वस्तुतः यात्रीक नवतुरियाक उद्देश्य मिथिलामे व्याप्त अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह एवं नारी–जातिक शोषित रूपक चित्र अंकित कए ओकर समाधानक चेष्ट अछि। समाजमे व्याप्त कुरीतिक समाधानक लेल ओ नव–तूरक लोकक संगठन कएने छथि जाहि सँ वृद्ध चतुरा चौधरीक दुःसाहसक उचित मूल्य पुरस्कार भेटि जाइत छैन्हि एवं विसेसरीक उद्धार होइत छैक।

मैथिली उपन्यासमे नारी पात्रक चित्रण विभिन्न स्थितिमे राखि कएल गेल अछि। कतहु कन्याक रूपमे। बेटी–पोतीक रूपमे सेहो ई शोषित भेलीह अछि। माय–बाप स्वार्थमे आन्हर भए कतहु जँ टाका गनबैत देखल जाइत छथि तँ कतहु मनोरथे बाल–विवाह करबैत छथि। नवतुरियामे विशेषटीक कथा ठीक भऽ गेला पर खोखाई झाक अर्थ लोलुप दृष्टिक चित्रण करैत लेखककेँ देखि सकैत छी। एहिमे खोखाई झाक चरित्र पर प्रकाश दत काल लेखक मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिक आश्रय ग्रहण करैत छथि।

पंडित खोखाई झाक बेटी बेचबाक प्रवृतिक कारणें रामेश्वरी अपन पिताक निर्णयक प्रति शंकालु छलीह। खोखाई झा एक एहन पात्र छथि जे अपन सुख–सुविधाक हेतु बेटी पोतीक हत्या करबामे कुंठित नहि होइत छथि? बेटीकेँ बेचब अनुचित नहि बुझैत छथि विसेसरीक विवाहक निर्णय करेत काल हुनका दृष्टिमे ने केवल विसेसरीक आर्थिक सुख–सुविधा छन्हि अपितु अपन स्वार्थपरता। घटकराज मटुकधारी पाठक द्वारा उत्थान कएल गेल कक्षामे चौधरीक सामाजिक प्रतिष्ठासँ प्रतिष्ठित होएबाक अभिलाषाक संग–संग नओसे हाकाक लोभ खोखाई झाकेँ घटकराजक प्रति कृतज्ञताक भाव जगा दैत छैहि।''

''पंडितक दृष्टि नोरा गेलाहि। आगाँ एको आखर हुनका मुँहसँ नहि बहरेलन्हि। कृतज्ञताक आवेगसँ दम फूल लगलन्हि। एत बड़ प्रतापी आई हमरा दलानकेँ अपन चरण धूलि सँ पवित्र करताह। भरि जवारमे आई नवगछिया गामक नाम इन्द्रधनुष जकाँ जग–मगा जाएत, बिसेसरी आई रानी बनति, एहेन हवेलीक मालिकाइनि होइति ओ, जाहि ने घोड़ा हिहिआइत रहइ छई आ दंतार हाथी अपन देह दोमइत रहइए। फेर पंडितक नजरिमे नओ केर अंक, ताहि पर दूय सुन्ना नाच लगलन्हि। वेश पैघ आखरमे। नओ केर ओ अंक का ताहि पर दुनू सुन्ना नहू–नहू बढ़ैत गेलइ बढ़ैत गेलइ बढ़ैत तऽ गेलई।'[185]

[185] श्री बैद्यनाथ मिश्र ''यात्री''–नवतुरिया, पृ0–19

किन्तु एहि उपन्सासके लेलक खोखाई झाक एहि लोभी प्रवृत्तिक सर्वनाशक हेतु नवतुरक सेना तैयार कयने छथि। दिगम्बर, माह आ तुलो'क।

खोखाई झा बेटीकेँ न्यायारक वस्तु बुझैत छथि– ''कारण इएह जे रामेश्वरी केँ छोड़ि छवो बेटी खोखाई झा बेचने छथि, ककरो पन्द्रह से तऽ ककरो पाँच सैमे, आव विसेसरीक पारी रहैक, फसिल तैयार छलन्हि, कटनीटा बांकी रहन्हि।''[186]

स्वार्थपरक कारणें खोखाई पंडित अंध भए जाइत छथि। मनहिमन अपनाकेँ कोना मना लैत छथि से देखल जा सकैछ–

''पंडितकेँ ई बुझवामे कोनो भाङठ नहि रहि गेलन्हि जे ओ कोनो उसामान्ये थिकाह। आयु किछु विशेष हैतेन्हि तँ तेंकी रे थोड़ अवस्थाक लोक की मरैत नहि अछि। बाबा बैद्यनाथक अनुकम्पाा भेलन्हि तऽ एहि वरक प्रतापें विसेसरी केँ एक तँ एकेस हेतइक। पाँच सए बीघा खेतक मलिकाइनि बनत ज हमर विसेसरी। की इहलोक आ की परलोक दुहू ठामक रानी कहाओति। हमर प्रमातामह एहि आयुमे विवाह कैलन्हि, बारह बरखक कन्यासँ। आ तखन हुनका चरित्र पुत्र, तथा तीन पुत्री भेलथिन्ह–अर्जुन, भीमसन बलिष्ठ, आ द्रौपदी एवं सुभद्रा सन सुन्दरी ओजस्विनी एहन सद्पात्र हमरा आन ठाँ भेटत? किन्नहु नहि– शुभस्य शीघ्रम–गणेश। गणेश–लम्बोदर।''[187]

खोखाई झाक भावनाक आवेग क्रमशः प्रबल होइत जाइत अछि किन्तु लेखक ई स्पष्ट करैत छथि जे खोखाई पंडितक एहि निर्णयमे हुनक दृष्टिकोण विसेसरीक सुख–सुविधा सँ बेशी अपन स्वार्थपरता छन्हि। सोनछड़ी सन विसेसरीक विवाह करय आयल वृद्ध चतुरा चौधरी के गामक नवयुवक मना कयल जे अपनेक नातिन बतारी विसेसरी अछि। विवाहक प्रस्ताव छोड़ि देल जाओ मुदा ओ दृढ़ एहि नवयुवक लोकनि पर बिगड़ि उठलाह तकर किछु पॉती द्रष्टव्य थीक।

''बाबू साहेब हमरा लोकनि फेर अपने तँ प्रार्थना करए आयल छी– विवाहक ई आग्रह छोड़ि देल जाओ–

एँ, की बजलहुँ अओ।

बुढ़वा बमकि उठल। घबहा कुकुर जँ बताह भऽ जाए तखन जेना झूकत, तहिना मूक' लागलत बुढ़वा। अहाँ लोकनि गुण्डागिरी करब अओ। बड़ काबिल भेला हए। कहु तऽ भला। साओन जनमल गिद्दर आ भादव आयल बाएि गिदरवा चिकरल बाप रओ एहेन बाढ़ि कहिओ नहि देखल। बाबू, एखन तँ अहाँ लोकनि जनमिक ठाढ़े भेलहुँए। पुड़इनिओ नाभिमे लटकले अछि तखन धरि आ एतहुँअए हमरा मंत्र देव? चारि आखर पढ़ि लेल तऽ बूए पुरनिया सभक चानि पर पनहिए मारवई? ई.....ह।''[188]

---

[186] श्री बैद्यनाथ मिश्र ''यात्री''–नवतुरिया (द्वितीय संस्करण), पृ0–4

[187] श्री बैद्यनाथ मिश्र ''यात्री''–नवतुरिया, पृ0–16

[188] श्री बैद्यनाथ मिश्र ''यात्री''–नवतुरिया, पृ0–68'69

ई कथन अदि ओइ वृद्ध केँ जे पाँच पुत्रक पिता एवं जिनक ई विवाह हेतन्हि छठम उम्र 70 वर्ष एहि तरहक अनमेल विवाह मिथिलामे होइत छल। यात्री जी एहि सामाजिक समस्या केँ उपन्यासक माध्यम सँ उठौलन्हि अछि, ओना एहि उपन्यास एकर समाधान सेहो निकालल गेल अछि मुदा ताहिसँ मिथिला मध्य जे अनमेल विवाह चलि आबि रहल अछि तकर ठोस समाधान एखनहुँ धरि नहि भऽ सकल अछि।

नवतुरिया सदृश 'दुर्वाक्षत' सेहो वृद्ध विवाहक सामाजिक समस्याकेँ लए लिखल गेल उपन्यास अछि। उपन्यासकार श्री तारानाथ कंठ जी साहित्यक माध्यम सँ अनमेल विवाहक समस्याकेँ उठौलनि अछि। कोना मिथिला मध्य टाका'क लोभी स्वार्थी दयानाथ अपन भागिनीक विवाह एक वृद्ध व्यक्ति जे किछु दिन पश्चात् मृत्युकेँ प्राप्त कएलन्हि सँ कएलन्हि एहन बहुत कथा अछि जाहि स्वार्थीक कारण कतेको स्त्री बाल–विधवा जीवन व्यतीत करैत छथि आओर दुःख, कष्ट एवं कलंक शिकार होइत छथि ओहुमे जिनका ई बर्दाश्त नहि होइत छन्हि जे आत्म हत्या तब कय लैत छथि। दुर्वाक्षतक कथा सेहो एहि प्रकारक अछि।

एहि तरहक दोसर उपन्यास अछि राजकमलक ''आदिकथा''। आदिकथामे वृद्ध अनिरूद्ध बाबूक संग विवाह कए गेलाक कारणें सुशीलाक अतृप्तवासना ओकर अपन भागिन देवकान्त दिस आकृष्ट करैछ। लेखक सुशीलाक वित्रवृत्तिक सूक्ष्म अध्ययन कयलनि अछि। एहू रचनामे सामाजिक मूल्यक अवहेलना कएल गेल अछि।

ई सामाजिक उपाख्यान समाजक बदलैत धार्मिक नैतिक मान्यतादिक एहि संक्रान्तिकालमे कॉमेडी नहि बनि सकल। मात्र एक अपूर्ण ट्रेजेडी रहि गेल। इएह समकालिक यथार्थ थीक।''[189]

आदिकथामे वृद्ध अनिरूद्ध बाबूक संग विवाह भए गेलाक कारणें सुशीलाक अतृप्त वासना ओकरा अपन भागिन देवकान्तक दिस आकृष्ट होयबाक हेतु बाध्य करैत छैक। सुशीलाक चित्तवृत्ति सूक्ष्म अध्ययन कएल गेल अछि। व्यक्तिक परक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास दृष्टिएँ ई महत्त्वपूर्ण रचना अछि किन्तु एकरहु कथानकमे मामी भागिनक आकर्षणक। (कामजनित) चित्रणक कारणें मर्यादाक उल्लंघन भेल अछि। कथावस्तुमे विश्वसनीयता अनबाक हेतु उपन्यासक लेखक विभिन्न रीतिक अनुसरण कएने छथि–जतए वर्मन वाह्क्रिया–कलपहि धरि सीमित रहैत अछि ओतय पात्रक सामाजिक बंधन तथा वस्तुस्थितिक अवहेलना करैत देखाय उपन्यासकार रचनामे विश्वनीयता नहि आनि सकैत छथि किन्तु मानव–मन अत्यन्त जटिल अछि। ओकर विश्लेषण करैत काल लेखककेँ एहन भावनाक प्रत्यक्षीकरण भए सकैत छैन्हि जाहि भावनाकेँ उल्लेख करब सामाजिक मर्यादाक विरूद्ध होयबाक कारणें विश्वसनीय होइतहुँ रहैत अछि। उपन्यासकारकेँ आत्म नियंत्रणक प्रयोजन होइत छैन्हि। आदिकथाक कथानकमे अमर्यादित सत्यक वर्णन अछि। देवकान्त अपन आकुल हृदयक भावकेँ व्यक्त करैत सुशीलाकेँ लिखैत छथि–

[189] स्व0 राजकमल– आदिकथाक भूमिका

''निर्दय नहि छी हम। खाली एतवे नहि सुझइए जे पत्रमे लिखल की जाए। उचित यैह अछि जे हृदयक व्यथा सहैत रही, प्रकट नई कै सकी।''[190]

वृद्ध विवाहक कारण सुशला अतृप्त वासनाक पूर्ति हेतु अपन भागिन देवकान्तक दिशा आकर्षित होयब स्वाभाविक अछि।

कुलानन्दकेँ बुझल छलैन्हि जे अनिरूद्ध बाबूकेँ पूर्णियाँ अस्पतालमे छोड़ि सुशीला मदनपुर चलि गेल छलीह। अनिरूद्ध बाबू बिमार छलाह। देवकान्तो बीमार छल। एहि दू व्यक्तिक बीमारीमे देवकान्तेक रोग हिनका वेशी बूझि पड़ल छलन्हि। सुशीला ई अपराध कयने छलीह बीमार पतिक आगाँ, बीमार भागिनक कोन महत्त्व– कुलानन्द अपन छोटकी सतमाय केँ एहि अपराधक लेल कहियो क्षमा नहि कए सकलाह नइ कए सकताह।''[191]

चानोदाईमे अशिक्षाक कारण उत्पन्न दूषित सामाजिक आचरणक चित्र भेटैत अछि लेखकक शब्दमे–'' चानोदाई केँ आब बूझि पड़ए लगलनि वस्तुस्थिति सभ। ओ सोचथि साँपक मुँहसँ बाँचिकेँ सपनोरक मुँहमे आबि गेलहूँ। की नारीक अर्थ मात्र यौन संतुष्टि थीक? ओ पुरूषक भोग्या मात्र थिकीह? चाहक प्याली? रेडियो सेट? गुलदस्ता? जकरा चाही उपहार दऽ दी–बेची ली ओ मनुक संगिनी मानवक कर्मिणी नहि? आ हुनका बूझि पड़लन्हि जेना अशोक वाटिकामे सीता जकाँ ओझरा रहल छथि ओ।''[192]

कहुना जखन चानोदाई गेलथि तखन हुनका इच्छा भेलन्हि जे गाम जा केँ ओहिठामक समाजमे सुधार आनी। ओ पुनः अपन गाम अएलीह। ओहिठाम सेवा श्रमक कथापना कएलन्हि। स्त्री लोकनिकेँ शिक्षा देल जाए लागल। पंचायत भवनक निर्माण भेल। नवीन समाजक निर्माण चारो द्वारा भेल। गाममे सब हुनका देवीजी कहए लगलन्हि। स्त्री–पुरूष सभ हुनका आदरक दृष्टिसँ देखए लागल। एहि रूपेँ 12 वर्ष तपस्या कएलाक बाद चानोदाई अपन समाजमे आबि प्रतिष्ठा प्राप्त कएलन्हि। एहि बीच एक दिन सेवाश्रममे उत्सव मनाओल जाइत छल ओहि समयमे किसुन कलकत्ता सँ अबैत छलाह केओ हुनका नहि चिन्हैत छलन्हि। जखन चानोदाई किसुनक चमराक बैग पर श्री किसुनचन्द्र एम0ए0 रिसर्च स्कॉलर (कलकत्ता) विश्वविद्यालय लिखल देखलन्हि तँ ओ चिन्हि गेलीह तथा किसुनक पयर पर आनन्दमे विभोर भए खसि पड़लीह। तदुपरान्त दुनू सुखसँ रहए लगलीह।

मैथिली उपन्यासमे ''पारो'क उद्देश्य अनमेल विवाह जनित सामाजिक समस्या देखायब थिक। एहि प्रकार अनमेल विवाह शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यक हेतु अहितकर होइत अछि। एहना स्थितिमे मनोविश्लेषणात्मक रीतिक अनुसरण द्वारा चित्रणकेँ अर्न्तमुखी बनाओल गेल अछि। केवल सामाजिक समस्याक समाधानक रूपमे लिखल गेल उपन्यास कलाकृतिक दृष्टिएँ अपेक्षाकृत निम्नस्तरक रचना बूझल जा सकैत अछि।

---

[190] स्व0 राजकमल– आदिकथा, पृ0–52

[191] स्व0 राजकमल– आदिकथा, पृ0–60–62

[192] सोमदेव–चानोदाई, पृ0–79

मिथिलामे बहु विवाहक प्रथा सेहो छल। ई एक सामाजिक समस्या अछि। पारो मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे एक नव प्रयोग छल। जाहिमे पात्रक मनोदशाक स्वाभाविक वर्णन बरबाक चेष्टा कएल गेल अछि। किन्तु एकर कथानकमे सत्यक कुत्सित रूपक चित्रण अछि।

निर्धनताक कारणें पारोक विवाह एक अद्यवयसू चौधरी जीक संग होइत अछि। पारोक हृदयक विषादकेँ पारोक विभिन्न उक्ति द्वारा व्यक्त करबाक चेष्टा कएल गेल अछि। बिरजूक प्रति पारोक आकर्षण स्वाभाविक अछि। अथवा नहि केवल एहि दृष्टिकोणसँ एहि रचनाक कथनक पर विचार कए सकैत छी। भाई बहिनीक वासनात्मक आकर्षणक चित्र खिंची ''यात्री'' लोक मर्यादाक उल्लंघन कयलनि अछि। हम मानैत छी जे वृद्ध चौधरीक अपेक्षा पारोक कामवासनाकेँ तृन्त करबाक शक्ति बिरजूमे बेसी छैन्हि किन्तु अपन एहि आकांक्षा केँ व्यक्त कए पारो तथा एहिमे रस ग्रहण कएनिहार बिरजू पाठकक दृष्टिमे खसि पड़ैत अछि। एहि प्रसंग कहल गेल प्रो. श्रीकृष्ण मिश्रक निम्नलिखित विचार द्रष्टव्य थिक[193]–

''पारोक कथावस्तु ततेक निम्नस्तरक अछि जे हमरा समाजक साहित्य नहि भऽ सकैछ। प्रत्येक समाजक आध्यात्मिक स्तर भिन्न होइछ। अपना सँ उच्च स्तरक साहित्य अथवा कम सँ कम अपन स्तरक साहित्यकेँ अपनओलासँ समाजकेँ लाभ होइत छैक। निम्नस्तरक साहित्यक प्रचारसँ समाजक अवनति छोड़ि आओर किछु नहि होइछ। त्रिगुणात्मक मनुष्यक मोन सतत् पवित्रे नहि रहैछ किन्तु मनुष्यक दौर्बल्यकेँ, मानसिक अपवित्राकेँ आदर्श बनाएब कतहु विहित नहि। भाई–बहिनक पवित्र स्नेहक दुरूपयोग भेल छैक–साहित्य ओ जीवनमे बड़ भेद छैक। जावत धरि कवि प्रतिमा द्वारा संसारक वस्तुकेँ संस्कृत नहि करेछ, जाबत कल्पनाक फुहारासँ ओकर माटि नहि धोअलि जाइछ तावत ओहिमे साहित्यिक चमक नहि अबैछ। पारोमे अधिकांश स्थल मटिआएल वस्तु भेटत। लेखक जीवन ओ साहित्यमे कोनो भेद नहि बुझलन्हि अछि।''

बिहाड़ि पात आ पाथरक कथानक निर्माण अनमेल विवाहक समस्याकेँ लए भेल अछि। नीलकंठ ठाकुर बेटीकेँ बेचबाक कारणें प्रतिष्ठित भए चुकल छथि। आब तिरवेणीक पारी छैक। नीलकंठ ठाकुर यद्यपि स्त्रीक दुराग्रहक कारणें तिरवेणी केँ नहि बेचबाक आश्वासन दए चुकल छथिन्ह। किन्तु ओझाजीक देखाओल कथाक लोगकेँ स्मरण कए जो अपन आश्वासन विसरि जाइत छथि।

''चारू बेटी बेचबाक कारणें जे गाममे अप्रतिष्ठा, अयश तथा कटु आलोचना भेलन्हि आ होइत छैन्हि तकर लाज, क्षोभ एवं पश्चाताप नीलकंठ ठाकुरकेँ भेलन्हि की नहि से कहब अत्यन्त कठिन मुदा एक बेटीक विवाहक उपरान्तसँ दोसर बेटीक विवाह धरि जे धुरझार कर्ज आ बनियाक उधारी लैत–लैत आकण्ठ कर्ज मग्न भए जाइत छलाह से अंतिम बेटीक पिताक कालसँ कम अवश्य भऽ गेल छैन्हि।''[194]

तेँ हेतु जखन ओझा नीलकंठ ठाकुरकेँ ई कहैत छथिन्ह जे रूद्रनाथ मिश्र, की छपल लोक छथि ? दलाल पर भोटिया घोड़ा, एक हाथी, सात टा बखारी, एक सवा से बिगहा खेत, पोखरा

---

[193] प्रो0 श्रीकृष्ण मिश्र–मैथिली उपन्यास वैदेही विशेषांक–1358 साल, पृ0–42

[194] प्रो0 मायानन्द मिश्र–बिहाड़ि पात आ पाथर, पृ0–14

पाटन, आँगन दोसर दलान पर तेसर बागमे इनार, सबहक लहरा पक्का''[195] तँ नीलकंठ ठाकुरमे हृदयनाथ मिश्रक आवश्यक संबंधमे किछु सोचब अनावश्यक बूझि पड़ैत छैन्हि। सभसँ बेशी तँ ई जे नीलकंठ ठाकुरकेँ एहि कथामे चारि बिगहा सोनाक टुकड़ी सन धनहर खेत पाँच सै टाका नकद सेहो भेटतैन्हि तें हेतु जँ नीलकंठ ठाकुर रूद्रनाथक अवस्थाक प्रसंग उदासीन रहि जाइत छथि तँ आश्चर्य कोन। तिरबेनीक विवाहक निश्चय भए जाइत छैन्हि। विवाहक लगले बाद मिश्रजीक देहान्त भए जाइत छैन्हि। तिरबेनीक जीवन अंधकारपूर्ण भए जाइत छैक। तथापि तिरबेनी युवास्थाक बिहाड़िमे पथविचलित नहि होइत अछि।

बाल्यावस्थाक संगी तिरपतिकेँ बहुत दिनुक बाद देखि तिरबेनीक मनमे ओकरा हेतु आकर्षण होएब अस्वाभाविक नहि मानल जा सकैत अछि। कथाक विकासमे तिरपति तथा तिरबेनीक सतौत भवानन्दक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। तिरबेनीक हेतु एकर बाद नैहरमे रहबाक अतिरिक्त कोनो रास्ता नहि रहि जाइत छैन्हि। नैहरमे अएला पर तिरपतिक प्रति तिरबेनीक स्नेह क्रमशः बढ़ैत जाइत अछि। ई स्पष्ट अछि जे तिरवेनी तथा तिरपति एक दोसराक प्रति आकृष्ट होइत अछि।

मैथिली व्यक्तिपरक उपन्यासमे बिहाड़ि पात आ पाथरक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि नीलकंठ ठाकुरक प्रलोभनमे पड़ि रूद्रनाथ मिश्र सँ तिरवेनीक विवाह कराएब, जनित मृत्युक पश्चात् अपन शिष्टताक कारणें भवानन्दक सहज स्नेह प्राप्त करब, अपन जान बचयबाक चेष्टामे उग्रताराक तिरवेनीक प्रति मिथ्या आरोपक चेष्टा, तिरपतिक प्रति तिरवेनीक शर्दिक स्नेह तिरपित एवं तिरवेनीक एक दोसराक प्रति आकर्षणक कारणें उत्पन्न भेल सामाजिक परिस्थिति आदि घटनाक अत्यन्त स्वाभाविक संयोजनमे कथानकक विशेषता देखल जा सकैत अछि। एहि उपन्यासक मूलकथा थिक वृद्ध विवाहक कारणें तिरवेनीक विवशताक चित्र अंकित करब।

शोषित नारीक चित्रण सँ मैथिली उपन्यासक साहित्य भरल अछि। अनमेल विवाह ओहि नारी पात्र सभक मार्ग काटकाकीर्ण बना दैत अछि। बिहाड़ि पात आ पाथरक तिरवेनीक विवाह वृद्ध रूद्रनाथ मिश्र संग होइत अछि। विवाहक लगले बाद रूद्रनाथ मिश्रक मृत्यु भए जाइत छैन्हि तिरवेनीक सम्पूर्ण जीवन विवशताक जीवन थिक परिस्थितिसँ संघर्ष करैत तिरवेनी जीवन पथ पर अग्रसर होयबाक चेष्टा करैत अछि। किन्तु बाल्यावस्थाक प्रेमी तिरपतिक आगमन सँ परिस्थितिक आओर भयंकर भए जाइत अछि तिरवेणीक चरित्र पर आक्षेप कएल जाइछ। एहि विभिन्न परिस्थितिमे तिरवेनीक सूक्ष्म मनोविश्लेषण कएल गेल अछि। मानसिक कष्ट सहन करैत तिरवेनी एकर बाद दोसर विवशतापूर्ण वातावरणमे देखाओल जाइत अछि।

बिहाड़ि पात आ पाथरमे नीलकंठ ठाकुर गरीब रहितहुँ जीहक पातर छलाह। आमदनीक दोसर कोनो साधन नहि, खेतक प्रति उदासीन रहैत छलाह अपन पेट तँ यजमनिकेमे चलैत छलन्हि मुदा कहियो घरक आर्थिक स्थिति नहि सुधरि सकलनि एहिनामे–

''दू– अढ़ाई बीघा खेतक रहितहुँ खेतक प्रति अत्यधिक उदासीनता कारणें नीलकंठ ठाकुरक आर्थिक समस्याकेँ खेत उपजा कहियो सोझरा नहि सकल। तथापि बेटी सभक संख्या आ

---

[195] प्रो0 मायानन्द मिश्र–बिहाड़ि पात आ पाथर, पृ0–21

यजमनिकाक विशालता ओहि समस्याकेँ ओझराइयोकेँ ने राखि सकल। जीहक पातर रहबाक कारणें अपने बेसीकाल जजमनिकाक कोनो काजक कामना भगवान सँ सूति उठिकेँ करबे करथि, मुदा तैयो चारि–पाँव दिन भेलो उत्तर कोनो आवाहन नहि होइन्हि तँ पहुनाइक हेतु विदा भयकेँ दुनू माइथीकेँ मानस–भातक परिश्रमसँ अवश्य मुक्त कय देथिन्ह।''[196]

प्रारंभ से लए साठि इस्वी धरिक मैथिली उपन्यासकेँ देखला सँ ई स्पष्ट होइछ जे मैथिली उपन्यास वैवाहिक समस्याक धूरी पर चक्कर काटि रहल छल। एहन सन क्रम जेना एहि समस्याकेँ छोड़ि सामाजिक जीवनक कोनो आन पक्षे नहि होइकर एकर प्रधान कारण ई थिक जे बीसम शताब्दी धरि अबैत–अबैत पंजी प्रबंधक दुष्परिणाम चरमबिन्द पर पहुँचि गेल छल तथा कथित कुलीनता उपहासक कारण बनि गेल छल मुदा तथाकथित कुलीन ब्राह्मण अपन मर्यादाक ई स्खलन देखितहुँ पैघत्वक चोंगा पहिरने छलाह। दोसर क्रमहि मैथिल समाजक आर्थिक स्थिति दयनीय भए रहल छलैक। सामाजिक बंधन शिथिल होमए लागल छल। एहना स्थितिमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचारक कारणें एहि नव साहित्यिक विधाक दिशिलोकक ध्यान आकृष्ट भेल छल। परिणामस्वरूप उपन्यासक माध्यमसँ सामाजिक जीवनक एहि पक्षक चित्रण अधिक प्रभावोत्पादक होएब संभव छलैक किन्तु जें हेतु एहि अवधिक अधिकांश उपन्यास लेखकक उपन्यास कला संबंधी ज्ञान सीमित छलन्हि, ओ लोकनि वैवाहिक समस्या मात्रकेँ उपन्यासक प्रधान कार्य विषय चुनलन्हि।

''भोरूकबा'' शोषित किसानक बड़ दयनीय अवस्थाक यथार्थ चित्रण भेल अछि जे युग–युग सँ बाबू भैया द्वारा दलित होइत आबि रहल अछि। धीरेश्वर जी एहि सामाजिक समस्याक समाधान बाबू भैयाक बदलैत मनोवृत्तिक चित्रांकन पाबि अंतमे बुधनाक जीवन सुखमय भए जाइत छैक। एहिसँ ग्राम्य वातावरणमे नवजागरण उपस्थित भेल अछि, नव ''आशा–आलोकक ''भोरूकबा''क उदय भेल अछि।''[197]

एहि उपन्यासक विषयमे डॉ0 अमरेश पाठक लिखैत छथि ''भोरूकबामे नवजागरणक संदेश भेटैत अछि। ठकबा परम्परावादी किसानक प्रतिनिधित्व करैत मगलिक पैद्य सँ अत्याचारक विरोधमे किछु नहि बजैत अछि, किन्तु बुधनाकेँ एहन समाजमे रहब सह्य नहि छैक। ओ शहरक बाट धरैत अछि संग–संग ओतए जाए मालिकक बेटाक सहानुभूति प्राप्त करैत अछि उपन्यासकार ठकवा, राधे मिश्रा मुसहरबाक भोरूकबामे भेटैत अछि। उपन्यासक पात्र सभ स्वाभाविक चित्रणक कारणें सहानुभूतिक पात्र बनि जाइत अछि।''[198]

भूमिक समस्या लऽ लिखल गेल पृथ्वीपुत्र उपन्यासमे किसान, जे यथार्थतः पृथ्वीपुत्र थिक भूमिपतिक अत्याचार सहन करैत–करैत जखन आजिज भऽ जाइत अछि तँ प्रतिक्रियामे विद्रोह कऽ दैत अछि। डॉ0 अमरेश पाठकक शब्दमे ''जमींदारी उन्मूलनक फलस्वरूप उपस्थित

---

[196] प्रो0 मायानन्द मिश्र–बिहाड़ि पात आ पाथर, पृ0–150

[197] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–301

[198] डॉ0 अमरेश पाठक –मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन, पृ0–94

समस्याकेँ लए लिखल गेल ललितक पृथ्वीपुत्रमे सामाजिक परिवर्तन स्वर अधिक मुखरित भेल अछि।''[199]

एकर कथावस्तुक प्रसंग डॉ0 पाठक कहैत छथि जे एहिमे ''बदलैत सामाजिक स्थितिक चित्रण अछि जाहिमे निम्नवर्गीय जीवनक परिवर्तित रूपक विश्लेषण भेल अछि। सामाजिक विधाक चित्रण कए ललित एक नव अध्यायक श्री गणेश करैत छथि। बिसेखी सरूपा, गेनमा आदि एहि उपन्यासक विभिन्न पात्र अपन अधिकार बुझैत अछि। ओकरा अपन खेतक प्रति ममता छैक। पृथ्वीपुत्रक कथानकक बंधन कतहु शिथिल नहि भेल अछि। एकर चित्रणमे स्वाभाविकता एक घटनाक वर्णनमे प्रवाह छैक। अनुकूल वातावरणक पृष्ठभूमिमे घटनाक निर्माण, कथावस्तुकेँ विश्वसनीय एवं प्रभावोत्पादक बनवैत अछि।''[200]

एहि उपन्यासक भूमिकामे प्रो0 रमानाथ झा लिखैत छथि– ''जाहिठामक ई कथा अछि, जाहि समाजक ई कथा अछि, जाहि प्रकारक व्यक्तिक ई कथा अछि जाहि परिवेशमे ई कथा घटित वर्णित अछि ओ जाहि परिस्थितिमे ई तथा घटल अछि, सबकेँ जेना ललित जी समीपसँ देखने छथि, चिन्हने छथि, ओकर अर्थ एवंत त्वकेँ अपन अन्तश्चक्षुसँ प्रत्यक्ष कएने छथि। ओ तें एहि उपन्यासमे जीवनक ओ चित्र उतरल अछि जे सत्य पर आधारित अछि, सत्य आ जें ओ अमूर्त जगतक चित्र अछितें इतिहासक सत्य सँ भव्यतर अछि सुन्दर अछि।''[201]

दूध–फूल उपन्यासमे रेणुजी ग्राम्य जीवनक यथार्थ चित्र व अंकित अंकित करबे कयने छथि, जाहि मध्य जीवनक सूक्ष्म निरीक्षण ओ गंभीर अर्न्तदृष्टि अछि। डॉ0 अमरेश पाठकक मतानुसार ''हिनक दूध–फूल मैथिली उपन्यास क्षेत्रमे नव प्रयोग अछि। ग्रामीण जीवनक सूक्ष्म निरीक्षणक कारणें एकर कथानक प्रतीणमान एवं चरित्रक स्वाभाविक विकास संभव भेल अछि।''[202]

डॉ0 ''श्रीश'' अपन इतिहासमे एकर कथानक आ अन्य विशेषताक प्रसंग कहैत छथि– ''बाल्यावस्थासँ जीवनक मध्याह्न धरि एकर नायक रामशरण नियति द्वारा निर्दिष्ञ जीवन प्रवाहमे बहैत रहै अछि तथा भिन्न–भिन्न परिस्थितिकेँ भोगैत रहैत अछि। रेणुजी नायकक चरित्रांकन भिन्न–भिन्न परिस्थितिमे ओकरा राखि कयने छथि जे संयोगात्मक ओ आदर्शात्मक भेल अछि। रामशरणक बाबाजी होयबाक ओ गाम धुखाक प्रसंग बड़ नाटकीय भेल अछि। एहि कृतिक प्रमुख गुण थिक उपन्यासक निविष्ट घटना ओ ओनहिसँ सम्बद्ध व्यक्ति वा परिस्थितिक सांगोपांग वर्णन, स्थान–स्थान पर मनोविश्लेषण सेहो बड़ मार्मिक रूपेँ उपनिषद अछि।''[203]

राजकमल लिखित ''आन्दोलन'' नामक उपन्यास मैथिली मासिक ''आखर''मे धारावाहिक रूपेँ छपल। एहिमे कलकत्ता मध्य चलि रहल मिथिला, मैथिली ओ मैथिलीक प्रसंगमे आन्दोलनक चर्च अछि जकरा यथार्थ एवं सजीव कहल जा सकैछ श्री भूपेन्द्र कुमार चौधरीक शब्दमे प्रस्तुत

---

[199] डॉ0 अमरेश पाठक –मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन, पृ0–

[200] डॉ0 अमरेश पाठक –मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन, पृ0–94

[201] प्रो0 रमानाथ झा– पृथ्वीपृत्रक भूमिका, पृ0–34

[202] डॉ0 अमरेश पाठक –मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन, पृ0–187–88

[203] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–302

उपन्यासमे मूल–कथाक अन्तर्गत लेखक सामाजिक विषमता, राजनैतिक पैतराबाजी, मानवक आत्म रक्षाक भावना आ ओकर यौन–पिपासाक बड़ मार्मिक उद्घाटन कएलन्हि अछि।''[204]

स्व0 योगानन्द झा लिखित 'पवित्रा'' मैथिली उपन्यासमे सामाजिक समस्या आओर ओकर निदानक रास्ता देखाओल गेल अछि। नारीक मानसिकता केँ कथा नाभिका ''पवित्रा''क चरित्रमे देखयबाक प्रयास भेल अछि। मैथिलीक अधिकांश उपन्यासकार वैवाहिक आओर विधवा समस्याकेँ अपन रचनाक केन्द्रबिन्दु मानलन्हि अछि। जे किने विधवाक संरक्षक समाजमे नहि भेटैत अछि आओर बेसी गोटे भक्षकेंक भूमिकामे अवतरित होइत छथि तेँ एहि उपन्यासमे टेंगरलाल एकटा भक्षकक प्रतीक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। बाल विधवाक समस्या लए लिखल गेल सामाजिक जीवनक विभिन्न पक्षक चित्रणमे लेखकक कारयित्री ओ व्यापयित्रीक प्रतिभाक दिग्दर्शन कराओल गेल अछि।

श्रीमती गौरी मिश्र निम्नमध्यवर्गीय गृहस्थक दुर्दन्यक आदर्शवादी कथा लिखले चिनगीमे ओ ग्राम्यजीवनक सामाजिक समस्या रूढ़िवादिताक नग्न चित्रण कएल गेल अछि। बूधन झाक पुत्री रानीकेँ बारम्बार सफलता भेटैत जाइत छैन्हि एवं अंतमे हुनक जीवन सुखी सम्पन्न होइत छैन्हि। ते नव–जागृत नारी–भावनाक रोचक चित्रणक दृष्टिएँ एहि उपन्यासक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि।

डॉ0 धीरेन्द्र रचित ''कादो आ कोइला'' उपन्यासमे पलायनवादद एवं सेक्स सन सामाजिक समस्याकेँ उजागर कयल गेल अछि डॉ0 ''श्रीश'' एहि उपन्यासक संबंधमे लिखने छथि ''विरन गुलेटन सिंह द्वारा अपन बहिनक बलात्कार ओ अपन प्रतिभाक हत्या देखेत अछि, अन्यायकेँ सहबाक हेतु विवश होइत अछि ओ अन्ततः विक्षुब्ध भए कादो सँ सानल गामकेँ त्यागि शहर दिस विदा होइत अछि तथा दरभंगा, पटना होइत कोयला सँ कारी जमशेदपुर पहुँचैत अछि। दरभंगामे जमाहारक व्यभिचार, पटनामे इंजीनियरक बेटीक कामाचार तथा रेस्टरॉमे युवक–युवतीक उन्मुक्त काम–विलासक द्रष्ट भए ओकर मन घृणासँ भरि जाइत छैक। जमशेदपुर मध्य व्यभिचार ओ भ्रष्टाचारक अनुभव कए ओ हतोत्साह भए उठैत अछि। अंतमे ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि जे ''बड़ झंझीट छैक एहि दुनियामे.....सब ठाम पैसा आ पसेनाक लड़ाई.....सब ठाम मौंगी पर दौड़ैत संसार.....।'' परन्तु उपन्यासमे संघर्षक चित्रण कतहु नहि अछि, चित्रण अछि पसेनाक विवशताक ओ मौगी पर दौड़ैत संसारक।''[205]

यथार्थतः उपन्यासकार द्वारा प्रस्तुत निम्न शब्दावली मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ उल्लेखनीय मानल जा सकैछ। ''ओहि दिन सन ग्लानि विरनके अपना जिनगीमे कहिओ नहि भेलैक। एक प्रकारक अपराधी भावनासँ भरि जकाँ, गेल छलैक ओकर मोन। ओकरा लागि रहल छलैक जेना ओ आत्महत्या कऽ लेने रहय। नेने सँ अपन परिवेशसँ एकटा विचित्र संस्कार रहैक ओकरा मुदा स्थिति सर्वदा ओकरा संग विपरीत रहल। तैयो आइ धरि अपनाकेँ बचवैत आयल छल। गामक कादामे एकरा मलकोकाक पवित्र फूल पुष्पित भऽ जखन सुखा गेल रहय तँ ततहु सँ भागि गेल छल विरन.....। गाम सँ भगवानक एक जबरदस्त कारण सकुन्तु सेहो रहय.....

---

[204] श्री भूपेन्द्र कुमार चौधरी– मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकार, पृ0–70

[205] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–306–7

.मुदा की भेलैक भागि कऽ ओकरा? ओकरा जेना लागि रहल छलैक जे ओ कोशलियाक मृत आत्माक संग बेमानी कयलक अछि।..... बेमानी। विरनक आत्मा सिहरि जाइत छैक, मोन पाड़ि कऽ।''[206]

श्री सुधांशु शेखर चौधरीक' तऽर पट्टा ऊपर पट्टा ''दू खण्डमे प्रकाशित भेल अछि। जकर प्रथम खण्डमे उपन्यासक नायक परमाक आत्मविश्लेषण अछि दोसर खण्डमे नायिका गंगाक। परमाधिक चिन्तनशील नवयुवक जे आदर्शवादी अछि एवं जे अपन पति परित्यक्तता बहिन गंगाक प्रेरणा सामाजिक कुरीति ओ दुर्भावनाकेँ दूर करबाक निमित्त गामक राजनीतिमे प्रवेश करैछ तथा नवयुवक एकटा दल संघटित कए कार्यमे प्रवृत्त करबइछ। मुदा ओकर सत्यतारूढ़ होएब गामक प्रभावपूर्ण घाघ–स्वभावक लीलाधर बाबूकेँ नीक नहि लगैत छैन्हि। ओ अपन चक्रवालिक द्वारा परमा पर जमुनीक संग व्यभिचार करबाक मिथ्या कलंक प्रसिद्ध करैत छथि, मुदा अंतमे जमुनीक सतीत्व भंग करैत स्वयं रंगल हाथ पकड़ल जाइत छथि ओ अंततः अमियानदल विजयी होइछ। एहि मूलकथाक संग गंगाक चरित्रांकन द्वारा उपन्यासमे नारी–जीवनक व्यवस्था, विवशता ओ करूणाक विलक्षण चित्रण भेल अछि। गंगा पति परित्यक्तता अछि कारण, ओकरा पति संतोषपूर्ण विदाई नहि भेटबाक कारणें ओकरा छोड़ि दोसर विवाह कए लैत छैक। एहि प्रकार एहि मध्य सामाजिक ओ मानसिक समस्याक संग–संग विलक्षण चित्रण भेल अछि।

जीवकान्तक 'पनिपत'' मैथिलीक बहुचर्चित उपन्यासक कोटिमे अबैत अछि। एहिमे एक व्यक्तिक रूपमे नायक (अरविन्द)क मनोविश्लेषणक संग–संग सामाजिक समस्या नीक जकाँ उजागर भेल अछि। नायक समाजशास्त्रमे एम0ए0 पास छथि, तथापि रोजगारक समस्याक समाधान लेल गली–गली भटकैत छथि। जीवनमे सब दिस सँ निराशा हाथ अबैत छन्हि आ अन्ततः संघर्ष ज्वालामे झड़कैत रहैत छथि।

श्री रामचन्द्र चौधरीक ''वान्दिनी वधू 'मध्य दहेज प्रथा सन सामाजिक समस्याक दुःखान्त परिणाम एवं मैथिल समाजक हृदयहीन निर्ममताक नग्न चित्रण भेल अछि। जकर कारणें पूनम सन दुधारू बेटी केँ सासुरमे वन्दिनी जकाँ जीवन बितबैत असह्य कष्टक भोग करए पड़ैत छैक?

श्री सुधांश शेखर चौधरीक 'दरिद्र छिम्मीर'' आत्मकथात्मक शैलीक प्रौढ़ रचना थिक। अमलक जीवन–कथाक माध्यमसँ उपन्यासकार निम्न मध्यम वर्गीय परिवारक कतोक पक्षकेँ एहि मध्य उजागर कएल गेल अछि। सामाजिक दुर्दन्य प्रतिभाकेँ विकसित नहि होअए दैत छैक।

चौधरीजी ''ई बतहा संसार'' मध्य निरंजन– कामिनी, अखिल चान एवं धनन्जय चान तीन भिन्न–भिन्न प्रकार प्रणय कथाकेँ एक सूत्रमे गुम्फित कए प्रेम ओ वासना सन सामाजिक समस्याकेँ व्याख्यायित करबाक चेष्टा कएने छथि। रचनाकार ने केवल आत्म कथ्य लिखि कए प्रत्युत चरित्र ओ घटनाक प्रसंगमे प्रुचर मात्रामे अन्तर्मग्न व्याख्या ओ रहस्यक उद्घाटन कए समीक्षक कार्य के हल्लुक कए देलन्हि अछि। प्रत्येक मात्र कामिनी, अखिल, निरंजन, सुदर्शन,

[206] डॉ0 धीरेन्द्र कादो, कोइला, पृ0–110–111

चान प्रभृतिक नग्न रूपमे प्रस्तुत भेल अछि। वस्तुतः ओकरा सभक चरित्र ओ स्वभावकेँ मूल्यांकन करबाक लेल पाठक लोकनि केँ कनेको मानसिक श्रम नहि करए पड़वैन्हि । एक वर्णन विन्यास प्रसंग डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' लिखने छथि–'' आधुनिक उपन्यासमे एहि प्रसारक वर्णन केँ हास्यास्पदें कहल जाए सकैत अछि परन्तु समग्र रूपेँ विचार कएला सँ चरित्रक सूक्ष्म विश्लेषण, धनाक रोचक वर्णन स्थान–स्थान पर मानसिक उधपोहम चित्रण विचारक प्रौढ़ता एवं भिन्न भिन्न प्रकारक कथाक संतुलित संयोजन आदि सभ दृष्टिएँ एकरा मैथिलीक श्रेष्ठ उपन्यास कहल जा सकैत अछि।''[207]

डॉ0 ब्रज किशोर वर्माक ''मणिपद्म'' भारतमे चिरकालसँ व्याप्त भिखमंगी सन सामाजिक समस्या पर आधारित उपन्यास थिक। अन्य समृद्ध देशी विदेशी भाषा साहित्य मध्य सेहो एहि समस्या पर आधारित साहित्यक अभाव अछि। अतः श्री 'मणिपदम्'' एहि ज्वलन्त सामाजिक समस्या केँ अपन उपन्यासक विषय बनाए नवीनता ओ मौलिकताक परिचय देने छथि। उपन्यासकारक कथ्य अछि जे एहि सामाजिक समस्याक समाधान छिटपुट प्रयास सँ नहि होएत, प्रत्युत एहि हेतु जा धरि सम्पूर्ण समाजकेँ नहि बदलब, समग्र क्रान्ति नहि हैत, ताधरि एकर अन्त नहि भए सकत। ''डॉ0 दुर्गानाथ झा एहि उपन्यासक संबंधमे लिखैत छथि ''श्रीमणिपदम् कलकत्तामे ''बैगर्स कॉलोनी'क पृष्ठभूमिमे कल्पनालोकक सृष्टि कए अपन अन्य उपन्याससे जकाँ लोकोत्तर कवित्व संचार कएने छथि। एहने सृष्टि थिक हिनक एहि उपन्यासक मालिन एवं काली मंदिरक तांत्रिक तथा लिफ्टन एवं सुरभि। रामनाथक रहस्यपूर्ण रीतिएँ अफामद्दीमे जरब, ओकरा बड़बा स्मगलर बनि जायब तथा मानवक सम्पूर्ण क्रान्तिक फलस्वरूप सामाजिक नैतिकताक पथकेँ पुनः अनुसरण करब आदि अनेक विषयक उल्लेख एहि उपन्यासमे भेल अछि जकरा रोचक ओ रोमाचंक कहल जाए सकैत अछि। एहि उपन्यासक मुख्य महत्त्व अछि नवीन समस्याक ग्रहण एवं राजनीतिक भ्रष्टाचारक चित्रण करब।''[208]

श्री प्रभास कुमार चौधरी ''अभिशप्त'' यथार्थवादी उपन्यासक कोटिमे परिगणित कएल गेल अछि। एहिमे अनेक प्रकारक सामाजिक समस्याक चर्च कएल गेल अछि। डॉ0 ''श्रीश'' मध्य सामाजिक समस्याक संबंधमे लिखने छथि– ''अभिशप्तमे दुई पीढ़ी मध्य निहित असंतुलन वैषम्य, समाजमे पसरल भ्रष्टाचार ओ स्वार्थ, दुई मित्रक बीचक कृत्रिम संबंध, पति–पत्नी मध्य निहित व्यक्तिवादी भावनाक कारणें उपस्थित विभेद, कार्यालयक अनुशासनहीनता ओ साहित्य क्षेत्रमे व्याप्त आडम्बर आदिक वर्णन कए उपन्यासकार वर्तमान पीढ़ीक अभिशप्त आत्माकेँ उद्घाटित करबाक प्रयास कएने छथि।''[209]

समाजमे कोनो वर्गक अभिशप्ताक कतोक कारण ताकल जा सकैछ जेना– सामाजिक, आर्थिक वा राजनीतिक। ''अभिशप्त''मे प्रकाश अपन शिक्षित पत्नी मीराकेँ लघुकए अपन जिनगी केँ स्वयं अभिशप्त बनौने अछि। सामाजिक मूल्यांकनक दृष्टिएँ जँ देखब तँ बूझि पड़त जे परिवारमे मीरा भेटि सकैत अछि, किन्तु जहाँ धरि प्रकाशक जिनगीक अभिशप्ताक प्रश्न उठैत अछि, बुझना जाइछ जे व्यर्थ आडम्बर आओर अहमन्यताक कारणें ओ बढ़ि गेल अछि। ओने तँ

---

[207] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–316
[208] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–310
[209] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–311

माय–बापकेँ अपना दिस सँ असंतुष्ट राखै चाहैत अछि आ ने पत्नीकेँ। ओ चाहैत अछि एहि दुहूक सम्बन्धक मध्यमे सामंजस्य। परंच ओकर सृजित परिस्थिति ओकरा असमंजसमे राखि दैछ। ओकरा पीड़ाक उत्सक ने तँ कोनो व्यवस्था छैक आओर ने तँ कोनो सामाजिक, आर्थिक तत्वे। एहि हेतुएँ प्रकाशक पीड़ा सामान्य मध्यवर्गीय पीड़ाक कोटिमे नहि राखल जा सकैत अछि। वस्तुएँ प्रकाशक चरित्रमे अवसरवादिताक दर्शन भेल अछि। एहन चरित्र जखन सामाजिक वा राजनैतिक स्थिति पर अपन सिद्धान्त बधारए लगैत अछि तखन ओकर प्रसंगमे कोनो निर्णय देवामे गंभीर चिन्तनक आवश्यकता अछि।

प्रभास जी दोसर उपन्यास '' हमरासन रहबामे अनेक प्रकारक नारी पात्रक सृष्टि कए विविध रीतिएँ नारीक सामाजिक शोषणक समस्याक सर्वांगीण चित्र सफलतापूर्वक प्रस्तुत कएने छथि। उपन्यास समाजक विविध ओ व्यापक चित्र प्रस्तुत करबाक दृष्टिएँ सेहो उल्लेखनीय अछि। डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'क कथन अछि–'' एहि उपन्यासमे प्रणव के छोड़ि एकहुटा एहन पुरूष पात्र नहि अदि जे कोनहुँ–ने कोनहुँ रूपेँ सेक्स अपराधी नहि होथि ओ एकहुटा एहन स्त्री पात्र नहि छथि जे पुरूषक कामवासनाक आखेट नहि बनैत होथि। एहि प्रकारक सामाजिक अनैतिकताके अतिरंजित कए चित्रित करब स्वस्थ्यकर नहि कहल ज सकैत अछि।''[210]

एकर रक्षक अछि– श्रीकान्त चौधरी जेना कि पहिने उल्लेख भऽ चुकल छी जे एहि उपन्यासक पहिल भागमे सामन्त वर्गक टूटैत आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक दबदबाकेँ देखाओल गेल अछि। एकर ध्वस्त समाधि पर जाहि लज्जास्पद सभ्यताक डारि–पात चढ़ल छैक तकर सहयोगी एकवाली चौधरी, हरिश्चन्द्र मिश्र, महेश मास्टर इत्यादि कतेक पात्र गनाओल जा सकैछ आओर एकर बीजारोपण कएने छथि नायक रवि। नवारम्भक प्रसंग समीक्षा करैत श्री सुधांशु शेखर चौधरी कहैत छथि–– हमरा लग रहब'क नायक प्रणव उपन्यासकारक तर्जनीक नीव पर नाचऽवला अपनामे देवत्स आरोपित कएने रहनिहार युवक यदि चरित्रक कृत्रिमता अपनामे समेटने रहल अछि तँ नवारम्भक नायक रवि ताहि सँ निश्चित रूपसँ समर्थ चरित्र अछि जे सत्य प्रकट भऽ गेला पर कम–सँ–कम संघर्षक हेतु सन्नद्ध तँ होइत अछि। ई भिन्न कथाजे उपन्यासक अंतिम नाटकीयता रविक संघर्षकेँ बढ़यबामे योगदान नहि दैत अछि, उपन्यासकेँ हल्लुक बना दैत अछि।''[211]

प्रभासजी ''राजा पोखरिमे कतेक मछरीमे डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश''क शब्दमे ''वर्त्तमान राजनीतिक एवं प्रशासनिक संदर्भमे आदर्शवादक पराजयक कथा वर्णित अछि, विकृति ओ काम लोलुपताक कथा, दहैत सामन्ती, प्रतिष्ठाक कथा एवं ग्राम्य समाजमे गरीबक शोषण एवं तकर नृशंस प्रतिरोधक कथा। उपन्यासकार ई अवधारणा कयल अछि जे अपन आदर्श जीवन दृष्टिक कारणें नहि तँ अपन परिवार ओ गाम्य–समाजसँ आओर ने आई0ए0 एस0 पदाधिकारीक रूपमे वर्त्तमान भ्रष्ट सरकारी प्रशासन सँ सामंजस्य स्थापित कऽ पबैत अछि..... भारतीयक चित्रण द्वारा लेखक एक गोट एहन विलक्षण महिमामयी नारीक उदात्त ओ उज्ज्वल पक्षकेँ संवेदनशील

---

[210] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–312

[211] श्री सुधांशु शेखर चौधरी–मि0मि0 (6 मई 1979)मे पुस्तक परिचय स्तम्भमे व्यक्त विचार, पृ0–18

धरातल पर प्रतिष्ठित करब लेल समर्थ भेलाह अछि जे यथार्थवादक घोर अंधकारमे अलौकिक आदर्शवादी आलोक विकीर्ण करैत प्रतीत होइत अछि।''[212]

राजा पोखरिमे कतेक मछरीक नायक थिकाह भास्कर। अपन छोट सन जीवनमे ओ किछु श्रेष्ठ घनिष्ठ सम्पर्कमे अबैत छथि। आधुनिक गाय–तंत्र एवं विश्वविद्यालय सभतरि ओ अन्याय एवं अनीतिक साम्राज्य देखैत अछि। एहि उपन्यासक संबंधमे डॉ0 भीमनाथ झा लिखैत छथि– ''ग्रामीण परिवेश, टूटैत सामन्ती परिवार तथा बदलैत सामाजिक परिस्थितिक कथा.....कहबामे प्रभास जादूगर छथि। मिथिलाक परम्परित प्रचलित लोकोक्तिकेँ कहबामे प्रभास जादूगर छथि। मिथिलाक परम्परित प्रचलित लोकोक्तिके वर्तमान संदर्भक संग जोड़ि ओहिमे नवीन अर्थवत्ता प्रदान करब प्रभासक विशेषता थिक। अपन पात्र आ परिवेश सँ हुनका घनिष्ठ परिचय छनि तथा कहबाक शैली ततेक रोचक आ'' स्वाभाविक छनि जे पाठक हुनक कथाक संग बन्हा जाइत अछि। किन्तु स्वाभाविक रीतिएँ बढ़ैत घटनामे कतहु–कतहु सँ नाटकीयता आ विषाद अछि, जे पाठक केँ एक्के बेर चौका दैत छैक– शांतिक हिलकोमे जेना कंकड़ खसि पड़ल हो। इहो उपन्यास हुनक अन्य उपन्यास सभ जकाँ मिथिलाक सामन्ती परिवारक टूटनक कथा कहैत अछि, मिथिलाक गाम घर सँ परिचय करबैत अछि, सभ आर्थिक, सामाजिक आ राजनीतिक परिस्थितिक परिचय दैत अछि।''[213]

---

[212] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–

[213] डॉ0 भीमनाथ झा–मि0मि0 (19 सँ 25 जून 83) आ मैथिली साहित्य शीर्षक लेख, पृ0–11

ISBN: 978-81-19149-27-8

अध्याय 5

मैथिली उपन्यासमे नवीन जीवन दर्शन–मार्क्सवाद, फ्रायडवाद, गाँधीवाद

मार्क्सवादी भावना मैथिली उपन्यासमे स्वतंत्रताक पश्चात् आयल। एहन उपन्यासक घटना तथा पात्र निम्न मध्यवर्ग तथा निम्न वर्गक सामाजिक स्थितिक प्रतिनिधित्व करैत अछि। तथापि एहन उपन्यासमे विशेषतया सर्वहारा वर्गक संघर्ष, शोषण, अत्याचार, अमानवीयता, दुराचार आदि सामाजिक विसंगतिक चित्रण'क ओहि पर आक्रमण कयल गेल अछि तथा संदेह प्रदान कयल गेल अछि। एहन उपन्यासमे अतीतक मोहक गान–नहि गाओल गेल अछि, पाठक केँ संसारक वर्त्तमान संघर्षसँ हटाय काल्पनिक जिला निकेतनमे जयबाक संदेश नहि देल गेल अछि, समाजक रीढ़केँ कमजोर कयनिहार काम एवं यौन तत्वकेँ प्रधानता नहि देल गेल अछि, मनोविश्लेषणक ईजोतमे जीवनसँ पलायनवादी मनोवृत्ति केँ प्रश्रय नहि देल गेल अछि। एहन उपन्यासक कथ्य नहि अछि जे समाज एकटा निरंतर विकासशील संस्था अछि। आर्थिक विकासमे परिवर्तनक संग समाजमे सेहो परिवर्तन होइत अछि। आजुक समाज स्थिति तँ ई अछि जे आर्थिक दृष्टिसँ समृद्ध एक वर्गक हाथमे उत्पादनक समस्त साधन अछि तथा साधन पर अधिकार रहबाक कारणें धन हिनका लोकनिक हाथमे एकत्रित भेल चलि जा रहल अछि। समाजक दोसर वर्ग सर्वहाराक अछि जे पहिल वर्गक हाथक कठपुतरी अछि तथा भयंकर यातनाक अनुभवक रहल अछि। एहन उपन्यास सर्वहारा वर्गकेँ वर्त्तमान समाजकेँ बदलि देबाक प्रेरणा दैत अछि तथा ओकरा ई विश्वास दिअबैत अछि जे यदि प्रयत्न कयल जाय तँ एहन समाजक निर्माण संभव अछि जाहिमे शोषण एवं शोषितक वर्ग नहि रहत तथा ओहेन वर्गहीन समाजमे सब शांति पूर्वक रहि सकत। एहन उपन्यास प्रकृति वा ईश्वरक निष्ठुर परिहासक गप्प नहि करैत अछि। भाग्यवादक आडम्बरकेँ नहि सहन करैत अछि।

आधुनिक जीवनक निरंतर त्रास आओर कष्टक कारण जीवनमे वर्ग संघर्ष बढ़ैत जा रहल अछि आओर जन जीवनक संतोष समाप्त भऽ कऽ क्रान्ति आओर विद्रोहमे परिवर्तित भेल जा रहल अछि। हिन्दी साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान कहैत छथि– ''साहित्य के चाही कि जे दलित अछि, पीड़ित अछि, वंचित अछि– चाहे ओ व्यक्ति होअय या समूह ओकरे हिमायत आओर वकालत करब ओकर फर्ज अछि।''[214] आजुक ग्राम समस्या प्रधान उपन्यासमे प्रायः इएह भेटैछ कि शिक्षा आओर सही नेतृत्वक अभावमे जे ग्राम शक्ति सुति रहल छल आइ वएह सही नेतृत्वमे संगठित भऽ कऽ वर्ग संघर्ष के खत्म कऽ प्राचीन रूढ़ि आओर परम्पराके तोड़ि जीवन आओर समाज, देश आओर युगक उन्ततिक हेतु अग्रसर भऽ कऽ देशक विभिन्न विकास योजनामे सहयोग दय रहल अछि।

जमींदार आओर पूँजीवादक शोषणसँ मुक्ति पयबाक हेतु एक युगक मजदूर किसानक आत्मा आकुल छल मुदा सही मार्गदर्शक नहि छल आओर आ शिक्षाक कारण ओकरामे ततेक साहस नहि छल कि ओ स्वयं कोनो वैचारिक क्रान्तिमे जन्म दय सकतथि। मुदा आजुक ग्रामीण

[214] प्रेमचन्द कुछ विचार–पृ0–46

अपेक्षाकृत वेशी जागरूक अछि। लिखित नहि तँ मौखिक शिक्षा (रेडियो, समाचार पत्र आदि) जनताकेँ विश्वके प्रांगणमे होमयवाली हलचल सँ सावधान आओर सचेत कय देलकैक अछि। आजुक बुर्जुआ अर्थात् शोषक पक्ष समझौतावादी बनिकऽ जनहित सँ अपन आँचर खींचि चुकलअछि आओर जनपक्ष सेहो शक्ति अभिसंयुक्त भऽ कऽ एक महान राष्ट्रीय आन्दोलनके जन्म नहि दय सकैत अछि जे देशक समग्र वातावरणके बदलि दैक। मैथिली उपन्यास जाहिमे भोरूकवा, पृथ्वीपुत्र, कादो आ कोइला, दूध–फूल, खोता आ चिड़ैं, आदिमे मार्क्सवादी भावना पाओल गेल अछि।

मार्क्सक द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद पहिने प्रगतिवादक रूपमे साहित्यमे अयल आ पश्चात् अर्थात् नवीनरूपमे यथार्थ वादक नाम सँ अपन परिचय प्रस्तुत कएलक। पूर्व प्रचलित कल्पना वाद वा भाग्यवाद एवं आदर्शवादक प्रतिक्रियामे यथार्थवादक उदय भेल। फलस्वरूप एहिमे विरोधक स्वर मुखर रहब–एकर वैशिष्ट्य बनि गेल। विरोध ककरक व्यवस्थापक जकर परिणाम अछि असंतोष, अभाव क्लेष। अभिजात्य वर्षा वर्णनकेँ त्यागि सामान्य जनजीवनक दैन्य विक्षोभ्ज्ञ आ व्यवस्थाक विरोधमे उठल स्वरकेँ मुखरित करैत अछि यथार्थवादी साहित्य। औद्योगिक युगक मिल मालिकक ऐश्वर्यपूर्ण विलासिताक चित्रण नहि; कारखानाक श्रमिक वर्गक, ओकर पसेनाक, ओकर संघर्षक ओकर जीविषाक सत्यताक चित्रण थिक।''[215]

स्वाधीनता प्राप्तिकवाद मैथिली उपन्यासकारमे ई उत्साह अवश्य जगलन्हि जे समाजक शोषित–दलितवर्गक लोककें स्वतंत्र भारतक नागरिक मानथि। ई मैथिली उपन्यासकार लोकनिक उत्साहे कहबाक चाही जे ओ लोकनि उपन्यासक पात्र चयन क्रमशः अभिजात्य मोहक तिरस्कार कयलनि आ तकर स्थान पर बहुलताक संग गाम घरक ओहि पात्र सभकेँ कथामे प्रतिष्ठित कयलनि जे परम्परा सँ शोषित ओ प्रताड़ित रहल छलाह।''[216]

एहि प्रकारक उपन्यासमे हम यात्रीक ''बलचनमा'' के पबैत छी, जे वर्ग संघर्षक चित्र उपस्थित करैत अछि। अन्य उपन्यासमे प्रो0 श्री मायानन्द मिश्रक खोंता ओ चिड़ैं'' केँ रखैत छी एहि उपन्यासमे मध्यवर्गीय ब्राह्मण समाज ओ निम्नवर्गीय धानुक समाजक स्वार्थ संघर्षक चित्रण समाजवादी यथार्थवादी ढ़ंगे भेल अछि। निम्नवर्गीय सिरिलाल तुरन्ता आदि नवयुवक अनुरूप परिवर्तनक प्रतीक थिक, जे अधिकार हेतु संघर्ष करैत अछि, आ बाबू भैयाक प्रतीक कपिलखाँ के अपन आगाँ ठेहुन टेकवाए दैत अछि।

श्री धीरेन्द्रक भोरूकवामे बाबू–भैया द्वारा युग–युग सँ दलित ओ शोषित किसानक दयनीय अवस्थाक मार्मिक ओ विश्वसनीय वर्णन भेल अछि। श्री धीरेन्द्र एहि समस्याक समाधान बाबू भैयाक बदलैत मनोवृत्तिक अंकन द्वारा प्रस्तुत करैत छथि। माधो ओ केसीक सहानुभूति पाबि बुधनाक जीवन अंततः सुखमय भए जाइछ। एहिसँ गाममे नवीन आशाक आलोक ''भोरूकवा'' उगैत अछि।

---

[215] सं0 श्री गोपालजी झा गोपेश, डॉ0 वासुकीनाथ झा– यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य, पृ0–15

[216] स0प0 जयदेव मिश्र एवं डॉ0 वासुकीनाथ झा–समकालीन कथा साहित्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य, पृ0–10

श्री धीरेन्द्रक ''कादो आ कोइला एवं ठुनुकि बहु कमला वर्ग भावनाक उपन्यास थिक। एहि उपन्यासमे शोषित वर्गक आन्तरिकतामे पैसि संवेदनाक स्तरहु पर कथा नीक जकाँ विकसित भेल अछि, जे पाठक केँ समाजक बदलैत नव रूपकेँ चिन्हबाक हेतु बाध्य करैत अछि। ''एहि युगमे कोनो भगवान नहि अवतरित होएताह मनुष्यकेँ अपनहि मिलिकेँ राक्षससँ उद्धार पयबाक व्योत करए पड़तैक।'' इएह विश्वास ठीकर मुखियाक मनमे आब एक दोसर ठीठर मुखियाक जन्म दए रहल छैक। कमला माने धार, सामाजिक प्रवृत्तिक घर, जे बदलि रहल छैक। एहि उपन्यासक अधिकांश पात्र प्रगतिशील चेतना सम्पन्न छैक।

ललितक ''पृथ्वीपुत्र'' नव जागरणक कथाकेँ सोझाँ करैत अछि। पृथ्वीपुत्र किसान थीक, जकरा खेतसँ ममत्व छैक, विरोधी सरूपा, ओ गेनमा आदि भूस्वामीक अत्याचार सहैत–सहैत विद्रोह कए उठैत अछि, जकरा जीबइत रहत पहिने जरूरी छैक संसारमे तखन लोकक लाज, नीक–बेजाए।''[217]

श्रीमती लीली रेक 'पटाक्षेप''मे भूमिजीवी ग्राम्य जनताकेँ समताक अधिकार नहीं भेटलैक एवं ओकर शोषण होइत रहलैक फलस्वरूप रक्त–क्रान्तिक उग्र–भावना जागरूक तरूण लोकनिक अन्तस्तलकेँ उद्वेलित करए लागल। '' विभूति आनन्दक ''सुनगैत एकटा गामक कथा'मे निम्न ग्रामीण वर्गमे क्रमिक उच्च वर्गक वर्चस्वताक प्रति विद्रोह स्वाभिमान ओ संघटनात्मक शक्तिक उदय भए रहल छैक जकर नेतृत्व इन्दुओ रमेश सन निर्धन वर्गक नवशिक्षित युवक करैत छथि।''[218]

ललितक उपन्यासक मूलमंत्र छलन्हि मार्क्स। निम्नवर्ग अथवा निम्नमध्यर्वक जीवनक जे जटिल कठिन संघर्ष, तकर व्यापक समर्थन, स्वाभाविक मार्मिक चित्रण जतेक ललितक उपन्यासमे भेल अछि ततेक अन्य कोनो मैथिली उपन्यासकारमे नहि। उपन्यासमे बिम्ब–नियोजन ओ बिम्ब विधान सँ उपन्यासकेँ सशक्त एवं प्रभावोत्पादक वनयबाक शिल्पललितक अपन शिल्प विशेषता थिक जे एकटा श्रेष्ठ उपन्यास कारक अन्यतम गुण मानल जाइत अछि। चरित्रांकनमे ललित बेसी सावधान रहैत छलाह। एक–एक चरित्रकेँ गढ़ैत छलाह ओकरा अपन पृष्ठभूमिक अनुकूल स्वाभाविक विकास दैत छलाह। आ तें हुनक चरित्र मनोवैज्ञानिक, स्वाभाविक तथा जीवंत होइत छल। वातावरणक अभिव्यक्ति एतेक सशक्त होइत छल जे उपन्याससँ माटिक गंध उठि गेल छल।''[219]

अभितात्यवर्ग सँ फराक निम्नवर्ग जकरा शोषित प्रताड़ित वर्ग कहि सकैत छी जा जे सहज मानवक चरित्र थिक जकर प्रचार–प्रसार पाश्चात्य साहित्य सँ प्राच्य साहित्य धरि प्रवाह मान अछि। जकर आचार्य मार्क्समे यदि मानवक आर्थिक विसमताक प्रति आक्रोश अछि। समाजक अचर्चित निम्नवर्गक चेतनाक स्फुरणक स्थान ई अपन उपन्यासमे आनल जे हिनक नवीनताक आ मानवताक यथार्थ मूल्यांकन कहल जाइत अछि। जन साधारणक आशा आकांक्षा, हास–परिहास, सुख–दुःख, मिलन–विछोह, जय–पराजयक द्वन्द्वक अवकाश हिनक उपन्यास

---

[217] स0 गोपाल जी झा ''गोपेश'' एवं डॉ0 वासुकीनाथ झा–यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य, पृ0–89
[218] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–319
[219] श्री सुधांशु शेखर चौधरी–मिथिला मिहिर श्रद्धांजलि अंक 29 मई 1983, पृ0–27

''पृथ्वीपुत्र''मे जेना हिलि–मिलि गेल अछि से एहिसँ पूर्वक मैथिली उपन्यासमे नहि देखना जाइत अछि।''[220]

भोरूकवा, पृथ्वीपुत्र तथा खोंता आ चिड़ै (मायानन्द मिश्र)मे आंशिक रूपमे एवं रामानन्द रेणुक, दुधफूल'मे समग्ररूपमे निम्नवर्गीय पात्रक माध्यमसँ कथाक तानी–भरनी सुनल गेल अछि। एहि उपन्यास सभमे अद्यावधि स्थान नहि पौनिहार निम्नवर्गीय जाति सभकेँ साहित्यिक वर्णनक आधार बनवाक गलि प्रदान कएल गेल अछि जे नवयुगीन जागरणक स्वरकेँ सूचित करैत अछि। तात्पर्य ई जे सर्वहारावर्गकेँ छोट जातिक लोककेँ आर्थिक दृष्टिसँ विपन्न वर्गक लोककेँ उपन्यासक पात्रक रूपमे अंकन करबाक श्रीगणेश सामाजिक परिवर्तनक स्वरकेँ स्वरूप दैत अछि।''[221]

मैथिली उपन्यासक कथावस्तु मात्र विवाह, द्विरागमन, बहुविवाह आदिक समस्या लए लिखल जाइत छल। आधुनिक युग संक्रमण काल सँ गुजरि रहल अछि। एक दिस प्राचीन परिपाटी रीति–नीति एवं व्यवस्थाक बंधन शिथिल भए रहल अछि आओर दोसर दिस नवीन आशा, नव आकांक्षा, नव व्यवस्थाक जन्म भए रहल अछि। एहि संक्रमणकालक सामाजिक परिस्थिति एवं जागकरणक चित्रण ''पृथ्वीपु त्र'' एवं ''भोरूकवा''मे गेल अछि।

यात्रीजीक 'नवतुरिया'मे नवतुरक लोक संघर्ष करैत अछि। मायानन्द मिश्रक खोंता आ चिड़ेमे मध्यवर्गीय ब्राह्मण समाज एवं निम्नवर्गीय धानुक समाजक स्वार्थ संघर्षक चित्रण बड़ मार्मिक भेल अछि निम्नवर्गीय नवयुगीन जागरण प्रतीक थिक सिरीलाल, ''तुरंता आदि अधिकारक हेतु संघर्ष करैछ ओ बाबू भैयाकेँ कपिल खाँ के जकर सम्मुख झुकए पड़ैत छैन्हि।''[222] खोंता आ चिड़ै जकाँ भोरूकवा ''ओ पृथ्वीपुत्र''मे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक बदलैत परिवेशक चित्रण भेल, जाहिमे जब जागरणक मनोमुग्ध काटी सुगन्धिक अछि। एहु मध्य निम्नवर्ग ओ मध्यवर्गक निहित स्वार्थ संघर्षक सुन्दर विन्यास भेल अछि। भोरूकवामे शोषित किसानक बड़ दयनीय अवस्थामे शोषित किसानक बड़ दयनीय अवस्थामे यथार्थ चित्रण भेल अछि जे युग–युगसँ बाबू भैया द्वारा दलित होइत आवि रहल अछि। धीरेश्वर जो एहि समस्याक समाधान बाबू भैयाक बदलैत मनोवृत्ति चित्रांकन कए करैत छथि। माधो तथा केशीक सहानुभूति पाबि अंतमे बुधनाक जीवन सुखमय भए जाइत छैक। एहिसँ ग्राम्य वातावरणमे नवजागरण उपस्थित भेल अछि, नव आशा आलोक ''भोरूकवा''क उदय भेल अछि। ललित जी अपन 'पृथ्वीपुत्र'मे एहि नवजागरणक अंकन किछु भिन्न रूपमे कयने छथि। किसान पृथ्वीपुत्र थिक तेँ ओकरा खेतक प्रति गहन अपनत्व ओ ममता छैक। बिसेखी, सरूपा, गेनमा प्रकृति एहने पात्र थिक जे भूमिपतिक अत्याचार सहैत–सहैत प्रतिक्रियामे विद्रोह कए उठैत अछि।

रामानन्द रेणुक 'दूधफूल'मे ग्राम्य जीवनक यथार्थ चित्र तँ अंकित करबे कयने छथि, एकर महत्त्व मैथिलीमे नवरीतिक उपन्यासक दृष्टिएँ वेशी अछि। बाल्यावस्थाहिसँ जीवनक मध्याह्न

---

[220] प्रो0 मायानन्द मिश्र–मिथिला मिहिर, श्रद्धांजलिक, 29 मई 1983, पृ0–3

[221] डॉ0 वासुकीनाथ झा–परिवह, पृ0–54

[222] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–300

धरि एकर नायक रामशरण नियति द्वारा निर्दिष्ट जीवन प्रवाहमे बहैत रहैत अछि तथा भिन्न–भिन्न परिस्थिति के भागैत रहैत अछि।

प्रो0 धीरेन्द्र ''कादो आ कोइला''मे एक निम्नवर्गीय बिरनक जीवन कथा अछि। बिरन भुलेटन सिंह द्वारा अपन बहिनक संग बलात्कार ओ अपन प्रेमिकाक हत्या देखैत अछि, अन्यायकेँ सहबाक हेतु विवश होइत अछि ओ अन्ततः विक्षुब्ध भए कादो सँ सानल गामकेँ त्यागि शहर विदा होइत अछि।

प्रभास कुमार चौधरीक ''नवारम्भ''मे निश्चय उपन्यासकार ग्राम्य जीवनक विविध पक्ष–ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट, स्वार्थपरता, दलितवर्गक शोषण, ग्राम्य राजनीतिक विदूषता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार प्रभृतिक सजीव ओ यथार्थ चित्र अंकित करबामे अपन प्रतिभाक उत्तम परिचय देने छथि, तथापि एहि नहि मध्य अपन कृतित्वक ओहि शोषककेँ पार नहि कए सकलाह अदि जे हुनक हमरा लग रहब''मे उपलब्ध होइत अछि।''[223]

नपरती जागि उठल''मे प्रो0 नित्यानन्द झा वर्त्तमान राजनीतिक ओ आर्थिक व्यवस्थाक प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त करैत अभिजातवर्गक प्रति विक्षोभ ओ सर्वहारा वर्गक प्रति मार्क्सवादी पक्ष ग्रहण कएल अछि।

मार्कण्डेय प्रवासी अपन उपन्यास ''अभियान''मे मध्यमवर्गीय मैथिल ग्राम्य परिवार के सेहो अंकित करबाक चेष्टा कयलनि अछि। मैथिली साहित्य जगतमे प्रतिष्ठित कवि कलाकार कोना निर्ममतापूर्वक साहित्यिक आयोजनकर्त्ता शोषण करैत अपन नीचता प्रदर्शित करैत छथि, विश्वविद्यालयक विभागीय अध्यक्ष कोना अयोग्य छात्रकेँ आगाँ बढ़ाए वस्तुतः योग्य एवं मेधावी छात्रकेँ नीचां खसाए दैत छथि, राजनेता लोकनि, कोना नैतिक नीचताक आश्रय लए धनवान बनैत छथि, प्रशासनमे कोन रूपें भ्रष्टाचार व्याप्त अछि आदि अनेक विषयक एहि उपन्यासमे उपहास तँ अवश्य कयल गेल अछि, मुदा एहि सभक उन्मूलनक हेतु संघर्षक कोनो तेहन उपाय नहि सुझाओल गेल अछि।''[224]

श्रीमती लिली रेक ''पटाक्षेम'' नक्सलवादी आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर आधारित अछि। स्वतंत्रताक प्श्चाते भूमिजीवी ग्राम्य जनता के समताक अधिकार नहि भेटलैक एवं ओकर शोषण होइत रहलैत फलस्वरूप रक्त क्रान्तिक उग्र भावना जागरूक तरूण लोकनिक अन्तस्थलकेँ उद्वेलित करए लागल। शिवनारायण एहने नक्सलवादी नेता जे बटाईदारकेँ आधा फसिल मालिककेँ देवासँ रोकैत अछि ओ क्रमिक अपन प्रभाव बढ़बैत जाइत अछि। उपन्यास कारक नक्सलवादी क्रान्ति भावनाक प्रति सहानुभूति पूर्ण प्रगतिशील दर्शन होइत अछि। परन्तु मैथिली साहित्यमे एहि उपन्यासक महत्त्व अछि नवीन ओ ज्वलन्त राजनीतिक विचारधाराकेँ रोचक शैलीमे मैथिली उपन्यासक विषय बनाए नवीनताक सन्निवेश करबाक दृष्टिएँ।[225]

---

[223] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–313

[224] डॉ0 बाल गोविन्द झा 'व्यधित'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–213

[225] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–318

विभूति आनन्दक सुनगैत एकटा गामक कथा ''मध्य एकटा गामक राम नगरक नव जागरणक परिवर्तन प्रक्रियामे गुजरैत सामाजिक परिस्थिति एवं मानवीय मनोवृत्तिक सजीव चित्रण भेल अछि। निम्न–ग्रामीण–वर्गके क्रमिक उच्च वर्गक वर्चस्ववताक प्रति विद्रोह, स्वाभिमान ओ संघटनात्मक शक्ति उदय भए रहल छैक जकर नेतृत्व इन्दु ओ रमेश सन निर्धन वर्गक नवशिक्षित युवक करैत छथि, उच्च वर्गहुक नवयुग–चेतना सम्पन्न भैरव पाठक सन् युवक एवं शान्ति सन नवयुवती जकर संग दैत छथिन्ह। उपन्यासकारक मन्तव्य अछि जे एहि संघर्ष प्रक्रियामे उच्च वर्गक वर्चस्वता क्रमिक कार्य तँ अवश्य रहल अछि।

वस्तुतः एहि सुनगैत एकटा गामक कथा'' सँ उपन्यासकारमे निहित ग्राम्य जीवनकेँ यथार्थ रीतिएँ अभिव्यक्त करबाक क्षमताक परिचय प्राप्त भए जाइत अछि परन्तु अन्यान्य अनेक आधुनिक उपन्यासकार जकाँ श्री विभूति आनन्दमे सेहो समाजक सामान्य विकृतिकेँ अतिरंजित कए चित्रित करबाक प्रवृति लक्षित कएल जाए सकैत अछि।''1

भूमि संघर्ष के आधार बनाए लिखल, गेल उपन्यासमे धीरेन्द्रक ''भोरूकवा'' तथा ललितक ''पृथ्वीपुत्र'' सर्वप्रमुख अछि। एहि दुनू उपन्यासमे निम्न वर्ग एवं उच्च वर्ग, भूमिहीन एवं भूमिधर, उपजामे संलग्न एवं उपजा भोगी रहि दुनूक संघर्षक वर्णन कयल गेल अछि। ''भोरूकवा''मे शोषित किसानक दयनीय अवस्थाक यथार्थ वर्णन भेल अछि। एहिमे दू वर्गक स्वार्थ संघर्षक चित्रणमे लेखक सफल रहलाह अछि। एहिसँ समाजमे बदलैत मनोवृत्तिक परिचय भेटि जाइत अछि। पृथ्वीपुत्रमे ललित भूमि संबंधी वर्ग संघर्षकेँ भोरूकवाक स्थिति सँ बहुत आगाँ बढ़ौने छथि। पृथ्वीपुत्रमे किसान खेतक पूर्ति क्षमता ओ अपनत्वक कारणें शोषित बहवैत अछि। बलिदान दैत अछि। ई दुनू उपन्यास व्यावहारिक एवं यथार्थक धरातल पर आएल परिवर्तनक स्वरकेँ पकड़ि सकल अछि।

निम्नवर्गीय ग्राम्य जीवनक चित्रण उपन्यासमे स्थान पाबए लागल अछि। प्रारंभक साहित्य केवल उच्च वर्ग (आर्थिक दृष्टिसँ मध्यमवर्ग) मात्राकेँ स्थान भेटैत छल। किन्तु निम्नवर्गीय समाजक चित्रण उपन्यासक आधार बनए लागल अछि।

बदलैत सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक वातावरणमे लिखल गेल उपन्यास ''पृथ्वीपुत्र'' एवं ''भोरूकवा''क कथावस्तु विन्यासमे जतए एक दिस नव जागरणक चित्र अंकित भेल अछि दोसर दिस नवीन शिल्पक प्रयोग सेहो भेल अछि।

श्री ललितक ''पृथ्वीपुत्र'मे बदलैत सामाजिक परिस्थितिक चित्र अछि। सामाजिक बंधनक शिथिलताक चित्रण कए श्री ललित एक नव अध्यायक श्री गणेश करैत छथि। बिसेखी, सरूपा, गेनमा अपन अधिकार बुझैत अछि अपन खेतक ममता छैक ओकरा मनमे। जमींदारीक अत्याचार सहैत–सहैत ओकरा सभक मन घोर भए गेल छैक।

जमींदारी उन्मूलनक बाद किसानक मध्य एक नवीन भावना जागृत भेल। किसानकेँ जमींदार की बुझैत छल ओ आब ओकरा अपन बूझए लागल। बिसेखी तथा गेना लाल अपन जमीन लेल–प्राणोत्सर्ग करए पर उतारू भए जाइत अछि। अपन अधिकार एवं मर्यादाक पालनमे बिसेखी ओ सरूपापूर्ण सतर्क अछि। ओकरा बुझल छैक निरपराधे पुलिस ओकर किछु नहि

बिगाड़ि सकैत छैक निरपराधे ओ अपन बेइज्जती नहि सहि सकैत अछि ओकरा मर्यादापूर्वक जीवाक अधिकार छैक।

एहि तरहें ँ ''पृथ्वीपुत्र'' कथानकक बंधन कतहु शिथिल नहि भेल अछि। एकर वर्णनमे स्वाभाविकता एवं घटनाक चित्रणमे प्रवाह छैक। अनुकूल वातावरणक पृष्ठभूमिमे घटनाक निर्माण कथावस्तुकें ँ विश्वसनीय एवं प्रभावोत्पादक बनबैत अछि।

''सोणमे पनिपिआइत चंगेरी बेनी राखि देलकई। मकईक सोहनगर मोट रोटी चारि चक्का कॉच पिआजु, एक फॉक आमक अचार आ अनेक नोन। हरिअर मिरचाई नहि सह्य होइत स्वरूपके ँ। लोटाक पानिसँ हाथ मुँह धो चंगेरी धयलक एक फॉक पियाजु नोन लगा दाँत तर दबलक। झाँस सँ मोन भरि गेलई। आँखि नोर सँ आओर मुँह सेप सँ सिक्त भेलक। बड़ी काल धरि अचार ओ पियाजुक झाँसमे रोटी चिबबैत रहल। मुँहक घोटि पानि पिबय लागल।

आलक आँखिए बेनी ओकरा दिश तकइत रहए। पानि पिबैत देखि बाजलि एना ढ़कर–ढ़कर पानि नहि पीबी खाली पेटमे। चारि कओर पहिने खोली तखन।

मुँहमे लोटा लगओने किंचित मुसकी मारि भाउज दिश तकलक स्वरूप। फेर लोटा राखि दोसर कओर खाए लागल।''[226]

''पृथ्वीपुत्र'' कथानक प्रसंग मर्मज्ञ आलोचक प्रो0 रमानाथ झाक उक्ति द्रष्टव्य थीक–

''एहिमे कथानक अछि जाहिमे गति छैक, कथहि सँ चरित्रक चारूता विचित्र अछि, कथामे उत्सुक्ता अछि जे क्रमशः बढ़ल जाइत अछि। कथानकक मूल तत्त्व जे थिकैक संघर्ष से बाह्य ओ आभ्यन्तर दुहू प्रकारक कथहि सँ स्फुट भए जाइत अछि। कहबाक तात्पर्य जे कथानक सभटा गुण हमरा एहिमे प्रचुर मात्रामे भेटैत अछि। जाहि ठामक ई कथा अछि, जाहि समाजक ई कथा अछि, जाहि प्रकारक व्यक्तिक ई कथा अछि, जाहि परिवेशमे ई कथा घटित, वर्णित अछि, ओ–जाहि परिस्थितिमे ई कथा घटल अछि सभकें ँ श्री ललित जी समीप सँ देखने छथि, चिन्हने छथि ओकर मर्म एवं तत्वकें ँ अपन अन्तः चक्षुसँ प्रत्यक्ष कएने छथि ओ तें एहि उपन्यासमे जीवनक ओ चित्र उतरल अछि आ जे ओ अमूर्त जगतक चित्र अछि तें इतिहासक सत्य सँ भव्यत्तर अछि सुन्दर अछि।''[227]

''पृथ्वीपुत्र''मे दलित किसानक नव जागरणक चित्र अछि, भोरूकवामे शोषित किसानक चित्रण किन्तु भोरूकवाक समस्याक समाधान नव पीढ़ीक बाबू भैयाक मनोवृत्ति सँ होइछ। एहि प्रकारक समस्याकें ँ कथानकक आधार मानि लिखल गेल पृथ्वीपुत्र एवं खोता आ चिड़ै कथानक निर्माणक दृष्टिसँ वेशी सफल मानल जा सकैत अछि। पृथ्वीपुत्रमे जमीनक प्रति सर्वहाराक उक्ति देखल जा सकैछ–

---

[226] श्री ललित –पृथ्वीपुत्र, पृ0–4

[227] श्री ललित –पृथ्वीपुत्र भूमिका, पृ0–3

''आ दोसर गप्प जे तों कहलहक जे जमीन असलमे मालिकक छैक से कोना? जँ ओकर रहितैक कानूनन तऽ हमरा सभहिक हक हिस्सा ओहि पर कोना पहुँचैत? धरती माता छथिन। हुनकर जे सेवा करत ओ तकरे छथिन। हुनकर मालिक के बनि सकइए? जे हुनकर सेवा नई कऽ हुनकर मालिक बनत तकरा लग ओ नई रहथिन। तकरा त्यागि देथिन।

भोगल टोकलकई– मगर जमीन तँ असलमे मालिकेक छैक। एक क्षण चुप रहि सरू॰ बाजल काका, एखन हमरा, तोरा होइए जे मालिककेँ छैक। किएत तऽ सभ मानि नेने छिऐक। मगर असलमे धरती ककरो नई थिकई। अपन जोर जबरदस्ती सँ जे जतेक दखल कएलक तकरा लोक मानि लेलकइ। सभटा मानवाचर छैक। असलमे धरती जोतनिहारक थीक, हरबाहक थीक जे धरतीक असल बेटा थिक। जे अपन पसेना सँ धरती माताके पूजइ अछि। कए दिन देखलहक अछि मालिक केँ अपन पसेना सँ धरती माताक पूजा करैत।''[228]

श्रीमती लिली रे'क ''पटाक्षेप''मे सेहो ''भूमिजीवी ग्राम्य जनताकेँ समताक अधिकार नहि। भेटलैक एवं ओकर शोषण होइत रहलैक। फलस्वरूप रक्त–क्रान्तिक उग्र भावना जागरूक, भऽ गेलैक।''[229]

तथाकथित सभ्य ओ धनवानक भण्डाफोड़ कए दलितवर्गक पक्ष उभारवाक उद्देश्य एम्हर बहुतो उपन्यासकारक मूल धारणा भए रहल अछि। एतेक धरि ई विषय भए गेल अछि जे रमानन्द 'रेणु' दूध–फूल'मे नायकक स्थान पछुआयल सोल्हकन वर्गकेँ देल अछि आओर से स्वाभाविक बुझाइत अछि। ई कथा श्री धीरेन्द्रक ''भोरूकवा'' ओ ''कादो ओ कोइला'' एवं श्री ललितक ''पृथ्वीपुत्र''मे वेस उजागर ओ पुष्ट रूपसँ प्रतिपादित अछि नवीन चेतनाक स्वरूप जतेक सुन्दर आ सफल एवं जहि दिशामे भए रहल अछि से सर्वथा प्रशंसनीय अछि। स्वस्थ मानव जीवैत जगैत रहल तखन जाति–पाँति, ऊँच नीचक भेद बनल राखव वा नहि राखब विचारणीय होएत। इहो जे एहि प्रवृत्तिक परिचायक ओ उपन्यास सभ अछि जे मैथिल ब्राह्मण सभक मध्य जयवार–भलमानुषक विचार उठाओल अछि।

श्री मायानन्द मिश्रक खोंता आ चिड़ैमे सशक्त कथानक एवं श्री सुधांशु शेखर चौधरीक तरपट्टा ऊपर पट्टामे प्रतीकात्मक कथावस्तु द्वारा इएह ऊँच–नीचक भेद करबाक चक्रवानलि काटल गेल अछि। स्वातंत्रयोत्तर कालमे उपन्यास लिखल गेल अछि ताहिमे ई भावना, संस्कार ओ रूढ़िकेँ तोड़ि ऊपर राखि रहल छैक। शोषित वर्ग उठि कए ठाढ़ भऽ रहल अछि। आओर शोषक वर्गकेँ ललकारि रहल अछि। इएह नवीन चेतनाक ध्वनि मैथिलीक उपन्यासमे मुखरित भए रहल अछि। किसान, मजूरा–गाम आ शहर सर्वत्र ई समस्या पसरल अछि आ नीक जकाँ उपन्यास जगतमे उभरल अछि।

एहिठाम माइक हाथक रान्हल, स्नेहपूर्वक आगाँमे पसरल रूखी–सुखी अन्न आजुक ''विटामिन'' पौष्टिक खायसँ बेसी बल–बुद्धि– वर्धक होइत छल, कोनो बाबाजीक हाथक रान्हल आ माय अथवा पत्नीक हाथक रान्हल अन्नक गुणमे कत पैघ अन्तर होइत छैक से अभागल लोक की

---

[228] श्री ललित –पृथ्वीपुत्र, पृ0–19

[229] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–318

जानए गेल आइ देखि रहल छी इएह, आजुक तथाकथित शिक्षिता कन्या ग्राम्य जीवनक प्रति घृणा करैत अछि, ओकरा नागरिक जीवन चाहिएक। जॉर्जेट, जम्पर, चप्पल, लिपस्टिक, घड़ी ओ चश्मा चाहिऐक, ओ चुल्हिक उपासिका बनि नहि, सहचरी बनि पतिक जीवनमे प्रवेश कयलक अछि, ओ फरमाइस करत, पुरूष ओकर पूर्तिक हेतु जाति कोनो कर्म से होइक प्रत्यनशील रहल करौक, इएह दाम्पत्य जीवनक पद्धति बनल जा रहल अछि।''[230]

डॉ0 अमरेश पाठकक प्रकाशित शोध प्रबन्धक परिशिष्टमे एकहत्तरि गोट उपन्यासमे सँ बेसी नवीन चेतनाकेँ जगजियार करैत अछि।

निष्कर्षतः कहि सकैत छी ''मैथिली उपन्यास अगिलही केँ कन्यादान, द्विरागमन, मधुश्रावणी, विदागरी करैत नवतुरिया, चानोदाई ओ पृथ्वीपुत्रकेँ दू कुहेसक वाट देखबैत बिहारि पात पाथरकेँ सहैत आदि कथाक दू–पत्र लिखैत तर पट्टा ऊपर पट्टा दैत ''दूध–फूल''के सेवैत ''पनिपत'' जेकाँ रंगेत नवीन चेतनाक ''भोरूकवा'' उगा देलक अछि।''[231]

फ्रायड मनोविश्लेषण सिद्धान्तक अनुसार अतृप्त कामवासनाक दलित भावनाक अभिव्यक्ति साहित्य थिक। साहित्यकार अपन अवचेतनमे निहित पापानुभूतिक आन्तरिक दबावसँ मुक्ति प्राप्तयर्थ अपन कृतिक सृष्टि करैत अछि, परन्तु एक्के बेरमे ओकरा आंशिके सफलता प्राप्त होइत छैक, तेँ ओ निरन्तर रचना करैत रहैत अछि। ओहि साहित्यिक कृतिक परायण सँ लोककेँ आनन्द प्राप्त होइत अछि। तकर कारण ई जे ओहि प्रकारें दमित पापानुभूति पाठकीक हृदयमे निहित रहैत अछि। पाठकमे पापानुभूतिकेँ अभिव्यक्त करबाक ने साहस रहैत छैक आ ''ने रचनात्मक प्रतिभे रहैत छैक। तें साहित्यक अध्ययनहिसँ ओकरा अपन आंतरिक अपराध बोधसँ मुक्ति भेटैत छैक। इएह मुक्तिक भावना ओकर आनन्दानुभूति थिक। एहि प्रकार अवचेतन पापानुभूति, तकर अभिव्यक्ति ओ समान भूमि पर तकर विनियोग फ्रायडक कला–सिद्धान्तक तीनटा मूलभूत तत्त्व थिक।

फ्रायड यदि दमित काम–वासनाक अपराध–बोधकेँ साहित्य–सर्जनाक कारण मानलैन्हि तँ पाछाँ एडलर ओ युंग शारीरिक अथवा अन्य हीनताक फलस्वरूप मनमे पड़ल ग्रन्थिकेँ मूलभूत हेतुक रूपमे विश्लेषण कएलैन्हि आन्तरिक हीनता भावक कारणें मानव–मनमे महत्त्वाकांक्षा उत्पन्न होइत अछि। तखन साहित्य सर्जन कए ओ अपन हीन भावनाक क्षतिपूर्ति करैत अछि। अपन साहित्य रचनासँ दोसराक हृदय पर साहित्यकार अपन प्रभुत्व स्थापित करैत अछि। एहि प्रकार ओकर हीनता भावजन्य महत्वाकांक्षाक पूर्ति होइत अछि।

कार्लयुग कला मात्रक जन्मक मूलाधार ''सामूहिक'अचेतन' के मानलैन्हि जे प्राणी मात्रसँ सम्बद्ध अनुभूत, अज्ञात अन्धकारमय बनल अन्तर्निहित रहैत अछि। ओ ''सामूहिक अचेतन'' केँ सर्वसत्तामय मानलैन्हि। जखन व्यक्ति चेतना अथवा युग–चेतना समयानुकूल नहि रहैत अछि, तखन तकर क्षतिपूर्वक हेतु अचेतन अग्रसर भए सक्रिय होइत अछि। तखन साहित्यकार ओहि अचेतनक अन्य कामनासँ अपना संचालित होअए दैत छथि ओ ओहि प्रेरणासँ साहित्य सर्जन होइत अछि। फ्रायडक समान–भूमि ओ भाव विनियोगक सिद्धान्तकेँ युंग सेहो मानैत छथि,

---

[230] स0 डॉ0 वासुकीनाथ झा–उपन्यास ओ सामाजिक चेतना, पृ0–29

[231] स0 डॉ0 वासुकीनाथ झा–उपन्यास ओ सामाजिक चेतना, पृ0–29

परन्तु साहित्य सर्जनाक प्रेरणा बिन्दु केँ मानैत छथि। सामूहिक चेतनाकेँ जे रचनाकार अथवा पाठक श्रोताकेँ समान रूपेँ विद्यमान रहैत अछि।

अति यथार्थवादी फ्रायडक सिद्धान्तकेँ, बिन्दु किछु परिवर्त्तन कएने, रचना प्रक्रियाक कारण मानलैन्हि। फ्रायडक अनुसार स्वप्न अथवा कला दुहूक उत्पत्ति अचेतनमे दबल अतृप्त कामवासना अथवा हीन भावना सँ होइत अछि तैँ अति यथार्थवादी साहित्य चिन्तक एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे कला सृष्टि स्वप्न सृष्टि समान होयबाक चाही। कलाकार केँ चेतन मनक कार्य व्यापारकेँ पूर्णतः त्याग कए देवाक चाही तखन ओकर अचेतन द्वारा जे भाव अथवा बिम्ब प्रकट हो, तकरा ओ ओहि रूपेँ पूर्ण वास्तविकताक संग, कोनो नियम अनुशासनक पालन कएने बिना लिखैत जाए। एहि प्रकारक जे रचना होएत, से पूर्णतः स्वप्न प्रक्रियाक समान होएत। अति यथार्थवादी अचेतन अतेन्द्रिय यथार्थक अभिव्यक्ति सबसँ नीक साधन इएह मानैत छथि। तें एहि प्रकारक मान्यता ओ रचना विधि अतियथार्थवाद नामे ख्यात भेल।''[232]

फ्रायडवादक अनुसरण पर यौनवादी मैथिली उपन्यासकेँ अति यथार्थवादी उपन्यास सेहो कहल जा सकैत अछि। एहन उपन्यासक नायक अथवा नायिकाक अवचेतन मनकेँ कोनो प्रकारक नियंत्रण नहि सह्य होइत छैन्हि। एक प्रकारक असंगतिक स्थितिए हिनका लोकनिकेँ प्रिय होइत छनि आओर कारणें असंतुलनक अवस्था सेहो उत्पन्न भऽ जाइत अछि। असंगति एवं असंतुलनमे यौनवादी मैथिली उपन्यासक दुइटा आधारभूत स्तम्भ अछि। यथार्थवादी समाजक प्रत्येक क्षेत्रक, प्रत्येक वर्गक, प्रत्येक स्थितिक यथावत चित्रण प्रारंभ भेल। एकरहि अर्न्तत ''यौन भावना'' केँ जे अद्यावधि साहित्यक क्षेत्रमे स्पष्ट वर्णनक रूपमे निषिद्ध छल, तकरा यथावत् चित्रित विश्लेषित कए स्थान भेटए लागल यात्री जीक ''पारो''मे दू संबंधीक बीच (पिसियौत–ममियौत) परस्पर आकर्षण भावकेँ स्थान भेटल अछि। यद्यपि एहिमे नग्न यौन भावनाक वर्णन नहि अछि तथापि मैथिली साहित्यमे विशेषतः उपन्यासमे ई परिवर्तनक नवीन स्वर अछि। एहि कोटिक प्रतिनिधि उपन्यासकार छथि स्व0 राजकमल। ''आदिकथा' हिनक एहि रूपक प्रसिद्ध उपन्यास अछि। डी0एच0 लौरेन्सक विचारधाराक अनुरूपेँ एहि उपन्यासक रचना भेल अछि। लौरेन्सक मत अछि जे अवचेतन मन एक प्रकारक 'अण्डर ग्राउण्ड कैदी'क सदृश अछि जे माटिक भीतर रहैत–रहैत अस्वस्थ भऽ गेल अछि, जे सामाजिक जीवनसँ बहिष्कृत कऽ देल गेल अछि, मुदा कहियो–कहियो उन्मादक क्षणमे मुख्यतः यौन संबंधी शारीरिक वुभुक्षाक क्षणमे देवाल तोड़ि बाहर आबि जाइत अछि आओर जोर–जोर सँ चिचिआय लगैत अछि। इएह कारण अछि जे वृद्ध पतिक युवती पत्नी सुशीला देवी ''आदिकथा''मे अपन भागिन देवकान्तक पति आकर्षितक होइत छथि। मैथिलीमे मायानन्द मिश्रक बिहाड़ि, पानि आ पाथर मे यौन आकर्षणक संग–संग मनोविश्लेषणकेँ सेहो स्थान देल गेल अछि। एहि प्रकारें आंशिक रूपेँ सोमदेवक चानोदाई, होटल अनारकली, पृथ्वीपुत्र, पारो, कादो आ कोइला, हमरा लग रहब, नवारंभ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी मध्य लेखक फ्रायडक अचेतन काम वासनासँ प्रभावित देखना जाइत छथि। राज कमलक आन्दोलनमे सेहो फ्रायडक अवचेतन काम वासना अछि।

प्रगतिवादक उन्नायक स्व0 राजकमल वास्तविक सत्य घटनाक आवरणकेँ कल्पनाक माटिमे सानि अपन कलात्मक परिचय देलनि अछि जे ग्रामीण वातावरणमे रामपुरक वालुचर लेटाइत

---

[232] स0 गोपेश, डॉ0 वासुकीनाथ झा–यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य, पृ0–52

सामाजिक ग्राम्य जीवनक अवशिष्ट संस्कृति स्तम्भपर ठाढ़ दैव आ अद्वैतवादक कसौटी पर ग्राम्य धर्मक कुलदेवताक मूल्यांकन करबामे सकल दार्शनिक आ तत्ववेत्ताक रूपमे निखरल छथि।

''आदिकथा'' उपन्यास जाहि परिवेशमे लिखल गेल अछि। ओहि समय पूर्वांचलक अस्तित्व बनवासिनी कौशिकाक गर्भमे विलीन छल जकर फलस्वरूप एकटा मायावरी संस्कृति, बताह निश्चिन्तता, गामक भगवतीया पर अथाह भरोस आ जीवनक प्रति उन्मुक्त आलस्यभाव एहि प्रान्तमे जनमल आ कालान्तरे विकसित होइत गेल मात्र एकेटा आशा देखल जेतइ।''[233] इएह तँ थिक कोशी क्षेत्र रामपुरक ई प्रेम आख्यानक सभटा वृतान्तकेँ स्वयं देवकान्त सँ सुनि लिपिबद्ध कयलनि जकरे फलस्वरूप थिक 'आदिकथा'' उपन्यास। गामक फणिन्द्र, युवा लोकनिक फूल भाइ आ साहित्यक राजकमल एहि ग्रंथक विज्ञापनमे लिखैत छथि–'' सहरसा पूर्णियाँ इलाकाक जन–जीवन परिस्थितिमे लिखल गेल ई सामाजिक उपन्यास समाजक बदलैत धार्मिक नैतिक मान्यतादिक एहि संक्रान्तिकालमे कॉमेडी'' नहि बनि सकत, मात्र एक अपूर्ण ट्रेगेडी''–यैह आदि आदि सँ चल अबैत कथा ''आदिकथा''।''[234]

फ्रायडक समस्त मनोवैज्ञानिक मान्यता एवं स्थापनाक एकमात्र आधार यौन–भाव अछि ओ मानव चेतनाक सम्पूर्ण विकासक आधार यौन–भावकेँ मानैत छथि। अपन जीवनक अंतिम क्षण धरि फ्रायड एकेटा नारा लगबैत रहलाह–Sex that art to sex returnest - किछु मैथिली उपन्यासकार पर फ्रायडक भूत किछु ताहि प्रकारें सवार छैहि जे ओ लोकनि पाप, पुण्य, नैतिकता एवं संस्कृति केँ दू कौड़ीक वस्तु बुझैत छथि। इएह कारण अछि जे समाजक छोटका लोक स्त्री, बहिन आ बेटीक संग समाजक पैघ लोकनिक शारीरिक सीमाकेँ स्पर्श कएनिहार यौन संबंधक नग्न चित्रणक अतिरिक्त सासु एवं जमातामे यौन संबंध, भाय एवं बहिनमे यौन संबंध, देयोर भाउजमे यौन संबंध भाभी एवं भागिनमे यौन संबंध आ एक नारी पात्रक दोसर नारी पात्रक संग यौन संबंधक नग्न चित्रण प्रवृत्तिक दर्शन सेहो होइत अछि।

स्व0 राजकमल चौधरीक उपन्यास ''आदिकथा''मे भाभी एवं भागिनक यौन आकर्षणक वर्णन उपलब्ध होइत अछि। वृद्ध अनिरूद्ध बाबूक पत्नी अप्रतिम सुन्दरी युवती सुशीला देवीक चरित्रक कुंठाक रहस्योद्घाटन करबाक हेतु देवकान्त उतरैत छथि। सुशीलाक अतृप्त कामवासना देवकान्तकेँ प्राप्त कए सभ प्रतिबन्ध तोड़ि देबए चाहैछ।

वैधव्य जीवनमे सुशीलाकेँ शान्ति नहि भेटलन्हि अतृप्तवासना हिनका सता रहल छलन्हि। जे बाबा बैद्यनाथक पूजा काल सुशीला आँखि फोललनि तँ देखैत छथि महादेवक ज्योर्तिलिंगक स्थान पर ठाढ़ छथि सशरीर देवकान्त। फेरि आँखि फोललनि तँ देखैत छथि चारूकात असंख्य देवकान्त– विश्वमे आओर कतहु किछु नहि अछि, खाली देवकान्ते छथि।''[235]

भूख, जे सभसँ पैघ सत्य थिकै, तकरा लेल मनुक्ख कोनो प्रकारक काज कऽ सकैत अछि। गुलाब, जे कोनो मैथिल गाममे वैधव्यक जिनगी बिता रहल अछि की ओकरा चारूकात अभाव

---

[233] राजकमल आदिकथा, पृ0–11

[234] राजकमल आदिकथा, पृ0–5

[235] स्व0 राजकमल आदिकथा, पृ0–101

आ अभावे टा नहि छैक? भोजनक अभाव, दवाइक अभाव, सुविधाक अभाव सुख सेहन्ताक अभाव। एहने–एहेन गुलाब सभ महानगरमे चलि अबैत अछि, अपन सम्पूर्ण मर्यादा, नारी सुखभ चंचलता छोड़िकेँ मिथिलाक माटि–पानि आ ममत्व ओकरा महानगरमे चलि अयबाक लेल कखनो बाधित नहि करैत छैक किएक तँ भूख सभसँ बड़का सत्य थिकैक। लोक भूखल नहि नहि सकैत अछि। उपन्यासकारक कथन अछि। ''एहने नारी सभ देशोत्थानक अग्निपिण्डकेँ छाडरक ढ़ेरीवना कऽ राखि दऽ छइ– से सभ थिकी विष कथा– हिनका सन कोनो युवतीकेँ, कोनो रूपगर्भिता के चाही मात्र उत्तेजना, आर किछु नहि.....।''[236]

यात्रीजीक ''पारो'' उपन्यासमे भाय एवं बहिनक यौन संबंध देखाओल गेल अछि। पारोक अतृप्त कामवासना सामाजिक प्रतिबंधक अवहेलना करैत निम्नलिखित पंक्तिद्वयमे ओकरहि मुँहें कोना स्पष्ट भेल अछि से देखू–

––तेहन असिरवाद ने हमरा तो देने जाह बिरजू भैया जे अगिला जन्ममे ई सासति नहि उठव पड़य– हमरा तोरा बीचमे पिसियौत ममियौतक संबंध नहि, ओहि जन्ममे हम झा तों.....'' भाय बहिनक पाछू कतोक शताब्दीसँ संचित जे सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गरिमा जुटल अछि तकरा युवावस्थाक आकर्षण एवं वृद्धि विवाहक प्रतिक्रियाक अढ़मे बिसरल नहि जा सकैछ। पारोक प्रसंग एकटा आलोचकक ई कथन अछि–

'पारोक कथावस्तु ततेक निम्नस्तरक अछि जे हमरा समाजक साहित्य नहि भए सकैछ। प्रत्येक समाजक आध्यात्मिक स्तर भिन्न होइछ। अपनासँ उच्चस्तरक साहित्य अथवा कम सँ कम अपन स्तरक साहित्यमे अपसौला सँ समाजकेँ लाभ होइत छैक। निम्नस्तरक साहित्यक प्रचार सँ समाजक अनवति छोड़ि आओर किछु नहि होइछ। एहि भावनाकेँ पुष्ट कएनिहार पारोक जीवनमे भाई बहिनक पवित्र स्नेहक दुरूपयोग कएल गेल छैक।''[237]

''बिहाड़ि पात आ पाथर''मे तिखेनीक वृद्ध विवाहक कारणें वैधव्यक जीवन व्यतीत करए पड़ैत छैक। जाहि मध्य दलितवासनाक उष्णता तँ आवश्यक अछि मुदा, स्वाभाविकता सेहो अछि। एहि विभिन्न परिस्थितिमे तिखेनीक चरित्र क्रमशः निखरैत अछि–

''धुआँ सँ कस्सल घरमे ककरहु ठेल केँ बन्द कऽ देला पर जेहन मन ओहि व्यक्तिक भऽ जेतैक तेहेन अनुभूति सँ तिखैनीक आत्मा भीतरे–भीतर जखन आक्रान्त भए उठलैक तऽ तिरपितक गेलाक ठीक बारहम दिन साँझमे अपन नैहर जयबाक प्रस्ताव केँ स्वीकृतिक हेतु आँगन सँ भवानन्दक कोठली दिश विदा भेल।''[238]

राजकमलक दोसर उपन्यास अछि ''पाथरफूल''। एहि मध्य अर्थहीन, आचारहीरन, मर्यादाहीन, पथभ्रष्ट यात्री नायक फूल बाबूक सेहो एकमात्र कामना अछि अधिकाधिक रमणीक संग यौन संबंध स्थापित करब। समाजक निर्धारित बंधन ओकरा नहि स्वीकार्य छैक। अतः अपन काम भावकेँ कार्य रूपमे परिणत करबाक क्रमे कादम्ब आओर इजोरिय नामक दू टा रमणीकेँ अपन

---

[236] स्व0 राजकमल आन्दोलन, पृ0–54

[237] श्री कृष्ण मिश्र ''मैथिली उपन्यास'' वैदेही विशेषांक–1358 साल, पृ0–42

[238] प्रो0 मायानन्द मिश्र– बिहाड़िपात आ पाथर, पृ0–150

वासनाक शिकार बना लैत अछि। एहन उपन्यास कामवासना जन्य पाशविक प्रवृत्ति केँ उत्तेजित करबामे सहायक होइछ।

योगानन्द झा जी ''पवित्रा'क मानसिक ऊहा–पोहक चित्रण एक मनोवैज्ञानिक सदृश कयलनि अछि। भोजन भातक क्रममे पवित्राक प्रति डॉक्टरक आकर्षण आ डॉक्टरक प्रति पवित्राक स्नेह ओ वातावरणके स्निग्ध मोहित बना रहल छल। हठात् भोजनक उपरान्त डाक्टरक संग घरसँ बाहर जायब पवित्राक हृदयमे नव अंकुरी प्रेमक परिचायक थिक आ ओहि दिनसँ पवित्राक प्रति डाक्टरक चिन्ता एक सफल प्रेमीक परिचायक थिक जे डाक्टरक शब्दमे–

''पवित्रा, हमर भविष्य और वर्त्तमान अहाँ छी, अहाँ सँ रहित भऽ हम अपन जीवन संबंधी कोनो कल्पना नहि कऽ सकैत छी।''[239]

एहि समाजक व्यवहारसँ पवित्रा कुद्ध भय कहैत छथि–

''स्त्रीगणकेँ अहाँ लोकनिक बुझैत छिऐक? आ पुनः तामसक आवेगमे स्त्री–जातिक परिभाव 11 दैत कहैत छथि–'' अहाँ लोकनि स्त्रीगणकेँ कामदेवक हविष्य, पुरूषक श्रृंगार मार्ग तथा वासनाक मादक द्रव्य बुझैत छिऐक। यदि भगवान केँ न्याय करबाक रहितनि तँ स्त्रीगण केँ मोटर साईकिल, रेलगाड़ी, हवाई जहाज अथवा आने कोनो निर्जीव यंत्र बनौने रहितथिन मुदा भगवान तँ आन्हर आ बहिर दुनू छथि। पूरा बेइमान कहू पुरूषक शब्द कोषमे स्त्रीक माने वेश्या वा प्रेमिका।''[240] ''पृथ्वीपुत्र''मे वर्णित कलपू, बिजलीक प्रेमालापक प्रसंग स्व0 प्रो0 रमानाथ झाक कथन एकर वैशिष्ट्य के उद्घाटित करैत–अवैध प्रेम प्रसंगमे अनेको संयम शिथिल भेलासँ कथा अमर्यादित भए जाइत परन्तु श्री ललितजी अवैध प्रेमक प्रसंगके वैधहुँ प्रेम सँ भव्यतर चित्रित कए मानव स्वभावक सहज शालीनता के स्फुट कर देल अछि।''[241] बिजलीक चरित्रक संबंधमे ''मोन नउ लगइ। मोन मे बसल रहइ गोलका चक्कावला कलपू। लाल ठोखला कलपू। भरि दिन एकर मुँहताकवला कलपू। नीक वस्तु उपहार देवएवला कलपू। कहाँ देवदारू सन ओ आर कहाँ खैरक कुवराह गाछ सन ई।''[242]

''पृथ्वीपुत्र''के जहिना कथानक प्रतीयमान कहल जा सकैछ तहिना संभाषण सेहो कम रोचक नहि। उदाहरणार्थ निम्नलिखित आवरण उल्लेखनीय अछि–

''कतेक दुब्बरि भऽ गेलेहें तों।

कहाँदन बड़ मारैत रहउ। ठीके। वेदना विहुअल स्वरें पुछलथिन्ह कलपू।

ऊपर–नीचाँ मूड़ी डोलओलक बिजली बाजलि बहु डेंगवई छल, मकई जकाँ निछोह।

---

[239] पं0 योगानन्द झा– पवित्रा, पृ0–94
[240] पं0 योगानन्द झा– पवित्रा, पृ0–131
[241] श्री ललित –पृथ्वीपुत्र, पृ0–4
[242] श्री ललित –पृथ्वीपुत्र, पृ0–37

सहटि कऽ लग आयल कलपू।

एकदम लग। माथमे बदाम तेलक गमक लगलन्हि। कहलथिन्ह–वाजी। ई एना कतेक दिन आर चलि सकत। कइक खेपी कहलियहु तोरा चल एतय सँ। हमरा संग चल। गाम छोड़िकऽ। जतय तोहर मोन होउक। कइक खेपी भगवें। फेर ऐतहु घरवला झोट धऽ घिसिआक लऽ लागल अपने देहमे दोदरा फूलल जाइत हो।''[243]

अन्त्यज ओ 'अपराधकर्मी'' परिवारमे उत्पन्न बिजली अपन गामक भूतपूर्व जमींदार उदार विभोर विलासी ओ विधुर पुत्र कलपू मिश्र संग उन्मुक्त प्रेममे संलग्न भए अपन विवाहित पतिकेँ छोड़ि तँ दैत अछि मुदा ओहि कलपू मिश्रक संग विवाह नहि करए चाहैत अछि। ओकर प्रेम मात्र शारीरिक वासनाक तृप्ति धरि सीमित रहि जाइत अछि।

''हमरा लग रहब'' उपन्यासमे प्रभास कुमार चौधरी शीलाक चरित्रमे कुशलतापूर्वक एक संग नारीक विवशता ओ निर्बलता, प्रेम ओ घृणा, आत्मग्लानि ओ स्वाभिमान, प्रतिशोध ओ प्रति हिंसा एवं सर्वोपरि प्रणयः भावनाक जेहन सूक्ष्म ओ मनोवैज्ञानिक उदात चित्रण कएल अछि, तकरा कलापूर्ण कहल जाए सकैत अछि।''[244] उपन्यासकारमे सामाजिक नग्नता मात्रकेँ अतिरंजित कए चित्रित करबाक प्रवृत्ति विशेष रूपेँ लक्षित होइत अछि। उपन्यासमे प्रणव के छोड़ि एक–दूटा एहन पुरूष मात्र नहि अछि जे कोनहुने कोनहुँ रूपेँ सेक्स अपराधी नहि होथि ओ एक–दूटा एहन स्त्री पात्र नहि छथि जे पुरूषक कामवासनाक आखेट नहि बनैत होथि।

''युग पुरूष''मे चम्पा ओ शोभाक प्रेम प्रकरण बड़ मधुर ओ अर्थगमित भेल अछि ओ रोजीक संदर्भमे चरित्रहीनता के उदात्तीकरण करबामे सेहो उपन्यासकार सकल भेलाह अछि।

सुंधांशु शेखर चौधरीक उपन्यास 'ई बहता संसार' मध्य निरंजन कामिनी, अखिल चान एवं धनंजय –चान तीन भिन्न–भिन्न प्रकारक प्रणय कथा केँ एक सूत्रमे गुम्फित कए प्रेम ओ वासनाकेँ व्याख्यायित करबाक चेष्ट कएने छथि एहि उपन्यासक महत्त्व नहि तँ सामाजिक यथार्थक चित्रणमे अछि आ ने चरित्र सूक्ष्म प्रतिपादनमे अछि अंतमे चार द्वारा धनंजयक समर्पण निष्पादनहुँमे कोनहुँ उल्लेखनीय कलात्मक सौष्ठवक दर्शन नहि होइत अछि। उपन्यासमे निश्चये प्रेम ओ वासनाकेँ नीक जकाँ व्याख्यायित नहि कए सकल अछि।

गाँधीवाद –

असली साहित्यकार युगक प्रतीक होइछ। एहि सत्यकेँ सबसँ पहिने चिन्हलनि प्रो. हरिमोहन झाजी। झाजी उपन्यासक सामयिक माँगके पूरा कयलनि। हरिमोहन बाबूक समय एक एहन समय छल जखन देशमे अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन भऽ रहल छल। राष्ट्रीय, सामाजिक आओर धाम्रिक आन्दोलन अपन पूर्ण सामर्थ्य सँ चलाओल जा रहल छल। महात्मका गाँधीक नेतृत्वमे काँग्रेस देशक कोन–कोनमे राष्ट्रीय चेतनाक मंत्र फूँकैत छल आओर दोसर दिश सामाजिक

---

[243] श्री ललित –पृथ्वीपुत्र, पृ0–2

[244] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–312

सुधारवादी आन्दोलन दृढ़ होइत जाइत छल। ओहने समयमे हरिमोहन बाबू एक साहित्यिक नाते अपन कर्त्तव्य चिन्हलनि आओर तत्कालीन समस्त युग–जागरणक आवाह्न कयलनि पाश्चात्य शिक्षा आओर सभ्यतासँ प्रभावित कऽ नागरिक जीवन तथा राष्ट्रीय जागरण आन्दोलनमे प्रति सजग भऽ ग्रामीण जीवन पर हरिमोहन झा उपन्यास लिखलनि।

आइ देशक स्वतंत्रता आओर जन–जीवनक आग्रह मैथिली उपन्यासकार ललित जीक छोड़ल परम्परा यादव करबै। उपन्यासमे युगक साहित्यक निहित रहैछ। मैथिली उपन्यासकार जे किछु लिखलनि ओ युगक माँग छल समयक आग्रह छल। ललित जीक युगक माँग छल। समयक आग्रह छल। ललित जीक युग काँग्रेसक देशव्यापी आन्दोलन सँ प्रभावित छल आओर स्वयं उपन्यासकार गाँधी जीसँ बहुत प्रभावित छलाह। तेँ हेतु –मैथिली उपन्यासकार ग्रामीण जीवनमे ओएह चित्र अंकित कयलनि, ओएह समस्या उठौलनि जे ओहि समयक ज्वलन्त प्रश्न छल। ललित एवं धीरेन्द्र ग्रामक आर्थिक शोषण, सामाजिक रूढ़िवादिता आओर धार्मिक अंधविश्वासक समय आओर ओर निराकरण उपस्थित कय कऽ आत्म संतोष प्राप्त कयलनि। हुनक प्रारंभिक रचना पर गाँधी दर्शनक स्पष्ट प्रभाव छल। भारतक संग ग्रामक संबंध अनन्य रूपसँ अनन्त युगसँ जुड़ल अछि ग्राममे एतुका जनराशि बसैत छथि आओर ग्राम मात्र राष्ट्रक सार्वजनिक उन्नतिक साधन अछि।

प्रेमचन्द्रक ई आदेश आजुक उपन्यासकार फेर अपना लेलन्हि अछि आओर जीवनक सीमित कुंठाक चित्रणकेँ छोड़ि ओ जनतंत्रक युगक जनवादी साहित्यक सृजन कऽ रहलाह अछि। आजुक ग्राम समस्या प्रधान उपन्यासमे प्रायः इएह भेटैछ कि शिक्षा आओर सही नेतृत्वक अभावमे जे ग्राम शक्ति सुति रहल छल आइ ओएह सही नेतृत्वमे संगठित भऽ कऽ वर्ग संघर्षके खत्म कऽ प्राचीन रूढ़ि आओर परम्परा के तोड़ि जीवन आओर समाज, देश और युगक उन्नतिक हेतु अग्रसर भऽ कऽ देशक विभिन्न विकास योजनामे सहयोग दऽ रहल अछि।

एहि शोध प्रबन्धमे ऐतिहासिक क्रम सँ ईहो देखयबाक प्रयास कयल गेल अछि कि भारतक इतिहासमे ग्रामक की महत्त्व छल आओर कोन तरहेँ अंग्रेजक शोषण आओर औद्योगिक नीतिक कारण ग्राम दुर्दशाग्रस्त भऽ गेल, ओकर समृद्धिक संगहि भारतक आर्थिक आओर सामाजिक ढ़ाँचा जर्जर भऽ गेल तथा गाँधीजी एहि जनशंक्ति के चिन्हि सभकेँ संगठित कयलनि तथा अहिंसा द्वारा सभकेँ स्वतंत्र करौलनि आओर बादमे गाँधीवाद आओर साम्यवादक दू प्रमुख विचारधारासँ देश प्रभावित भेल।

जमींदार आओर पूँजीवादक शोषणसँ मुक्ति पयबाक हेतु एक युगक मजदूर किसानक आत्मा आकुल छल मुदासही मार्गदर्शक नहि छल आओर अशिक्षाक कारण ओकरामे एतेक साहस नहि छल कि ओ स्वयं कोनो वैचारिक क्रान्तिकेँ जन्म दय सकतथि। मुदा आजुक ग्रामीण अपेक्षाकृत वेशी जागरूक अछि। लिखित नहि तँ मौखिक शिक्षा जनता केँ विश्वसक प्रांगणमे होमयवाली हलचल सँ सावधान आओर सचेत कय देलैक अछि। आजुक बुर्जुआ अर्थात् शोषक पक्ष समझौतावादी बनि कऽ जनहितसँ अपन आँचर खींचि चुकल अछि आओर जनपक्ष सेहो

शक्ति अभिसंयुक्त भऽ कऽ एक महान राष्ट्रीय आन्दोलन कें जन्म नहि दऽ सकैत अछि। जे देशक समग्र वातावरणकें बदलि दैक।''[245]

इएह कारण अछि कि आजुक उपन्यासकार एहि बढ़ैत शक्तिकें पिन्हिकें चरित्र आओर पात्रक निर्माणमे लागल अछि। जे युगक कठोर वास्तविकताक सही अर्थमे प्रतिनिधित्व कऽ सकय। ई कहबाक आवश्यकता नहि कि ई शक्ति भारतक ग्राममे मात्र नहि भऽ सकैत अछि। एहि शक्तिक संजीवता एक नवीन एवं उदान्त मानववादी स्थापना कऽ सकैत अछि।

जाहि तरहें उपन्यास साहित्यक इतिहासक मध्यकालमे सामाजिक स्थितिक परिवर्तन उपन्यासकारक मनोविश्लेषणात्मक ढ़ंग सँ व्यक्तिगत समस्याक चित्रण दिशि आकर्षित कयलनि ठीक ओहिना आजुक जनवादी युगक उपन्यासकार ललितक समान स्थूल रूपसँ ग्रामक सामान्य समस्याक चित्रण कऽ कऽ संतुष्ट नहि वरन् ओ अत्यधिक सूक्ष्म दृष्टिकोण लय कऽ ग्रामक एक–एक अंचपक समस्याक चित्रण कए रहल अछि। आँचलिक उपन्यास लिखबाक प्रवृति इएह सूक्ष्म अन्वेषणक द्योतक अछि।

मैथिली आँचलिक उपन्यासक लेखक ललित एवं धीरेन्द्र, रेणु जकाँ वर्ग आओर समाजक बात नहि करैछ वरन ओ वर्ग आओर समाजक विखंडित टूकड़ाबक कथा कहैछ। ललित जी पृथ्वीपुत्रमे व्यक्ति आओर वर्ग दुनूक विद्रोह के देखलनि मुदा स्पष्टतः ओकर व्यक्तिकारणमे नहि कयलनि कियाक तँ ओ गाँधीवादी छलाह मुदा आजुक उपन्यासकार विद्रोहक स्वरमे बजैत छथि।

राजस्व एवं सामंती प्रथा–टूटि कऽ किसान मजदूरक राज्य स्थापित भऽ रहल अछि, जन साधारण महत्त्व बढ़ि रहल अछि, अन्य एवं पदक अपेक्षा प्रतिभा आओर व्यक्तित्वक सम्मान भऽ रहल अछि। ओहेन स्थितिमे जनसाधारणक कथा आओर व्यथा साधारण आओर सरल भाषामे व्यक्त करबाक सबसँ सशक्त साधन उपन्यास एहि नवयुगक सबसँ वेशी संभावना सँ युक्त रूप अछि जकरा द्वारा सामुहिक मानव जीवन अपन समस्त भावना एवं चिन्ताक संग सम्पूर्ण रूपमे अभिव्यक्त भऽ सकैत अछि। मानव जीवनक विविध विषमता आओर समस्याकें चित्रित करबाक जतबा अवकास उपन्यासमे अछि ओतबा अन्यत्र नहि।

भारतीय जनता पर महात्मा गाँधीक सिद्धान्त आओर आन्दोलनक प्रभाव सन 1920क बादसँ पड़य लागल छल। घरसँ बाहर निकलि नारी सन् 1920 आओर 1930क राष्ट्रीय आन्दोलनमे सक्रिय रूपसँ हिस्सा लेलनि। आजीवन खद्दर धारण करबाक शपथ लेलनि। पिकेटिंग आओर जुलूसमे साहसपूर्वक भाग लेलनि। ओतबे नहि ओ जेल गेलनि। एहि क्षेत्रमे जतबा काज पुरूष नहि कऽ सकल ततवा काज नारी त्याग, सहृदयता, लगन, दृढ़ता आओर सत्यक द्वारा पैद्य सफलतापूर्वक कयलनि। नारीक एहि नुकायल शक्तिकें देखि ओहि समयक प्रवृद्ध ज नता चकित भऽ गेल छल। मैथिली उपन्यासकार गाँधीजीक आदर्श सँ प्रेरणा पाबि नारीक आदर्शक स्थापना कयल आओर दोसर दिस नारीक राजनैतिक चेतनाक चित्रण सेहो कयल। गाँधीजी जकाँ एहि युगक उपन्यासकारक समक्ष नारी जागरण, एक मुख्य समस्या छल। तें उपन्यासकार

---

[245] त्रिभुवन सिंह–हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ0–25

नारीक निहित शक्तिकेँ उपन्यासक माध्यमसँ प्रत्यक करय चाहैत छलाह। ओ चाहैत छलाह कि भारतीय नारी पुरूषक सामने देशभक्त वनय, ओकर सामाजिक आओर राजनैतिक चेतना एवं ओकरामे अपन अधिकारक हेतु संघर्षक भावना विकसित हो। अपना ऊपर कयल गेल अत्याचार के ओ बौक भऽ कऽ सहन नहि करैत जाय प्रत्युत ओकरा विरूद्ध सक्रिय रूप सँ युद्ध करय। गाँधीजीक मतमे नारीक मन बुद्धि आओर व्यक्तित्वक विकसित इएह सर्वोत्तम मार्ग छल। तें हेतु एहि युगक अनेक नारी उपन्यासमे विभिन्न तरहेँ नारी–जागरणक चित्रण कयलनि अछि। यदि शहर'क नारी गाँधीजीक आन्दोलनसँ प्रभावित भऽ कऽ राजनैतिक काज करैत छथि, रचनात्मक काज करैत छथि, जुलूसमे भाग लैत छथि, खद्दर पहिरैत छथि, पिकेटिंग करैत छथि आओर सभामे भाषण करैत छथि तँ ग्रामक नारीमे वर्ग संघर्षक भावना तीव्रतर अछि नारीक ई दू रूप नारी जागरणक सएह दू पहलू अछि। नारी जागृत भऽ कऽ स्वयं वीरता देखा सकैछ आओर अपन संतान के सेहो वीर बना सकैछ। जेना–जेना संसारक विचारधारा पर मार्क्सक साम्यवादक प्रभाव पड़ैत गेल ललित जी एवं धीरेन्द्र जीक दृष्टि सेहो आदर्श सँ दृष्टि यथार्थ दिस उन्मुख भऽ गेल। यदि आजुक स्वतंत्र भारत आओर विश्व–बन्धुत्व भावना सँ प्रेरित युगमे ओ जीबैत रहितथि तऽ निश्चित रूप सँ हिनक उपन्यास ''पृथ्वीपुत्र'' के आदर्श कल्पना होइत आओर नहि धीरेन्द्रक ''भोरूकवा'' अपन सामाजिक परम्परासँ सरल अहिंसात्मक ढ़ंग सँ संघर्ष करैत मृत्युकेँ प्राप्त करैछ।''[246]

द्वितीय विश्वयुद्ध हमरा लोकनि के एक दिश राष्ट्रीयता सँ अन्तर्राष्ट्रीयता दिस बढ़ौलक अछि।'' वैज्ञानिक आविष्कार जीवन कनव मूल्य आओर नवउपकरण प्रस्तुत कयलनि अछि ओतद्वि विश्वक प्रत्येक राष्ट्रमे देशमे उन्नति आओर प्रगतिशीलताक होड़ लागल अछि। जेहन परिस्थितिमे भारत एहेन देश जकर आदर्श वैदिक कालेसँ ''कृपा संपद्यते चरण'' रहल अछि ''ई असंभव अछि कि ओ एहि प्रतियोगितामे पछड़ि जाय। देशक सर्वांगीण उन्नतिमे साहित्यकारक सेहो ओतवे सहयोग अपेक्षित अछि जतेक कि शोषक वर्गक उत्तरदायित्व। आइ हमर साहित्यकार युगक आभाकेँ चिन्हि लेलनि अछि आओर बूझि लेलनि अछि कि जन जीवनक अपूर्व संतुलन देशक वास्तविक उन्नति अछि।''[247]

जन–जीवनक सर्वांगीण उन्नतिक हेतु आजुक मैथिली उपन्यासकारे नहि हिन्दी साहित्यक महाकवि सुमित्रानन्दन पंत अभिलाषित छथि आओर एकठाम उत्तरामे लिखने छथि–

''प्रजातंत्र के साथ राज्य दह सकते जीवित जन–जीवन विकासमे नियमो से अनुशाषित।''[248] आधुनिक उपन्यासकार अपन युग–जीवनक समस्यासँ विमुख नहि भऽ सकलनि आओर ओ लोकनि फोड़िसँ मध्यवर्गक कुंडाक चित्रण त्यागिक कऽ अपन लेखन स्वतंत्र मानव–जीवनक चेतनाक दिस मोड़ि लेलनि अछि। भारतक आत्मा (ग्राम) केँ चिन्हि लेलनि अछि। भारतक असंख्य ग्रामक अलग भेल सामाजिक शक्ति आओर व्यक्तिवादी क्रान्तिके समेटि कऽ एक महान समाजवादी मानवता केँ प्रतिष्ठित करबाक प्रयत्न आजुक (ग्राम समस्या) प्रधान लेखकक उद्देश्य भऽ रहल अछि।

---

[246] सुमित्रानन्दन पंत–उत्तरा

[247] संगच्छत्वं सं वद्वतं संवो मनेसिजानताम् देवा यागं यथा पूर्व संजाना उपासटे। ऋग्वेद–10.191–25

[248] यजुर्वेद–22/22

वैदिक आर्यक यद्यपि कार्यक अनुसार तीन वर्ग छल मुदा ओकरा आपसमे सामाजिक संबंध एतेक दृढ़ छल कि संघर्ष आओर विषमताक हेतु कोनो जगहे नहि छल। ऋग्वेदक ''संगच्छव'' मंत्रमे चहुँमुखी एकताक मार्मिकता जाहि तरहेँ ''वर्णित भेटैत अछि ओहेन उत्कृष्ट युक्ति प्राचीन साहित्यमे शायद कतहु नहि अछि। ओकट अनुसार मानव मात्रकेँ आदेश अछि संग–संग चलू, संग–संग बाजू, संग–संग अपन मनकेँ मिलाऊ तँ देवता–सेहो एक भऽ कऽ भाग ग्रहण कटैत छथि।

विश्व बन्धुत्वक भावना एहिसँ उत्कृष्ट प्रमाण आओर की भऽ सकैछ? जन हितक ई भावना ''भजुर्बोद्ध' उक ''आह्मण'' सूक्तमे भेटैत अछि। एहि सूक्तक सूक्तकार कहैत छथि, हे ब्राह्मण एहि देशक ब्राह्मण ब्रह्मवर्चन हो, राष्ट्रमे राजन्य सूरवीर हो। दूध देमयवाली गाय भार–वहन करयवला बड़ह, तेज घोड़ा आओर वीर प्रसू महिला हो। समय पर मेघ वर्षा करय तथा फलबती औषधि उपजय आओर एहि तरहेँ हमर योगक्षेय हो।''[249]

भारतक संग ग्रामक संबंध अनन्य रूपसँ अनन्त युग सँ जुड़ल अछि। ग्राममे एतुका जन–राशि बसैत छथि आओर ग्राम मात्र राष्ट्रक सार्वजनिक उन्नतिक साधन अछि।

आजुक युगमे जखन कि हम राष्ट्रीय सीमा पार कऽ अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमे पर्दापण कऽ रहल छी तथा देश बन्धुत्वक भावना छोड़िकऽ विश्व बन्धुत्वक महान भावना दिश अग्रसर भऽ रहल अछि।

हमरा लोकनिक पौराणिक ग्रंथ रामायण आओर महाभारत सेहो जनहितक भावनासँ पूर्ण अछि। व्यासजी। मनुष्यक प्रतिष्ठा सर्वोपरि मानलनि अछि। बौद्ध दर्शनक मूल चेतना से हो इएह जनहितक भावना अछि। एहि मानवता केँ प्रतिष्ठित करबाक हेतु बुद्ध वर्षाश्रम धर्मक खंडन कय कर्मक प्रधानता पर जोर देलनि आओर सत्कर्मकेँ उन्नतिक साधन मानलनि। गौतमक एहि मानवतावादक हेतु गाँधीजी आजीवन प्रयत्नशील रहलाह आओर एकटे प्रतिष्ठाक हेतु एक नव परीक्षण भऽ रहल अछि।

अंतमे गाँधीवादक संदर्भमे महात्मा गाँधी स्वयं कहैत छथि। ''व्यक्तिक इह अन्तरात्मा नहि भऽ सकैत अछि पहिल व्यक्तिगत एवं सामाजिक आओर दोसर राजनीतिक। मानवीय कार्यक सभ क्षेत्रमे एकहि नैतिक संहिताक पालन करबाक चाही– हमरा लोकनि केँ सत्य आओर अहिंसा के मात्र व्यक्तिगत व्यवहारमे नहि परंच संघ सम, समुदायतम आओर राष्ट्र सभकेँ व्यवहारक सिद्धान्त बनेबाक''अछि।''[250] उपन्यासके नवीन जीवनक दर्शनमे मार्क्सवादी विचारधारा विशेषतया सर्वहारा वर्गक संघर्ष, शोषण, अत्याचार अमानवीयता, दुराचार आदि सामाजिक विसंगतिक ''चित्रण'' कऽ ओहि पर आक्रमण कयल गेल अछि। जमींदारी आओर पूँजीवादक शोषणसँ मुक्ति पयबाक हेतु एक युगक आरंभ भेल, जे मार्क्सवादी भावना सँ प्रेरित भेल।

---

[249] न हि मनुषाष्ठातारं हि किंचिह्''

[250] "These could not be two consciences of man, one individual and social and the other political. The same code of morality had to be observed in all spheres of human activity…….. We have to make truth and non-voilence matters, not merely for individual Practice but for practice by group's, Committes and mation's. That it any rate is may dreams". M. Gandhi, Harijan, March-1934, Dr. Pukhraj Jain- Political- Theory Page-277.

मैथिली उपन्यास जाहिमे ''भोरूकवा'' पृथ्वी–पुत्र', 'कादो आ कोइला', 'दूध–फूल', 'खोता आ चिड़ै' आदिमे मार्क्सवादी भावना पाओल गेल अछि।

फ्रायवादक अनुसरण पर यौनवादी मैथिली उपन्यासकेँ अति यथार्थवादी उपन्यास सेहो कहल जा सकैत अछि। यात्रीजीक ''पारो''मे ई संबंधीक बीच (पिसियौत ममियौत) परस्पर आकर्षण भावकेँ स्थान भेटल अछि। मैथिलीमे मायानन्द मिश्रक ''बिहाड़ि पाति आ पाथर''मे यौन आकर्षणक संग–संग मनोविश्लेषण केँ सेहो स्थान देल गेल अछि। एहि प्रकारेँ आंशिक रूपेँ सोमदेवक चानोदाई होटल अनारकली, पृथ्वीपुत्र कादो आ कोइला, हमरा लग रहब नवारंभ, राजा पोखरिमे कतेक मछरि, मध्य लेखक फ्रायडक अचेतन काम वासनासँ प्रभावित देखना जाइत छथि। राजकमलक ''आन्दोलन''मे सेहो फ्रायडक अवचेतन कामवासना भेटैत अछि।

भारतीय जनता पर महात्मा गाँधीक सिद्धान्त आओर आन्दोलनक प्रभाव सन् 1920क बाद सँ पड़य लागल छल। घर सँ बाहर निकलि नारी सभ सन् 1920 आओर 1930क राष्ट्रीय आन्दोलनमे सक्रिय रूप से हिस्सा लेलन्हि। मैथिली उपन्यासकार गाँधीजीक आ दर्शसत्र प्रेरणा पाबि नारीक आदर्शक स्थापना कयल आओर दोसर दिस नारीक राजनैतिक चेतनाक चित्रण सेहो कयल। गाँधीजीक जकाँ एहि युगक उपन्यासकारक समक्ष नारी जागरण एक मुख्य समस्या छल। जाहि जागरणक हेतु पंडित हरिमोहन झाक ''कन्यादान'' ललितजी ''पृथ्वीपुत्र'' आ धीरेन्द्रजीक ''भोरूकवा'' आदिमे गाँधीवाद प्रेरणा भेटैत अछि। एवम् क्रमे हमरा लोकनि देखैत छी जे मैथिली उपन्यासक नवीन जीवन दर्शनमे मार्क्सवाद फ्रायडवाद एवं गाँधीवादक सर्वोपरि स्थान अछि।

ISBN: 978-81-19149-27-8

अध्याय 6

राजनीतिक चेतना ओ मैथिली उपन्यास

6.1 आधुनिक युग में राजनीतिक सुगमता :–

आजुक राजनीतिक जीवन सब क्षेत्रकेँ प्रभावित कए देलक अछि। नगरसँ लए सुदूर गाम धरि लोक पहिलुका अपेक्षा सजग भए गेल अछि। तेँ मैथिली उपन्यासहुक क्षेत्रमे राजनीतिक अस्पष्ट कोना रहि सकैत छल। भारतवर्ष मास्को तथा न्यूयार्क तें नीक संबंध बनौने आबि रहल अछि। एहि दू दिशामे कहिया धरि उधयाइत रहत? एहि प्रश्नक संग राजनीतिक दिशा तकैत श्री ब्रजकिशोर वर्मा ''मणिपद्म''क उपन्यास ''अर्द्धनारीश्वर'' प्रकाशमे आएल। एहि उपन्यासक मुख्य समस्या राजनीति थिक, जो अंतिम परिच्छेदमे मौसीक उक्तिसत्र सम्पुष्ट होइत।''[251]

भारतीय स्वतंत्रताक प्राप्ति प्रत्येक दृष्टिएँ एक महत्त्वपूर्ण घटना कहल जा सकैछ। स्वतंत्रताक पश्चात् भारतीय जनजीवनमे क्रान्तिकारी परिवर्तन भेल तथा प्रत्येक दिशामे आगाँ बढ़वाक प्रवृत्तिक उदय भेल। उत्थानक दिश प्रवृत लोक समाजक विकास हेतु विकास कार्यमे लागि गेलाह तथा पतनोन्मुखी विनाश कार्यमे निम्न प्रवृत्तिक लोक समाजमे विघटनातमक कार्य करब प्रारंभ कयलनि अछि। एहि प्रकारक व्यक्तिक संख्या सर्वदासँ विशेष रहल अछि। एहि युगक भारतीय जन–समाज, अत्यन्त तीव्र रूपसँ व्याप्त एक व्यापक समाजक दिश भेल अछि।

नवीनक युग अपन परिस्थिति समाजकेँ प्रदान कयलक तथा नवसमस्यासँ समाजमे नव राजनीतिक चेतनाक प्रादुर्भाव भेल। जँ नवसमस्या बेसी जटिल होइत अछि तँ राजनीतिक चेतनामे बेसी प्रखरता तथा ओकरा सोझरबाक प्रयत्नमे बेसी तत्परता आओर प्रौढ़ताक प्रयोजन होइत अछि।''[252]

स्वतंत्रयोत्तर हमर सामाजिक वातावरण परिवर्तित भऽ गेल अछि। समय स्वप्नातीत करोट लेलक अछि। समाज, राजनीति प्रत्येक क्षेत्रमे अभूतपूर्व परिवर्तन भेल, अतए ''उपन्यासक क्षेत्रमे परिवर्तन स्वाभाविके अछि। अद्यावधि गाँधीजीक मानवतावादी आओर अहिंसाक सिद्धान्त जे हमर देशक वैदेशिक नीतिमे एक महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक, साहित्यमे अपन एक स्वतंत्र स्थान बना लेलक अछि, मुदा जखन ओकर प्रतिफलन पाकिस्तान निर्माण, गाँधीजीक हत्या, विभाजनक विभीषिका, दुनू देशमे अनेक निरीह प्राणीक निर्मम हत्या तथा चीनक सफलताक अनेक रूप सोझाँ आयल तखन एकरा प्रति एक प्रतिक्रिया अवश्य भेल तथापि ओकरा सम्पूर्णतः उन्मूलन नहि कयल गेल अछि, प्रत्युत ओहिमे परिस्थिति समय आओर पात्रक अनुसारें परिष्कार कए ओकर स्वरूप अवश्य परिवर्तित कऽ देल गेल अछि।

---

[251] प्र0 चेतना समिति यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य, पृ0–85–86

[252] सं0 डॉ0 वासुकीनाथ झा, उपन्यास ओ सामाजिक चेतना, पृ0–14

आधुनिक युगमे गृह नीतिमे परिवर्तन भेल अछि जकर प्रभाव उपन्यास साहित्य पर सेहो पड़ल अछि। एहिमे राजाक तानाशाहीक समाप्ति, जमींदारी उन्मूलन, पंचायती राज्यक स्थापना, निम्नवर्ग एवं आदिमवर्गक उत्थान आओर एहि प्रकारक अनेक परिवर्तन उपन्यासक विकसित प्रवृत्तिकेँ नव रूप तथा नवीन प्रवृत्तिक जन्म देलक अछि। एकहर नारीक प्रति नव दृष्किोण, दहेज प्रथाक समाप्ति तथा विभिन्न पारिवारिक एवं वैयक्तिक समस्याक समाधानक पद्धति समाज आओर साहित्यकेँ नव रूपेँ समस्याक अंत कऽ देलक अछि आओर राजनीतिक चेतनाक प्रसार कयलक अछि। आधुनिक युगक उपन्यास लेखककेँ सरलतासँ दुई भागमे विभाजित कयल जा सकैछ। प्रथम वर्गक लेखक ओ छथि जे सामाजिक, राजनीतिक आदि सभ प्रकारक समस्याक उत्तर समाजवादी एवं साम्यवादी विचारधाराक अनुरूप देलनि। समाजवादी आओर साम्यवादी दुनू प्रकारक सिद्धान्तक राजनीतिक आदि सभ प्रकारक समस्याक उत्तर समाजवादी आओर साम्यवादी विचारक अनुसार देलनि।

आधुनिक युगमे वसतु चयनमे नवीनताक आभास भेटैत अछि। जतय पूर्ववर्ती उपन्यासमे विदेशी दासतासँ देशकेँ मुक्तिक प्रश्न प्रमुख छल ततय आब देशक निर्माणक प्रश्न पबल भेल जाहिमे धार्मिक, सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक आदि अनेक पक्ष अछि। मैथिली उपन्यास जन–जीवनक परिवर्तनक परिपार्श्वमे नव आलोककेँ ग्रहण करबाक हेतु अत्यन्त तीव्रतासँ साहित्यक मार्ग पर अग्रसर भऽ रहल अछि। यथार्थवाद, मार्क्सवादी, गाँधीवादी तथा सर्वोदयवादी सिद्धान्तक छाया अपने भूमिका प्रस्तुत कयलक अछि। यद्यपि आधुनिक युगमे प्रत्येक उपन्यासकार अपनाकेँ यथार्थवादी कहैछ वा कहयबाक दावा करैछ।

''फणीश्वरनाथ ''रेणु'' का ''मैला आँचल'' मेरीगंज की राजनीतिक चेतना को उसकी सम्पूर्ण जटिलता के साथ हमारे सामने लाता है। मेरीगंज को आर्थिक विषमता आओर गाँधीवादी राजनीति की असफलता गाँव की चेतना को एक नया स्वर देते हैं काँग्रेस की अवसरवादी राजनीति के स्थान पर वर्ग संघर्ष मेरीगंज कोएक नया प्राण देता है। ''मैला आँचल'' जमींदारी उन्मूलन के बाद ग्रामीण जीवन की स्थिति का प्रामाणिक दस्तावेज है।''[253]

ओहिना ''रेणु''क ''परती'' परिकथामे'' स्वतंत्रता के बाद बदलती हुई भूमि व्यवस्था, बदलावों के साथ बदलते हुए ग्रामीण जीवनके आस्था विश्वास के स्वर नयी व्यवस्थामे अपने लिए अधिक उपयुक्त स्थान बना लेने की प्रतिस्पध्र का स्वर मुखरित हुआ है। देहातों में हरित–क्रान्ति आरंभ हो रही है फलस्वरूप कृषि का औद्योगिकरण आरंभ हुआ है। जितन बाबू का ट्रैक्टर इस नये परिवर्तन का सूचक है। भूस्वामी वर्ग का चरित्र बदलने लगा हे। पूँजीवादी प्रवृत्तियों का समावेश होने लगा है।''[254]

''वरूण के बेटे'' के माध्यम से उपन्यास लेखकों को रास्ता दिखाया कि यौन–रोगों से पीड़ित, कुंठाग्रस्त एवं अहंवादी मध्यवर्गीय पात्रों के शहरी जीवनके के भटकाव, स्वयं अपने आपमे खोए हुए, महाप्रगति के कोलाहलमे उपेक्षित और अपने तथा समाजके संबंधमे भ्रमपूर्ण विचार करनेवाले पात्रों का वैयक्तिक चित्रण करना हो उपन्यास की कथावस्तु नहि अपितु सीधे–सादे समस्याओं से लड़ते–जूझते, आगे बढ़ते और परिवर्तन करने का हौसला रखनेवाले ग्रामीणों का जीवन हो

---

[253] डॉ0 कुँवरपाल सिंह, हिन्दी उपन्यास, सामाजिक चेतना, पृ0–159

[254] डॉ0 कुँवरपाल सिंह, हिन्दी उपन्यास, सामाजिक चेतना, पृ0–159

वास्तवमे कथावस्तु हो सकती है। भला ही गौढ़चारी के छोटे से ग्रामांचल की समस्याएँ महान भारत को समस्याएँ हैं जिनमें भूमि व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था और राजनीति भी संश्लिष्ट है।''1

आधुनिक समाजक स्थितिसँ ई अछि जे आर्थिक दृष्टिसँ समृद्ध एकवर्गक हाथमे उत्पादनक समस्त साधन अछि तथा साधन पर अधिकार रहबाक कारणें धन हिनका लोकनिक हाथमे एकत्रित भेल चलि जा रहल अछि। समाजक दोसर वर्ग सर्वहाराक अछि जे पहिल वर्गक हाथक कठपुतरी अछि तथा भयंकर यातनाक अनुभव'क रहल अछि एहन उपन्यास सर्वहारा वर्गकेँ वर्तमान सभाकेँ बदलि देवाक प्रेरण दैत अछि तथा ओकरा ई विश्वास दिअबैत अछि जँ प्रयत्न कयल जाय तँ एहन समाजक निर्माण संभव अछि जाहिमे शोषक एवं शोषितक वर्ग नहि रहत तथा ओहन वर्गहीन समाजमे सभ शांतिपूर्वक रहि सकत। एहन उपन्यास प्रवृति वा ईश्वरक निष्ठुर परिहासक गप्प नहि करैत अछि। भाग्यवादक आडम्बरकेँ नहि सहन करैत अछि। आधुनिक युगक मैथिली उपन्यासमे बलचनमा, धरती जागि उठल, पृथ्वीपुत्र, भोरूकवा, कादो आ कोइला, आन्दोलन, सुनगैत गामक कथा, पटाक्षेप, मरीचिकामे राजनीतिक चेतना वेशी मुखरित भेल अछि।''[255]

आधुनिक युगमे आओर विशेष कऽ स्वतंत्रता प्राप्तिक उपरान्त, राजनीतिक चेतनाक सर्वांगीण विकास भेल अछि। एहि विकास यात्रामे जतय सामाजिकता एवं राष्ट्रीयताक स्फूरण भेल ततहि वैयक्तिकता, प्रान्तीयता, आँचलिकता, आओर ब्रह्मवादिता सेहो अपन शत–शत रूपमे प्रस्फुटित भेल अछि। वस्तुतः प्रजातंत्रक विकसित होइत सामाजिकता अपना केन्द्रमे वैयक्तिक अछि, कारण प्रजातंत्रक प्रधान इकाइ व्यक्ति अछि। एहि दृष्टिसँ सामाजिकताक संगहि संग वैयक्तिकताक विकास पूरकक रूपमे भेल अछि। इएह पूरक वैयक्तिकता अपन उत्कृष्ट रूपमे मानवक अन्तश्चेतनाक विषय, आँचलिकताक, राष्ट्रीयताक दिस बढ़ैत इकाइ आओर अहंक उदात्तीकरणक रूपमे अभिव्यक्त भेल अछि। मुदा अपन संकुचित आओर प्रतिक्रियावादी रूपमे इएह वैयक्तिकत अहं जन्म कुत्सा, पाशविक कामना, राष्ट्रविरोधी, प्रान्तीयता आओर संकीर्ण आँचलिकताक जन्म देलक अछि।

आधुनिक युगमे ओनातँ कतोक प्रकारक उपन्यास रचित भेल अछि जे राजनीतिक विसंगतिक परिप्रेक्ष्यमे ग्राम्य एवं नगरक परिवेशमे जीवि रहल निम्न मध्य एवं निम्नवर्गक नर–नारीक भोगल यथार्थकेँ विविध कोणसँ देखि ओकरा वाणी प्रदान कयलक अछि। पूँजीवादी संस्कार पर प्रकार करैत एहन उपन्यास सभ ग्रामीण परिवेशमे व्याप्त सामाजिक अत्याचार, ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट, पारिवारिक कटुता, निम्नवर्गमे आयल चेतना, वर्ग संघर्ष टूटैत संबंध तथा नगरक परिवेशमे व्याप्त जीवनक यांत्रिकता, क्षुद्र स्वार्थ एवं संकीर्णता, चारित्रिक एवं नैतिक पतन, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, चोरी बाजारी, महँगी, बेकारी, दिशाहीनता लोकक कृत्रिम स्वरूप, मानसिक तनाव, बाह्य एवं अन्तः संघर्ष आदिक कथा कहैत नर–नारीक खंडित होइत पारंपरिक मूल्य कथा नवविवाहित अर्द्धविवाहित जीवन मूल्यकेँ व्यंजित करबामे अपन सोधेश्यता स्पष्ट कयलक अछि।''[256]

---

[255] डॉ0 दिनेश कुमार झा, मैथिली साहित्य आलोचनात्मक, इतिहास, पृ0–274

[256] डॉ0 दिनेश कुमार झा,मैथिली साहित्य आलोचनात्मक, इतिहास, पृ0–287

मैथिली उपन्यासमे एकर अभाव–

उपन्यास विश्लेषणसँ ई स्पष्ट भऽ जाइत जे एहि साहित्यिक विद्याक आविभावक मूलाधार सामाजिक चेतना अछि। सामाजिक चेतना विभिन्न आयाममे सँ राजनीतिक चेतना प्रमुख अछि, मुदा मैथिली उपन्यास साहित्यकार विचार कयलासँ ई स्पष्ट होइछ जे मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतनाक स्वरूप सामाजिक चेतनाक अंगक रूपमे विकसित भेल अछि। अतएव मैथिली उपन्यासमे जीवनक विभिन्न स्वरूप, ओकर जटिलता एवं विविधता अंकित नहि भऽ सकल अछि। मिथिलाक सामाजिक जीवन पर औद्योगिकरणक प्रभाव नहिए जकाँ पड़ल अछि। औद्योगिकरणक कोलाहल सँ दूर मिथिलाक सामाजिक जीवन निश्चित परिवेश एवं परिस्थितिमे विकसित भेल अछि। परम्पराक प्रति मोह, अँग्रेजी शिक्षाक प्रचार–प्रसारक समयमे मैथिली साहित्यक उचित मान्यताक अभाव एवं मैथिली भावी क्षेत्रमे राजनीतिक संगठनक अभावक कारणें मैथिली साहित्यमे राजनीतिक गतिविधिक वर्णन विश्लेषण सामान्यतः संभव नहि भऽ सकल अछि। साहित्य सामाजिक जीवनक दर्पण अछि एवं कथा साहित्य जीवनक यथावत् चित्रण कथानकक रूपमे करैत अछि। अतएव जनजीवनक आशा आकांक्षा एवं गतिविधिक ओहने चित्र कथा साहित्यमे अंकित भऽ पबैत अछि जेहन ओहि समाजक स्थिति रहैत छैक।

मैथिलीक उपन्यास साहित्य बहुत कम दिनक अछि। ''कन्यादान'' सँ पूर्वक मैथिली उपन्यासकेँ उपन्यास कहल कठिन बूझि पड़ैत अछि, यद्यपि कन्यादान सँ पूर्वक मैथिली कथाकृतिमे उपन्यासक विभिन्न तत्वक सम्मिश्रण देखबामे नहि अबैत अछि किन्तु 'कथ्य'क दृष्टिएँ एहिमे सँ अनेक कथाकृतिमे सामाजिक जीवनक चित्रणक चेष्ट कयल गेल अछि। सामाजिक जीवनक विभिन्न क्रिया कलापकेँ लऽ लिखल गेल उपन्यास सभमे ''कन्यादान'' एहन पहिल कथाकृति अछि जकरा उपन्यास कहल जा सकैछ। एहिमे सामाजिक जीवनक कथा स्थितिक चित्रण कथानकक रूपमे भेल अछि, उपन्यास विभिन्न तत्वक सम्मिश्रण अछि एवं वर्णनक वैशिष्ट्य अछि।

''कन्यादान'क पश्चात् लिखल गेल मैथिलीक अधिकांश उपन्यास वैवाहिक समस्याकेँ लऽ लिखल गेल अछि। एहि उपन्यास सभमे वैवाहिक समस्याक चित्रणक ब्याजें सामाजिक चेतनाक स्वर क्रमशः विकसित होइत देखबामे अवैछ, किन्तु राजनीतिक गतिविधिक वर्णन–विश्लेषण प्रायः नहि भेल अछि। समस्यामूलक एहि वर्गक उपन्यास सभमे सामाजिक जीवनक व्यापक चित्र अंकित नहिए जकाँ भेल अछि। ई उपन्यास सभ जेना एहि मान्यता पर लिखल गेल हो जे मिथिलाक सामाजिक जीवनमे कोनो एहिसँ भिन्न परिस्थितिए नहि रहल होइक। मुदा वस्तुस्थिति तँ ई रहल अछि जे दरिद्रता, सामाजिक, रूढ़ि, जातिवादी व्यवस्था, पैघ छोटक भेद, अशिक्षा, बदलैत सामाजिक मूल्यक स्थापित मूल्यक संग संघर्ष आदि कतोक विषय मिथिलाक जीवनक महत्त्वपूर्ण समस्या बनल रहल अछि मुदा आई धरि आठ दल उपन्यसकेँ छोड़ि उपन्यास कारक ध्यान एहि दिश नहि गेलन्हि परिणाम ई भेल अछि जे मैथिलीक उपन्यास युगचेतनाक अभिव्यक्तिक साधन अत्यन्त सीमित अर्थमे रहि सकल अछि। वर्त्तमान समयमे विशेषताः स्वंतत्रता प्राप्तिक बाद जनजीवन एवं राजनीतिक चेतनाक ततेक घनिष्ठ संबंध भऽ गेल अछि जे कोनो– साहित्यकार जन जीवन पर पड़ल राजनीतिक प्रभाव सँ निरपेक्ष भऽ सामाजिक चेतना पूर्ण अभिव्यक्ति देवामे असमर्थ रहि जयताह। एहि दृष्टिसँ विचार कयला पर मैथिली साहित्यक बहुत कमे उपन्यास एहन अछि जाहिमे स्पष्ट रूपसँ राजनीतिक चेतनाक स्वर स्फुट भेल अछि।

उपन्यास एक एहन कलाकृति अछि जाहिमे हमरा लोकनि ओहि संसारक वर्णनक आशा रखैत छी जाहिमे हम रहैत छी किन्तु एकर संगहि संग लेखक अपन वैयक्तिक क्षमताक कारणें किछु एहन वस्तुक सम्मिश्रण करैत छथि जे हुनक वैयक्तिक विशेषता होइत छनि अतएव उपन्यासमे सामाजिक चेतनाक ओ स्वरूप अंकित होइत अछि जाहिसँ ओ समाज प्रभावित भेल रहैत अछि।

परोक्ष अभिव्यक्ति मैथिली भाषी क्षेत्रक सांस्कृतिक परम्परा, जीवन–यापनक पद्धति एवं जन जीवनक सामान्य परिवेश किछु तेहन रहल अछि जाहिमे राजनीतिक चेतनाक विकास संभव नहि भऽ सकल अछि। जे किछु भेलो अछि से मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे संक्रमण नहि कऽ पओलक अछि। तात्पर्य ई जे साहित्य राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक मान्यता पर्यन्त प्राप्त करबामे विफल रहल अछि। ओहि साहित्यमे किछु एहन बात ताकत जकर सँ बंध ओहि समाजक राजनीतिक गतिविधिक होइक निरर्थक सिद्ध होयत। हँ, कोनो साहित्य सम्बद्ध समाजक जन जीवनकेँ उपेक्षाक दृष्टि सँ नहि देखि सकैत अछिं कारण साहित्य एवं समाजक अन्योन्याश्रय संबंध रहल अछि। मैथिली उपन्यासमे सामाजिक जीवनक जे स्वरूप अंकित भेल अछि से कोनो रूपमे राजनीतिक चेतनाक जन्म अवश्य दैत अछि मुदा प्रत्यक्ष रूपसँ समाजक राजनीतिक गतिविधिक चित्रण एहिमे नहि भऽ सकल अछि कारण जाहि भाषा साहित्यकेँ शिक्षित जन–समुदायक स्तर पर मान्यता पर्यन्त नहि भेटत हो, ओहि साहित्येक संदर्भमे राजनीतिक चेतनामूलक साहित्यक मध्य करब मिथ्या प्रताप होयत। अमेरिकन समाजशास्त्री ''प्रौल बास'' मैथिली आन्दोलनक प्रति अपन उक्ति दैत छथि जे – मैथिली भाषी कथाकथित सम्भ्रांत वर्ग मातृभाषा संबंधी आन्दोलनकेँ अपन स्वार्थ सिद्धिक एकटा साधन मानि लोकक मध्य राजनीतिक चेतनाक अभ्युदय करबका हेतु तत्पर नेताक स्वांग धयने छथि। मैथिली कथा साहित्यमे, तेँ हेतु राजनीतिक चेतना सीमित अर्थमे पाओल गेल अछि। इएह समीकरण अछि जे मैथिली उपन्यास साहित्यमे आई धरि राजनीतिक चेतनाक अभाव रहल अछि।

उपन्यासमे अभिव्यक्त राजनीतिक चेतना :–

मिथिला एवं मैथिल–समाजमे तँ राजनीतिक चेतना एखन आकिए रहल अछि तथा जँ–जँ ओ राजनीतिक चेतना सभ जगतेक तँ तँ उपन्यास सभमे दिनानुदिन ओकर अभिव्यक्ति होइत जएतेक। हमरा लोकनिक ओहिठामक अन्य समाजक अपेक्षा राजनीतिक चेतना किछु पछुआएल अछि जकरा आगाँ बढ़यबाक कार्य किंवा राजनीतिक चेतनाकेँ विभिन्न दिशामे विकसित करबाक कार्य उपन्यासकार अपन उपन्यासक माध्यम सँ कऽ रहल अछि।

''राजकमलजीक'' आन्दोलन। उपन्यास सर्वप्रथम ''आखर''मे क्रमशः धारावाहिक रूपसँ प्रकाशित भेल छल एहि मध्य ओ कलकत्तामे चलि रहल मिथिला, मैथिली ओ मैथिली संबंधी आन्दोलन ओतुका वस्तुस्थितिक बड़ सजीव चित्र अंकित कयने छथि। मुदा संग–संग लेखकक सामाजिक विषमताक प्रति विक्षोभ, असंतोष ओ कुंठाक सेहो बड़ सफलताक संग अभिव्यक्ति भेल अछि। ''आन्दोलनक'' मूल कथाक संग–संग मानव जीवनक क्षुधा–आत्मरक्षा एवं यौन–विपासाक चित्रण कए लेखक मैथिली उपन्यास क्षेत्रमे नवीनताक संचार कयने छथि।''[257] जाहिमे राजनीतिक चेतनाक आभास भेटल अछि। छत्रधारी लाल दासक '' आन्दोलन''मे सेहो

[257] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–297

राजनीतिक चेतना मुखर भेल अछि। जाहिमे नवयुगीन जागरणक नीक जकाँ चित्रण कयल गेल अछि। यात्रीजीक ''बलचनमा'' आत्म कथात्मक उपन्यास थिक। एहिमे मिथिलाक जागरण आओर विद्रोहक कथा निवेदित अछि आओर सामाजिक परिवर्तनक दृष्टिएँ प्रस्तुत उपन्यासक अस्मिता स्वतः रेखांकित अछि। सामान्य जीवनमे परिवर्तन चक्रक मुखपेक्षी एकर कथापात्र ''बलचनमा'' स्वयं अछि। ओकरा मुँहे ओकर आत्मकथा विवेचनक क्रममे यात्रीजी एहि तरहेँ परिवर्तनक प्रसंग विवरण प्रस्तुत कएलन्हि अछि–'' साधारण जिनगीमे हेर–फेरके नहि चाइत। यदि बारहो महीना जाड़े रहे तँ ककरो नीक लगतै? आ' तहिना जौं भोर साँझ नहि होई सदिखन दुपहरियाक रौदे रहे तऽ केहन लगतैक– मनुक्खक जिनगी? कहबाक अर्थ ई जे मनुक्खक जिनगीक गप्पे कोन समूचा संसार आई परिवर्तन पर चलै छै। परिवर्तनक पहिया सदिखन चलिते रहे है।''[258] ई उपन्यास पहिने मैथिलीमे लिखल गेल आओर तकर बाद हिन्दीमे। एकर प्रसंग नागरी प्रचारिणी सभाकाशी द्वारा प्रकाशित हिन्दी प्रकाशित साहित्य का वृहत्त इतिहासमे निम्नलिखित उल्लेख भेल अछि–''राजनीतिक चर्चा अधिक है। आँचलिक अंश बहुत कम है। राजनीतिक विचार समाजवादी आन्दोलन का समर्थन करते हुए आरोपित किए गए हैं। उन्होंने संघर्षशील व्यक्तित्व के द्वारा समाजवादी चेतना की ओर इंगित किया है जो उत्पीड़ित साधनहीन और अधिकारों से वंचित किसानों और मजूदरोमे अन्याय के प्रति विद्रोह की ज्वाला सुलगती हे। जमींदारों और राजनीतिक नेताओं के स्वार्थ संघर्षो और दूषित कार्य को भी लक्ष्य बनाया गया है। उनका किसान सर्वहारा वर्ग का विद्रोही और दमदार किसान है।''[259]

यदि हम हिन्दीक अमर उपन्यासकार प्रेमचन्द सँ यात्रीजी तुलना करी तँ बुझि पड़त जे प्रेमचन्द्रक दृष्टिकोण सामाजिक यथार्थक देन थिक जखन यात्रीजीक जीवनक दृष्टि समाजवादी यथार्थ सँ प्रेरित। एहि दृष्टिएँ बुझि पड़ैछ जे प्रेमचन्दक संवेदना यात्रीजीक रचना सभमे राजनीतिक चेतनाक रूप धारण कए लैत अछि। होरी सेहो किसान अछि आओर बलचनमो। होरी ग्रामीण संस्कृतिक ध्वंसक संकेत दैत अछि जखन कि बलचनमा एक भावी निर्माणक सूचना। राजनीतिक चेतनाक दृष्टिएँ बलचनमा निम्नलिखित पंक्ति बड़ महत्त्व रखैत अछि–

''जखन–जखन कुकुरक स्वरसँ रातिक सन्नाटा टकरा जाइ तँ हमर मन अपना खोलमे लोटि आबिते। बूढ़ शीशोक झूकल माथक छॉह सँ दिलकेँ एक प्रकारक तसल्ली भेटैत छल, लगै छल जे अपने कोनो पुरखा आशीर्वाद दऽ रहल हो– एना माथ पर झुकि कऽ। जाहि नव रास्ता पर हम पैर बढ़ैलहुँ अछि ओहि पर चलि जायक हेतु एतेक साफ इशारा पाबि कऽ हमर रीढ़ एकदम सोझ भऽ गेल। सीना तानि गेल छल– बाँहि पेसा कऽ किछु काल धरि अपन छाँही देखैत छलहुँ।''[260]

गोदान सँ एहि उपन्यासक तुलना करैत डॉ0 इन्द्रनाथ मदान लिखने छथि'' देहाती जीवन की साधारण घटनाओं को सूचित करनेमे उसके छोटे–छोटे सुखों के सूक्ष्म निरीक्षण तथा सजीव चित्रणों, जमींदारों के निरंकुश व्यवहार तथा उत्पीड़नमे नये जीवन के स्पन्दनमे, अँचल विशेष के मुहावरे को पकड़नेमे तद्भव शब्दों के प्रयोगमे पग–पग पर परिवेश की गंधमे उपन्यास का

---

[258] नागार्जुन– बलचनमा (मैथिली), मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता, प्रथम संस्करण–1967, पृ0–96
[259] हिन्दी साहित्य का वृहत्त, इतिहास, (2027 वि0), पृ0–217–18
[260] डॉ0 इन्द्रनाथ मदान–आज का हिन्दी उपन्यास, पृ0–47

ताना–बाना बुना गया है। इस उपन्यासमे राजनीतिक चेतना का यह परिणाम भी निकलता है कि होरी की निराशावादी दृष्टि बलचनमा की आशावादी दृष्टिमे बदल जाती है जिससे लेखक को आस्था का भी परिचय मिलता है।''[261]

समाजक अचर्चित निम्नवर्गक चेतनाकेँ अपन कथा साहित्यमे स्वायत्त करबाक हेतु ललितक नाम उल्लेखनीय अछि। ओतबे नहि हुनक नवताक, मानवाताक यथार्थ मूल्यांकन भेटैत हुनक कथा रचना सबहिमे। जन साधारणक आशा–आकांक्षा हास–परिहास सुख–दुःख, मिलन–विछोह, जय–पराजय द्वन्द्वक ओ आभास भेटैत अछि ताहि सँ बूझि पड़ैत अछि जे हुनक कथा यात्रा एहि सबहिमे समेटि कऽ चलि रहल हो। फलतः परिवेश आओर संवेदनशीलताक अंधकार निकृष्टता वा उत्कृष्टताक भित्ति पर एहि कथाकारक मूल्यांकन सहज ढ़ंग सँ भए सकैत अछि। तँ अत्युक्ति वस्तुतः ललित मार्क्स ओ फ्रायड दुहू चिन्तनक विचारधाराएँ परिचित छलाह। एहि दुनू चिन्तनक अवदान केँ गुनने छलाह। यात्रीजीक वाद जहाँधरि हुनक पृथ्वीपुत्र'क संबंध अछि, एहिमे मार्क्सक मुख्यतः प्रभाव लक्षित होइत अछि, तें राजनीतिक चेतनाक विकास करबामे ई पूर्ण सफल भेलाह अछि।

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश' अपन इतिहासमे एहि उपन्यासक संबंधमे लिखने छथि– ''किसान पृथ्वीपुत्र थिक तेँ ओकरा खेतक प्रति गहन अपनत्व ओ ममता छैक। विलेखी, सरूपा गेनमा प्रभृति एहने पात्र थिक जे भूमिपतिक अत्याचार सहैत–सहैत प्रतिक्रियामे विद्रोह कए उठैत अछि मुदा अपन अधिकार ओ मर्यादा–पालनमे विसेखी ओ सरूण एतेक सतर्क अछि जे पुलिस ओकरा किछु बिगाड़ि नहि सकैत छैक।''[262]

निम्नवर्गीय जीवनक कटु–मधुक अभिव्यंजनमे उपन्यासकार पूर्ण सहज सिद्ध भेल छथि खास कऽ बिजलीक चरित्र–चित्रण मे जे सासुर सँ भागि–भागि अबैत अछि आओर जतेक बेर भगैत अछि ततेक बेर विरोखीक लेल एकटा समस्या बनि जाइत अछि। वस्तुतः अर्न्तद्वन्द्वक चित्रण स्वाभाविकताक संग भेल अछि। हीरालालक पंचेती वैसेबाक प्रकरण सेहो ग्राम्य जीवनक एकटा विशिष्ट पक्ष (राजनीतिक चेतनाक) उद्घाटन करैत अछि।

यथार्थतः एहिमे वर्णित कलपू, बिजलीक प्रेमलायक प्रसंग स्वर्गीय प्रो0 रमानाथ झा कथन एकर वैशिष्ट्यकेँ उद्घाटित करैछ ''अवैध प्रेमक प्रसंगमे अनेको संयम शिथिल भेला सँ कथा अमर्यादित भए जाइत परंतु श्री ललित जी अबैत प्रेमक प्रसंग केँ प्रेमसँ भव्यता चित्रित कए मानव स्वभावक सहज शालीनता केँ स्फुट कए देल अछि।''[263]

पृथ्वीपुत्रमे जहिना कथानक प्रतीयमान कहल जा सकैछ तहिना संभाषण सेहो कम रोचक नहि। उदाहरणार्थ निम्नलिखित आवरण उल्लेखनीय अछि–

---

[261] डॉ0 इन्द्रनाथ मदान–आज का हिन्दी उपन्यास, पृ0–47

[262] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–301

[263] श्री ललितेश मिश्र ''ललित''–पृथ्वीपुत्र, पृ0–4

कतेक दुब्बरि भऽ गेलैहें तों कटॉदन बड़ मारइत रहउ। ठीके! वेदना विहुअल स्वरें पूछलथिन्ह कलपू।

ऊपर नीचाँ मूड़ी गाड़ने बिजली बाजलि– बहु डेंगलइ छल, मकई जकाँ निछोह।

सहटिकऽ लग आयत कलपू। एकदम लग। माथमे बदाम लेलक गम लगलन्हि। कहलथिन्ह बीजो। ई ऐना कतेक दिन आर चलि सकत। कहक खेपी कहलिउ तोरा चल एतय सँ। हमरा संग चल। गाम छोड़ि कऽ। जतय तोहर मोन होउक। कइक खेंपी भगवे। फेर एतहु घरबला झोंट धऽ घिसियाक लऽ जेतउके। तोहर मारिक कल्पना करैत काल लागल अपने देहमे दोदरा फुलल जाइत हो।''[264]

अन्यतज ओ अपराध कर्मी परिवारमे उत्पन्न बिजली अपन गामक भूतपूर्व जमींदार उदार विभोर विलासी ओ विधुर पुत्र कलपू मिश्र संग उपयुक्त प्रेममे संलग्न भए अपन विवाहित पतिकेँ छोड़ि तँ दैत अछि मुदा ओहि कलपू मिश्रक संग विवाह नहि करए चाहैत अछि ओकर प्रेम मात्र शारीरिक वासनाक तृप्ति धरि सीमित रहि जाइछ। विवाह ओ संतानोत्पत्ति ओकरा आवश्यक नहि बूझि पड़ैछ– उन्मुक्त प्रेममे विभोर रहितहुँ ओहि प्रेमकेँ वैवाहिक विधान द्वारा परिष्कृत करबाक साहस ओकरामे प्रायः नहि अछि। कलपू मिश्र एहि विवाहक हेतु स्वयं प्रस्ताव रखने रहथिन मुदा बिजली ई कहिकेँ बात टारैत रहलि जे एहि जन्ममे हमरा लोकनिक प्रेम एहिना रहओ, अग्रिम जन्ममे अहाँक पत्नी होएब। बिजलीक चरित्रक प्रसंग डॉ0 अमरनाथ झा कहैत छथि–'' तेँ एहि बिजलीक चरित्र शाश्वत मानव संस्कृतिक अनुकूल नहि कहल जाए सकैत अछि, केवल स्थापित सामाजिक व्यवस्थाक प्रति विद्रोह करबामे ई सीमित रहि जाइत छथि। एहि प्रसंग इहो बात ध्यान देवा योग्य अछि जे एहि उपन्यासमे बिजलीक छोट भाए सरूपा भूमि अधिकार संबंधी राजनीतिक आन्दोलन के मुखर बनाए जाहि मार्क्सवादी मान्यताक जयघोष कएल गेल अछि से मान्यता बिजलीक एहि कामनाम अभिव्यक्तिसँ खंडित भए जाइत अछि। जे अग्रिम जन्ममे कलपू मिश्रक विवाहित पत्नी बनल। मार्क्सवादमे आत्माक नित्यता ओ पुनर्जन्म तथा परलोक इत्यादिकेँ पूर्णतः मिथ्या कल्पना मानल गेल अछि, एहि बातकेँ उपन्यासकार ललित कोना वा किएक विसरि गेलाह से एकटा आश्चर्य विषय थिक, आओर तें क्रान्तिवाहिनी बिजली द्वारा पुनर्जन्मे आस्था व्यक्त कराए ललित जी किछु प्रेमजालमे ओझरायल बुझि पड़ैत छथि।''[265] परन्तु हमरा बूझि पड़ैत अछि जे डॉ0 अमरनाथ झाक कथनमे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण सँ विश्लेषण कएला पश्चात् कोनो दम नहि बुझि पड़ैक अछि। प्रेम वासना जीवनक एकटा एहन पक्ष थिक जाहिमे पूनर्जन्मक प्रश्न सहज ढ़ंगसँ नायिकाक मानस–पटल पर उपस्थित भए सकैत अछि। मार्क्सवादी विचारधाराक परिप्रेक्ष्यमे एकर मीमांसा करब समीचीन नहि बूझि पड़ैछ।

एहि उपन्यास मध्य भूमिपतिक अत्याचार सहन करैत–करैत जखन आजित भऽ जाइत अछि तँ प्रतिक्रियामे विद्रोह कऽ दैत अछि। डॉ0 अमरेश पाठकक शब्दमे जमींदारी उन्मूलनक फलस्वरूप उपस्थित समस्याकेँ लए लिखल गेल ललितक पृथ्वीपुत्रमे सामाजिक परिवर्तनक स्वर अधिक

---

[264] श्री ललितेश मिश्र ''ललित''–पृथ्वीपुत्र, पृ0–2

[265] डॉ0 अमरनाथ झा–मैथिली अकादमी पत्रिकाः सितम्बर–अक्टूबर–88 अंकमे प्रकाशित निबंध ''मैथिली उपन्यासमे वर्णित किछु जीव'न्त नारी'' पृ0–40–41

मुखरित भेल अछि। एकर कथावस्तुके प्रसंग डॉ0 पाठक कहैत छथि जे एहिमे –'' बदलैत सामाजिक स्थितिक चित्रण अछि जाहिमे निम्नवर्गीय जीवनक परिवर्तित रूपक विश्लेषण भेल अछि। सामाजिक बंधनक चित्रण कए ललित एक नव अध्ययनक श्रीगणेश करैत छथि। विसेखी, सरूपा, गेनमा आदि एहि उपन्यासक विभिन्न पात्र अपन अधिकार बुझैत अछि। ओकरा अपन खेतक प्रति ममता छैक। पृथ्वीपुत्रक कथानकक बंधन कतहु शिथिल नहि भेल अछि। एकर चित्रणमे स्वाभाविकता एवं घटनाक वर्णनमे प्रवाह छैक। अनुकूल वातावरणक पृष्ठभूमिमे घटनाक निर्माण कथावस्तुकेँ विश्वसनीय एवं प्रभावोत्पादक अछि।''[266]

एहि उपन्यासक प्रसंग प्रो0 रमानाथ झाक विचार ज्ञातव्य थिक–''जीवनक समस्या दिशि श्री ललित जी एहिमे जे दृष्टिकोण अंकित कएल अछि से ततेक स्वस्थ अछि, भव्य अछि, सत्य पर अवलम्बित अछि जे एहिसँ हमहि टा आकृष्ट भेल छी से नहि, जें केओ एकर गंभीरतापूर्वक विचार करताह बिनु आकृष्ट भेले नहि रहि सकैत छथि। कर्त्तव्याकर्त्तव्य बुद्धि–विवेक, जीवनक ममता, सहजात प्रवृत्तिकेँ ओ एहि सहजात प्रवृतिकेँ प्रधानता दए श्री ललित जी एहि उपन्यासमे मानव स्वभावक नैसर्गिक प्रवृत्ति ओ भावनाकेँ जे प्रधानता देल अछि से हुनक स्वस्थ दृष्टिबोधक द्योतक थिक। ई उपन्यास कोनहु वर्ग विशेषक अथवा समाज विशेषक नहि, प्रत्युत मानव जातिक मूलभूत भावना आ वासनाक चित्र उपस्थिति करैत अछि। अतएव अनेक दृष्टिसँ श्री ललितजीक पृथ्वीपुत्र हमरा अंग्रेजीक विश्वविभुत कथाकार टामस हार्डीक उपन्यास मोन पाड़ि दैत अछि।''[267]

डॉ0 जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे लिखने छथि। He has given a vision and profundity to the poorest clases in rural Mithila- Though he reveals an imanturity in handiling the great moments in the life of his characters, Yet on the whole here or hereoine in the Maithili novel"[268]

जे से एतेक मानहि पड़त जे जमींदारी उन्मूलन पृष्ठभूमिमे राजनीतिक चेतनाक महत्त्वपूर्ण भूमिका कहल जा सकैछ। प्रस्तुत उपन्यासमे जमींदारी उन्मूलनक बाद उत्पन्न भेल परिस्थितिक यथावत चित्रण भेल अछि। उपन्यासकार यद्यपि एहि दिशामे सचेष्ट रहलाह अछि जे सामंत एवं श्रमिकक अपन–अपन अधिकार रक्षाक विवेचन करबाक क्रममे पात्रक राग–द्वेष, प्रेम–घृणा इत्यादि भावनाक स्वस्थ चित्रण प्रस्तुत कयल जाए।

डॉ0 धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क ''भोरूकवा'' प्रकाशन कालहिसँ अत्यन्त लोकप्रिय भऽ गेल तथा चर्चाक विषय बनि गेल। राजनीतिक चेतना के साकार करैत धीरेन्द्र सर्वप्रथम मैथिली उपन्यासकेँ वैवाहिक लक्ष्मण रेखाक परिधि टपाय सर्वहारा वर्गक आशा, आकांक्षा, संघर्ष पीड़ा, उद्वेलन एवं धैर्यक चित्र लऽ एहि उपन्यासमे प्रगट भेलाह। ई उपन्यास एकटा एहन दस्तावेज थिक जाहिमे निम्नवर्गक स्वार्थ एवं संघर्षक झाँकी प्रस्तुत कएल गेल अछि संगहि एहिमे बाबू–भैयाक बदलैत मनोवृत्तिक एवं शोषित किसानक चित्रांकन कएल गेल अछि।

---

[266] परिचारिका, पृ0–175

[267] मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन, पृ0–158

[268] Dr. J.K. Mishra- History of Maithili, Literature, p. 21

ठकबाक वर्णन एक एहन पात्रक रूपमे कएल गेल अछि जकरा धर्म पर आस्था छैक एवं आस्था छैक अपन बाहुबल पर किन्तु सामाजिक कठोर बंधन केँ तोड़ि देबाक शक्तिक अभाव छैक ओकरा व्यक्तित्वमे राधे मिश्रक प्रपंचक जालमे फसि ठकबा बुढ़वाकेँ कोन–कोन ने कष्ट उठबए पड़ैत छैक किन्तु ओ शांत अछि। ने तँ ओकरा सम्यक प्रतीक्षा छैक आने प्रतिशोधक सामर्थ्य। ओ उदासीन भए सामन्तवादी आर्थिक व्यवस्थाक प्रपंचक जालमे फसि जीवन भरि राधे मिश्रक कर्ज सँ मुक्त नहि होइत अछि। ठकबाक परिचय निम्नलिखित शब्दमे देल गेल अछि–

''ठकवा बुढ़वा बढ़ सूतिहार छल आ मेहनतिया तँ छले। तें एक कोसीमे कुसियार तँ दोसरमे धान, तेसरामे रब्बी त चारिम मे अल्हुआ। ओतबे खेतमे ओ सभ तरहक जिनित उपजा कए। एहि काजमे ओकरा स्त्रियो पूर्ण सहयोग दैक।''[269] तथापि भोरूकवाक चरित्र–'चित्रणमे दोष सेहो अछि। लेखक कोनो पात्रक संबंधक अपन निश्चित धारण द्वारा चरित्र पर पूर्ण प्रकाश नहि देल जा सकैत अछि। डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' कहैत छथि।

''माधो तथा केशीक सहानुभूति पाबि अंतमे बुधनाक जीवन सुखमय भए जाइत छैक। एहि सँ ग्राम्य वातावरणमे नव जागरण उपस्थित भेल अछि, नव आशा–आलोकक ''भोरूकवा''क उदय भेल अछि।''[270] प्रस्तुत उपन्यासमे राजनीतिक चेतनाक प्रसंग डॉ0 जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे लिखने छथि–"Prof. Dhirendra deserves to be noticed. First his novel Bhorukva (The Morning star) announced the down in the life of the lower classes in the villages."[271]

भोरूकवामे दुइये प्रकारक पात्रक सृष्टि कएल गेल अछि। एक प्रकारक चरित्र एहन अछि जाहिमे मात्र गुण छैक ओ आदर्श अछि आ दोसर प्रकारक ओ चरित्र जाहिमे दोषे–दोष छैक। पहिल वर्गक चरित्रक उदाहरण ठकवा, थेथरी, मुसहरबा, धनेसरा, माधो आदि दोसर वर्गक पात्र छथि राधे मिश्र, बिट्ठो वाली आदि। एहि तरहें पात्रक चरित्र निर्माणमे कृत्रिमता आबि गेल अछि। पात्रक चरित्र पर प्रकाश देबाक हेतु एहि रचनामे व्यापक परिवेशक निर्माण नहि कएल गेल अछि। डॉ0 अमरेश पाठक राजनीतिक चेतनाक विकास संबंध में लिखैत छथि– ''भोरूकवा''मे नवजागरणक संदेश भेटैत अछि। ठकवा परम्परावादी किसानक प्रतिनिधित्व करैत मालिकक पैघ सँ पैघ अत्याचारक विरोधमे किछु नहि बजैत अछि, किन्तु बुधनाकेँ एहन समाजमे रहब सह्य नहि छैक। ओ शहरक बाट धरैत अछि संग–संग ओतए जाए मालिकक बेटाक सहानुभूति प्राप्त करैत अछि। उपन्यासकार ठकबा, राधे मिश्र, मुसहरबाक चरित्र–चित्रणमे पूर्ण सफल भेलाह अछि। शोषित वर्गक मूल वेदनाक चित्रण भोरूकवामे भेटैत अछि। उपन्यासक पात्र सभ स्वाभाविक चित्रणक कारणें सहानुभूतिक पात्र बनि जाइत अछि। ''भोरूकवा'' वस्तुतः बदलैत सामाजिक वातावरणमे प्रातः कालक सूचना दैत अछि।''[272]

---

[269] भोरूकवा, पृ0–57

[270] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–301

[271] Dr. J.K. Mishra- HJistory of Maithili literature, P-240

[272] डॉ0 अमरेश पाठक–मैथिली उपन्यासक आलोचनाक, अध्ययन, पृ0–154

मिथिलाक माटि–पानिक सौरभ भोरूकतवामे भेटैछ। नवीनताक नाम पर अपन परम्पराके त्यागवाक जे लति एम्हरूका किछु लेखकके ँ भऽ गेल छनि ताहिसँ धीरेन्द्र बाँचल छथि। मैथिली साहित्यमे कहाँ धरि नवता ग्राह्य थिक तकर सटीक व्याख्या श्री सुधांशु शेखर चौधरीक एहि पंक्तिमे भेल अछि ''राकेटक एहि युगमे धरती छोड़बाक कल्पनामे नवीन पीढ़ीक कतिपय उपन्यासकार कथाकार अनर्गल वस्तु सत्यक स्थापनामे लागल छथि जे भारतक भूमिक लेल वस्तु सत्य भए नहि सकैत अछि। नवीनताक झोंकमे हम यदि थाटीक–वाटीक स्थान पर प्लेट आदिक उपयोग करी तँ क्षति नहि, किन्तु तिलकोरक पातमे पिठारक स्थान पर अंडाक लेप चढ़बऽ लागल तँ साहित्यमे भारतक आ मिथिलाक अस्तित्व कतऽ भेटत? कथा साहित्यमे नवीन शिल्पक हम पक्षवाती छी, किन्तु कथन धारि हमर अपने होयबाक चाही।''[273] भोरूकवाके ँ एहि कसौटी पर कसलासँ ओकर शुद्धता स्पष्ट परिलक्षित भऽ जाइत। वर्गीय चरित्रक कारणें प्रस्तुत उपन्यासमे राजनीतिक चेतनाक दिग्दर्शन स्वतः भए जाइत अछि।

हिनक दोसर उपन्यास ''कादो आ कोइला''मे ग्राम्य जीवन ओ नागरिक जीवनक झांकीके ँ देखाओल गेल अछि। गामक प्रतीक थिक ''कादो'' आ शहरक प्रतीक ''कोयला''। ''मिथिला मिहिर''मे धारावाहिक रूपे ँ प्रकाशित भेल तँ एकरा प्रसंग ''इन्तर टाइटिल''मे धीरेन्द्र जो स्पष्ट रूपे ँ निम्नलिखित शब्दावली अंकित कए देलन्हि ''मजूदी करब, रोड़ा पौड़व–मुदा अस्तित्वक रक्षा लेल लड़ब। हम कोनो धन्ना सेठक बेटा नहि ओह– गामक धरती सँ लए शहर धरि एक गाहे हाल।''[274]

एहिमे कतहु दू–मत नहि अछि जे विभिन्न मार्मिक संदर्भ सँ भरल एहि जनवादी उपन्यासमे यथार्थवादी चित्रण एवं आस्थाक स्वर मुखरित भेल अछि। वस्तुतः प्रस्तुत उपन्यासमे एकगोट एहन पात्रके ँ ठाढ़ कएल गेल अछि जे गमैया राजनीति ओ गामक वातावरण सँ एहि तरहे ँ ओझरा जाइत अछि जे शहरमे जाए ठओर खोजैत अछि– किन्तु शहरमे एहन कोनो चीज नहि भेटैत छैक जे ओकरा लेल आकर्षणक केन्द्र हो। एहन सन बुझि पड़ैत अछि जे वर्त्तमान समयमे गामक जीवन सुखद बुझि पड़ैछ आ ने शहरिए जीवन।

डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा कहैत छथि–'' जँ एहि कृतिक मनोविश्लेषणात्मक संदर्भमे कहल जाए जे उपन्यासक कथ्यक रूपमे लेखक पलायनवादक विपरित संघर्षमे लागल रहबाक प्रेरणा दैत छथि, तें अत्युचित नहि होयत। धीरेन्द्र जी गाम आ शहरक वातावरण आओर चित्र–चरित्र उरेहवामे बहुत अंश धरि सफल भेल छथि।''[275]

यथार्थतः उपन्यासकार द्वारा प्रस्तुत निम्न शब्दावली मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ उल्लेखनीय मानल जा सकैछ।'' ओहि दिन सन ग्लानि विरनके ँ अपना जिनगीमे कहिओ नहि भेलैक। एक प्रकारक अपराधी भावना सँ भरि जकाँ गेल छलैक ओकर मोन। ओकरा लागि रहल छलैक जेना ओ आत्महत्या कह लेने रहय। नेने सँ अपन परिवेश सँ फुट एकटा विचित्र संस्कार रहैक ओकर मुदा स्थिति सर्वदा ओकरा सँ विपरीत रहल। तैयो सिर्फ धरि अपनाके ँ बचवैत आयल

---

[273] परिचारिका, पृ0–188

[274] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–301

[275] डॉ0 श्रीमती प्रभावती झा–स्वा0मै0सा0मनो0प्रवृति, पृ0–190

छल गामक कादोमे एकटा मलको काक पवित्र पूछ पूष्पित भऽ जखन सुखा गेल रहय तँ ओतहु सँ भागि गेल छल विरन.....। गामसँ भगवाक एकटा जबर्दस्त कारण शकुन्तला सेहो रहय– मुदा की भेलैक भागि कऽ ओकरा? ओकरा जेना लागि रहल छलैक जे ओ कौशल्याक मृत आत्मका संग बेइमानी कयलक अछि। बेइमानी। विरनक आत्मा सिहरि जाइत छैक, मोन पाड़ि कऽ।''[276] एहि उपन्यासक प्रसें डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश''क विचार अछि–'' निम्नवर्गीय जीवन पर आधारित एहि उपन्यासक सभ्यक महत्त्वके अस्वीकारल नहि जा सकैत अछि। एहिमे एक निम्नवर्गीय विरनक जीवन कथा अछि। विरन भुलेटन सिंह द्वारा अपन बहिनक बलात्कार ओ अपन प्रेमिकाक हत्या देखैत अछि, अन्यायकेँ सहबाक हेतु विवश होइत अछि ओ अन्ततः विक्षुब्ध भए कादो सँ तानल गामकेँ त्यागि शहर दिश विदा होइत अछि तथा दरभंगा–पटना होइत कोइलासँ कारी जमशेदपुर पहुँचैत अछि एहि मध्य विरन ओ कौशल्याक, प्रणय–चित्रण, बड़ जीवन्तपूर्ण भेल अछि, अन्यथा सर्वत्र ग्राम्य अथवा नगर जीवनक कुत्सा मात्रक चित्रण अछि।''[277] डॉ0 जयकान्त मिश्रक शब्दमे–"Kado Auro Koila upgrades the life of the lowly and the trodden in the cities."[278]

निम्नवर्गीय एवं सामंत वर्गक मध्य कोना सामंजस्य नहि होइत छैक तेँ हेतु एहिमे राजनीतिक चेतनाक पूर्ण निर्वाह भेल अछि।

श्रीमती लिली रे''क ''मरीचिका'' नामक उपन्यास दुई भागमे प्रकाशित अछि। पहिल भागक प्रकाशन 1981मे भेल अछि जखन कि दोसर भागक 1982मे। दुहू भाग दीर्घकाय अछि। प्रथम भागमे 474 पृष्ठ अछि तँ दोसर भागमे 504। प्रथम भाग जतेक दमगर अछि ततेक दोसर भाग नहि। प्रथम भाग अपना आपमे स्वतंत्र अछि, तेँ ओकरा हेतु दोसरा भाग पूरकक काज नहि करैछ। प्रथम भाग पर 1982क साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटि चुकल अछि। ''मरीचिका'क प्रथम भागक संबंधमे मैथिली अकादमी, पटनाक तत्कालीन अध्यक्ष पं0 श्रीकान्त ठाकुर ''विद्यालंकार'' लिखलन्हि अछि––'' एहिमे मिथिलाक एक पूर्वांचलीय सामंत परिवारक पचास वर्ष पूर्वक गतिविधिक जीवन्त मार्मिक ओ विशद् चित्रण अछि देश, काल आ पात्र तीनूकेँ ''साकार''क पाठकक समक्ष राखल उपन्यासक एक मुख्य धर्म थिक।''[279] एकर द्वितीय भागक प्रकाशकीय मे मैथिली अकादमीक पूर्व अध्यक्ष डॉ0 मदनेश्वर मिश्र कहैत छथि– ''समाजशास्त्रीय भाषामे सामाजिक ''एलिट'' तथा सामाजिक संरचनाक स्वरूप निश्चित रूपेँ परिवर्तित भेलैक अछि। मिथिलाक पूर्वांचलीय सामन्ती सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे एहि परिवर्तनशीलताक रंगीन चित्रपट थिक ई उपन्यास। एतेक विशाल दृश्यकेँ सूक्ष्मतापूर्वक सविस्तार देखयबाक हेतु विशाल कैनभास चाही तेँ ई उपन्यास दुनू भाग मिलाय हजार सँ वेशी पृष्ठमे समाप्त भेल अछि।''[280]

''मरीचिका'' थिक एकटा खंसैत सामन्त घराना आ तकर परिवेशक सुविस्तृत कथा। प्रस्तुत उपन्यासमे संवेगक धूरी संग नचैत आओर दर्पक हाथ प्रताड़ित होइत हीराक कथा कहल गेल अछि। पतनोशील सामंती घराना आब़ अछि सामाजिक मूल्यसँ। ''मरिचिका''मे बहुतो रास

---

[276] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–301

[277] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–301

[278] Dr. J.K. Mishra- HJistory of Maithili literature, P-240

[279] मरीचिका (प्रथम भाग): प्रकाशकीय पं0 श्रीकान्त ठाकुर ''विद्यालंकार''।

[280] मरीचिका (द्वितीय भाग): प्रकाशकीय डॉ0 मदनेश्वर मिश्र।

कथा–उपकथा समाविष्ट अछि। एहि कृतिक प्रसंग कुलानन्द मिश्र आरंभ (3)मे पोथी समीक्षा स्तम्भ मध्य लिखैत छथि–'' सामंती घराना आ तकर कर्णधार लोकनि प्रजा संग समय–समय पर स्थापित होइत संबंध उत्सव, राजकीय आ राजपाटक'क अभिवृद्धि लेल होइत यत्न, एहि सभमे ओझरायल अनेक सोझ–टेढ़ चरित्र, पूर्णियाँ, कलकत्ता आ आसामके क्षेत्र विशेष आ तकर माटि–पानि आ एहि सभक संग होरा–एहि उपन्यासमे एहि सभक बात थिक आ बहुत आन बात थिक। सामंती संस्कृतिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीमे कोनो आन उपन्यास आना विषयकेँ एतेक विस्तारसँ एखन धरि नहि रखने छल।''[281]

एहिमे कतहु दू मत नहि जे होराक चरित्रकेँ उपन्यास लेखिका श्रीमती लिली रे बड़ यत्नसँ गढ़लन्हि अछि। एकगोट सामंती परिवेश मध्य ब्राह्मण राजाक परिवारमे होरा बाल्यावस्थहिमे प्रवेश करैछ नेना साहेब संग खोलएबा–धुपएबा लेल। अभिजात्यक व्यामोहमे ई राजा–परिवार जीवैत अछि। फूलतोड़ा सन कर्मचारीक बेटी होरा मातृ हीना अछि। ओकर चारित्रिक विशेषता छैक भाव प्रवणता। राजकुमारक संग खेलाइत–धुपाइत आ'' राजा–रानीक काजमे हाथ बँटबैत ओ समर्थ होइतहिं अपनाकेँ एकगोट अगम अथाहमे पबैत अछि। शुरू–शुरूमे अपन आओर राजकुमारक संग मूल्य–बुझबामे राज कुमारक संग अपन संबंधक प्रवृत्ति बुझबामे भ्रममे पड़ि जाइछ। राज कुमारक विवाह आओर पत्नीक संग हुनक आसक्ति जे होराक अन्तरकेँ झकझोड़ि दैत छैक तकर क्षेत्रमे अध्यापनक दृष्टिसँ अपन महत्त्व अछि। पुनः गीत संगीतमे लागल दीनानाथ संग हीराक विवाहक आयोजनमे हीरा राज कुमारक आँखिक कुत्सित भाषाकेँ पढ़ैत अछि आ टूटि जाइत अछि। पराजित भए जाएब होराक नियतिमे भनहि हो, किन्तु पराजयकेँ स्वीकार करब ओकर नियतिमे नहि अछि। हीराक आइत ''अहं'' अपन रास्तें आसाम चलि जाइत अछि। ओ अपना सँ प्रतिशोध लेबाक क्रममे विभिन्न व्यापार रचबैत अछि। दीनानाथ होराक संग दैत छथि। राजकुमारक बेटी आ होराक बेटाक विवाहक संग होराक पराजय होय एकटा निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि। होरा मनहिं हारि जाइछ। हारल सन भए जाइछ किन्तु ओ हारि नहि मानैछ।

प्रस्तुत उपन्यासक कथा जन–सामान्यक कथा नहि। एहि दुआरे निम्नवर्गक जीवन एवं सामाजिक उभर–खाभर एहिमे प्रकारान्तरे सँ भेटैछ। होरा निःसंदेह भारतीय नारीक पारम्परिक भाग्यवादक आधुनिक विकसित रूप थिक। एहि उपन्यासमे मोटा–मोटी विस्तृत काल खण्डक चित्र चलचित्रक टोल जकाँ देखल जा सकैत अछि। चरित्र सबहिक अभिव्यक्ति नितांत यथार्थवादी ढ़ंग सँ राजनीतिक चेतनाक दृष्टिसँ मरीचिका उपन्यासक जखन हम मूल्यांकन करए बैसब तँ बुझि पड़त जे होराक चरित्र एकटा जीवन्त नारीक प्रतीक बनि गेल अछि। राजपारिवारिक आश्रित दरिद्र ब्राह्मणक बेटी अपन रूप–गुणक कारणें ओहि राजपरिवारमे हिलि–मिलि कऽ ओकर ततेक बेसी विश्वासक प्राप्त कए लैत छथि जे, ओहिठामक कोनोटा विषय हिनका हेतुएँ गोपनीय नहि रहि जाइत अछि। मुदा ई ओहि भोग–विलासक भूमिमे लिप्त नहि होइत छथि। जखन राजा साहेब हिनक विवाह बसुरिया झा नामक एकटा दुर्बल ओ दरिद्र व्यक्तिक संग एहि दुआरे करबाए दैत छथि जे ओ हुनकहि आश्रयमे जीवन भरि एहि जेतीह तखन होराकेँ अपन स्थिति बुझवामे कनेको भागट नहि होइत छन्हि। राजपरिवारक विलासपूर्ण स्थितिके मोह त्यागि अपन पतिक संग सुदूर नगरमे पहुँचैत छथि। स्वावलम्बी–जीवन व्यतीत करए लगैत छथि आओर अपन पतिक जीवनकेँ सेहो एहि प्रकारें अनुप्राणित करए लगैत छथि

---

[281] आरम्भ (3) स्तम्भ, पोथी समीक्षा, पृ0–79

जे हुनक सभटा दुर्बलता सबलतामे परिणत भए जाइत अछि। सामाजिक ओ सांस्कृतिक संक्रमण कालमे केओ नारी अपन मर्यादापूर्वक अपन ओ अपन परिवारक अस्तित्व रक्षा कोना कए सकैत अछि? संगहि देशव्यापी चिन्तनधारासँ सम्पूर्ण रहितहुँ पारिवारिक एकताक निर्वाह कोना कएल जा सकैत अछि तकर एकटा जीवन्त आदर्शक छवि होराक परिचयमे भेटैत छैक।

तुलनात्मक दृष्टिसँ विवेचना कएला सन्तां बुझि पड़ैछ जे ललितक पृथ्वीपुत्र नामक उपन्यासक नायिका बिजलीक जीवन्त वृत्त जीवन रहितहुँ सामान्यजनक हेतु अनुकरणीय नहि कहल जा सकैछ किन्तु लिली रे'क 'मरीचिका' उपन्यास होराक चरित्र बहुतो शोषित–पीड़ित नायिकाक हेतु एकटा मार्ग दर्शकक काज कए सकैछ। ओकर जीवन पथके 161 प्रशस्त कए सकैछ सम्पूर्ण ''मरीचिका'' उपन्यासमे राजनीतिक चेतनाक समावेश भेल अछि। आओर एहि पर आधारित ई उपन्यास अछि।

श्रीमती लिली रे'क दोसर उपन्यास राजनीतिक चेतनाक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल ''पटाक्षेप' अछि। स्वतंत्रताक पश्चातो भूमिजीवी, ग्राम्यजनताकेँ समताक अधिकार नहि भेटलैक एवं ओकर शोषण होइत रहलैक। फलस्वरूप रक्त क्रान्तिक उग्र–भावना जागरूक तरूण लोकनिक अन्तस्थलकेँ उद्वेलित करए लागल। शिव नारायण एहने नक्सलवादी नेता थिक जे बटाईदार केँ आधा फसिल मासिककेँ देबासँ रोकैत अछि ओ क्रमिक अपन कुप्रभाव बढ़वैत जाइत अछि। ओकरा जन समर्थन एहि रूपक प्राप्त भेलैक जे 'सभ सुन' चाहैत छल चीन देशक इतिहास, माओत्से–तुंग बीस वर्षक दीर्घ युद्ध यात्रा एवं अंतमे सर्वहाराक विजय। एहि प्रक्रियामे पूर्णियाँ जिलाक तुलसीपुर ग्राममे वर्ग संघर्ष उमग्र भए उठल। विभिन्न प्रान्तक उग्रपंथी नव–युवक अनिल, दिलीप ओ सुजीत ओतए आबि शिव नारायण सँ मिलि रक्त क्रान्तिक योजना बनवए लगलाह।

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' अपन इतिहासमे एहि संबंधमे लिखने छथि– ''नक्सलवादी क्रान्ति–भावनाक प्रति सहानुभूतिपूर्वक प्रगतिशील प्रवृत्ति दर्शन होइत अछि। परन्तु मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहि उपन्यासक महत्त्व अछि नवीन ओ ज्वलन्त राजनीतिक विचारधाराकेँ रोचक शैलीमे मैथिली उपन्यासक विषय बनाए नवीनताक सन्निवेश करबाक दृष्टिएँ।''[282]

''धरती जागि उठल''मे प्रो0 नित्यानन्द झा वर्त्तमान राजनीतिक ओ आर्थिक व्यवस्थाक प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त करैत अभिजात वर्गक प्रति विक्षोभ ओ सर्वहारा वर्गक प्रति मार्क्सवादी पक्ष ग्रहण कएल अछि।

जीवकान्तक ''पनिपत'' मैथिलीक बहुचर्चित उपन्यासक कोटिमे अबैत अछि। एहिमे एक व्यक्तिक रूपमे नाक (अरविन्द)क मनोविश्लेषणक संग–संगत सामाजिक समस्या नीक जकाँ उजागर भेल अछि नायक समाजशास्त्रमे एम0ए0 पास छथि, तथापि रोजगारक समस्या समाधान हेतु गली–गली भटकैत छथि। जीवनमे सभ दिशसँ निराशा हाथ अबैत छन्हि आ अन्ततः संघर्षक ज्वालामे झड़कैत रहैत छथि। उपन्यासकार द्वारा जहाँ–तहाँ, ग्राम्य जीवनक विवशता, अंधविश्वास, तुलागत स्पर्द्धा, ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट, आदिक मर्मस्पर्शी चित्रण भेल अछि। ''पनिपत'क अन्य नायकक संबंधमे डॉ0 ''श्रीश' कहलन्हि अछि ''नायक अतिरिक्त जे पात्र छथि

[282] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–318

नायकक पत्नी, माए–बाप सभ ग्राम्य जीवनक करूणा, विवशता तथा नैराश्य कें ओढ़ने समय काटि रहल छथि। सभमे आच्छन्न असंतोष ओ अवसादकें लेखक बड़ नीक जकाँ व्यंजित करबामे समर्थ भेल छथि।''[283]

हिनक दोसर उपन्यास 'दू कुहेसक वार'मे जितेन्द्रक व्यक्तित्वक एकटा अन्तमुखी चरित्रक रूपमे देखाओल गेल अछि।

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश' एहि उपन्यासक संबंधमे कहैत छथि–'' एहिमे नहि तँ कथाक प्रधानता अछि आ ने घटनाक बाहुल्य, मुदा एहि मध्य किशोर भावनाक बड़ सुन्दर चित्रण भेटैत अछि जे यथार्थ होइबहुँ रोमांटित अछि, उपन्यास होइतहुँ कविता अछि। एहि उपन्यासकें पढ़लासँ भाव लोक संबंधी लेखकक गंभीर अर्न्तदृष्टि तथा सूक्ष्म विश्लेषण पटुताक दर्शन होइत अछि मुदा उपन्यासमे जे विविधता ओ व्यापकता चाही तकर एहि मध्य अभाव बूझि पड़ैत अछि।''[284]

जीवकान्तक ''आगिनवाण' लघु उपन्यास होइतहुँ ग्राम्य जीवनक सम्पन्न ओ विपन्न दुहू पक्षकें उजागर कए ओहिमे भोगैत जीवनक अन्तरंग के अपन सजीव भाषामे चित्रित करैत अछि। एहिमे कुन्तीक माउक दरिद्रता सपनाक एकान्त मृत्युबोध, सुजाताक भाई ओ पितिआइनिक कलह एवं मैयाक मर्यादा ओ अनुशासन सभक प्रासंगिकताक मूल्यांकन सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे उपयोगी कहल जा सकैछ। एहि उपन्यासक प्रसंग डॉ0 जयकान्त श्रि कहैत छथि– Even his last great novel Aginban (The Arrow of Fire) is a great allegory of the Fire hunger, frustration and unemployment that has overtaken modern mithila and demands our immediate attention."[285]

एहि तरहें जीवकान्त जीक उपन्यासक सभमे राजनीतिक चेतना पाओल गेल अछि।

''नवारम्भ'' उपन्यास उपन्यासकारक प्राचीन गौरव आ परम्परा आ ओकर ध्वस्त समाधि पर उपजल एकटा लज्जास्पद सभ्यताक बीच नव चेतनाक स्फुरणक कथा अछि। जँ पहिल भागमे हवेली मोहनपुर कथामे ध्वस्त होइत प्राचीन गौरव एवं परम्पराक चित्रण भेल अछि, तँ दोसर भागमे लंका मोहनपुरक कथामे तकर समाधि पर उपजल लज्जास्पद सभ्यताक चित्रण कयल गेल अछि। तेसर भागमे दलित वर्गक नव चेतनाक स्फूरण कें अभिव्यक्ति करबाक प्रयास लक्षित होइछ।

प्रस्तुत उपन्यासमे वर्णित प्राचीन गौरव आ परम्परा सामन्त वर्गक अछि। एकर रक्षक छथि श्रीकान्त चौधरी। जेनाकि पहिने उल्लेख भऽ चुकल अछि जे एहि उपन्यासक पहिल भागमे सामन्त वर्गक टूटैत आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक दबदबाकें देखाओल गेल अछि। एकर ध्वस्त समाधि पर जाहि लज्जास्पद सभ्यताक डारि–पास चढ़ल छैक सरकार सहयोगी एकवाली चौधरी, हरिश्चन्द्र मिश्र, महेश मास्टर इत्यायदि कतेक पात्र मनाओल जा सकैछ आओर एकर बीजारोपण कएने छथि नायक रवि। उपन्यासकार एहि सभ्यताक बीच नव–चेतनाक स्फूरण

---

[283] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–304

[284] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–304

[285] Dr. J.K. Mishra- HJistory of Maithili literature, P-242.

लेल रविक उपयोग कयने छथि। किन्तु ओ नपुंसक नायक रूपमे स्थापित भऽ कऽ गेल छथि। नायकक अंग–अंगमे सामंती संस्कार रचल–बचल छन्हि जे सामाजिक दृष्टिएँ देश–परम्पराक प्रबलता सिद्ध करैत अछि। कविताक संग हुनक बलात्मकार ओहि संस्कारक देन थिक परंच साहसक अभावक कारणें ओ गामसँ भागैत छथि आ जहिया तक ओ वापस गाम अबैत छथि ताबत बहुत किछु बदलि गेल रहैत अछि। हुनक सम्पत्ति हड़पबाक योजना बनैत रहैत, किन्तु ओ अपन अधिकार सँ निर्लिप्त भए प्रणयक दोसर संस्करण भए जाइत छथि। शोषणक प्रक्रिया सँ अनभिज्ञ ओ अनचोकहिमे क्रान्ति एवं शोषणक गप्प करैत छथि, अपन सुधारवादी डेगसँ गामक नक्शा बदलि देमए चाहैत छथि किन्तु हुनका नव समाजक कल्पना नहि छन्हि, तेँ हुनका सभटा गतिविधि हुनका चरित्रकेँ असामान्य नपुसंक आओर अविश्वसनीय बना दैछ। अंतमे कविता आओर रविक संबंध प्रेमक संबंध नहि भऽ कए प्श्चाताप सँ आबद्ध संबंध भऽ जाइछ ते सामाजिक दृष्टिकोण सँ अपन एकटा फराके महत्त्व रखैत अछि। ''नवारम्भ'क प्रसंग समीक्षा करैत श्री सुधांशु शेखर चौधरी, कहैत छथि ''हमरा लग रहब''क नायक प्रणव उपन्यासकारक तर्जनीक नीव पर नाचऽ बला अपनामे देवत्व आरोपित कयने रहनिहार युवक यदि चरित्रक कृत्रिमता अपनामे समेटने रहल अछि तँ ''नवारम्भक नायक रवि ताहि सँ निश्चित रूपसँ समर्थ चरित्र अछि जे सत्य प्रगट भऽ गेला पर कम सँ कम संघर्षक हेतु सन्नद्ध तँ होइत अछि। ई भिन्न कथा जे उपन्यासक अंतिम नाटकीयता दऽ अछि, उपन्यासकेँ हल्लुक बना दैत अछि।''[286]

वस्तुतः ''नवारम्भ''मे उपन्यासका ओहि सभ पक्ष केँ जगजिआर कयलन्हि अछि जे ईर्ष्यान्द्वेष, छल–कपट, स्वार्थपरता, दलित वर्गक शोषण, ग्राम्य राजनीतिक विद्रुपता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार प्रभृतिक सजीव एवं यथार्थ अलबम बनाए देल गेल अछि। आओर राजनीतिक चेतनाक विकास एहि उपन्यासमे भेल अछि।

सोमदेवक ''ब्रह्मविवाह'' नामक उपन्यास अछि जे मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपमे बहरायल। बादमे पुस्तकाकार भेल ''होटल अनारगली'क नामसँ। उपन्यासकारकेँ ओना पहिनेक उपन्यासक अपेक्षा एहिमे निश्चित रूपें सफलता भेटलन्हि। प्रस्तुत उपन्यासमे तस्कर, व्यापार एवं काला बाजारीक समस्याकेँ लए कऽ व्यापार संबंधी दाओ–पेचक तथ्यात्मक ढ़ंगे चित्रण कएल गेल अछि। एकरा मैथिलीक प्रथम जासूसी उपन्यासक कोटिमे राखि ''श्रीश'' जो कहैत छथि ''वस्तुतः ई मैथिलीक प्रथम जासूसी उपन्यासक थिक। देशमे बढ़ैत भ्रष्टाचारकेँ देखि सरकार एकर विरूद्ध सामरिक अभियान आरम्भ करैत अछि। एहि भ्रष्टाचार भेदी मोर्चाक नेतृत्व करेत छथि सदानन्द जे बजरंग लाल ब्रह्मपिचा'क नामसँ विख्यात तस्कर व्यापारी लखिन्दर सिंहक दलमे मिलैत छथि ओ भेद लैत रहैत छथि। अंतमे ओहि बजरंग लालक हत्या सिंहजी करबाए चाहैत अछि मुदा तावतधरि ओ जालमे फोर्स चुकल रहैत अछि।''[287]

आगाँ ''श्रीश'' जी ठीक कहैत छथि– 'ओहि पाप निरस्त समाजक पर ओ नारीक विविध विषयक कुंठा, असंतोष आदिक जाहि यथार्थक संग उपन्यासकार वर्णन कयल अछि जे हुनक तीक्ष्ण अर्न्तदृष्टि ओ प्रतिभाक परिचायक थिक।''[288] राजनीतिक चेतनाक दृष्टिएँ कहल जा

---

[286] सुधांशु शेखर चौधरी–मिथिला मिहिर (6 मई 1979)मे पुस्तक परिचय स्तम्भमे व्यक्त विचार, पृ0–218
[287] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–299
[288] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–299

सकैछ जे जाहि वर्गक चित्र प्रस्तुत कएलन्हि अछि ताहिमे निःसंदेह सफलता प्राप्त भेटलन्हि अछि।

सुधांशु शेखर चौधरीक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास ई बतहा संसार''मे राजनीतिक चेतनाक सम्यक परिपाक भेल अछि। रचनाकार ने केवल आत्मकथा लिखिकऽ प्रस्तु चरित्र ओ घटनाक प्रसंगमे प्रचुर मात्रामे अर्न्तमनक व्याख्या ओ रहस्यक उद्‌घाटन कए समीक्षक कार्य के हल्लुक कए देलन्हि अछि। प्रत्येक पात्र कामिनी, अखिल, निरंजन, सुदर्शन, चान, प्रभृतिक नग्न रूप में प्रस्तुत भेल अछि वस्तुतः ओकरा सभक चरित्र ओ स्वभावकेँ मूल्यांकन करबाक लेल पाठक लोकनि केँ कनेको मानसिक श्रम नहि करए पड़तैन्हि। यथार्थतः एहि उपन्यासक विलक्षणता पाओल जाइत अछि एकर कथात्मक नाटकीयतामे एकर वर्णन विन्यासक प्रसंग डॉ0 ''श्रीश'' लिखैत छथि–

'आधुनिक उपन्यासमे एहि प्रकारक वर्णन केँ हास्यास्पदें कहल जाए सकैत अछि परन्तु समग्र रूपेँ विचार कएलासँ चरित्र सूक्ष्म विश्लेषण, घटनाक रोचक वर्णन स्थान–स्थान पर मानसिक ऊहापोहक चित्रण विचारक प्रौढ़ता एवं भिन्न–भिन्न प्रकारक कथाक संतुलित संयोजन आदि सभ दृष्टिसँ एकरा मैथिलीक श्रेष्ठ उपन्यास कहल जा सकैत अछि।''[289]

श्री विभूति आनन्दक ''सुनगैत एकटा गामक कथा'' दीर्घ कथाक रूप बेसी देखना जाइछ उपन्यास कम। एहि उपन्यासमे गाम रामनगरक नव जागरणक परिवर्तन प्रक्रियामे गुजरैत सामाजिक परिस्थिति एवं मानवीय मनोवृत्तिक सजीव चित्रण भेल अछि। निम्न वर्गकेँ क्रमिक अभिजात वर्गक वर्चस्वताक प्रति विद्रोह, स्वाभिमान ओ संघटनात्मक शक्तिक उदय भए रहल छैक जकर नेतृत्व इन्दु ओ रमेश सन निर्धन नव शिक्षित युवक करैत अछि। उच्च वर्गहुक प्रतिनिधित्व नवयुग चेतना सम्पन्न भैरव पाठक सन युवक एवं शान्ति सन नवयुवती द्वारा होइत अछि।

डॉ0 दुर्गानाथ झा ''श्रीश'' कहैत छथि–'' सुनगैत एकटा गामक कथा''सँ उपन्यासकारमे निहित ग्राम्य जीवनकेँ यथार्थ रीतिएँ अभिव्यक्त करबाक क्षमताक परिचय प्राप्त भए जाइत अछि। परन्तु अन्यान्य अनेक आधुनिक उपन्यासकार जकाँ श्री विभूति आनन्दमे सेहो समाजक सामान्य विकृति केँ अति रंजित कए चित्रित करबाक प्रवृति लक्षित कएल जाए सकैत अछि।''[290]

उपर्युक्त विवेचन विश्लेषणसँ ई सिद्ध होइत अछि जे मैथिली उपन्यासकार स्वतंत्रताक पश्चात् राजनीतिक भावनाक प्रति जागरूकता प्रदर्शित कयलनि अछि।

आर्थिक विपन्नता, सामाजिक एवं राजनीतिक विघटन, वर्ग संघर्ष, जमींदारी उन्मूलन, श्रमिक समस्या, साधन सम्पन्न ओ साधनहीनक द्वन्द्व, पारिवारिक असंतुलन, पारिस्थितिगत द्वन्द्व, शहरी ग्रामीण द्वन्द्व, प्राचीन परम्परा ओ आधुनिकताक द्वन्द्व आदि समाज एवं गामक विविध पक्षकेँ उपन्यासक विषयवस्तु बनाय राजनीतिक चेतनाक प्रति सजगताक प्रदर्शित भेल अछि।

---

[289] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–319

[290] डॉ0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'–मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0–316

मिथिलांचलमे स्वतंत्रता आन्दोलनक क्रममे जागरूकता आएल। मैथिली साहित्यमे एहि जागरूकताक अभिव्यक्ति परोक्ष ओ अल्परूपमे भेल अछि। मैथिलीक उपन्यास साहित्य सामान्यतः एहि परम्पराक अन्तर्गत अबैत अछि। की राजकमलक ''आन्दोलन''मे भाषा संबंधी राजनीतिक चेतनाक संकेतअ अछि। किछु अन्य उपन्यासमे आंशिक रूपसँ राजनीतिक गतिविधिक चित्रण कथाक्रममे आएल अछि। पृथ्वीपुत्र भोरूकवा तथा कादो आ कोइलामे श्रमिक वर्गमे आएल जागरूकताक संकेत भेटैत अछि।

विभूति आनन्दक सुनगैत गामक एकटा कथामे साम्यवादी भावना ओ सर्वहाराक जागरूकता प्रदर्शित करबाक प्रयास भेल अछि। ओना चोटक राजनीतिक चर्चा यत्र–तत्र अनेक उपन्यासमे देरी भेल अछि। तात्पर्य जे मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतनाक प्रति साकांक्षा होएबाक भाव दृष्टिगोचर होमए लागल अछि अर्थात् एकरा प्रति उपन्यासकारक ध्यानमे आकर्षित होएब प्रारंभ भए गेल अछि।

ISBN: 978-81-19149-27-8

अध्याय 7

उपसंहार

उपन्यास शब्दक वास्तविक अर्थ होइत नीक जेकाँ राखल, विन्यासपूर्वक राखब सुरक्षा पूर्वक राखब। साहित्यक अन्तर्गत एकर अर्थ होइछ ओ विवाह जाहिमे समाजक घटना क्रममे समाजक वास्तविक चित्र केँ, उच्च उद्देश्यकेँ दृष्टिमे रखैत कलात्मक ढ़ंग सँ प्रस्तुत कएल जाइत अछि। एकर स्वरूप बहुआयामी तथा अत्यन्त विस्तृत होइत अछि।

एहि असीतिम संभावना कारणें एकर क्षेत्र दिनानुदिन विस्तृत भेल जा रहल अछि। एकरा परिभाषित करवाक प्रयत्न भारतीय एवं पाश्चात्य विचारक एवं साहित्यकार लोकनि कएलन्हि अछि। किछु गोटा कथातत्व पर तँ किछु गोटा वर्णन चातुर्य पर बल देलन्हि अछि। एकरा समेटिकेँ प्रेमचन्द कहने छथि जे जेना कविताक एक परिभाषा अद्यावधि नहि भए सकल अछि, लगभग तहिना उपन्यासोक प्रसंग अछि। एकर कोनो सर्वसंम्मत सर्वांगपूर्ण, सर्वरूपी कार्य परिभाषा नहि अछि। किन्तु एतबा धरि अवश्य जे उपन्यास मानव जीवन एवं चरित्रक मित्र थिक जाहिमे वास्तविकता ओ कल्पनाक समन्वय रहैछ। मानव चरित्र पर प्रकाश देब तथा ओकर रहस्यकेँ प्रकाशित करबे एकर मूल तत्व थिक।

काव्य, इतिहास, नाटक, लघुकथा सँ अनेक समानता रहितहुँ उपन्यासक भिन्नता एकरा पृथक धरातल पर रखैत अछि किन्तु उपन्यास वास्तवमे जीवनक व्याख्या ओ विश्लेषण थिक। विश्लेषण रहबाक कारणें सामाजिक गतिविधिक सांगोपांग विस्तृत चित्र एकरा माध्यम सँ प्रस्तुत कएल जाइत अछि। जें सामाजिक गतिविधिक सम्पूर्ण चित्रक अंकन करब एकर स्वभाव थिक तें स्वभाव वास्तवमे सामाजिक जीवनक विविध पक्षक स्वरूपकेँ स्वाभाविकताक संग चरित्र किंवा पात्रक माध्यम सँ अभिव्यक्त प्रदान कएल जाइत अछि। वास्तविक यथार्थ ओ आदर्श स्वरूपकेँ अंकित कएल जाइत अछि। सामाजिक जीवनक समग्र स्वरूपकेँ अभिव्यक्त प्रदान करब जें एकर लक्ष्य एवं उद्देश्य होइत अछि तें समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सँ स्वर अधिक महत्त्व मानल जाइछ अछि।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ उपन्यास अधिक महत्वपूर्ण साहित्य होइछ। एहिमे समाजक प्रत्येक गतिविधिक विस्तृत अंनक संभावना रहैत अछि, संभावने नहि, अनिवार्यता रहैत अछि।

समाज व्यक्तिक समूह थिक, संगठन थिक तेँ ओकर संचालन विधि सामाजिक संबंधक चित्र ओ संकेत उपन्यास सँ भेटव संभव अछि।

समाज कोना कार्य करैत अछि ओकर कार्यप्रणाली की थिकैक, वर्णित समाजक रीति नीति, लोकाचार कोन प्रकार छैक, ओकर दिन्दिन जीवनक स्वरूप की छैक, ओकर अधिकार प्रणाली पारस्परिक सहयोग भावना तथा सहयोग व्यवस्था की छैक, मानवीय व्यवहार पर नियंत्रण रखबाक की व्यवस्था छैक, स्वतंत्रताक सीमा की छैक, आदिक समाजशास्त्रीय तत्वक समावेश उपन्यासमे भए सकैत अछि, होइत अछि।

समाज वास्तवमे जागरूकता पर अन्योन्याश्रिता पर आधारित होइत अछि तें एकर रूप अर्मूत होइछ। समाजमे भिन्नता एवं समानता दुनूक समावेश अछि। समाजमे सहयोग एवं संघर्ष विद्यमान रहैत अछि। एहि दुनूक चित्रक स्वाभाविक अंकन उपन्यासक तत्वक निर्माण करैत अछि।

सामाजिक संबंधक आधार फलक सामूहिक कल्याण भावना अछि। समाजशास्त्रीय तत्वमे आन्तरिक तथा बाह्य दुनू पक्ष सम्मिलित रहैत अछि। लोकाचार, लोक व्यवहार, लोकरूचि तथा लोक संस्कृति एकर भूमिका बनबैत अछि। आधुनिक युगमे वैज्ञानिक विकास कारणें सामाजिक गतिविधिमे परिवर्तन आएल अछि।

उपर्युक्त तत्वक समावेश स्वाभाविक रूपसँ उपन्यासमे होइत अछि। जाहि समाजक आधारभूमि उपन्यासक बनैत अछि ओहि समाजक निर्माण तन्तु, ओकर गतिविधिक सीमा रेखा, ओकर सहयोग–संघर्ष ओकर संचालनक प्रणालीक आदिक संबंधमे ज्ञान प्राप्त होएह ओहि उपन्यासक विशिष्टते नहि सहजता होइत अछि।

मैथिली उपन्यास सेहो एहि गतिविधिकेँ, संस्कृतिकेँ लोकजीवनकेँ अपनामे समेटने रहल अछि। आजुक विकासक परिणाम स्वरूप भेल परिवर्तन सेहो मैथिली उपन्यासमे समाविष्ट होइत रहल अछि। सामाजिक समस्याक चित्र मैथिली उपन्यासमे अंकित भेल अछि।

उपन्यासक अन्तर्गत ओहि सभ घटनाक वर्णन कएल जाइत अछि जे समाजक कोनो ने कोनो व्यक्तिक जीवनमे घटल रहैत अछि अथवा घटब संभव भए सकेत अछि। एहिमे कम सँ कम एतेक स्वाभाविकता रहब आवश्यक जे पढ़बा काल संभव प्रतीत हो। उपन्यास ओहि युगमे पुष्पित पल्लवित होइत अछि। जखन लोकक तर्कशकित अत्यन्त सक्रिय, कल्पनाशक्ति तन्द्रितो किन्तु विवेचना शक्ति अत्यन्त जागरूक रहैत अछि। तात्पर्य जे एहि साहित्यिक विधाक आविर्भावक प्रधान उत्स सामाजिक चेतना होइत अछि।

मैथिली उपन्यास अत्यन्त विकसित अवस्थमे एहि क्षेत्रमे आएल अछि। बीसम शताब्दीक जनमानसक समस्या ओ अर्न्तद्वन्द्व एकर आधारफलकस्वाभाविक रूपसँ बनल अछि। सामाजिक चेतनाक रूप–स्वरूप जेना–जेना परिवर्तित होइत गेल अछि तेना–तेना उपन्यासक रूप ओ वस्तुमे अपेक्षित परिवर्तन अबैत रहत अछि।

मैथिलीक प्रारंभिक उपन्यासमे वैवाहिक समस्या मात्र केन्द्रभूमि छल किन्तु सामाजिक राष्ट्रीय आन्दोलन तथा वैज्ञानिक विकासक समाज पर पड़ल प्रभाव सँ जीवनमे जे गतिमयता आएल अछि ताहि सँ उपन्यासक कथाभूमि से हो अपन स्वरूप ओ परिवेशमे परिवर्तन अबैत गेल अछि। जीवनक जटिलताक उपन्यासक वर्ण्य विषय बनैत गेल। सामाजिक संघर्षक गाथा ओकर कथावस्तु बनैत गेल अछि।

भौतिकवादक उदय भेलासँ आध्यात्मवादी भावनाक ज्योति मद्विम भए गेल फलतः कला ओ साहित्य सोद्देश्यवादी होइत गेल। एहि क्रममे उपन्यास उद्देश्यकेँ विशेष स्थान देमय लागल जीवनक ज्वलन्त समस्याक प्रति जागरूकता रहब उपन्यास अपन धर्म बनाए लेलक। इएह जागरूकता सामाजिक चेतनाक अस्तित्व कहबैत अछि।

मैथिली उपन्यासमे सामाजिक चेतनाक किरण दृष्टिगोचर होइक हरिमोन झाक ''कन्यादान'मे जाहिमे पर्दा प्रथाक ओ स्त्री शिक्षाक दिस ध्यान आकर्षिक कएल गेल अछि। अन्य समाजक अपेक्षा मिथिलाक समाजमे सामाजिक चेतना किछु पछुआएल अछि। जकरा आगाँ बढ़यबाक कार्य किंवा सामाजिक चेतनाकेँ विभिन्न दिशामे विकसित करबाक कार्य उपन्यासकार अपन उपन्यासक माध्यमसँ कएल रहल छथि। एहि समाजमे आधुनिक शिक्षाक प्रचार–प्रसार किछु विलम्बसँ भेल अछि फलतः नवीन भावनाक आगमन सेहो साहित्य सर्जनक क्षेत्रमे विलम्बसँ भेल अछि। तथापि मैथिली उपन्यास प्रारंभहि सँ आधुनिक सामाजिक भावनाक प्रति जागरूकता प्रदर्शित करैत रहल अछि। ''रामेश्वर'' एवं 'कन्यादान'' प्रारंभिक उपन्यास रहितहुँ सामाजिक चेतनाक प्रति सजगता प्रदर्शित करैत अछि।

एहि प्रकारें बादक उपन्यास सभमे सामाजिक जीवनक विविध पक्ष ओ विविध पक्ष ओ विविध समस्याकेँ आधार पर बनाए कथानक निर्माणक सफल प्रयास कएल गेल अछि। वैवाहिक समस्याकेँ लए आर्थिक विपन्नता, सामाजिक विघटन, वर्ग–संघर्ष जमींदारी उन्मूलन, श्रमिक समस्या, साधन सम्पन्न ओ साधन विहीनक द्वन्द्व, शहरी ग्रामीण द्वन्द्व, प्राचीनताओं आधुनिकताक द्वन्द्व, परम्परा ओ नवीनताक द्वन्द्व, नारीमुक्ति संघर्ष, नारी स्वावलम्बनकक प्रयास, पारिवारिक, वैचारिक ओ आर्थिक, असंतुल जन्य संघर्ष आदि विविध वस्तुकेँ उपन्यासक कथाभूमि ओ चरित्र–युग बनाओल गेल अछि। उपन्यासकार वर्त्तमान समाजक छोट–पैघ घटना ओ विचारकेँ अपन रचनामे स्थान दैत रहलाह अछि जाहिसँ मैथिली उपन्यासमे सामाजिक चेतनाक स्वाभाविक विकास परिलक्षित होइत अछि।

मैथिली उपन्यास किंवा समस्त उपन्यास साहित्य सामाजिक जीवनकेँ उजागर करैत अछि। एतबा धरि अवश्य जे सामाजिक समस्या मैथिली उपन्यासक प्रधान वर्ण्य विषय बनल रहल अछि। स्वतंत्रता सँ पूर्व 'कन्यादान' शिक्षाजन्य अनमेल विवाहक समस्याकेँ उजागर करबामे पूर्णतः सफल रहल अछि। ''भलमानुष सेहो अनमेल विवाहक दुष्परिणामक संकेत दैत अछि। मैथिल समाजक रूढ़िग्रस्तता एवं मिथ्य। अभिमान सँ उत्पन्न परिस्थितिक चित्रण एहि उपन्यासक प्रतिपाद्य विषय अछि। ''सुशीला''मे वयलक दृष्टिसँ अनमेल विवाह जन्य समस्या अछि। ''नवतुरिया''मे वृद्ध विवाह जन्य समस्या तथा नवीन युगक अनुसार नवयुवक लोकनि द्वारा तकर समाधान प्रस्तुत करबाक प्रयास कएल गेल अछि। युवा वर्गक संगठित प्रयास, रूढ़िवादी एवं विनाशकारी प्रथाक उन्मूलनमे सफल भए सकैत। ''आदिकथा''मे अनमेल विवाह, अतृप्तवासना तथा भाभी–भागिनक मनोभावक चित्र उपस्थित कएल ओहि समस्याक एक विशेष स्वरूप प्रस्तुत कएल गेल अछि। तात्पर्य जे मूल समस्या वैवाहिके अछि। चानोदाईमे अशिक्षाक कारण उत्पन्न दूषित सामाजिक आचरणक चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि। एतवे नहि महिला जागरणक, स्वावलम्बक संकेत देल गेल अछि। ''सेवाश्रम''क स्थापना द्वारा नवीन समाजक निर्माण दिशा–निर्देश कएल गेल अछि। अनमेल विवाह– बहुविवाहजन्य समस्या अछि ''पारो''मे। एहि प्रकारें बिहाड़ि, पात–पत्थर के सेहो अनमेल विवाह जन्य नारी शोषणक चित्र अछि।

''भोरूकवा''मे शोषित किसान भूमिहीनक जीवन तथा नव जागरणक आलोक संकेत प्रस्तुत भेल अछि। ई वास्तवमे वैवाहिक समस्यासँ भिन्न आर्थिक–सामाजिक वर्ग समस्या पर आधारित अछि। तहिना ''पृथ्वीपुत्र''मे जमींदारी उन्मूलनक फलस्वरूप उपस्थित समस्याकेँ केन्द्र बनाए सामाजिक परिवर्तनक स्वर मुखरित कएल गेल अछि। 'दूधफूल'मे शोषित समाजक सामान्य

जीवन विशेषतः निम्न जातीय वर्गक जीवनक स्वाभाविक चित्र अछि। भाषजगत समस्याकेँ दुर्दैन्य ग्राम्यजीवनक सामाजिक समस्या रूढ़िवादिता आदि स्थान पौलक अछि।

''कादो आ कोइला''मे ग्राम्य एवं शहरी जीवनक चित्र संघर्षक चित्र, भ्रष्टाचार आदि पर प्रकाश पड़ल अछि। तहिना 'तऽपट्टा'मे सामाजिक–मनोवैज्ञानिक समस्या स्थान पौलक अछि। ''पानिपत''मे शिक्षित बेरोजगारीक समस्या तथा संघर्षकेँ उजागर कएल गेल अछि। ''दरिद्र–छिम्भड़ि''मे निम्न मध्यमवर्गीय परिवारक विविध समस्याकेँ आधार भेटल अछि। ''ई बतहा संसार''मे प्रेम एवं वासनाक वास्तविक स्वस्थ उपस्थित भेल अछि। 'कोड़ा गर्ल'मे नवीन समस्या तथा राजनीतिक भ्रष्टाचारक चित्रण भेल अछि। ''अभिव्यक्त'' एवं ''युगपुरूष'मे नवपुरान पीढ़ीक असंतुलन, स्वार्थपरता सामाजिक वैषम्य, आडम्बर आदि समस्याकेँ स्थान भेटल अछि। '' हमरा लग रहय'' तथा ''नवारम्भ''मे नवीन युगक समस्या–विविधता प्रदर्शित भेल अछि। तहिना ''राजा पोखरिमे कतेक मछरी'मे राजनीतिक एवं प्रशासनिक आदर्शहीनता, विकृति शोषण तथा प्रतिशोधकेँ अंकित कएल गेल अछि।

एहि प्रकारें अन्य उपन्यासमे सेहो समाजक विविध समस्याकेँ उजागर करबाक प्रयास भेल अछि। हे एतबा धरि अवश्य जे मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक जीवनगत समस्या एखन धरि स्थान नहि पाबि सकल अछि।

विगत दू शताब्दीमे संसारमे तीव्रगतिसँ परिवर्तन आएल अछि। इंगलैण्डक औद्योगिक क्रान्ति धार्मिक क्रान्तिसँ वैचारिक स्तर पर आमूल परिवर्तन प्रारंभ भेल। आर्थिक सामाजिक दृष्टि सँ मार्क्सवाद उदय समस्या संसारमे विशेष प्रकारक गतिविधि ओ क्रिया–कलाप प्रारंभ कएलक। भारतमे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनक श्री गणेश तथा महात्मा गाँधीक उदय वैचारिक धरातल पर क्रान्ति अनलक। आर्थिक सामाजिक दृष्टिसँ गाँधीवाद पूर्ण प्रभावित कएलक। तहिना बौद्धिक स्तर पर फ्रायडवादक जन्म भेल जे प्रत्येक गतिविधिक केन्द्र वासनाकेँ मानलक।

आधुनिक जीवनमे त्रास, कुंठा ओ जिजीविषा नव–नव संघर्ष उपस्थित कएलक फलतः सामाजिक ओ वैचारिक स्तर पर क्रान्ति एवं विद्रोह होएब स्वाभाविक। नवीन व्यवस्थाक स्थापना हेतु कएल गेल ई परिवर्तन, ई क्रान्ति, ई विद्रोह मैथिली उपन्यासक कथाभूमिककेँ सेहो प्रभावित कएलक अछि।

मार्क्सक द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद पहिने प्रगतिवादक रूपमे साहित्यमे आएल आ पश्चात् यथार्थवादक नाम सँ अपन परिचय प्रस्तुत कयलक।

मैथिली उपन्यासक क्षेत्र से पृथ्वीपुत्र, भोरूकवा, कादो आ कोइला, दुधफूल, खोंता आ चिड़े, पनिपत, दरिद्रछिम्भड़ि, नवारम्भ, पटाक्षेप,सुनगैत एकटा गामक कथा आदि एहि भावनाके प्रश्रय देलक अछि। एहिना धरती जागि उठत;मे वर्तमान राजनीतिक ओ आर्थिक व्यवस्थाक प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त करैत सर्वहारा वर्गक प्रति मार्क्सवादी पक्ष ग्रहण कएल गेल अछि।

फ्रायडवादी मनोविश्लेषण पद्धति अनुसरण मैथिलीक उपन्यासकार सेहो कएलन्हि ''पारो'' बिहाड़ि, पानि आ पाथर चानोदाइ, हमरा लग रहब, आदिकथा, नवारंभ होटल अनारकली, आन्दोलन आदि उपन्यासमे लेखक फ्रायडक अवचेतन वासना सिद्धान्तसँ प्रभावित बुझि पड़ैत अछि।

राष्ट्रीय आन्दोलन ओ महात्मा गाँधीक सिद्धान्त सन् 190ई0सँ समस्त भारतीय जनमानसकेँ प्रभावित कएलक। मैथिली उपन्यासकार गाँधीक आदर्श से प्रेरणा ग्रहण कएलन्हि जाहिसँ नारीक प्रति दृष्टिकोणमे परिवर्तन आएल तथा सामाजिक, आर्थिक ओ राजनीतिक धरातल पर नारी चेतनाकेँ अपन रचनामे समाविष्ट करए लगलाह। कन्यादान, पृथ्वीपुत्र, भोरूकवा, दूधफूल, मरीचिका, चानोदाइ आदिमे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपसँ गाँधीवादी भावनाक समावेश दृष्अिगोचर होइत अछि। अर्थात् मैथिली उपन्यासमे मार्क्सवाद, प्रश्रयवाद ओ गाँधीवादक सिद्धान्तसँ प्रभावित नवीन जीवन दर्शन स्थान पाबए लागल अछि।

आधुनिक युगमे समस्त संसारमे नवीन विचारधारा ओ नवीन क्रिया–कलाप आगमन भेल अछि। फलतः राजनीतिक चेतनामे सेहो नवीनता आएल अछि, एकर प्रभाव क्षेत्रमे अत्यधिक विस्तार भेल अछि।

स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात भारतीय जन जीवनमे क्रान्तिकारी परिवर्तन तथा स्वतंत्र विकास करबाक प्रवृत्तिक उदय भेल। नवीन युग अपन परिस्थिति समाजकेँ प्रधान कएलक। नव समस्या उत्पन्न भेलासँ समाजमे नव राजनीतिक क्षेत्रमे परिवर्तनक कारणें उपन्यासक क्षेत्र सीमामे सेहो परिवर्तन भेल। राजनीतिक क्रिया–कलप ओ विचार–सरणि उपन्यासमे स्थान पाबए लागल। स्वतंत्र भारतक स्वतंत्र विदेश नीति बनल जे समाज राष्ट्रके नव दिशामे उन्मुख कएलक। संसारक दू महाशक्तिक सँ समान संबंध रखबाक इच्छुक भारतकेँ दुनूक परस्पर विरोधी राजनीतिक सँ, बहुत कठिनता रहलैक। ओहि विरोधी नीतिक कारणे नव राजनीतिक दिशा तकैत मैथिलीक पूर्णतः राजनीतिक उपन्यास ''अर्द्धनारीश्वर'' लिखल गेल जाहिमे समस्त विश्वक सांस्कृतिक संकूलता ओ राजनीतिक व्याकुलता अंकित करबाक प्रयास भेल अछि।

सामान्यतः औद्योगिकरणक कोलाहलसँ दूर मिथिलाक सामाजिक जीवन निश्चित परिवेशमे सीमित रहल अछि। परम्पराक प्रतिमोह तथा संकीर्ण मनोवृत्ति राजनीतिक संगठन केँ सशक्त होएबासँ वंचित रखलक फलतः मैथिली साहित्यमे राजनीतिक गतिविधिक समावेश नहि भेल अछि किंवा अन्य रूप भेल अछि।

ओना आजुक जनजीवन ओ राजनीतिक चेतनाक घनिष्ट संबंधक कारणें परोक्ष रूपमे राजनीतिक चेतनाक स्वर अवश्य भेटैत अछि। अर्थात् सामाजिक जीवन जे स्वरूप अंकित भेल अछि से कोनो ने कोनो रूपमे राजनीतिक चेतनाक जन्म अवश्य दैत अछि मुदा प्रत्यक्ष रूपसँ राजनीतिक गतिविधिक चित्रण मैथिली उपन्यासमे नहि कएल गेल अछि। एहि दृष्टिसँ ''आन्दोलन'' ''बलचनमा'', 'पृथ्वीपुत्र', 'भोरूकवा', 'कादो आ कोइला, मरीचिका धरती जागि उठल, पनिपत, दू कुहेलक बार नवारंभ, ई बतहा संसार, ''सुनगैत गाम'' आदि उपन्यासमे न्यनाधिक रूपमे परोक्ष अथवा आंशिक रूपमे राजनीतिक चेतनाक समावेश भेल अछि।

अर्द्धनारीश्वरक अतिरिक्त पटाक्षेपमे शुद्धरूपमे क्षेत्रीय राजनीतिक चेतनाक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल उपन्यास थिक।'' मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहि उपन्यासक महत्त्व अछि नवीन ओ ज्वलन्म राजनीतिक विचार धारा के रोचक शैलीमे मैथिली उपन्यासक विषय बनाए नवीनताक सन्निवेश करबाक दृष्टिसँ।'' ओना वोटक राजनीतिक चर्चा सेहो यत्र–यत्र अनेक उपन्यासमे भेल अछि तात्पर्य जे मैथिलीक उपन्यासकारमे राजनीतिक चेतनाक प्रति सकांक्ष होयबाक भाव दृष्टिगोचर होमए लागल अछि।

मैथिलीक उपन्यासक कथाभूमि समाजक गतिविधिक चारूकात चक्कर कटैत रहल अछि। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सँ मैथिली उपन्यास समाजक क्रिया–कलापक स्पष्ट चित्र अंकित करैत अछि। सामाजिक चेतनाक क्रमशः विकसित एवं परिवर्तित होइत स्वरूपक समावेश ओहिमे नीक जकाँ भेल अछि, विविध समस्याकेँ, विविध विद्रूप केँ विविध संघर्षकेँ ओहिमे अंकित कएल गेल अछि। एतबे नहि आधुनिक विचारधारा मार्क्सवाद, फ्रायडवाद तथा गाँधीवादक जीवन दर्जनक नवीनताक स्पष्ट होइत अछि तथा नवयुवक राजनीतिक चेतनाक प्रमुख ओकर कथाभूमिकेँ विस्तार कयलक अछि।

ABOUT THE AUTHOR

डॉ. अरूण कुमार झा

वर्तमान में मैथिली विभाग, एस. बी. ए. एन. कॉलेज दरहेटा-लारी, अरवल में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने लगभग दस शोध पत्र प्रतिष्ठित जर्नल में प्रकाशित किया है। साथ ही, उन्होंने राष्ट्रीय संगोष्ठी/सम्मेलनों में भी भाग लिया है। वह विभिन्न संगठनों के सदस्य भी हैं।

KRIPA DRISHTI PUBLICATIONS

Kripa-Drishti Publications
A-503 Poorva Heights, Pashan-Sus Road, Near Sai Chowk,
Pune – 411021, Maharashtra, India.
Mob: +91 8007068686
Email: editor@kdpublications.in
Web: https://www.kdpublications.in

ISBN: 978-81-19149-27-8